श्रीविष्णवे नमः ।



॥ अथ गरुडपुराणं भाषाटीकासमेतं प्रारभ्यते ॥

तथा परलोकके क्लेशनको आप यथार्थ कहने योग्य हो ॥५॥ सूत बोले ॥ बहुतही दुर्गम और पुण्यात्मा मनुष्यनको सुख देनहारो तथा पापीनको दुःख देनहारो ऐसो जो यमको मार्ग है ताहि मैं कहोंगो आप सब ऋषि सुनें ॥ ६ ॥ श्रीविष्णुभगवान्‌से पूँछत भये जे गरुड हैं तिनसों जैसो कह्यो वैसोही मैं आप लोगनके सन्देहके दूरि होनेके लिये कहोंगो ॥ ७ ॥ काहू समय वैकुंठमें सुखसों बैठे भये जे श्रीहरिगुरु हैं

सूतउवाच ॥ शृणुध्वंभोविवक्ष्यामियममार्गसुदुर्गमम् ॥ सुखदंपुण्यशीलानांपापिनां दुःखदायकम् ॥६॥ यथा
श्रीविष्णुनाप्रोक्तं वैनतेयायपृच्छते ॥ तथैवकथयिष्यामिसंदेहच्छेदनायवः ॥७॥ कदाचित्सुखमासीनंवैकुण्ठे
श्रीहरिंगुरुम् ॥ विनयावनतोभूत्वापप्रच्छविनतासुतः ॥ ८ ॥ गरुड उवाच ॥ भक्तिमार्गोबहुविधः कथितो
भवताமम ॥ तथाचकथितादेवभक्तानांगतिरुत्तमा ॥ ९ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामियममार्गभयंकरम् ॥ त्वद्भ
क्तिविमुखानांचतत्रैवगमनंश्रुतम् ॥ १० ॥ सुगमंभगवन्नामजिह्वाचवशवर्तिनी ॥ तथापिनरकंयान्तिधिग्धिग
स्तुनराधमान् ॥ ११ ॥

तिनसों विनय करि नम्र हो गरुडजी पूँछत भये ॥ ८ ॥ गरुड बोले आपने मोसों भक्तिको मार्ग बहुतप्रकारको कह्यो और हे देव ! आपने भक्तनकी उत्तमगति कही ॥ ९ ॥ और अब भयंकर जो यमको मार्ग है ताहि सुनो चाहौंहौं आपकी भक्तितें जे विमुख हैं वे वहांई जायहैं ॥ १० ॥ हे भगवन् ! आपको नाम लेनो सुगम है जीभ अपने वशमें हैं ताहूपै नरकमें जाय हैं याते अधम नरनको धिक्कार धिक्कार है ॥११॥

हे भगवन् ! याते पापीनकी जो गति होय है वाहि मोसों कहो और यमके मार्गके दुःख जैसे उन नरनको प्राप्त होयहैं सो सब कहिये ॥१२॥ श्रीभगवान् बोले हे पक्षीनके राजा ! जामें होके पापी यमके लोकको जायहैं और सुननहारेनहूको भय देनहारो जो यमको मार्ग है ताहि मैं कहौंगो ॥ १३ ॥ हे गरुड ! पापहीमें लगे रहैहैं और दया तथा धर्मकरि रहित हैं और दुष्ट जिनकी संगति है और उत्तम शास्त्रको

अतोमेभगवन्ब्रूहिपापिनांयागतिर्भवेत् ॥ यममार्गस्यदुःखानियथातेप्राप्नुवन्तिवै ॥१२॥ श्रीभगवानुवाच ॥
वक्ष्येऽहंशृणुपक्षीन्द्रयममार्गंचयेनते ॥ नरकेपापिनोयान्तिशृण्वतामपिभीतिदम् ॥१३॥ येहिपापरतास्तार्क्ष्य
दयाधर्मविवर्जिताः ॥ दुष्टसङ्गाश्च सच्छास्त्रसत्सङ्गतिपराङ्मुखाः ॥१४॥ आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमा
नमदान्विताः ॥ आसुरंभावमापन्नादैवीसंपद्विवर्जिताः ॥ १५ ॥ अनेकचित्तविभ्रान्तामोहजालसमावृताः ॥
प्रसक्ताः कामभोगेषुपतन्तिनरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥

नहीं जाने हैं तथा सत्संगतिसों दूरि रहैं हैं ॥ १४ ॥ और जे आपको प्रतिष्ठित जाने हैं और काहूसों नम्र नहीं होय हैं और धन तथा मानके घमंडसों भरे हैं और असुरनके भावको प्राप्त और दैवी संपत्तिकरि रहित हैं ॥ १५ ॥ और अनेक जे पराई दारा पराये धनके लेने आदिमें भ्रमि रह्यो है मन जिनको और मोहजालमें फँसो भयो है मन जिनको और जे कामके भोगमें लगे भये हैं वे अशुद्ध नरकमें गिरैं हैं ॥ १६ ॥

और जे नर ज्ञानी हैं वे परमगति जो मोक्ष है ताको प्राप्त होयहैं और जे पापी हैं वे दुःखसों यमकी यातनानको प्राप्त होयहैं॥ १७॥ पापी-
नको जैसे या लोकको दुःख होयहै सो सुनो तापीछे वे मरणको प्राप्त होयहैं सो सुनो ॥ १८॥ पहिले जन्ममें जो इकट्ठो कियोहै सुकृत अथवा
पाप ताको भोगिकै कर्मके योगसों वाके कोई रोग उत्पन्न होय है ॥ १९ ॥ आधि जो मानसी व्यथाहै और व्याधि जो रोग है ताकरिके
युक्त और जीवनेकी आशामें उत्कंठित जो प्राणी है ताको बलवान् काल सर्पके समान विना जाने प्राप्त होय है ॥ २० ॥ वहां अंतकाल-

येनराज्ञानशीलाश्चतेयान्तिपरमांगतिम्॥ पापशीलानरायांतिदुःखेनयमयातनाम्॥ १७ ॥ पापिनामैहिकंदुःखं
यथा भवतितच्छृणु॥ ततस्तेमरणंप्राप्ययथागच्छान्तियातनाम् ॥ १८॥ सुकृतंदुष्कृतंवापि भुक्त्वापूर्वंयथार्जि
तम्॥ कर्मयोगात्तदातस्यकश्चिद्व्याधिःप्रजायते॥ १९॥ आधिव्याधिसमायुक्तंजीविताशासमुत्सुकम्॥ कालोब
लीयानहिवदज्ञातः प्रतिपद्यते ॥२०॥ तत्राप्यजातनिर्वेदोम्रियमाणःस्वयंमृतैः॥ जरयोपात्तवैरूप्योमरणाभि
मुखोगृहे ॥ २१॥ आस्तेवमत्योपन्यस्तंगृहपालइवाहरन्॥ आमयाव्यप्रदीप्ताग्निरल्पाहारोल्पचेष्टितैः॥२२॥

हूमें नहीं उत्पन्न भयो है निर्वेद जाको ऐसो आपकरि पालन किये गये ज पुत्र स्त्री आदि हैं तिनकरिकै पोषण किये जातो भयो और बुढापे
करी कुरूप कियो गयो वह घरमें मरनके सन्मुख होय है ॥ २१ ॥ अवज्ञासों समीपमें धरेभये आहारको कुत्ताके समान खातो भयो
रहैहै और रोगी तथा मन्दाग्नि होनेसो आहार घटिजायहै चलने और फिरने आदिकी चेष्टाहू कम होजाय है ॥ २२ ॥

श्रीगणेशाय नमः॥ स्मृत्वा हरिं श्रीरमया समेतं परांकुशाख्यं पितरं च नत्वा॥ करोमि टीकामिह गारुडस्य मनुष्यवाचा खलु केशवाख्यः ॥ १॥
अथ टीकाया आरंभः क्रियते ॥ धर्मही जाको बहुत पुष्ट मूल बँधि रहो है और वेद जाके गुदेहैं और पुराणरूपी शाखानकारिकै युक्त है
और यज्ञ जाके फूल हैं और मोक्ष जाको फल है ऐसो मधुसूदनरूपी वृक्ष सर्व उत्कर्षसों वर्त्तमान है अर्थात् सबसे अधिक है यातें अधिक
कोई नहीं है॥ १॥ अनिमिष जे विष्णु हैं तिनको क्षेत्र ऐसो जो नैमिषारण्य है तामें शौनकआदि हैं ते स्वर्गलोककी जो प्राप्ति है ताके लिये

श्रीर्जयति ॥ धर्मदृढबद्धमूलोवेदस्कन्धः पुराणशाखाढ्यः ॥ क्रतुकुसुमोमोक्षफलोमधुसूदनपादपोजयति ॥
॥ १ ॥ नैमिषेनिमिषक्षेत्रेऋषयः शौनकादयः ॥ सत्रंस्वर्गायलोकायसहस्रसममासत ॥ २ ॥ तएकदातुमु
नयः प्रातर्हुतहुताग्नयः ॥ सत्कृतंसूतमासीनंपप्रच्छुरिदमादरात् ॥ ३ ॥ ऋषयऊचुः ॥ कथितोभवतासम्य
ग्वेदमार्गः सुखप्रदः ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामोयममार्गभयप्रदम् ॥ ४ ॥ तथासंसारदुःखानितत्क्लेशक्षयसा
धनम् ॥ ऐहिकामुष्मिकान्क्लेशान्यथावद्वक्तुमर्हसि ॥ ५ ॥

हजार वर्षमें पूरो होने योग्य ऐसो जो यज्ञ है ताहि करत भये ॥ २ ॥ एकवार प्रातःकालके समय होमी है अग्नि जिनने ऐसे सब ऋषि
शौनकआदि सत्कार किये गये और बैठे भये सूतसों आदर पूर्वक यह पूँछते भये ॥३॥ ऋषि बोले कि अपने सुखको देनहारो वेदमार्ग
कह्यो अब हम भयको देनहारो यमको मार्ग सुनो चाहैं हैं ॥ ४॥ तैसेही संसारके दुःख और उनके क्लेशके क्षयको उपाय और या लोक

कल्पके समान बीते है और सौ बिच्छूनको काटिवेकी जो पीडा होयहै वह वाकरिकै अनुभव करीजाय है अर्थात् भोगनी पडै है ॥२८॥ या पीछे वह फेनको उगिलै है,मुख लारसों भरिजायहै तब,पापीनकी प्राणवायु गुदामें होकै निकरै है ॥२९॥ तब प्राणनकी यात्राके समय क्रोधसमेतहैं नेत्र जिनके ऐसे और भयानक और पाश तथा दंडको लिये भये नंगे और दांतनको कटकटाते भये यमके दूत प्राप्त भये॥३०॥ ऊपरको उठे भये हैं बाल जिनके और कौआके समान काला टेढो जिनको मुख और नखही हैं हथियार जिनके ऐसे यमके दूतनको

फेनमुद्गिरतेसोथमुखंलालाकुलंभवेत् ॥ अधोद्वारेणगच्छन्तिपापिनां प्राणवायवः ॥ २९॥ यमदूतौतदाप्राप्तौ भीमौसरभसेक्षणौ ॥ पाशदण्डधरौनग्नौदन्तैः कटकटायितौ ॥ ३० ॥ ऊर्ध्वकेशौकाककृष्णौवक्रतुण्डौनखायुधौ ॥ सदृष्ट्वात्रस्तहृदयः शकृन्मूत्रंविमुञ्चति ॥३१॥ अंगुष्ठमात्रःपुरुषोहाहाकुर्वन्कलेवरात् ॥ तदैवगृह्यतेदूतैर्याम्यैःपश्यन्स्वकंगृहम् ॥३२॥ यातनादेहआवृत्यपाशैर्बद्ध्वागलेबलात् ॥ नयतोदीर्घमध्वानंदण्ड्यंराजभटायथा ॥ ३३ ॥ तस्यैवंनीयमानस्यदूताः संतर्जयन्तिच ॥ प्रवदन्तिभयंतीव्रंनरकाणां पुनः पुनः ॥ ३४ ॥

देखिं हृदयमें भयभीत हो विष्ठा तथा मूत्रको छोडै है ॥ ३१ ॥ और हाय हाय करतो भयो पुरुष देहसों निकासिकै अंगुष्ठमात्र अर्थात् अंगूठेकी बराबर देहको धारण करैहै तब अपने घरको देखतो भयो वह यमके दूतनकरिकै पकरलियो जाय है ॥ ३२ ॥ यातनानके भोगनेके प्रारब्ध कर्मकरिकै स्वप्नके समान उठभये वा शरीरमें घेरिकै यमके दूत लंबे मार्गमें गला बांधिकै ऐसे लेजाय हैं जैसे दंड देने योग्य पुरुषको राजाके सिपाही लेजाय हैं ॥ ३३ ॥ या प्रकार नीयमान जो ॥ ३ ॥

प्राणी है ताहि यमके दूत धमकावै हैं और नरकनके तीव्रभयको वारंवार कहै हैं ॥३४॥ अरे दुष्ट ! शीघ्र चल तू यमके घरको जायगो और कुंभीपाक आदि नरकनमें हम तोको अब शीघ्र लिये जाये हैं॥ ३५॥ या प्रकार यमदूतनके वचन और भाई बन्धूनके रोवनेको सुनतो भयो ऊँचे प्रकार हाय २ करि रोवतो भयो वह प्राणी यमके दूतनकरि ताडना कियो जाय है ॥ ३६ ॥ उन यमदूतनके धमकावनेसों विदीर्ण होगयो है हृदय जाको ऐसो कांपतो भयो वह प्राणी दुःखी हो अपने पापनको स्मरण करतो भयो मार्गमें कुत्तान

शीघ्रंप्रचलदुष्टात्मन्यास्यसित्वंयमालयम् ॥ कुम्भीपाकादिनरकांस्त्वांनयावोद्यमाचिरम् ॥३५॥ एवंवाचस्तदाशृण्वन्बन्धूनांरुदितं तथा ॥ उच्चैर्हाहेतिविलपंस्ताड्यतेयमकिंकरैः ॥ ३६ ॥ तयोर्निर्भिन्नहृदयस्तर्जनैर्जातवेपथुः ॥ पथिश्वाभिर्भक्ष्यमाणआर्तोऽघंस्वमनुस्मरन् ॥३७॥ क्षुत्तृट्परीतोऽर्कदवानलानिलैः संतप्यमानः पथि तप्तवालुके ॥ कृच्छ्रेणपृष्ठेकशयाचताडितश्चलत्यशक्तोऽपिनिराश्रमोदके ॥ ३८ ॥ तत्रतत्रपतञ्श्रान्तोमूर्च्छितः पुनरुत्थितः ॥ यथा पापीयसानीतस्तमसायमसादनम् ॥ ३९ ॥

करि खायो जायहै॥३७॥क्षुधा और पियास करि पीडित और सूर्य तथा दावाग्निकी पवन करि तपीहै बालू जामें और नहीं है विश्राम तथा जल जामें ऐसे मार्गमें तपायो गयो और क्षुधा पिपासा आदिके कारण चलनेको असमर्थहू प्राणी कोरडानकी मार देकै चलायो जाय है॥३८॥वा मार्गमें गिरतो और थकोभयो मूर्च्छित होकै फिरि उठो भयो वह प्राणी अतिपापी जो तम है ताकरिकै यमके लोकमें

पहुँचायो जायहै ॥३९॥ तीनि मुहूर्तों करिकै मनुष्य वहां पहुँचायो जायहै और दूत वाको अति घोर नरककी यातना दिखावै हैं ॥४०॥ मुहूर्तमात्रहीमें शीघ्र यमको तथा यातनानको देखि वह पुरुष यमकी आज्ञासों शीघ्रही दूतनके साथही आकाशमार्गमें होके फिरि आवैहै ॥४१॥ आयके वासनासों बंधोभयो देहमें प्रवेश करनेकी इच्छा करता यमके दूतनकरि पाशनसों बांधोगयो वह प्राणी क्षुधा पियाससों पीडित होके रोवै है ॥४२॥ और मृत्युके स्थान आदिमें पुत्रनकरि दिये भये पिंडको और मरनेके समयमें दिये भये दानको

त्रिभिर्मुहूर्तैर्द्वाभ्यांवानीयतेतत्रमानवः ॥ प्रदर्शयन्तिदूतास्ताघोरानरकयातनाः ॥ ४० ॥ मुहूर्तमात्रात्त्वरितं यमंवीक्ष्यभयंपुमान् ॥ यमाज्ञयासमंदूतैः पुनरायातिखेचरः ॥ ४१ ॥ आगम्यवासनाबद्धोदेहमिच्छन्यमानुगैः ॥ धृतः पाशेनरुदतिक्षुतृड्भ्यांपरिपीडितः ॥ ४२ ॥ भुक्तापिण्डंसुतैर्दत्तंदानंचातुरकालिकम् ॥ तथापिनास्तिकस्ताक्ष्यंतृप्तिंयातिनपातकी ॥४३॥ पापिनांनोपतिष्ठन्तिदानंश्राद्धंजलांजलिः ॥ अतः क्षुद्व्याकुलायान्तिपिण्डदानभुजोपिते ॥ ४४ ॥ भवन्तिप्रेतरूपास्तेपिंडदानविवर्जिताः ॥ आकल्पंनिर्जनारण्येभ्रमन्तिबहुदुःखिताः ॥४५॥ नाभुक्तं क्षीयते कर्मकल्पकोटिशतैरपि ॥ अभुक्त्वायातनांजन्तुर्मानुष्यंलभतेनहि ॥४६॥

खायहै हे गरुड! ताहूपै वह नास्तिक पापी तृप्तिको प्राप्त नहीं होयहै॥४३॥दान श्राद्ध तथा जलकी अंजली पापी मनुष्यनको नहीं पहुँचै है याहीतें पिंडके खानेवाले वे क्षुधासों व्याकुल होजाय है ॥४४॥ और जो उनकी पिंडदान नहीं कियो जाय तौ वे कल्पभरि प्रेतरूप होयहैं और शून्यवनमें बडे दुःखी हो भ्रमण करै हैं ॥ ४५ ॥ करोडों कल्पनलौं विना भोगे कर्म क्षीण नहीं होयहैं और यमकी यातना ॥ ४ ॥

और कफसों रुकीहैं नाडीरूप मार्ग जाके तासों निकरो चाहतो जो प्राणरूप वायु है तासों फटैहैं नेत्र जाके और कास श्वासकरि दबायो गयो जो वह प्राणी है ताके कंठमें घुरघुर शब्द होयहै ॥ २३ ॥ शोच करते जे अपने भाई बन्धु हैं ते जाको घेर रहैं ऐसो धरतीमें परो भयो वह कालके वशमें होके बुलानेहूपै नहीं बोलैहै ॥ २४ ॥ या प्रकार कुटुंबके पालन पोषणमें लगोहै आत्मा जाको और उसकीही बहुत भारी जो वेदना अर्थात् एकसाथ सौ विच्छुनके काटनेके समान पीडा सो नष्ट होगई है बुद्धि जाकी ऐसो वह प्राणी रोतेभये

वायुनोत्क्रमतोत्तारःकफसंरुद्धनाडिकः॥कासश्वासकृतायासः कण्ठेघुरघुरायते॥२३॥ शयानःपरिशोचद्भिः परिवीतः स्वबन्धुभिः ॥ वाच्यमानोऽपिनब्रूतेकालपाशवशंगतः ॥ २४ ॥ एवंकुटुम्बभरणेव्याप्तात्माजितेन्द्रियः ॥ म्रियतेरुदतांस्वानामुरुवेदनयास्तधीः ॥२५॥ तस्मिन्नन्तक्षणेताक्ष्यंदैवीदृष्टिःप्रजायते ॥ एकीभूतंजगत्सर्वंनकिंचिद्वक्तुमीहते ॥२६॥ विकलेन्द्रियसंघातेचैतन्येजडतांगते॥प्रचलन्तिततःप्राणायाम्यैर्निकटवर्तिभिः ॥ २७ ॥ स्वस्थानाच्चलितेश्वासेकल्पाख्योह्यातुरक्षणः ॥ शतवृश्चिकदष्टस्ययापीडासानुभूयते ॥२८॥

भाईबन्धूनके मध्यमें मरिजायहै ॥ २५ ॥ हे गरुड ! वा अन्तसमयमें देवतानकीसी दृष्टि होजायहै अर्थात् जा दृष्टिसों यमके दूतनको प्रत्यक्ष दर्शन होयहै और फिरि जा दृष्टिसों सब यह लोक तथा परलोकरूप जगत् एक भयोसो होजायहै यही आश्चर्यके देखनेसों कुछ नहीं कहै है॥२६॥इन्द्रियनको जो समूहहै ताके व्याकुल होनेपै और चैतन्यके जड होजानेपै समीप आये भये जे यमके दूत हैं तिनके कारणसों प्राण अपने स्थानते चलायमान होय हैं॥२७॥जब श्वास अपने स्थानते चलायमान होयहै वा समय मरतेभये पापीको एकक्षण

दो पिंडनसों जांघें और पांय उत्पन्न होय हैं और दशमें दिन क्षुधा तृषा अर्थात् भूँख प्यास उत्पन्न होयहै ॥५३॥ पिंडनसों उत्पन्न देहको आश्रय लैके भूंख तथा प्यासकारि पीडित वह प्रेत ग्यारहें और बारहें इन दो दिनमें भोजन करै है ॥५४॥ और तेरहें दिन यमके दूतनकारि बांधो गयो वह प्रेत वा मार्गमें बांधे भये बन्दरके समान अकेले जाय है ॥ ५५ ॥ हे गरुड ! वैतरणीको छोडिकै जो यमके मार्गको

जानुपादौ तथा द्वाभ्यांदशमेह्निक्षुधातृषा॥५३॥पिंडजंदेहमाश्रित्यक्षुधाविष्टस्तृषार्दितः॥ एकादशंद्वादशंचप्रेतो भुंक्तेदिनद्वयम्॥५४॥त्रयोदशेहनिप्रेतो यन्त्रितोयमकिङ्करैः॥तस्मिन्मार्गेव्रजत्येकोगृहीतइवमर्कटः॥५५॥ षडशीतिसहस्राणियोजनानांप्रमाणतः॥ यममार्गस्यविस्तारोविनावैतरणींखग॥५६॥ अहन्यहनिवैप्रेतोयोजनानांशतद्वयम्॥ चत्वारिंशत्तथासप्तदिवारात्रेणगच्छति॥५७॥ अतीत्यक्रमशोमार्गेपुराणीमानिषोडश॥ प्रयातिधर्मराजस्यभवनं पातकीजनः ॥५८॥ सौम्यंसौरिपुरंनगेंद्रभवनं गन्धर्वशैलागमौ क्रौञ्चंक्रूरपुरंविचित्रभवनं बह्वापदंदुःखदम् ॥ नानाक्रन्दपुरंसुतप्तभवनंरौद्रंपयोवर्षणंशीताढ्यंबहुभीतिधर्मभवनंयाम्यंपुरंचाग्रतः ॥५९॥

विस्तार है वह प्रमाणमें छयासी हजार योजन है ॥ ५६ ॥ प्रतिदिन प्रेत निश्चयकर दोसौ सैंतालीस योजन रातिदिनमें चलै है ॥५७॥ और इन सोरह ग्रामनको मार्गमें क्रमसों उल्लंघन करिकै पातकी मनुष्य धर्मराजके घरको जायहै ॥ ५८॥ सोलह पुरनके नाम कहते हैं. सौम्य, सौरिपुर, नगेंद्रभवन, गंधर्वशैल, आगम, क्रौंच, क्रूरपुर, विचित्रभवन, बह्वापद, दुःखद, नानाक्रंदपुर, सुतप्तभवन, रौद्र, पयोवर्षण,

शीताढ्य, बहुभीति, धर्मभवन और आगे यमको पुर है ॥५९॥ यमके पाशनकारि बांधो गयो वह पापी मार्गमें हाय हाय करिकै रोवतो भयो अपने घरको छोडिकै यमराजके पुरको जायहै ॥ ६० ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ गरुड बोले ॥ यमके लोकको मार्ग कैसो दुःखको देनहारो होय है हे केशव ! वामें जैसे पापी जाय है मोसों कहो ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले ; बडे दुःखको देनेहारो जो यमको मार्ग है ताहि मैं तुमसों कहों हों जाको

याम्यपाशैर्धृतः पापीहाहेतिप्ररुदन्पथि ॥ स्वगृहंतुपरित्यज्यपुरंयाम्यमनुव्रजेत् ॥ ६० ॥ इति श्रीसारोद्धारे गरुडपुराणेपापिनामैहिकामुष्मिकदुःखनिरूपणंनामप्रथमोऽध्यायः॥१॥ गरुडउवाच॥कीदृशोयमलोकस्य पन्थाभवतिदुःखदः॥ यत्रयान्तियथापापास्तन्मेकथयकेशव॥१॥ श्रीभगवानुवाच॥ यममार्गं महद्दुःखप्रदंते कथयाम्यहम् ॥ ममभक्तोऽपितच्छ्रुत्वात्वंभविष्यासिकम्पितः॥२॥ वृक्षच्छायानतत्रास्तियत्र विश्रमतेनरः॥ यस्मिन्मार्गेनचान्नाद्यं येनप्राणान्समुद्धरेत्॥३॥जलंनदृश्यतेक्कापितृषितोतीवयत् पिबेत्॥तपन्तेद्वादशादित्याः प्रलयान्तेयथाखग॥४॥तस्मिन्गच्छतिपापात्माशीतवातेनपीडितः॥कण्टकैर्विध्यतेक्कापिक्कचित्सर्पैर्महाविषैः॥५

सुनिकै मेरे भक्त तुम कंपायमान होजाउगे ॥ २ ॥ वहां वृक्षकी छाया नहीं है जामें मनुष्य विश्राम लेइ और जा मार्गमें अन्नआदि नहीं है जासों प्राणनको उद्धार करै है ॥ ३ ॥ वा मार्गमें जल कहीं नहीं दिखाई देय है जाको बहुत प्यासो प्राणी पीवे हे खग ! बारहों सूर्य ऐसे तपें हैं जैसे प्रलयके अंतमें तपैं हैं ॥४॥ वा मार्गमें पापात्मा पुरुष शीतल वायुसों पीडित होतो भयो जाय है और कहूं कांटेनसों बींधे

है और बडे विषधारी सांपनकरि काटो जाय है ॥५॥ और कहुँ बडे घोर सिंह बाघ और कुत्तनकरि पापी खायो जाय है और बिच्छून करि काटो जाय है और कहुं आगिसों जरायो जाय है ॥ ६ ॥ तापीछे वहां कहीं बडो घोर असिपत्र बन है दोहजार योजनकी वाकी लंबाई चौडाई कही है ॥ ७ ॥ कौआ उलूक गीध महूकी माखी और डांसनसों भरो है और दावाग्नि करिकै युक्त वह पत्रनकरिकै छिन्न भिन्न हो जाय है ॥ ८ ॥ कहूँ अंधेकुएँमें गिरै है और कहूँ विकट पर्वतके ऊपरसों गिरै है और कहूँ छुरानकी जे धारैं उनपै चलै है

सिंहैर्व्याघ्रैः श्वभिर्घोरैर्भक्ष्यतेक्वापिपापकृत्॥ वृश्चिकैर्दंश्यतेक्वापिक्वाचिद्दह्यतिवह्निना ॥६॥ ततःक्वचिन्महाघोरमासिपत्रवनंमहत्॥ योजनानां सहस्रेद्वेविस्तारायामतःस्मृतम् ॥७॥ काकोलूकवटगृध्रसरघादंशसंकुलम् ॥ सदावाग्निचतत्पत्रैश्छिन्नभिन्नः प्रजायते॥८॥ क्वचित्पतत्यन्धकूपेविकटात्पर्वतात्क्वचित्॥ गच्छतेक्षुरधारासु शंकूनामुपरिक्वचित् ॥ ९ ॥ स्खलत्यन्धतमेत्युग्रेजलेनिपततिक्वचित् ॥ क्वचित्पंकेजलौकाढ्येक्वचित्संततकर्दमे ॥१०॥ संततवालुकाकीर्णेध्मातताम्रमयेक्वचित् ॥ क्वचिदंगारराशौचमहाधूमाकुलेक्वचित्॥११॥ क्वचिदंगारवृष्टिश्चशिलावृष्टिःसवज्रका ॥ रक्तवृष्टिः शस्त्रवृष्टिः क्वचिदुष्णाम्बुवर्षणम् ॥ १२ ॥

और कहूँ कीलनके ऊपर चलनो परै है ॥ ९ ॥ कहूँ बडे उग्र अन्धकारमें गिरै है और कहूँ जलमें गिरै कहूँ जोंकनसों भरीभई कीचमें और कहूँ तपीभई कीचमें गिरै ॥ १० ॥ कहूँ तपी भई वालूसों भरे भयेमें और कहूँ तपाये भये तांबेसों बने भयेमें और कहूं अंगारनके ढेरमें और बडे धुआँसों भरे मार्गमें गिरै है ॥ ११ ॥ कहूँ अंगारकी वर्षा होय है और कहूँ वज्रसमेत शिलानकी वर्षा ॥ ६ ॥

भोगे विना मनुष्यरूपको नहीं पावैहै॥४६॥हे द्विज ! याहीते पुत्र दशदिनलौं पिंडदान करै। हे पक्षीनमें उत्तम ! वे पिंड प्रतिदिनचारीभागनमें बांटे जायहैं॥४७॥उनमें दो भाग या भूतनमें देहको पुष्टि देयहैं और तीसरो भाग यमके दूतनको होयहै और चौथे भागको वह प्रेत खायहै॥४८॥नव रातिदिनलों प्रेत पिंडको पावै है तापीछे दशवें दिन पिंडसों उत्पन्न भयोहै देह जाके ऐसो जीव बल अर्थात् मार्ग चलनेकी सामर्थ्यको पावैहै॥४९॥हे खग ! पहले देहके जरिजानपै पिंडनसों फिरि देह उत्पन्न होयहै वह हाथभरिको होयहै जा देहकरिकै

अतोदद्यात्सुतः पिण्डान्दिनेषुदशसुद्विज ॥ प्रत्यहन्तेविभज्यन्तेचतुर्भागैःखगोत्तम ॥ ४७ ॥ भागद्वयंतुदेहस्यपुष्टिदंभूतपंचके॥ तृतीयंयमदूतानांचतुर्थंसोपजीवति॥४८॥ अहोरात्रैश्चनवभिःप्रेतः पिंडमवाप्नुयात् ॥ जन्तुर्निष्पन्नदेहश्चदशमेबलमाप्नुयात् ॥४९॥ दग्धेदेहेपुनर्देहःपिंडैरुत्पद्यतेखग ॥ हस्तमात्रःपुमान्येनपथिभुंक्तेशुभाशुभम् ॥ ५० ॥ प्रथमेहनि यः पिण्डस्तेनमूर्धाप्रजायते ॥ ग्रीवास्कन्धौद्वितीयेनतृतीयाद्धृदयंभवेत् ॥ ५१ ॥ चतुर्थेनभवेत्पृष्ठंपंचमान्नाभिरेवच ॥ षष्ठेनचकटीगुह्यंसप्तमात्सक्थिनीभवेत् ॥ ५२ ॥

यमके मार्गमें शुभ तथा अशुभको भोगैहै ॥५०॥ पिंडनसों उत्पन्न देहके बननेको जो प्रकार है ताको कहे हैं कि पहले दिन जो पिंड दियो जायहै तासों मस्तक अर्थात् शिर उत्पन्न होयहै और दूसरेसों गरदन और कंधे उत्पन्न होयहै और तीसरेसों हृदय अर्थात् छाती उत्पन्न होयहै ॥ ५१ ॥ और चौथेसों पीठि तथा पांचमेंसो नाभि उत्पन्न होयहै और छठेमेंसों कटि कारिहाँउँ और गुह्य कहिये मलमूत्रके स्थान अर्थात् गुदा लिंग भग कटिके नीचेके मांसके पिंडे और सप्तमसों सक्थि ये सब उत्पन्न होयहै ॥ ५२ ॥ और

भयो देखि अग्निकी ज्वाला तथा धुआँसे भरिके वह नदी ऐसे खदकैहै जैसे कराहमें घी ॥ १८॥ जिनके सूईके समान मुख है ऐसे घोरकीरानसों भरीभई है और वज्रके समान जिनकी चोंचें ऐसे गीधनसों तथा कौआनसों घिरीभई है ॥ १९ ॥ और सुसुहार मगर जोंक मछली कछुआ तथा और मांसके भेदन करनहारे जलके जीवनसों भरी है ॥ २० ॥ वाकी धारमें गिरे भये बहुतसे पापी चिल्लाय हैं और हाय भाई! हाय पुत्र! हाय बाप! ऐसे बारंबार बके हैं ॥ २१ ॥ भूंखे प्यासे पापी निश्चय रुधिरको पीवे हैं और वह नदी जामें बहुतसे

कृमिभिः संकुलघोरैः सूचिवक्त्रैः समन्ततः ॥ वज्रतुण्डैर्महागृध्रैर्वायसैः परिवारिता ॥ १९ ॥ शिशुमारैश्च मकरैर्जलौकोमत्स्यकच्छपैः॥ अन्यैर्जलस्थजीवैश्च पूरितामांसभेदकैः॥२०॥ पतितास्तत्प्रवाहेचक्रन्दन्तिबहु पापिनः॥ हाभ्रातः पुत्रतातेतिप्रलपन्तिमुहुर्मुहुः ॥२१॥ क्षुधितास्तृषिताः पापाः पिबन्ति किल शोणितम्॥ सा सरिद्रुधिरापूरंवहन्तीफेनिलंबहु॥२२॥ महाघोरातिगर्जन्तीदुर्निरीक्ष्यभयावहा॥तस्यादर्शनमात्रेण पापाःस्युर्गतचेतनाः ॥२३॥बहुवृश्चिकसंकीर्णासेविताकृष्णपन्नगैः॥ तन्मध्येपतितानांचत्राताकोपिनविद्यते ॥२४॥ आवर्तशतसाहस्रैः पातालेयान्तिपापिनः॥ क्षणंतिष्ठन्तिपातालेक्षणादुपरिवर्तिनः ॥ २५ ॥

झष उठि रहे हैं ऐसे रुधिरके प्रवाहसों बहिरही है ॥ २२ ॥ बडी घोर गर्जतीभई दुःखसों देखने योग्य भयावनी है वाके देखनेहीसो पापी नर मूर्च्छित होजायहै ॥२३॥ बहुत बिच्छूनसों भरीभई वह काले सर्पनकरि सेवन करिगई है वामें गिरेभये जे प्राणी हैं तिनकी रक्षा करनहारो कोई नहीं है ॥ २४ ॥ लाखन भँवरनसों पापी पातालपै जायहैं फिरि क्षणभरि पातालमें ठहरिके क्षणहीमें ऊपर आय जाय हैं॥२५॥ ॥ ७ ॥

हे गरुड! पापी जीवनके गिरनेहीके लिये वह नदी बनाई गई है वाको पार नहीं दिखाई देय है वह बडी दुस्तर है और बहुतसे दुःखकी देनेहारी है॥२६॥याप्रकार बहुत प्रकारके हैं क्लेश जामें ऐसे अतिदुःख देनेहारे यमके मार्गमें चिल्लाते तथा रोतेभये पापी दुःखी होके जाय हैं ॥ २७ ॥ कोई फांसीमें बँधेहैं और अंकुशनसों खींचे जाय हैं और शस्त्रनसों पीछेसों छेदेगये पापीनको यमके दूत ले जाय हैं ॥ २८ ॥ कोई नाककी नोकमें फांसी डारिके और काननमें फांसी डारिके खींचे गये और कोई कालकी फांसीनसों खैंचे गये तैसेही

पापिनांपतनायैवनिर्मितासानदीखग ॥ नपारंदृश्यतेतस्यादुस्तराबहुदुःखदा ॥२६॥ एवंबहुविधक्लेशेयममार्गेतिदुःखदे ॥ क्रोशन्तश्चरुदन्तश्चदुःखितायान्तिपापिनः ॥ २७ ॥ पाशेनयन्त्रिताःकेचित्कृष्यमाणास्तथांकुशैः॥ शस्त्राग्रैःपृष्ठतःप्रोतैर्नीयमानाश्चपापिनः ॥२८॥ नासाग्रपाशकृष्टाश्चकर्णपाशैस्तथापरे ॥ कालपाशैः कृष्यमाणाः काकैः कृष्यास्तथापरे ॥२९॥ ग्रीवाबाहुषुपादेषुबद्धाःपृष्ठेचशृंखलैः ॥ अयोभारचयंकेचिद्वहन्तः पथियान्तिये ॥३०॥ यमदूतैर्महाघोरैस्ताडयमानाश्चमुद्गरैः ॥ वमन्तोरुधिरंवक्त्रात्तदेवाश्नन्तितेपुनः ॥३१॥ शोचन्तेस्वानिकर्माणिग्लानिंगच्छान्तिजन्तवः ॥ अतीवदुःखसंपन्नाः प्रयान्तियममन्दिरम् ॥ ३२ ॥

और पापीको आन करके खैंचे जाय हैं ॥ २९ ॥ मर्दन बांहे पांव और पीठमें संकलनसों बांधे भये और कोई लोहके भारको लियेभये मार्गमें जायहैं॥३०॥बडे घोर यमके दूतनकरि मुद्गरनसों ताडन किये गये पापी मुखते रुधिर डारेहैं और वाहीको फिरि खाय जायहै॥३१॥अपने कर्मनको सोचै हैं और ग्लानिको प्राप्त होयहै और बहुतही दुःखसों भरेभये वे पापी यमके लोकको जायहैं॥३२॥

बडे
वह मंदबुद्धि वा मार्गमें जातोभयो पुत्र पौत्र ऐसे कहतो और हाय २ करिके रोवतो भयो बडे दुःखको प्राप्त होय है ॥ ३३ ॥
पुण्यके योगसों मनुष्यको जन्म मिलेहै वाको पायके मैंने धर्म नहीं कियो सो कहा ॥३४॥ मैंने न तो दान दियो और न अग्निमें
होम कियो न तप कियो न देवता पूजे और न विधानसे तीर्थनकी सेवा कीन्ही तातें हे देही ! जो तैंने कियो है ताको भोग ॥ ३५ ॥

तथापिसव्रजन्मार्गेपुत्रपौत्रइतिब्रुवन् ॥ हाहेतिप्ररुदन्नित्यमनुतप्यतिमन्दधीः ॥ ३३ ॥ महतापुण्ययोगे
नमानुषंजन्मलभ्यते ॥ तत्प्राप्यनकृतोधर्मःकीदृशंहिमयाकृतम् ॥ ३४ ॥ मयानदत्तंनहुतं हुताशनेतपोनतप्तं
त्रिदशानपूजिताः ॥ नतीर्थसेवाविहिताविधानतोदेहिन्क्वचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३५ ॥ नपूजिता
विप्रगणाःसुरापगानचाश्रितासत्पुरुषानसेविताः॥परोपकारोनकृतःकदाचनदेहिन् क्वचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम्
॥ ३६ ॥ जलाशयोनैवकृतोहिनिर्जलेमनुष्यहेतोः पशुपक्षिहेतवे ॥ गोविप्रवृत्त्यर्थमकारिनाण्वपिदेहिन्क्वचि
न्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३७ ॥

ब्राह्मणनके समूहको नहीं पूजो और गंगाजीकोहू आश्रय नहीं लियो और सज्जन पुरुषकोहू सेवन नहीं कियो और परोपरकारहूँ
कबहूँ नहीं कियो यातें हे देही ! जो तैंने कियोहै ताको भोग ॥३६॥ जा देशमें जल नहीं है वा देशमें मैंने मनुष्य तथा पशुपक्षीनके
लिये जलाशय अर्थात् कुआ बावडी तालाव आदि नहीं बनवाया और गौ तथा ब्राह्मणकी जीविकाके लिये कुछ किंचित्

होय है कहूँ रक्तकी वर्षा और कहूँ शस्त्रकी वर्षा तथा कहूँ तपे भये जलकी वर्षा होयहै ॥ १२ ॥ कहूँ खारी कीचकी वर्षा होय है और
कहूँ बहुत गहरे स्थान हैं और कहूँ पर्वतनके शिखरपर चढनो परैहै कहूँ गुफानमें घुसनो परै है ॥ १३ ॥ वहां बहुतही गहरो अंधकार है और
कहूँ दुःखसों चढनेयोग्य शिलाहैं और कहूँ पीव तथा रुधिरसों भरे भये और कहूँ विष्ठासों भरे भये कुंड हैं ॥१४॥ और मार्गके मध्यमें
बहनेवाली वैतरणी नदी है वह देखनहीसों दुःखकी देनेहारीहै और कहा कहनोहै जाकी वार्त्ताहू भयकी देनेहारी है ॥ १५ ॥ सौ योजन

क्षारकर्दमवृष्टिश्चमहानिम्नानिचक्वचित् ॥ वप्रप्ररोहणंक्वापिकन्दरेषुप्रवेशनम् ॥ १३॥ गाढांधकारस्तत्रास्ति
दुःखारोहशिला क्वचित् ॥ पूयशोणितपूर्णाश्चविष्ठापूर्णाह्रदाः क्वचित् ॥ १४ ॥ मार्गमध्यवहात्युग्राघोरावैतर
णीनदी ॥ सादृष्टादुःखदाकिंवायस्यावार्त्ताभयावहा ॥ १५ ॥ शतयोजनविस्तीर्णा पूयशोणितवाहिनी ॥
अस्थिवृन्दतटादुर्गामांसशोणितकर्दमा ॥ १६॥ आगाधदुस्तरापापैः केशशैवालदुर्गमा॥महाग्राहसमाकीर्णा
घोरपक्षिशतैर्वृता ॥१७॥ आगतंपापिनंदृष्ट्वाज्वालाधूमसमाकुला॥क्वथतेसानदीतार्क्ष्यकटाहान्तर्घृतंयथा ॥ १८॥

चौडी है और वामें पीव तथा रुधिर बहैहै और हाडोंके समूहसों बने भये वाके किनारे हैं और वह दुःखसों जाने योग्यहै और मांस
तथा रुधिरकी वामें कीच है ॥ १६ ॥ अथाह है और पापी नरनको दुःखसों उतरने योग्य है और बालरूपी सिवारोंसों दुर्गम है और
बडे भारी ग्राह जो घरियाल हैं तिनसों भरीहै और बडे घोर भैकरन पक्षिनसों घिरी भई है ॥ १७ ॥ हे गरुड ! वह नदी पापीको आयो

शरीर मैंने पहले कियेभये विकर्म जे निषिद्ध आचरण हैं तिनसों पायो है ॥ ४१ ॥ याप्रकार बहुत विलाप करिकै पूर्वके देहको
स्मरण करतो भयो वह मेरो मनुष्यपनो कहाँ ऐसे कहतो भयो चलै है ॥ ४२ ॥ सत्रहदिनलों अकेलो वायुके वेगसों चलै है हे गरुड !
और अठारहवें दिन प्रेतसौम्य पुरको जाय है ॥ ४३ ॥ वा मनोहर पुरवरमें बडाभारी प्रेतनको गण रहै है और वहाँ पुष्पभद्रा
नाम नदी है और प्यारो है दर्शन जाको ऐसो वटको पेड है ॥ ४४ ॥ वा पुरमें यमके दूतनकरि वह प्राणी विश्रामको प्राप्त कियो

एवंविलप्यबहुशःसस्मरन्पूर्वदैहिकम् ॥ मानुषत्वंममकुतइतिक्रोशन्प्रसर्पति ॥४२॥ दशसप्तदिनान्येको वायु
वेगेनगच्छति ॥ अष्टादशेदिनेतार्क्ष्यप्रेतः सौम्यपुरंव्रजेत् ॥ ४३ ॥ तस्मिन्पुरवरेरम्येप्रेतानांचगणोमहान् ॥
पुष्पभद्रानदीतत्रन्यग्रोधः प्रियदर्शना ॥ ४४ ॥ पुरेतत्रसविश्रामंप्राप्यतेयमकिंकरैः ॥ दारपुत्रादिकंसौख्यं
स्मरतेतत्रदुःखितः ॥ ४५ ॥ धनानिभृत्यमात्राणिसर्वंशोचतिवैयदा ॥ तदा प्रेतास्तुतत्रत्याः किंकराश्चेदम
ब्रुवन् ॥ ४६ ॥ क्वधनंक्वसुताजायाक्वसुहृत्क्वचबान्धवाः ॥ स्वकर्मोपार्जितंभोक्ता मूढयाहिचिरंपथि ॥ ४७ ॥

जाय है वहाँ दुःखित वह स्त्री पुत्र आदिके सौख्यकी स्मरण करै है ॥ ४५ ॥ जब धन भृत्य आदिके शोच करै है तब वहाँके निवासी
और यमके दूत यह कहत भये ॥ ४६ ॥ कहा धन कहाँ पुत्र कहाँ स्त्री कहाँ मित्र और कहाँ बाधन्व अपने कर्मनसों इकट्ठे किये
भयेको भोगे है । हे मूढ ! मार्गमें चिरं याहि अर्थात् एकवर्षतक चल ॥ ४७ ॥

हे परलोकपांथ अर्थात् परलोकके बटोही ! तू संबल जो यम हैं तिनके बलको नहीं जानेहै और यमके मार्गमें तुमसे प्राणनिके साथ जान-
नहारे हम जे दूत हैं तिनके बलकोहू नहीं जानै है और संबल जो यम हैं तिनके लिये यत्न नहीं करैहै याते यमयातना न दें ऐसो यत्न
नहीं करे है और तोको निश्चयकरिकै वा मार्गमें चलनो परैगो जामें क्रयविक्रय नहीं होयहै ॥ ४८॥ या मार्गको तो बालकहू जानैहै
हे मर्त्य ! तूने नहीं सुनो है और तैंने कहां पंडितनहूसो पुराणनके वाक्य नहीं सुने हैं ॥ ४९ ॥ तापीछे दूतनकरि ऐसे कहो गयो

जानासिसम्बलबलंबलमध्वगानांनोसम्बलाययतसेपरलोकपान्थ॥गन्तव्यमस्तितवनिश्चितमेवतेनमार्गेण यत्र
भवतःक्रयविक्रयौहि ॥४८॥ आबालख्यातमार्गोयंनैवमर्त्यश्रुतस्त्वया॥पुराणसंभववाक्यंकिंद्विजेभ्योपिनश्रु
तम्॥४९॥एवमुक्तस्ततोदूतैस्ताड्यमानश्चमुद्गरैः॥ निपतन्युत्पतन्धावन्पाशैराकृष्यतेबलात् ॥ ५० ॥अत्रदत्तं
सुतैःपौत्रैःस्नेहाद्वाकृपयाथवा॥मासिकंपिण्डमश्नातिततःसौरिपुरं व्रजेत् ॥५१॥ तत्रनाम्नास्तिराजा वै जंगमः
कालरूपधृक् ॥ तंदृष्ट्वाभयभीतोसौविश्रामेकुरुतेमतिम् ॥ ५२ ॥

और मुद्गरनसों ताडन कियो गयो वह गिरतो उठतो और दौरतो भयो बलकरि पाशनसों खैंचो जाय है ॥ ५० ॥ घरतें तेरहें दिन
प्राणी मार्गमें चलै है और अठारहवें दिन यह सौम्यपुरमें पहुँचे है या पुरमें पुत्र पौत्रनकरि स्नेहसों अथवा कृपाकरिकै दियेभये मासिक
पिंडको खाय है. तापीछे यमके पुरको जाय है ॥ ५१ ॥ वा सौरिपुरमें काल जो यम है तिनके रूपको धारण करनहारो जंगम

राजाहै वाको देखि भयभीत होके यह विश्राममें मति करे है ॥५२॥ और वा पुरमें गयो भयो वह अन्नसमत जलको भोजन करैहै और निश्चयकरिकै तीनी पक्षमें जो दियो जाय वह वा पुरको उल्लंघन करैहै ॥ ५३॥ तापीछे प्रेत अतिशीघ्रतायुक्त हो नगेन्द्र जे बडे वृक्ष हैं जामें ऐसे स्थानमें जाय है फिरि वहां वा पुरके मार्गमें रौद्र कहिये भयानक असिपत्रवन है वाको देखि दुःखी होके चिल्लाय है ॥ ५४ ॥ निर्दयी जे यमके दूत हैं तिनकरिकै वारंवार खैंचो गयो वह प्राणी रोवै है और दो महीनोंके अंतमें व्यथित हो वा पुरमें जाय है ॥ ५५ ॥

उदकंचान्नसंयुक्तंभुंक्तेतत्रपुरेगतः॥ त्रैपक्षिकेवैयद्दत्तंसतत्पुरमतिक्रमेत् ॥५३॥ ततोनगेन्द्रभवनंप्रेतोयातित्वरान्वितः॥ वनानितत्ररौद्राणिदृष्ट्वाक्रन्दतिदुःखितः॥५४॥ निर्घृणैःकृष्यमाणस्तुरुदतेचपुनःपुनः॥ मासद्वयावसानेतु तत्परंव्यथितोव्रजेत्॥५५॥ भुक्त्वापिण्डंजलंवस्त्रंदत्तंयद्बान्धवैरिह ॥ कृष्यमाणःपुनःपाशैर्नीयतेऽग्रेच किङ्करैः ॥५६॥ मासेतृतीयेसम्प्राप्तेप्राप्यगन्धर्वपत्तनम्॥ तृतीयमासिकंपिण्डंतत्रभुक्त्वाप्रसर्पति॥५७॥ शैलागमं चतुर्थेचमासिप्राप्नोतिवैपुरम् ॥ पाषाणास्तत्रवर्षन्तिप्रेतस्योपरिभूरिशः ॥ ५८ ॥

वहां बांधवनकरि दिये भये पिंड जल तथा वस्त्रनको भोगिके फिर यमदूतनकरि पाशनमें बाँधिकै खैंचो गयो वह प्राणी आगे पहुँचायो जाय है ॥५६ ॥ फिर तीसरे महीनेके आवनपै गन्धर्वपत्तनमें पहुँचाकर वहां तीसरे महीनेके पिंडको खायकै फिरि चले है॥५७॥ फिरि चौथे महीनेमें शैल जे पत्थर हैं तिनको है गिरनो जामें ऐसे शैलागमनाम पुरमें पहुंचे है. वामें प्रेतके ऊपर बहुतसे पत्थर बरसै हैं ॥ ५८ ॥

मात्रहू नहीं कियो, ताते हे देही ! जो तैंने कियो है वाको भोग ॥ ३७ ॥ न तो नित्य दान अर्थात् अन्नआदि और गवाह्निक कहिये एक गोके एक दिनकी तृप्ति करावनहारो तृणआदि न दियो है और वेद तथा शास्त्रके अर्थको प्रमाण नहीं मानो और पुराण नहीं सुने और उनके वक्ताको पूजन नहीं कियो ताते हे देही ! जो तैंने कियो है वाको भोग ॥ ३८ ॥ मैंने अपने स्वामीको हित वचन नहीं कियो और न कबहूँ अपने स्वामीको व्रत पालन कियो और न गुरूनको उचित गौरव कबहूँ कियो. ताते हे देही ! तैंने जो कियो है वाको तू भोग ॥ ३९ ॥ पतिकी सेवा करनीही स्त्रीनको परमधर्म है या वार्त्ताको जानिकै पतिको सेवन नहीं कियो और पतिके मरनेपै सतीहूँ

ननित्यदानंनगवाह्निकंकृतंनवेदशास्त्रार्थवचः प्रमाणितम् ॥ श्रुतंपुराणंनचपूजितोज्ञोदेहिन्क्वचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३८॥ भर्तुर्मयानैवकृतंहितंवचः प्रतिव्रतंनैवकदापिपालितम् ॥ नगौरवंक्वापिकृतंगुरूचितंदेहिन्क्वचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३९ ॥ नधर्मबुद्ध्यापतिरेवसेवितोवह्निप्रवेशोनकृतोमृतेपतौ ॥ वैधव्यमासाद्यतपोनसेवितंदेहिन्क्वचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ४० ॥ मासोपवासैर्नविशोषितंमयाचान्द्रायणैर्वानियमैःसविस्तरैः ॥ नारीशरीरंबहुदुःखभाजनंलब्धंमयापूर्वकृतैर्विकर्मभिः ॥ ४१ ॥

नहीं भई और विधवा होकै तपकोहू सेवन नहीं कियो ताते हे देही ! जो तैंने कियो है वाको भोग ॥४०॥ महीनेके व्रतनसों मैंने शरीरको नहीं सुखायो अथवा चान्द्रायणोंकरिकै अथवा विस्तारसहित नियमों करिकै मैंने नहीं सुखायो बहुतसे दुःखनको पात्र यह नारीको

चाहतो जो तू है ताके लिये नाव ले आयेहैं जो तेरो या नावपै चढनेके योग्यपुण्य होयतो आयजा अर्थात् नावपर बैठिजा॥६४॥६५॥सत्त्वके देखनहारे मुनीश्वरने दानको वितरण कहो है सो वा वितरणसों जो तरीजाय ताको वैतरणी कहैहैं॥६६॥धीवर कहैहैं कि जो तूने गोदान कियोहै नाव आवै, यह अन्यथा नहीं है उनके या वचनको सुनिकै हा दैव ! ऐसे कहत भयो॥६७॥वा प्राणीको देखिकै वह कहै हैं और वाको

दानंवितरणं प्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ इयंसातीर्यतेयस्मात्तस्माद्वैतरणीस्मृता ॥ ६६ ॥ यदित्वयाप्रदत्तागौस्तदानौरुपसर्पति ॥ नान्यथेतिवचस्तेषां श्रुत्वाहादैवभासते ॥ ६७ ॥ तंदृष्ट्वाकथतेसातुतां दृष्ट्वासोतिक्रन्दते ॥ अदत्तदानःपापात्मातस्यामेवनिमज्जति ॥ ६८ ॥ तन्मुखेकण्टकंदत्त्वादूतैराकाशसंस्थितैः ॥ बडिशेनयथामत्स्यस्तथापारंप्रणीयते॥ ६९॥षाण्मासिकंचयत्पिण्डंतत्रभुक्त्वाप्रसर्पति ॥ मार्गेसविलपन्यातिबुभुक्षापीडितोह्यलम्॥७०॥सप्तमेमासिसंप्राप्तेपुरंबह्वापदंव्रजेत्॥तत्रभुंक्तेप्रदत्तंयत्सप्तमेमासिपुत्रकैः॥७१॥

देखिके वह बहुत चिल्लायहै और जाने दान नहीं दियोहै वह पापी वहींमें डूबिजाय है॥६८॥तब आकाशमें स्थित ऐसे दूतनकरि वाके मुखमें काँटो डारिकै ऐसे खैंचे हैं जैसे बंशीसों मछलीको खैंच पार पहुँचावै है॥६९॥और छठे महीनेको जो पिंड है ताको वहां खायके फिर चलैहै और मार्गमें वह भूंखसों बहुतही दुःखीहो विलाप करतो भयो जायहै॥७०॥सातवें मासके प्राप्त होनेपै बह्वापदनाम पुरमें जायहै वा पुरमें

सातवें महीनेमें पुत्रनकरि दिये भये पिंडको खाय है ॥७१॥ वा पुरको उल्लंघन करि दुःखदपुरमें पहुँचै है हे पक्षिनके राजा ! आकाशमें जातोभयो वह प्राणी बहुतही दुःख पावै है ॥७२॥ आठवें महीनेमें पुत्रनकरि दिये भये पिंडको खायकै चले है फिरि नववें महीनेके पूरे होनेपै नानाक्रंदपुरको जाय है ॥७३॥ बडा दारुण पुकारते भये नानाप्रकारके जो आक्रंदगण हैं तिनको देखिकै आपहू शून्यहृदय तथा

तत्पुरंतुव्यतिक्रम्यदुःखदंपुरमृच्छति ॥ महद्दुःखमवाप्नोतिखेगच्छन्खेचरेश्वर ॥ ७२ ॥ मास्यष्टमेप्रदत्तंयत्पिण्डंभुक्त्वाप्रसर्पति ॥नवमेमासिसम्पूर्णेनानाक्रन्दपुरंव्रजेत् ॥ ७३॥ नानाक्रन्दगणान्दृष्ट्वाक्रन्दमानान्सुदारुणान् ॥ स्वयंचशून्यहृदयःसमाक्रन्दतिदुःखितः ॥ ७४ ॥ विहायतत्पुरं प्रेतस्तर्जितोयमकिङ्करैः ॥ सुतप्तभवनंगच्छेद्दशमेमासिकृच्छ्रतः ॥ ७५ ॥ पिण्डदानंजलंतत्रभुक्त्वापिनसुखी भवेत् ॥ मासिचैकादशेपूर्णेपुरंरौद्रंसगच्छति ॥ ७६ ॥ दशैकमासिकंतत्रभुंक्तेदत्तंसुतादिभिः ॥ सार्द्धेचैकादशे मासिपयोवर्षणमृच्छति॥७७॥ मेघास्तत्रप्रवर्षन्तिप्रेतानांदुःखदायकाः॥न्यूनाब्दिकंचयच्छ्राद्धंतत्रभुंक्ते सदुःखितः॥७८॥

दुःखित होके चिल्लाय है॥७४॥यमके दूतनकरि धमकायो गयो वह प्राणी वा पुरको छोडि दशवें महिनेमें बडे कष्टसों सुतप्तभवनको जाय है ॥७५ ॥वहां पिण्डदान तथा जलको भोजन करकेहू सुखी नहीं होय है और ग्यारहें महीनेके पूरे होनेपै वह रौद्रपुरको जाय है वहां पुत्रनकरि ग्यारहें महीनाको दियो भयो पिंड खाय है फिर साढे ग्यारहें महीनाके पूरे होनेपै पयोवर्षणमें पहुँचै है॥७६॥७७॥वहां प्रेतनके दुःख देनहारे

मेघ बरसै हैं और वहां न्यूनाब्दिक जो श्राद्ध है ताहि दुःखी होकै खायहै ॥७८॥ तापीछे वर्षके पूरे होनेपै वह प्रेत शीताढ्य नगरको जाय है वहां हिमालयतें सौगुनो अधिक शीत परैहै ॥ ७९ ॥ शीतसों पीडित भूंखो वह प्रेत दशोंदिशानको देखै है कि कहूँ कोऊ मेरो बान्धव है जो मेरे दुःख दूर करै ॥८०॥ यमके दूत कहैं हैं कि, कहां तेरो ऐसो पुण्यहै जाते यह दुःख जाय और वार्षिक जो पिंड है ताहि खायकै

सम्पूर्णे तु ततोवर्षेशीताढ्यंनगरंव्रजेत् ॥ हिमाच्छतगुणंतत्रमहाशीतंपतत्यपि ॥ ७९ ॥ शीतार्तःक्षुधितः सोपिवीक्षतेहिदिशोदश ॥ तिष्ठतेबान्धवःकोपियोमेदुःखंव्यपोहति ॥ ८० ॥ किंकरास्तेवदंत्यत्रकिन्तेपुण्यं हितादृशम् ॥ भुक्त्वाचवार्षिकंपिंडं धैर्यमालम्बतेपुनः ॥ ८१ ॥ ततःसंवत्सरस्यान्तेप्रत्यासन्नेयमालये ॥ बहुभीतिपुरेगत्वाहस्तमात्रं समुत्सृजेत् ॥८२॥ अंगुष्ठमात्रोवायुश्चकर्मभोगायखेचरः ॥ यातनादेहमासाद्य सहयाम्यैःप्रयातिच ॥ ८३ ॥ और्ध्वदैहिकदानानियैर्नदत्तानिकश्यप ॥ एवंकष्टेनतेयान्तिगृहीतादृढबन्धनैः ॥८४॥धर्मराजपुरे सन्तिचतुर्द्वाराणिखेचर ॥ यत्रायंदक्षिणद्वारमार्गस्तेपरिकीर्तितः ॥ ८५ ॥

फिरि धीरको धरै है ॥ ८१॥ तापीछे वर्षके अंतमें जब यमको घर निकट रह जाय है तब बहुभीतिपुरमें जायके हस्तमात्र जो शरीर है ताहि छोडि देय है॥८२॥कर्मनके भोगके लिये अंगुष्ठमात्र आकाशमें विचरणवालो वायु यातनाके देहको पायके यमदूतनके साथ जाय है॥८३॥ हे काश्यप ! जाने मरनेके समय और्ध्वदैहिक दान नहीं दिये हैं पुष्टबंधनसों बांधे भये वे या प्रकारके कष्टसों जांय है ॥ ८४॥ हे गरुड !

वहां चौथे महीनेके पिंडको खायके कुछ सुखी होय है तापीछे वह प्राणी पाँचवें महीनेमें क्रौंचनाम पुरमें जाय है ॥५९॥ वा समय क्रौंचपुरमें स्थित यह प्रेत पांचवें महीनेके पिंडको जो हाथसों दियोगयो है वाको खायके निर्दयी मनुष्य जामें रहेहैं ऐसे क्रूरपुरको जाय है ॥६०॥ साढेपांच मासन करिकैन्यून षाण्मासिकको जाय है वहां दिये भये पिंडसों कुछतृप्त होकै स्थित होयहै ॥ ६१ ॥ और आधेमुहूर्त्तलों

चतुर्थमासिकंपिण्डं भुक्त्वा किंचित्सुखीभवेत् ॥ ततो यातिपुरंप्रेतः क्रौंचंमासेऽथपञ्चमे ॥ ५९ ॥ हस्तदत्तंतदाभुंक्तेप्रेतः क्रौंचपुरेस्थितः ॥ यत्पञ्चमासिकंपिण्डंभुक्त्वाक्रूरपुरंव्रजेत् ॥ ६० ॥ सार्धैकैःपञ्चभिर्मासैर्न्यूनषाण्मासिकंव्रजेत् ॥ तत्रदत्तेनपिण्डेनघटेनाप्यायितःस्थितः ॥६१॥ मुहूर्तार्धन्तुविश्राम्यकंपमानःसुदुःखितः ॥ तत्पुरंतुपरित्यज्यतर्जितोयमकिंकरैः ॥६२॥ प्रयातिचित्रभवनंविचित्रोनामपार्थिवः ॥ यमस्यैवानुजोभ्रातायत्रराज्यंप्रशास्तिहि ॥ ६३ ॥ तंविलोक्यमहाकायंयदाभीतः पलायते ॥ तदासंमुखआगत्यकैवर्ता इदमब्रुवन् ॥६४॥वयंतेतर्तुकामाथमहावैतरणींनदीम् ॥ नावमादायसम्प्राप्तायदिते पुण्यमीदृशम् ॥ ६५ ॥

विश्राम लेके कांपतो भयो अतिदुःखी वह प्रेत यमके दूतन करि धमकायो गयो हो वा पुरको छोडिके ॥ ६२॥ जामें विचित्रनाम राजाहै ऐसे चित्रभवन नाम नगरको जाय है वह यमराजको छोटो भाई वह विचित्र वा पुरमें राज्यकरै है॥६३॥ वा बडे शरीरवालेको देखि जब भयभीत होकै भागै है तब वाके संमुख आयके कैवर्त्त जे नौका चलावनहारे धीवर हैं वे यह बोलत भये हमे या बडी वैतरणिनदीको उतारो

पुरतें आगे चवालीस योजन पर बडो यमको पुर है ॥ ३ ॥ हाहाकारकरियुक्त देखिके पापी चिल्लायँ हैं वा चिल्लानेको सुनिके यमपुरके विचरनहारे ॥ ४ ॥ सब वहां जायके द्वारपालसों कहैहैं धर्मध्वजनाम द्वारपाल वहाँ सदा रहै है ॥ ५ ॥ वह जायके सब शुभ अशुभ चित्रगुप्तसों कहै हैं तापीछे वाको चित्रगुप्त धर्मराजसों कहै हैं ॥ ६ ॥ हे तार्क्ष्य! नास्तिक है और सदा महापापनके करनेमें

हाहाकारसमायुक्तं दृष्ट्वा क्रन्दतिपातकी ॥ तत्क्रन्दितंसमाकर्ण्ययमस्यपुरचारिणः ॥४॥ गत्वाचतत्रतेसर्वेप्रतीहारंवदन्तिहि ॥ धर्मध्वजः प्रतीहारस्तत्रातिष्ठतिसर्वदा ॥५॥ सगत्वाचित्रगुप्तायब्रूतेतस्यशुभाशुभम् ॥ ततस्तंचित्रगुप्तोपिधर्मराजं निवेदयेत् ॥६॥ नास्तिकायेनरास्ताक्ष्यं महापापरताःसदा॥तांश्चसर्वान्यथायोग्यं सम्यग्जानातिधर्मराट् ॥ ७ ॥ तथापिचित्रगुप्तायतेषांपापंसपृच्छति ॥ चित्रगुप्तोपिसर्वज्ञः श्रवणान्परिपृच्छति॥८॥ श्रवणाब्रह्मणःपुत्राःस्वर्भूपातालचारिणः ॥ दूरश्रवणविज्ञानादूरदर्शनचक्षुषः ॥ ९॥ तेषां पत्न्यस्तथाभूताः श्रवण्यः पृथगाह्वयाः ॥ स्त्रीणां विचेष्टितंसर्वंताविजानन्तितत्त्वतः ॥ १० ॥

लगे रहैं उन सबनको धर्मराज यथायोग्य भलीभाँतिसों जानै हैं ॥ ७ ॥ ताहूपै वे चित्रगुप्तसों उनके पापनको पूछै हैं और चित्रगुप्तहू सर्वज्ञ हैं परंतु श्रवणसों पूँछै हैं ॥ ८ ॥ स्वर्ग पृथिवी और पातालमें फिरनेवाले श्रवण ब्रह्माके पुत्र हैं उनको दूरहीते सुननेको विशेषज्ञान है और उनके नेत्रहू दूरलों देखनेवाले हैं ॥ ९ ॥ और उनकी पत्नीहू उन्हींके समान हैं वे सब श्रवणी हैं परन्तु

उनके नाम जुदे २ हैं स्त्रीनके जितने काम हैं उनको वे सब तत्त्वसों जानैं हैं ॥ १० ॥ मनुष्यनकरि छिपो भयो तथा प्रत्यक्ष जो कह्यो जायहै और करो जायहै ता सबको वे तथा उनकी स्त्री चित्रगुप्तसों कहिदेय हैं ॥११॥ वे धर्मराजके चार कहिये दूत मनुष्यनको शुभ अशुभ मन वाणी तथा कायसों उत्पन्न पापको सब तत्त्वते जाने हैं ॥ १२ ॥ मर्त्य मनुष्य और अमर्त्य देवता इन सबनके

नरैःप्रच्छन्नप्रत्यक्षंयत्प्रोक्तं चकृतंचयत् ॥ सर्वमावेदन्त्येवाचित्रगुप्तायतेचताः ॥ ११ ॥ चारास्तेधर्मराजस्यमनुष्याणांशुभाशुभम् ॥ मनोवाक्कायजंकर्मसर्वंजवन्तितत्त्वतः ॥ १२॥ एवंतेषांशक्तिरस्तिमर्त्यामर्त्याधिकारिणाम् ॥कथयन्तिनृणां कर्मश्रवणाः सत्यवादिनः॥ १३ ॥ व्रतैर्दानैश्चसत्योक्त्यायस्तोषयातितान्नरः । भवन्तितस्यतेसौम्याःस्वर्गमोक्षप्रदायिनः ॥ १४ ॥ पापिनांपापकर्माणिज्ञात्वातेसत्यवादिनः॥धर्मराजपुरःप्रोक्ताजायन्तेदुःखदायिनीः ॥ १५ ॥ आदित्यचन्द्रावनिलोनलश्चद्यौर्भूमिरापोहृदयंयमश्च ॥ अहश्चरात्रिश्चउभेचसन्ध्येधर्मश्चजानातिनरस्यवृत्तम् ॥ १६ ॥

अधिकारी सत्य बोलनहारे श्रवण मनुष्यनके कर्मनको कहि देय है ॥१३॥व्रत दान तथा सत्य बोलनेसों जो नर उनको प्रसन्न करेहै वे सौम्य वाको स्वर्गमोक्षके देनेहारे होय हैं ॥ १४ ॥ पापीनके पापकर्मनको जानिके वे सत्यवादी धर्मराजके आगे कहै जानेसों दुःखदायी होय हैं ॥ १५ ॥ सूर्य चन्द्रमा पवन अग्नि आकाश पृथिवी जल हृदय यम दिन राति तथा दोनों संध्या और ये सब मनुष्यके वृत्तांतको

जानै हैं ॥ १६ ॥ धर्मराज चित्रगुप्त श्रवण और भास्कर आदिका यह जो शरीर है तामें स्थित सर्व पापपुण्यको देखै हैं ॥ १७ ॥ या प्रकार यम पापी मनुष्यनके पापनको अच्छे प्रकारसो निश्चयकरि उनको बुलायके अति भयंकर अपनो रूप दिखावै हैं ॥ १८ ॥ वे पापी दंड जिनके हाथमें बहुत बडो जिनको शरीर वे भैंसेके ऊपर बैठे भये ऐसे यमके भयंकर रूपको देखै है ॥ १९ ॥ प्रलयकालके और

धर्मराजश्चित्रगुप्तःश्रवणाभास्करादयः ॥ कायस्थंतत्रपश्यन्तिपापंपुण्यंचसर्वशः ॥ १७ ॥ एवं सुनिश्चयं कृत्वापापिनां पातकं यमः॥आहूयतान्निजंरूपंदर्शयत्यतिभीषणम्॥ १८॥ पापिष्ठास्तेप्रपश्यन्तियमरूपंभयंकरम्॥दण्डहस्तंमहाकायंमहिषोपरिसंस्थितम् ॥ १९॥ प्रलयाम्बुदनिर्घोषंकज्जलाचलसन्निभम्॥विद्युत्प्रभायुधैर्भीमंद्वात्रिंशद्भुजसंयुतम् ॥ २० ॥ योजनत्रयविस्तारंवापीतुल्यविलोचनम्॥दंष्ट्राकरालवदनं रक्ताक्षंदीर्घनासिकम्॥२१॥मृत्युज्वराधिभिर्युक्तश्चित्रगुप्तोपिभीषणः ॥ सर्वेदूताश्चगर्जन्तियमतुल्यास्तदान्तिके ॥ २२ ॥

मेघनकोसों जिनको शब्द और कज्जलके पर्वतके समान और बिजुलीकीसी जिनकी चमक ऐसे शस्त्रनसों भयानक और बत्तीस भुजानकारि युक्त ॥ २० ॥ विस्तारमें तीनि योजन बावडीके समान हैं नेत्र जिनके और डाढोंसों भयंकर है मुख जिनको और लाल जिनकी आँखें और लंबी नाक ॥२१॥ और मृत्यु तथा ज्वरआदिकन करि युक्त चित्रगुप्तहू विशेषकरिकैं भयानक हैं और उनके समीप यमके समान

धर्मराजके पुरमें चारिद्वार हैं तिनमेंसों यह दक्षिणद्वारको मार्ग तेरे लिये कल्पित कियो गयो है ॥ ८५ ॥ या महा घोरमार्गमें भूँख प्यासमों पीडित प्राणी जैसे जाँय हैं सो सब हमने कह्यो अब फिर और कहासुनो चाहो हो ॥ ८६ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायांगरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायांयममार्गनिरूपणो नामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अस्मिन्पथिमहाघोरेक्षुत्तृषाश्रमपीडिताः ॥ यथायान्तितथाप्रोक्तंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ८६॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेयममार्गनिरूपणंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥२॥ गरुडउवाच ॥ यममार्गमतिक्रम्यगत्वापापी यमालये ॥ कीदृशींयातनांभुंक्तेतन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ आद्यंतंचप्रवक्ष्यामिशृणुष्व वितनात्मज ॥ कथ्यमानेपिनरकेत्वंभविष्यासिकम्पितः ॥ २ ॥ चत्वारिंशद्योजनानिचतुर्युक्तानिकाश्यप ॥ बहुभीतिपुरादग्रे धर्मराजपुरंमहत् ॥ ३ ॥

गरुड बोले यमके मार्गको उलांघिकैं पापी यमके घरमें जायकै कैसी यातना भोगै है, हे केशव सो मोसों कहो ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले मैं आदिते अंतलौं कहौंगो हे विनताके पुत्र ! तुम सुनो नरकके कहनेमें तुम कांपि उठोगे ॥ २ ॥ हे काश्यप ! बहु भीति-

वे पापी वा समय चित्रगुप्तको यह वचन सुनिके अपने कर्मनको शोचते भये चुपचाप निश्चल होके बैठते हैं॥ ३०॥ चोरकी भाँति निश्चल बैठे भये उनको यमराज हूँ देखके उनके पापनकी यथायोग्य शासना जो दंड है ताकी आज्ञा देत हैं॥ ३१॥ ता पीछे वे निर्दयी दूत ताडना देकरि कहै हैं कि हे पापी! तू बडे घोर और अति भयंकर नरकको जा॥ ३२॥यमकी आज्ञा करनेहारे वे प्रचंड चंडक आदि दूत उन सब पापीनको

चित्रगुप्तस्येतिवाक्यं श्रुत्वातेपापिनस्तदा ॥ शोचन्तःस्वानिकर्माणितूष्णींतिष्ठन्तिनिश्चलाः ॥ ३० ॥ धर्म
राजोऽपितान्दृष्ट्वाचोरवन्निश्चलान्स्थितान् ॥ आज्ञापयतिपापानांशांतिंचैवयथोचिताम् ॥ ३१ ॥ ततस्ते
निर्दयादूतास्ताडयित्वावदंतिच ॥ गच्छपापिन्महाघोरान्नरकानतिभीषणान् ॥ ३२ ॥ यमाज्ञाकारिणो
दूताःप्रचण्डचण्डकादयः ॥ एकपाशेनतान्बध्वानयन्तिनरकान्प्रति ॥ ३३ ॥ तत्रवृक्षोमहानेकोज्वलद
ग्निसमप्रभः॥ पंचयोजनविस्तीर्णं एकयोजनमुच्छ्रितः ॥ ३४ ॥ तद्वृक्षेशृंखलैर्बद्ध्वाधोमुखंताडय-
न्तिते ॥ रुदंतिज्वलितास्तत्रतेषांत्राताननविद्यते ॥ ३५ ॥

एक पाशमें बांधि नरकको लेजाय हैं ॥ ३३ ॥ वहां एक वृक्ष बडो है जलती भई अग्निके समान वाकी कांतिहै और पांच योजन अर्थात् बीस कोश वाको फैलाव और एक योजन अर्थात् चारकोशको ऊँचो है ॥ ३४ ॥ वा वृक्षमें संकरनसों बांधिकै नीचेको है मुख जाको ऐसे

पापीकी वे दूत ताडना करै हैं वा वृक्षमें जरते भये वे रोवै हैं उनकी रक्षा करनहारो कोई नहीं है ॥ ३५ ॥ वा शाल्मलीके वृक्षमें बहुतसे पापी लटके हैं वे क्षुधापिपासासों पीडित हैं थके और यमके दूतनकरिकै ताडना किये जाय हैं ॥ ३६ ॥ आश्रयरहित वे पापी हाथ जोरिकै कहे हैं कि भो दूतो! हमारो अपराध क्षमाकरो ॥ ३७ ॥ वारवार वे पापी यमके दूतन करि लोहकी लाठिनसों और मुद्गर तोमर

तस्मिन्वैशाल्मलीवृक्षेलम्बंतेऽनेकपापिनः ॥ क्षुत्पिपासापरिश्रान्तायमदूतैश्चताडिताः ॥ ३६ ॥क्षमध्वंभोपरा
धंमेकृताञ्जलिपुटा इति ॥ विज्ञापयन्तितान्दूतान्पापिष्ठास्तेनिराश्रयाः ॥ ३७ ॥ पुनः पुनश्चतेदूतैर्हन्यन्ते लो
हयष्टिभिः ॥ मुद्गरैस्तोमरैः कुन्तैर्गदाभिर्मुसलैर्भृशम् ॥ ३८ ॥ ताडनाच्चैवनिश्चेष्टामूर्च्छिताश्चभवन्तिते ॥
तथानिश्चेष्टितान्दृष्ट्वाकिंकरास्तेवदन्तिहि ॥ ३९ ॥ भोभोःपापादुराचाराः किमर्थंदुष्टचेष्टितम् ॥ सुलभानिन
दत्तानिजलान्यन्यान्यपिकचित् ॥ ४० ॥ ग्रासार्द्धमपिनोदत्तंनश्ववायसयोर्बलिम् ॥ नमस्कृतानातिथयोन
कृतंपितृतर्पणम् ॥ ४१ ॥

गदा भाले तथा मूसरनसों बहुतही मारे जात भये ॥ ३८॥ मारनेसो वे चेष्टारहित और मूर्च्छित होजाय हैं तब ऐसे चेष्टारहित उन पापिनको देखिके दूत कहै हैं ॥ ३९ ॥ भोभो पापी दुराचारियो! तुमने दुष्टकाम काहेको कियो अति सुलभहू जे जलआदि तथा अन्य वस्तु कबहूँ नहीं दीन्ही ॥ ४० ॥ तैंने कबहूँ आधो ग्रासहू नहीं दियो और न कोआ कुत्तानको बलि दीन्हों और न कबहूँ अभ्यागतनको

नमस्कार किया और न पितरनको तर्प्पण कियो ॥४१॥ और यम तथा चित्रगुप्तको कबहूँ उत्तम ध्यान नहीं कियो और न उनको मंत्र जप्यो जाते यातना न होय ॥४२॥ और न तौ कोई तीर्थ कियो और न देवता पूजे गृहस्थाश्रममें स्थितहू जे तुम हौ तिन करि हंतकार जो अन्नभाग है सोऊ नहीं दियो गयो ॥ ४३ ॥ और संतनहूकी सेवा नहीं कीन्ही तातें तू अपने पापके जो फल हैं ताको भोग और जाते तू धर्म

यमस्यचित्रगुप्तस्यनकृतंध्यानमुत्तमम् ॥ नजप्तश्चतयोर्मन्त्रोनभवेद्येनयातना ॥ ४२ ॥ नापिकिञ्चित्कृतं तीर्थंपूजितानैवदेवताः ॥ गृहाश्रमस्थितेनापिहन्तकारोपिनोद्धृतः ॥ ४३ ॥ शुश्रूषिताश्चनोसन्तोभुंक्ष्वपाप फलंस्वकम् ॥ यतस्त्वंधर्महीनोसिततः संताडयसेऽशुभम् ॥ ४४ ॥ क्षमापराधं कुरुते भगवान्हरिरीश्वरः ॥ वयं तु सापराधानां दंडदा हि तदाज्ञया ॥ ४५ ॥ एवमुक्त्वाचतेदूतानिर्दयंताडयन्तितान् ॥ ज्वलदं गारसदृशाः पतितास्ताडनादधः ॥४६॥ पतनात्तस्यपत्रस्यगात्रच्छेदोभवेत्ततः॥ तानधः पतिताञ्छ्वानोभक्षयं तिरुदन्तिते ॥ ४७ ॥ रुदन्तस्तेततोदूतैर्मुखमापूर्यरेणुभिः ॥ निबद्ध्यविविधैःपाशैर्हन्यन्तेकेपिमुद्गरैः ॥४८॥

करिके हीन है ताहीसे बुरी मारसों मारो जाय है ॥ ४४ ॥ भगवान् जे हरि ईश्वर हैं वे अपराधनकी क्षमा करैं और हम तौ उनकी आज्ञासों दंडके देनहारे हैं ॥ ४५ ॥ ऐसे कहिके वे दूत उनको निर्दय होके ताडना करने लगे और ताडन करनेसों जलते भये अङ्गारेके समान वे नीचे गिरे ॥४६॥ गिरनेसों पतनकरिके शरीर कटिजाय है सब उन नीचे गिरेभये मनुष्योंको कुत्ते खाय हैं और वे पापी रोवै हैं ॥४७॥ तब

बहुतसे दूत गर्जे हैं ॥ २२॥ उनसे भयभीत हो वह दुष्ट प्रेत हाय हाय पुकारै है और नहीं दियो है दान जाने ऐसो वह पापी काँपै है और चिल्लाय है ॥ २३ ॥ ता पीछे चिल्लाते भये और अपने कर्मनको शोचतेभये उन पापीनसों चित्रगुप्त यमकी आज्ञाते कहै हैं ॥ २४ ॥ अरे पापी दुराचारियो अविवेकियो तुमने अहंकारसों दूषित होके काहेको पाप इकट्ठे किये ॥ २५ ॥ काम तथा क्रोधतें और पापीनकी संग-

तंदृष्ट्वाभयभीतस्तु हाहेतिवदतेखलः ॥ अदत्तदानः पापात्माकम्पतेक्रन्दते पुनः ॥२३ ॥ ततोवदंतितान्सर्वा न्क्रन्दमानांश्चपापिनः ॥ शोचंतः स्वानिकर्माणिचित्रगुप्तोयमाज्ञया ॥ २४॥ भोभोःपापादुराचारा अहंकारप्र दूषिताः॥ किमर्थमर्जितंपापं युष्माभिरविवेकिभिः ॥२५॥ कामक्रोधाद्युत्पन्नंसंगमेनचपापिनाम्॥तत्पापं दुःखदंमूढाःकिमर्थंचरितं जनाः ॥२६॥ कृतवन्तःपुरायूयंपापान्यत्यंतहर्षिताः ॥ तथैवयातनाभोग्याःकिमि दानींपराङ्मुखाः ॥२७॥ कृतानियानिपापानियुष्माभिःसुबहून्यपि ॥ तानिपापानिदुःखस्यकारणंनचवंचना ॥ २८ ॥ मूर्खेपिपंडितेवापिदरिद्रेवाश्रियान्विते ॥ सबलेनिर्बलेवापिसमवर्तीयमः स्मृतः ॥ २९ ॥

तितें जो पाप उत्पन्न भयोहै हे मूढो ! वह पाप दुःखदेनेहारो है हे जनो तुमने काहेको कियो है॥ २६ ॥ पहले तुमने बहुतही हर्षित होके जैसे पाप किये हैं वैसेही यमकी यातना भोगनी योग्य है अब काहेको मुख मोडोहो ॥ २७॥ तुमने जा बहुतसे पाप किये वेही पाप दुःखके कारण हैं कुछ वंचना नहीं है ॥२८॥ मूर्खमें भी अथवा पंडितमें दरिद्रीमें तथा लक्ष्मीयुक्तमें सबलमें तथा निर्बलमें यम समान वर्त्तनेवाले हैं ॥२९॥

जाय हैं और कोई पर्वतके ऊपरसों डारे जांय हैं और कीरनके कुण्डमें डुबे भये कोऊ कीरन करिकै व्यथा दिये जाय हैं ॥ ५४ ॥ वज्रके समान जिनकी चोंचें ऐसे बडे कौआनकरि और मांसके चाहनारे गीधनकरि शिरमें चोंथे जायँ हैं और नेत्रनमें तथा मुखमें चोंचें मारे हैं ॥५५॥ कोई अपने ऋणको मागे हैं और कोई कहैं हैं कि, मेरो धन दे मेरो धन खालियो है अब तोको मैंने यमलोकमें देखो है ॥५६॥

वज्रतुण्डैर्महाकाकैर्गृध्रैरामिषगृध्नुभिः ॥ निष्कुष्यन्तेशिरोदेशेनेत्रेवास्येचचञ्चुभिः ॥ ५५ ॥ ऋणंवैप्रार्थयन्त्यन्येदेहिदेहिधनंमम ॥ यमलोके मयादृष्टोधनंमेभक्षितंत्वया ॥ ५६ ॥ एवंविवदमानानांपापिनांनरकालये ॥ छित्त्वासंदंशकैर्दूतामांसखण्डान्ददन्तिच ॥ ५७ ॥ एवंसंताडयतान्दूताःसंकृष्य यमशासनात ॥ तामिस्रादिषुघोरेषुक्षिप्यन्तेनरकेषुच ॥ ५८ ॥ नरकादुःखबहुलास्तत्रवृक्षसमीपतः ॥ तेष्वस्तियन्महद्दुःखंतद्वाचामप्यगोचरम् ॥ ५९ ॥

नरकमें ऐसे झगडो करते भये पापीनके मांसको सँडसीनसों काटि दूत उनको मांसका खंड देय हैं ॥ ५७ ॥ दूत या प्रकार उनकी ताडना करिकै यमकी आज्ञासों तामिस्र आदि जे घोर नरक हैं तिनमें डारिदेय हैं ॥ ५८ ॥ नरकनमें तो बहुत दुःख है परंतु वहां व ॥ १७ ॥

वृक्षके समीप जा बडो दुःख है वह वचननसोहूँ नहीं कहो जाय है ॥ ५९ ॥ हे गरुड ! चौराशीलक्ष नरक हैं तिनके मध्यमें बहुतही घोर इक्कीस मुख्य हैं॥६०॥ उनके नाम कहे हैं तामिस्र १ लोहशंकु २ महारौरव ३ शाल्मली ४ रौरव ५ कुड्मल ६कालसूत्र ७ पूतिमृत्तिक८॥६१॥संघात ९ लोहितोद १० सविष ११ संप्रतापन १२ महानिरय १३काकोल१४ संजीव१५महापथ१६ ॥६२॥ अवीचि १७

चतुरशीतिलक्षाणिनरकाःसन्तिखेचर ॥ तेषांमध्येघोरतमाधौरेयास्त्वेकविंशतिः ॥ ६० ॥ तामिस्रोलोहशंकुश्च महारौरवशाल्मली ॥ रौरवः कुड्मलः कालसूत्रकः पूतिमृत्तिकः ॥६१॥ संघातो लोहितोदश्च सविषः संप्रतापनः॥ महानिरयकाकोलौ संजीवनमहापथौ ॥ ६२ ॥ अवीचिरन्धतामिस्रः कुम्भीपाकस्तथैवच ॥ संप्रतापननामैकस्तपनस्त्वेकविंशतिः ॥ ६३ ॥ नानापीडामयाः सर्वेनानाभेदैःप्रकल्पिताः ॥ नानापापविपाकाश्चाकिङ्करैर्घैरधिष्ठिताः ॥ ६४ ॥

अंधतामिस्र १८ कुंभीपाक १९ संप्रतापन नाम २० और तपन २१ ये इक्कीस हुये ॥ ६३ ॥ नानाप्रकारकी हैं पीडा जिनमें ऐसे ये नरनक हैं और नानाप्रकारके भेदनकरिके कल्पना किये गये और जे नानाप्रकारके पापनके फलनके देनहारेहैं और दूतनके समूह इनके

अधिष्ठाताहैं ॥ ६४ ॥ इनमें परे भये मूढ पापी धर्मकरि रहित वहां कल्पके अंतलौं उन उन नरकनकी यातनाको भोगे हैं ॥ ६५ ॥ जो तामिस्र अंधतामिस्र और रौरव आदिकी आपके संगते प्राप्त भई जे यातना तिनको नर और नारी भोगे हैं॥६६॥या प्रकार कुटुंबको पालन करनहारे अथवा आपनोही पेट भरनहारे दोनोंको अर्थात् अपने देह और कुटुम्बको छोडिके परलोकमें आयके ऐसे फलको भोगैहैं ॥ ६७॥

एतेषुपतितामूढाः पापिष्ठाधर्मवर्जिताः ॥ तत्रभुञ्जन्तिकल्पान्तेतास्तानरकयातनाः ॥ ६५ ॥ यास्तामिस्रा
न्धतामिस्रारौरवाद्याश्चयातनाः ॥ भुंक्तेनरोवानारीवामिथः संगेननिर्मिताः ॥ ६६ ॥ एवंकुटुम्बंबिभ्राणउदर
म्भरएववा॥ विसृज्येहोभयंप्रेत्यभुंक्ते तत्फलमीदृशम् ॥ ६७ ॥ एकः प्रपद्यतेध्वान्तं हित्वेदं स्वंकलेवरम् ॥
कुशलेतरपाथेयोभूतद्रोहेणयद्भृतम् ॥ ६८ ॥ दैवेनासादितंतस्यशमलेनिरयेपुमान् ॥ भुंक्तेकुटुम्बपोषस्यहृत
द्रव्यइवातुरः॥६९॥॥केवलेनह्यधर्मेणकुटुम्बभरणोत्सुकः॥यातिजीवोऽन्धतामिस्रंचरमंतमसः पदम् ॥७० ॥

अपने शरीरको छोडके एकही ध्वांत कहिये अन्धतम नरकको जायहै भोगनवाले नहीं जायहै और भूतनको द्रोहकरिकै जो पाथेय कहिये राहको खर्चसो वह अच्छा नहीं है॥६८॥वह कुटुंबके पालनेको पाप दैवकरि पहुँचायो भयो वाहि मिले हैं वा पापको वह पुरुष नरकमें हरि लिई गई है द्रव्य जाकी ऐसे आतुरके समान भोग करे हैं॥६९॥जो केवल अधर्महीसों कुटुंबके पालनेको उद्यत रहै हैं वह जीव सबसों पिछलो

रोवते भये उन पापिनके मुखनमें दूत धूलिको भरै हैं और नाना प्रकारके पाशनसों बांधि कोई मुद्गरनसों मारे जाय हैं ॥ ४८ ॥ और कोई पापी काठकी भांति आरानसों चीरिकै दो फांक किये जाय हैं और कोई धरतीमें डारिकै कुलहाडीसों टुकडे २ किये जाय हैं ॥ ४९ ॥ कोई पापी आधा गढिहेमें गाडदियो जाय है और वाके माथेमें तीर मारै हैं और कोऊ कोल्हूमें स्थित हे और ईखकी भांति

पापिनः केपिभिद्यन्तेक्रकचैः काष्ठवद्द्विधा ॥ क्षिप्त्वाचान्येधरापृष्ठेकुठारैः खण्डशःकृताः॥४९॥ अर्धखात्वा
वटेकेचिद्भिद्यन्तेमूर्ध्निसायकैः ॥ अपरेयन्त्रमध्यस्थाः पीडयन्तेचेक्षुदण्डवत् ॥५०॥ केचित्प्रज्वलमानैस्तुसा
गारैः परितोभृशम् ॥ उल्मुकैर्वेष्टयित्वाचध्मायन्तेलोहपिण्डवत् ॥ ५१ ॥ केचिद्घृतमयेपाकेतैलपाके
तथापरे ॥ कटाहक्षिप्तवटवत्प्रक्षिप्यन्तेयतस्ततः ॥ ५२ ॥ केचिन्मत्तगजेन्द्राणांक्षिप्यन्तेपुरतः पथि ॥ बद्धा
हस्तौचपादौच क्रियन्तेकेप्यधोमुखाः ॥ ५३ ॥ क्षिप्यन्तेकेपिकूपेषुपात्यन्तेकेपिपर्वतात् ॥ निमग्नाःकृमि
कुण्डेषुतुद्यन्तेकृमिभिः परे ॥ ५४ ॥

पेरे जाय हैं ॥ ५० ॥ कोई जरते भये अंगारन समेत अधजरी लकरीनसों चारों ओरसों लपेटि लोहके पिंडके समान धौंके जाय हैं ॥ ५१ ॥ कोई घीके पाकमें तथा कोई तेलके पाकमें कराहीमें डारे भये बडेके समान इतको उतको चलाये जायँ हैं ॥ ५२ ॥ कोई मार्गमें मतवारे हाथिनके आगे डारे जायँ हैं और कोइके हाथ पांव बांधिकै नीचेको मुख कियो जाय है ॥ ५३ ॥ कोई कुंवानमें डारे

हीके मार्गमें होके वामें जाय हैं॥ ३॥याही महादुःखको देनहारी मार्गमें वैतरणी नदी है वामें जे पापी जायँ हैं तिनको मैं तुमसो कहौंहों ॥ ४ ॥ ब्रह्महत्यारे मदिरा पीवन हारे गौकी हत्या करनेहारे बालकके मारनहारे स्त्रीके मारनहारे गर्भके गिरावनहारे और जे छिपेभये पापके करनहारे हैं ॥ ५ ॥ और जे गुरुको धन हरनहारे अथवा देवताका तथा ब्राह्मणका धन लेनहारे और जे स्त्री तथा बालकको

अस्मिन्नेवमहादुःखेमार्गेवैतरणीनदी ॥ तत्रयेपापिनोयांतितानहंकथयामिते ॥ ४ ॥ ब्रह्मघ्नाश्वसुरापाश्च गोघ्नावाबालघातकाः ॥ स्त्रीघातीगर्भपातीचयेचप्रच्छन्नपापिनः ॥ ५ ॥ येहरंतिगुरोर्द्रव्यंदेवद्रव्यंद्विजस्य वा ॥ स्त्रीद्रव्यहारिणोयेचबालद्रव्यहराश्चये ॥ ६॥ येऋणंनप्रयच्छान्तियेवै न्यासापहारकाः ॥ विश्वासघात-काये चसविषान्नेनमारकाः ॥ ७ ॥ दोषग्राहीगुणश्लाघीगुणवत्सुसमत्सराः ॥ नीचानुरागिणोमूढाःसत्संग तिपराङ्मुखाः ॥ ८ ॥

धन हरिलेय हैं ॥ ६ ॥ और जे ऋणको नहीं देय हैं और जे धरोहरको पचायलेय हैं और जे विश्वासघाती हैं और जे अन्नमें विष मिलायके देय मारते हैं ॥ ७ ॥ और दोषका ग्रहण करनहारो और गुणनकी श्लाघा न करनहारो और गुणवाननको ईर्षा करनहारो और

नीचसों प्रीति करनहारो मूर्ख और सत्संगतिसे जे दूरि रहैं हैं ॥ ८ ॥ तीर्थनकी सज्जननकी सत्कर्मनकी और गुरु तथा देवतानकी निंदा करनहारे और पुराण वेद मीमांसा और न्याय तथा वेदान्तके दूषित करनहारे ॥ ९ ॥ और जे दुःखीको देखि प्रसन्न होय हैं और प्रसन्नको दुःख देनेहारे होय हैं और जे दुष्ट वचन कहनहारे हैं और जिनके चित्त सदा दुष्टही रहै हैं ॥ १० ॥और जे हितवचनको नहीं सुनै हैं

तीर्थसज्जनसत्कर्मगुरुदेवविनिन्दकाः ॥ पुराणवेदमीमांसान्यायवेदान्तदूषकाः ॥ ९ ॥ हर्षितादुःखितंदृष्ट्वाह र्षितेदुःखदायकाः॥दुष्टवाक्यस्यवक्तारोदुष्टचित्ताश्चयेसदा॥ १०॥नशृण्वन्तिहितंवाक्यंशास्त्रवार्ताकदापिन ॥ आत्मसंभाविताःस्तब्धा मूढाः पंडितमानिनः ॥ ११ ॥ एतेचान्येचबहवः पापिष्ठाधर्मवर्जिताः ॥ गच्छ न्तियममार्गेहिरोदमानादिवानिशम् ॥ १२ ॥ यमदूतैस्ताडचमानायान्तिवैतरणींप्रति ॥ तस्यांपतन्तिये पापास्तानहंकथयामिते ॥ १३ ॥

और शास्त्रकी वार्ताको कबहूँ नहीं सुनै हैं और जे आपको कुछ योग्य समझिकरि घमंडमें भरे रहै हैं और जे मूर्ख हैं परंतु आपको पण्डित मानै हैं॥ ११॥ ये सब तथा और बहुतसे धर्मकरि हीन पापी रातिदिन रोवते भये यमके मार्गमें जायहैं ॥१२॥ और यमके दूतनकरि ताड-

नाकरे गये वे पापी वैतरणीको जाय हैं वा नदीमें जे पापी गिरैं तिनको म तुमसो कहौंहौं ॥ १३ ॥ और जे माता पिता तथा गुरुको और आचार्य तथा पूज्यको अपमान करैं हैं वे पापी वा वैतरणीमें डूबैंहैं ॥ १४ ॥ पतिव्रता तथा सुन्दर जाको शील और कुलीन तथा विनयसों युक्त ऐसी स्त्रीको जे द्वेष करिकै छोडि देय हैं वे वैतरणीमें गिरैं हैं ॥ १५ ॥ और जे सज्जनके हजारन गुणनमें दोषनको आरोपण करैं हैं

मातरंयेवमन्यन्तेपितरं गुरुमेवच ॥ आचार्यंचापिपूज्यञ्चतस्यांमज्जन्तितेनराः ॥ १४ ॥ पतिव्रतांसाधुशीलांकुलीनांविनयान्विताम् ॥ स्त्रियंत्यजन्तियेद्वेषाद्वैतरण्यांपतन्तिते ॥ १५ ॥ सतांगुणसहस्रेषुदोषानारोपयन्तिये॥तेष्ववज्ञांचकुर्वन्तिवैतरण्यांपतन्तिते ॥ १६ ॥ ब्राह्मणायप्रतिश्रुत्ययथार्थंनददातिसः ॥ आहूयनास्तियोब्रूयात्तयोर्वासश्चसंततम् ॥ ॥ १७ ॥ स्वयंदत्तापहर्ताचदानंदत्त्वानुतापकः ॥ परवृत्तिहरश्चैवदानेदत्ते निवारकः ॥ १८ ॥ यज्ञविध्वंसकश्चैवकथाभङ्गकरश्चयः ॥ क्षेत्रसीमाहरश्चैवयश्चगोचरकर्षकः ॥ १९ ॥

और उनको अनादर करैं हैं वे वैतरणी नदीमें गिरैं हैं ॥ १६ ॥ ब्राह्मणके लिये प्रतिज्ञा करिकै जो ठीक नहीं देय है और जो बुलायकै नाहीं करै है इन दोनोंको सदा वाहीमें वास रहै है ॥ १७ ॥ जो आपही दान देकै फिरि छीनि लेयहै और जो दानको देकै पीछे पछिताय है और जो पराई जीविकाको हरिलेय हैं और जो दिये भये दानको रोकै है ॥ १८ ॥ और यज्ञको विध्वंस करनहारो है और कथामें जो भंगकरै है ॥ २० ॥

तमको स्थान जो अन्धतामिस्र नाम नरक है तामें जाय है ॥ ७० ॥ नरकलोक जो मनुष्यदेहको पावनो है ताते पहले जितनी यातना हैं उनको क्रमसों उल्लंघन करि शुद्ध होकै फिरि या भूलोकमें आवै है अर्थात् जन्मलेय है ॥ ७१ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनय पण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां यमयातनानिरूपणो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥ गरुड बोले

अधस्तान्नरलोकस्ययावतीर्यातनादयः ॥ क्रमशःसमनुक्रम्यपुनरत्राव्रजेच्छुचिः॥ ७१ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेयमयातनानिरूपणंनामतृतीयोध्यायः ॥३॥ गरुडउवाच ॥ कैर्गच्छन्तिमहामार्गेवैतरण्यांपतंति कैः ॥ कैः पापैर्नरकेयांतितन्मेकथयकेशव॥ १ ॥श्रीभगवानु च॥सदैवाकर्मनिरताः शुभकर्मपराङ्मुखाः ॥ नरकान्नरकंयांतिदुःखाद्दुःखंभयाद्भयम् ॥२॥ धर्मराजपुरेयांतित्रिभिर्द्वारैस्तुधार्मिकाः॥पापास्तुदक्षिणद्वार-मार्गेणैव व्रजंतितत् ॥ ३ ॥

कौनसे पापनसों महामार्गमें जायँहैं और कौन कौनसों वैतरणीमें गिरै हैं और किन पापनसौं नरकमें जायहैं हे केशव ! सो मोसों कहो ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले जे मनुष्य शुभ कर्मनको छोडिकै अशुभकर्महीमें सदा लगे रहैंहैं वे एक नरकतें दूसरे नरकमें जाय हैं और एक दुःखते दूसरो दुःख और एक भयते दूसरो भय होयहैं॥२॥तीन द्वारोंसे होके धर्मात्मा यमपुरको जायँहैं और पापी तो दक्षिण द्वार-

नको वा वैतरणीमें डारै हैं ॥२५॥ हे खगाधिप ! सब नरकनमें मुख्य जो इक्कीस नरक हैं तिनमें धुरंधर कहिये सबसे अधिक है याहीते पापीनको यमदूत वामें डारै हैं ॥ २६ ॥ जो कृष्णा गौ नहीं दान कीन्ही है और ऊर्ध्वदेहकी क्रिया नहीं कीन्ही वह वामें बडे दुःखको भोगिकै वाको तटमें उत्पन्न जो वृक्ष है ताको जायहै ॥ २७ ॥ झूठी गवाहीके देनहारे और झूठे धर्ममें तत्पर और छलसों धनके

यावैधुरंधरासर्वधौरेयाणांखगाधिप॥ अतस्तस्यांप्रक्षिपन्तिवैतरण्यांचपापिनः ॥ २६ ॥ कृष्णागौर्यैर्दिनोदत्ता नोर्ध्वदेहक्रियाः कृताः॥तस्यांभुक्त्वामहद्दुःखंयान्तिवृक्षंतटोद्भवम् ॥२७॥ कूटसाक्ष्यप्रदातारः कूटधर्मपराय णाः॥छलेनार्जनसंसक्ताश्चौर्यवृत्त्याचजीविनः॥२८॥छेदयन्त्यतिवृक्षांश्चवनारामविभंजकाः॥ व्रतंतीर्थंपरित्य ज्यविधवाशीलनाशकाः ॥ २९ ॥ भर्तारंदूषयेन्नारीपरंमनासिधारयेत् ॥ इत्याद्याःशाल्मलीवृक्षेभुंजते बहुताड नम् ॥ ३० ॥ ताडनात्पतितान्दूताःक्षिपंतिनरकेषुतान् ॥ पतन्तितेषुयेपापास्तानहंकथयामिते ॥ ३१ ॥

जोरनेमें लगे भये अथवा चोरकी जीविकासो जीवनहारे ॥ २८ ॥ जे ऊंचे वृक्षनको काटे हैं और जे बाग तथा फुलवारीको तोरै हैं और जे व्रत तथा तीर्थनको छोडिकै विधवाके शीलको नाश करै हैं ॥ २९ ॥ जो नारी अपने पतिको दोष लगायकै दूसरे पतिको मनमें धारण करै है इत्यादिक पापी शाल्मलीके वृक्षमें बहुतसे ताडनाको भोगे हैं ॥ ३० ॥ ताडन करनेसों वामेंते गिर परै हैं

उनको दूत नरकमें डारै हैं और वामेंते जे गिरै हैं उनके पापनको म तुमसों कहौंहौं ॥ ३१ ॥ नास्तिक जे ईश्वरको नहीं मानै हैं अथवा परलोकमें दानको कुछ फल नहीं होय है जो ऐसे कहैहैं और जे परंपराते चली आई जो धर्मकी मर्यादा है ताको नहीं मानै हैं और कदर्य जे स्मृतिमें कहे हैं अर्थात् आपको तथा धर्मके कामको और पुत्र तथा स्त्रीको और देवता अतिथि तथा भृत्य जे

नास्तिकाभिन्नमर्यादाः कदर्या विषयात्मकाः ॥ दाम्भिकाश्चकृतघ्नाश्चतेवैनरकगामिनः ॥ ३२ ॥ कूपानां चतडागानांवापीनांदेवसद्मनाम् ॥ प्रजागृहाणांभेत्तारस्तेवैनरकगामिनः ॥ ३३ ॥ विसृज्याश्नन्तियेदारा ञ्छिशून्भृत्यांस्तथागुरून् ॥ उत्सृज्यपितृदेवेज्यांतेवैनरकगामिनः ॥ ३४ ॥ शंकुभिःसेतुभिःकाष्ठैः पाषाणैः कण्टकैस्तथा ॥ येमार्गमुपरुन्धन्तितेवैनरकगामिनः ॥ ३५ ॥

सेवक हैं इन सबनको दुःख दे वह और जाको मन सदा संसारके विषयनमेंही लगो रहै है और दांभिक जे लोकके ठगनेके लिये झूठे जप तप आदि करते हैं और कृतघ्न कहिये जे करेभये उपकारको नहीं मानै हैं ॥ ३२ ॥ कुंआ तालाब बावडी देवालय और प्रजाके घरनको फोरनहारे हैं वे निश्चय नरकमें जाय हैं ॥ ३३ ॥ जे स्त्री बालक सेवक तथा गुरुनको छोडिकै भोजन करैहैं और जे पितृ देवता तथा वैश्वदेव यज्ञको छोडिकै भोजन करैहैं वे निश्चय नरकमें जाय हैं ॥ ३४ ॥ कीलनसों बांधनसों

काठनसों पत्थरनसों तथा कांटनसों जे मार्गको रोकै हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥३५॥ शिव शिवा कहिये गौरी विष्णु सूर्य गणेश सद्गुरु और बुध कहिये पंडित इन सबनको जे मंद नहीं पूजैहैं वे निश्चय नरकमें जानहारे होयहैं ॥ ३६ ॥ ब्राह्मण दासीको सेजपर सुवायके अधोगति जो नरक है ताहि प्राप्त होय है और शूद्रास्त्रीमें संतानको उत्पन्न करिके ब्राह्मणपनेसे जाय है ॥ ३७ ॥ वह

शिवं शिवां हरिंसूर्यं गणेशं सद्गुरुंबुधम् ॥ नपूजयन्ति येमंदास्तेवैनरकगामिनः ॥३६॥ आरोप्यदासींशयने विप्रोगच्छेदधोगतिम् ॥ प्रजामुत्पाद्यशूद्रायांब्राह्मण्यादेवहीयते ॥ ३७ ॥ ननमस्कारयोग्योहिसकदापिद्विजाधमः ॥ नपूजयंतियेमूढास्तेवैनरकगामिनः ॥ ३८ ॥ ब्राह्मणानांचकलहंगोयुद्धंकलहप्रियाः ॥ नवर्जन्त्यनुमोदंतेतेवैनरकगामिनः ॥ ३९ ॥ अनन्यशरणस्त्रीणामृतुकालव्यतिक्रमम् ॥ येप्रकुर्वन्तिविद्वेषात्तेवै नरकगामिनः ॥ ४० ॥

अधम ब्राह्मण कैसेहू नमस्कारके योग्य नहींहै और जे मूढ देवता आदिकी पूजा नहीं करै है वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥ ३८ ॥ जिनको कलह प्यारो है ऐसे जे मनुष्य ब्राह्मणनके कलहको और गौअनके युद्धको निवारण नहीं करते हैं और उलटो उनके युद्धको उत्साह देवे हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥ ३९ ॥ जिनको पतिके सिवाय और कोई शरण नहीं है ऐसी स्त्रीनके समीप जे वैरसों नहीं जाय है

खेतकी सीमाको जो हरिलेय है तथा जो गौअनके चरिवेके स्थानको जोतै हैं ॥ १९ ॥ और ब्राह्मण होकै जो रस जे घी दूध नोनआदि हैं तिनको बेचनहारो और पांच प्रकारकी जे वृषली हैं तिनको पति और वेदमें कहे भये यज्ञके विना अपने लिये पशुको मारनहारो ॥२०॥ ब्रह्मकर्मतें जो भ्रष्ट है और मांसको खानहारो और मद्यको पीवन हारो और जाको स्वभाव निरंकुशहै और जो शास्त्रके पढनेसों रहितहै॥२१ और जो शूद्र वेदके अक्षरको पढै है तथा कपिला गौको दूध पीवै है अथवा यज्ञोपवीतको धारणी करैहै वा ब्राह्मणीको पति होयहै ॥२२॥

ब्राह्मणोरसविक्रेतायदि स्याद्वृषलीपतिः ॥ वेदोक्तयज्ञादन्यत्रस्वात्मार्थपशुमारकः ॥२०॥ ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टो मांसभोक्ताचमद्यपः ॥ उच्छृंखलस्वभावो यः शास्त्राध्ययनवर्जितः ॥२१॥वेदाक्षरंपठेच्छूद्रःकापिलं यः पयः पिबेत् ॥ धारयेद्ब्रह्मसूत्रंचभवेद्वाब्राह्मणीपतिः ॥ २२ ॥ राजभार्याभिलाषीचपरदारापहारकः ॥ कन्यायां कामुकश्चैवसतीनां दूषकश्चयः॥२३॥एतेचान्येचबहवोनिषिद्धाचरणोत्सुकाः॥विहितत्यागिनोमूढावैतरण्यां पतन्तिते॥२४॥ सर्वमार्गमतिक्रम्य यान्तिपापायमालये॥ पुनर्यमाज्ञयागत्य दूतास्तस्यांक्षिपन्तितान् ॥२५॥

और राजाकी जो स्त्री है ताकी इच्छा करणहारो और पराई स्त्रीको जो हरिलेय है और कन्यासों जो भोग करै है और सती जे पतिव्रता हैं तिनको जो दूषित करै है ॥ २३ ॥ ये सब तथा और बहुतसे जो निषिद्ध आचरणको करै हैं और कहे भयको त्याग करैहैं वे वैतरणीमें गिरे हैं ॥ २४ ॥ सब मार्गको उल्लंघन करिकै पापी यमके लोकको जायहैं फिर यमकी आज्ञा पायके दूत उन पापी

होय हैं ॥ ४९ ॥ आशा लगाके घरमें आये भये ब्राह्मणनको जो रसोई तैयार होनेपै भी भोजन नहीं देय है वह निश्चय नरकमें जाय है ॥ ४६ ॥ सब जीवनमें विश्वासरहित और उनमें दयाकरि हीन और सब भूतनके साथ कुटिलाई करनहारे वे निश्चय नरकके जानेहारे होय हैं ॥ ४७ ॥ नियम जे संध्यावन्दन कृच्छ्र चांद्रायण आदि हैं तिनके प्रतिज्ञासों अंगीकार करके पीछे अजितेंद्रिय अर्थात् इंद्रियां जाके वशमें नहीं ऐसे हो नियमको फिरि छोडि देय हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥ ४८ ॥ अध्यात्मविद्याके देनहारे

आशयासमनुप्राप्तान्ब्राह्मणानर्थिनोगृहे ॥ नभोजयंतिपाकेपितेवैनरकगामिनः ॥ ४६ ॥ सर्वभूतेष्वविश्व स्तास्तथातेषुविनिर्दयाः ॥ सर्वभूतेषु जिह्मायेतेवैनरकगामिनः ॥ ४७ ॥ नियमान्समुपादाययेपश्चादजिते न्द्रियाः ॥ विग्लापयन्तितान्भूयस्तेवै नरकगामिनः ॥ ४८ ॥ अध्यात्मविद्यादातारंनैवमन्यन्तियेगुरुम् ॥ तथापुराणवक्तारंतेवैनरकगामिनः ॥४९॥ मित्रद्रोहकरायेचप्रीतिच्छेदकराश्चये ॥ आशाच्छेदकरायेचतेवै नरकगामिनः ॥ ५० ॥ विवाहंदेवयात्रांचतीर्थसार्थान्विलुम्पति॥ सवसेन्नरकेघोरेतस्मान्नावर्तनंपुनः॥ ५१ ॥

गुरुको जे नहीं मानै हैं तथा पुराणवक्ता जो पुराणके बांचनहारे हैं उनको गुरु नहीं मानै हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥ ४९ ॥ जे मित्रसों द्रोह करे हैं और जे प्रीतिको भंग करे हैं और जे आशाको छेदन करैहैं वे निश्चय करके जानहारे होय हैं ॥ ५० ॥ विवाह और देवतानकी यात्राको तथा तीर्थके जे साथ हैं तिनको जो बिगारै हैं वह घोर नरकमें वसै हैं वाते

फिरि लौटनो न होय है ॥ ५१ ॥ जो महापापी घरमें गाममें तथा वनमें आगि लगावै है वाको लेके यमदूत अग्निके कुंडनमें पकावै हैं ॥ ५२ ॥ अग्निसो जरो है शरीर जाको ऐसो यह पापी जब छाया मांगै है तब दूत वाको असिपत्रवनमें लेजाय हैं ॥ ५३ ॥ खांडेके समान पैने पत्तनसों जब शरीर कटिजाय है तब दूत कहे हैं कि भो पापी ! शीतलछायायें सुखसों नींद लेले ॥५४॥ पानी पीनेकी इच्छा करतो भयो वह पापी

अग्निंदद्यान्महापापी गृहेग्रामेतथावने ॥ सनीतोयमदूतैश्चवह्निकुण्डेषुपच्यते ॥ ५२ ॥ अग्निनादग्धगात्रोसौ यदाच्छायांप्रयाचते ॥ नीयतेचतदादूतैरासिपत्रवनान्तरे ॥५३॥ खड्गतीक्ष्णैश्चतत्पत्रैर्गात्रच्छेदोयदाभवेत्॥ तदोचुः शीतलच्छायेसुखनिद्रांकुरुष्वभोः ॥ ५४ ॥ पानीयंपातुमिच्छन्वैतृषार्तोयदियाचते ॥ पानार्थंतै लमत्युष्णंतदादूतैःप्रदीयते ॥ ५५ ॥ पीयतांभुज्यतांपानमन्नमूचुस्तदेतिते॥ पीतमात्रेणतेनैवदग्धान्त्रोनिपत न्तिते ॥ ५६ ॥ कथञ्चित्पुनरुत्थायप्रलपन्तिसुदीनवत् ॥ विवशाउच्छ्वसन्तश्चते वक्तुमपिनाशकन् ॥५७॥ इत्येवबहुशस्तार्क्ष्ययातनाः पापिनांस्मृताः॥ किमेतैर्विस्तरात्प्रोक्तैः सर्वशास्त्रेषुभाषितैः ॥ ५८ ॥

जब प्याससों पीडित होके पानी मांगै है तब दूत वाको पीनेकेलिये बहुतही गरम तेल देय हैं ॥ ५५ ॥ और तब वे दूत ऐसे कहे हैं कि पीजिये खाइये जल तथा अन्न वाके पीतेही उनकी आंते जरि जाय हैं और वे गिरि पडै हैं ॥ ५६ ॥ बडी कठिनाईसों फिर उठिके बडे दीनकी भांति कहै हैं परवश होरहे हैं और लंबी श्वासें लेरहे हैं ऐसे वे कहनेकोभी समर्थ नहींहै ॥ ५७ ॥ हे तार्क्ष्य ! फिरि या

प्रकार पापीनको बहुतसी यातना कही हैं और इनके विस्तारसों कहनेमें कहा है, सब शास्त्रनमें कही हैं ॥ ५८ ॥ याप्रकार हे गरुड
बहुतसे हजारों नरनारी प्रलयकाललौं घोर नरकमें पचाये जाय हैं ॥५९॥ वा पापके अक्षयफलको भोगिके वे पापी फिर उत्पत्तिके
समयमें नरकहीमें उत्पन्न होय हैं और वा पापके अक्षयफलको भोगे हैं अथवा यमकी आज्ञासों पृथ्वीमें आयकै स्थावर जे वृक्ष आदि

एवंवैक्लिश्यमानास्तेनरानार्यः सहस्रशः ॥ पच्यन्तेनरकेघोरेयावदाभूतसंप्लवम् ॥५९॥ तस्याक्षयंफलंभुक्त्वा
तत्रैवोत्पद्यतेपुनः ॥ यमाज्ञयामहींप्राप्यभवन्तिस्थावरादयः ॥६०॥ वृक्षगुल्मलतावल्लीगिरयश्चतृणानिच ॥
स्थावराइति विख्यातामहामोहसमावृताः॥६१॥कीटाश्चपशवश्चैवपक्षिणश्चजलेचराः ॥ चतुरशीतिलक्षेषुक
थितादेवयोनयः ॥ ६२ ॥ एताः सर्वाः परिभ्रम्यततोयान्तिमनुष्यताम् ॥ मानुषेपिश्वपाकेषुजायन्तेनरका
गताः ॥ तत्रापिपापचिह्नैस्तेभवन्तिबहुदुःखिताः ॥ ६३ ॥

हैं तिनमें जन्म लेय हैं ॥६०॥ स्थावर इन्हें कहते हैं जैसे वृक्ष, गुल्म, लता वल्ली, पर्वत और तृण कहिये घास फूल महा अज्ञान करि घेरे
भये सब स्थावरनामसों विख्यात हैं ॥६१ ॥ कीट और पशु तथा पक्षी और जलचर मगर मच्छी आदि ये सब चौराशीलाख देवयोनी
कही गई हैं इन सब योनिनमें भ्रमणकरिकै तापीछे मनुष्यकी योनीको प्राप्त होयहै और मनुष्यनमेंहूँ नरकसे आयेभये जीव चांडालकी

अर्थात् उनके ऋतुकालको व्यर्थ खोवै हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥ ४० ॥ जे कामसों अन्धे होके रजस्वला स्त्रीमें गमन करै हैं
और पर्वमें तथा जलमें दिनमें तथा श्राद्धके दिन जे स्त्रीगमन करै हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥ ४१ ॥ जे शरीरके मलको आगिमें
डारै हैं और बगीचेमें तथा गौअनके स्थानमें मलमूत्रको करैहैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥ ४२ ॥ और शस्त्र जे तरवार आदिक हैं

येपिगच्छंतिकामान्धानरानारींरजस्वलाम् ॥ पर्वस्वप्सुदिवा श्राद्धे तेवै नरकगामिनः ॥ ४१ ॥ येशारीरंमलंव
ह्नौप्रक्षिपन्तिजलेपि च ॥ आरामेप्रतिगोष्ठेवातेवैनरकगामिनः ॥ ४२ ॥ शस्त्राणांयेचकर्तारः शराणांधनुषां
तथा ॥ विक्रेतारश्चयेतेषांतेवैनरकगामिनः ॥ ४३ ॥ चर्मविक्रयिणोवैश्याः केशविक्रेयकाः स्त्रियः ॥ विष
विक्रयिणः सर्वे तेवैनरकगामिनः ॥ ४४ ॥ अनाथंनानुकम्पंतियेसतांद्वेषकारकाः ॥ विनापराधंदण्डयन्ति
तेवैनरकगामिनः ॥ ४५ ॥

तिनके बनावनहारे तथा तीर और कमानके बनावनहारे और जे उनके बेचनहारे हैं वे निश्चय नरकमें जायँ हैं ॥ ४३ ॥ चामके बेच
नहारो वैश्य और केश जो भग है ताकी बेचनहारी स्त्री अर्थात् व्यभिचारिणी और सब विषनके बेचनहारे हैं वे निश्चय नरकमें जायहैं
॥ ४४ ॥ जे अनाथनपर दया नहीं करै हैं और जे सज्जनसों द्वेष मानैं हैं और जे अपराधके विना दंड देवै हैं वे निश्चय नरकगामी

कोढी होयहै और ये तीनों चांडालकी योनिमें उत्पन्न होयहैं ॥ ३ ॥ स्त्रीको मारनहारो तथा गर्भको गिरावनहारो पुलिंदानाम म्लेच्छकी जातिमें रोगी होयहै, और अगम्या जे पुत्री पुत्रवधू आदि हैं तिनमें गमन करनेसों नपुंसक होयहै और गुरुकी स्त्रीसों गमन करनहारो दुश्चर्मरोगसों पीडित होय है ॥ ४ ॥ मांस खानेहारेका अंग अतिलाल होयहै और मद्य पीवनहारेके दांत कारे होयहैं

स्त्रीघातीगर्भपातीचपुलिन्दोरोगवान्भवेत् ॥ अगम्यागमनात्षण्ढोदुश्चर्मागुरुतल्पगः ॥ ४ ॥ मांसभोक्तातिरक्ताङ्गः श्यावदन्तस्तुमद्यपः ॥ अभक्ष्यभक्षकोलौल्याद्ब्राह्मणः स्यान्महोदरः ॥ ५ ॥ अदत्त्वामिष्टमश्नातिसभवेद्गलगण्डवान् ॥ श्राद्धेन्नमशुचिं दत्त्वा श्वित्रकुष्ठी प्रजायते ॥ ६ ॥ गुरोर्गर्वेणावमानादपस्मारीभवेन्नरः ॥ निन्दकोवेदशास्त्राणांपाण्डुरोगी भवेद्ध्रुवम् ॥ ७ ॥ कूटसाक्षीभवेन्मूकः काणः स्यात्पंक्तिभेदकः ॥ अनोष्ठः स्याद्विवाहघ्नोजन्मान्धः पुस्तकं हरेत् ॥ ८ ॥

जीभकी चंचलताईसों ब्राह्मण अभक्ष्यको खायहै ताको पेट बढिजायहै ॥ ५ ॥ जो दूसरेको न दक आप मीठो खायहै वाके गलगंड रोग होय है और श्राद्धमें जो अशुद्ध अन्न देय है ताके श्वित्रनाम कोढ जासो शरीर सपेद हो जाय है ॥ ६ ॥ गर्वकारिके गुरुको अपमान करनहारे मिरगी रोगसों पीडित होय हैं वेद तथा शास्त्रकी निंदा करनहारो निश्चय पांडुरोगी होयहै ॥ ७ ॥ झूठी गवाही देनहारो गूँगा होय है और पंक्तिमें भेद करनहारो काना होय है विवाहको

बिगारनहारो विना ओठको होयहै और जो पुस्तक चुरावै है वह जन्मको अंधो होयहै ॥८॥ गौ तथा ब्राह्मणके लात मारनेसों खंजा तथा पंगु होय है झूंठ बोलनहारो गद्गद होय है और वाको सुननहारो बहिरा होयहै ॥ ९ ॥ और विषको देनहारो जड तथा उन्मत्त होयहै और आगि लगावनहारो खल्वाट अर्थात् गंजा होयहै और मांसको बेचनहारो दुर्भग होयहै और पराये मांसको खानहारो रोगी होय है ॥१०॥

गोब्राह्मणपदाघातात्खंजः पंगुश्चजायते ॥ गद्गदोनृतवादी स्यात्तच्छ्रोताबधिरोभवेत् ॥ ९ ॥ गरदःस्याज्जडोन्मत्तः खल्वाटोग्निप्रदायकः ॥ दुर्भगःपलविक्रेता रोगवान्परमांसभुक् ॥ १० ॥ हीनजातौप्रजायेतरत्नानामपहारकः ॥ कुनखीस्वर्णहर्तास्याद्धातुमात्रहरोऽधनः ॥ ११ ॥ अन्नहर्ताभवेदाखुःशलभोधान्यहारकः ॥ चातकोजलहर्त्तास्याद्विषहर्ताचवृश्चिकः ॥ १२ ॥

और रत्न जे हीरा मोती आदि हैं तिनके चुरावनहारो हीन जातिमें उत्पन्न होय है और सोनेको चुरावनहारो कुनखी अर्थात् जाके नख काले और बिगडेसे होय है और धातुमात्रको चुरावनहारो निर्धन होय है ॥११॥ अन्नको चुरावनहारो मूसो होय है और धान्यसे भूसी समेत अन्न है जैसे धान जव कोदौं कँगनी आदि तिनको चुरावनहारो मनुष्य शलभ कही टीडी होय है जलको चुरावनहारो पपैया

होय है और विषको चुरावनहारो बिच्छू होय है ॥ १२ ॥ साग पत्ते चुरायकै मोर होय है और उत्तम गंधनको जो चुरावै है वह छछुंदरी होय है और मधु जो सहत है ताको चुरावनहारो दंश कहिये डांस होय है और मांसको बेचनहारो गीध होयहै और नोनको चुरायकै चींटी होयहै॥ १३॥पान फल आदिको चुरावनहारो वनमें वानर होयहै जूता तृण और कपासको चुरावनहारो मेढाकी जातिमें उत्पन्न होयहै १४॥

शाकंपत्रंशिखीहत्वा गंधाञ्छुच्छुन्दरीशुभान् ॥ मधुदंशः पलंगृध्रोलवणंचपिपीलिका ॥ १३ ॥ ताम्बूलफलपुष्पादिहर्तास्याद्वानरोवने ॥ उपानत्तृणकार्पासहर्तास्यान्मेषयोनिषु ॥ १४॥ यश्चरौद्रोपजीवीचमार्गेसार्थान्विलुम्पति ॥ मृगयाव्यसनेयस्तुछागः स्याद्वधिकगृहे ॥ १५ ॥ योमृतोविषपानेनकृष्णसर्पोभवेद्गिरौ ॥ निरंकुशस्वभावः स्यात्कुंजरोनिर्जनेवने ॥ १६ ॥ वैश्वदेवमकर्तारः सर्वभक्षाश्चयेद्विजाः ॥ अपरीक्षितभोक्तारोव्याघ्राः स्युर्निर्जनेवने ॥ १७ ॥

और जो रौद्र जो हिंसाको काम है तासों जीविका करनहारो और मार्गमें जो व्यापारी और तीर्थयात्रा आदि करनहारो मनुष्यके समूहको लूटे है और जाको मृगया जो अहेरि है ताको व्यसन है वह वधिकके घरमें बकरा होयहै ॥ १५ ॥ जो विषको पीकै मरै है वह पर्वतमें कारो सांप होय है और जाको स्वभाव निरंकुश है अर्थात् काहूको दबाव नहीं मानै है वह निर्जनवनमें हाथी होय है ॥१६॥ वैश्वदेवके

योनिमें उत्पन्न होयहैं वहांऊ पापके चिह्नसों वे बहुत दुःखी होयहैं ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ गलतभये कोढके रोगी और जन्मके अन्धे और बडे रोगसों व्याकुल ऐसे नर नारी पापके चिह्नसों उपलक्षित होय हैं॥६४॥इतिश्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥ गरुड बोले हे केशव! जौन जौन पापसों जो जो चिह्न उत्पन्न होय हैं और जौन

गलत्कुष्ठाश्चजन्मान्धामहारोगसमाकुलाः ॥ भवन्त्येवंनरानार्यः पापचिह्नोपलक्षिताः ॥ ६४ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेनरकप्रदपापचिह्ननिरूपणोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ गरुडउवाच ॥ येनयेनचपापेनयद्यच्चिह्नंप्रजायते ॥ यांयांयोनिंचगच्छन्तितन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यैः पापैर्यान्तियांयोनिंपापिनोनरकागताः ॥ येनपापेनयच्चिह्नंजायतेममतच्छृणु ॥ २ ॥ ब्रह्महाक्षयरोगीस्याद्गोघ्नः स्यात्कुब्जकोजडः ॥ कन्याघातीभवेत्कुष्ठीत्रयश्चाण्डालयोनिषु ॥ ३ ॥

जौनसी योनिमें जायहैं सो मोसों कहो ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले नरकतें आये भये पापी जिन पापसों जौनसी योनिमें जायहैं और जा पापते जो चिह्न होयहैं सो तुम मोते सुनो॥२॥ब्रह्महत्यारो क्षय रोगी होयहै और गौको हत्यारो कुबरो तथा जड होयहै और कन्याको मारनहारो

मित्रसों द्रोह करनहारो पहाडी गीध होय है और क्रय जो खरीदनों है तामें धोखा देनेसों उल्लू होय है और वर्ण तथा आश्रमकी निंदा करनेसों वनमें कबूतर होय है॥२३॥जो आशाछेदकरैहै अर्थात् आशाको तोडदेय है जो स्नेहको बिगारी देय है जो द्वेषसों स्त्रीको परि

मित्रध्रुग्गिरिगृध्रः स्यादुलूकः क्रयवञ्चनात् ॥ वर्णाश्रमपरीवादात्कपोतोजायतेवने ॥ २३ ॥ आशाच्छेद
करो यस्तुस्नेहच्छेदकरस्तुयः ॥ योद्वेषात्स्त्रीपरित्यागीचक्रवाकश्चिरंभवेत् ॥ २४ ॥ मातृपितृगुरुद्वेषीभ
गिनीभ्रातृवैरकृत् ॥ गर्भेयोनौविनष्टः स्याद्यावद्योनिसहस्रशः ॥ २५ ॥ श्वश्र्वोर्गालिप्रदानारीनित्यंकलहका
रिणी ॥ साजलौकाचयूकास्याद्भर्तारंभर्त्संतेचया ॥२६॥ स्वपतिंचपरित्यज्यपरपुंसानुवर्तिनी॥वल्गुनीगृहगो
धास्याद्द्विमुखीवाथसार्पिणी ॥ २७ ॥

त्याग करै है वह बहुत काललों चकवा चकवी होय है॥२४॥माता पिता तथा गुरुतें द्वेषकरनहारो और बहिन तथा भाईसों वैर करनहारे जीव जबताई हजार योनि होय तबलग गर्भहीमें नष्ट होजाय हैं॥२५॥सास श्वशुरको गाली देनहारी और नित्य कलह करनेहारी नारी और जो पतिको धिक्कार आदिसों धमकावे है वह जोंक तथा जूं होय है॥२६॥ जो अपने पतिको छोडके परपुरुषसों प्रीति करै है वह

वल्गुनी घरकी गोह होय है अथवा दोमुँहकी साँपिन होय है॥ २७ ॥ जो अपने गोत्रकी स्त्रीको सेवन करनेसों अपने गोत्रको बिगारै है वह तरक्षु और सल्लक होके ऋक्षकी योनिमें उत्पन्न होय हैं ॥ २८ ॥ तामसी स्त्रीसों जो गमन करै है वह कामीपुरुष मरुदेशमें पिशाच होय है जाको यौवन नहीं आयो है ऐसी स्त्रीके साथ भोग करनहारो वनमें अजगर होय है ॥ २९ ॥ गुरुकी स्त्रीसों भोगकी इच्छा

यःस्वगोत्रोपघातीचस्वगोत्रस्त्रीनिषेवणात्॥तरक्षुःशल्लकोभूत्वाऋक्षयोनिषुजायते॥२८॥ तामसीगमनात्का
मीभवेन्मरुपिशाचकः॥ अप्राप्तयौवनासंगाद्भवेदजगरोवने ॥ २९ ॥ गुरुदाराभिलाषीचकृकलासो भवेन्नरः ॥
राज्ञींगत्वाभवेद्दुष्टोमित्रपत्नींचगर्दभः॥ ३० ॥ गुदगोविड्वराहः स्याद्वृषःस्याद्वृषलीपतिः ॥ महाकामीभवे
द्यस्तुस्यादश्वः कामलम्पटः ॥ ३१ ॥ मृतस्यैकादशाहंतुभुञ्जानः श्वाविजायते ॥ लभेद्देवलकोविप्रोयोनिं
कुक्कुटसंज्ञकाम्॥३२॥द्रव्यार्थदेवतापूजांयः करोतिद्विजाधमः॥सवैदेवलकोनामहव्यकव्येषुगर्हितः ३३॥

करनहारो मनुष्य करकेंटा होय है रानीसों गमनकरि दुष्ट होयहै और मित्रकी पत्नीसों गमन करिकै गधा होय है॥३०॥ गुदामें गमन करनहारो विष्ठा खानहारो सुअर होय है वृषलीको पति बैल होयहै और बडो कामी होयहै वह काममें लंपट घोडा होयहै ॥३१॥ मरनेवालेके यहां जो ग्यारहें दिन खाय है वह कुत्ता होयहै और देवलक ब्राह्मण कुक्कुटकी योनिमें उत्पन्न होय है॥ ३२ ॥ जो अधम ब्राह्मण द्रव्यके

लिये देवताकी पूजा करै है देवलकनाम वह निश्चय हव्य कव्य अर्थात् देवता और पितरोंके कर्ममें निंदित है ॥ ३३ ॥ महापातकसों प्राप्त घोर नरकनको प्राप्त होके कर्मके क्षीण होनेपै या संसारमें यह महापातकी होयहै ॥ ३४ ॥ ब्रह्महत्यारो मनुष्य गधा ऊंट और भैंसीकी योनि पावै है और मदिरा पीवनहारे भेडिया कुत्ता तथा स्यारकी योनि पावै हैं ॥३५॥ और सुवर्णको चुरावनहारो कृमि कीट और पतंगनकी योनिको प्राप्त होय है और गुरुकी शय्यामें जानहारो क्रमसों तृण, गुल्म और लताकी योनिको प्राप्त होय है ॥ ३६॥

महापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्यदारुणान्॥कर्मक्षयेप्रजायन्तेमहापातकिनस्त्विह ॥ ३४ ॥ खरोष्ट्रमहिषीणां
हिब्रह्महायोनिमृच्छति ॥ वृकश्वानशृगालानांसुरापायान्तियोनिषु ॥ ३५ ॥ कृमिकीटपतंगत्वंस्वर्णस्तेयी
समाप्नुयात् ॥ तृणगुल्मलतात्वंचक्रमशोगुरुतल्पगः ॥ ३६ ॥ परस्ययोषितंहृत्वान्यासापहरणेनच ॥ ब्रह्म
स्वहरणाच्चैवजायतेब्रह्मराक्षसः ॥ ३७ ॥ ब्रह्मस्वंप्रणयाद्भुक्तंदहत्यासप्तमंकुलम् ॥ बलात्कारेणचौर्येणदहत्या
चन्द्रतारकम् ॥ ३८ ॥ लोहचूर्णाश्मचूर्णंचविषंचजरयेन्नरः ॥ ब्रह्मस्वंत्रिषुलोकेषुकः पुमाञ्जरयिष्यति॥३९॥

पराई स्त्रीके हरनेसों और धरोहरके दबाय लेनेसों और ब्राह्मणके द्रव्य हरलेनेसों ब्रह्मराक्षस होय है ॥ ३७ ॥ कपटके स्नेहसों खायो भयो ब्राह्मणको धन सात पीढीनलों जराय देयहै और बलात्कारसों तथा चोरीसों खायोभयो चंद्रतारापर्यंत जरायदेय है ॥ ३८ ॥ लोहके चूरेको पत्थरके चूरेको तथा विषको तौ मनुष्य पचायजाय परंतु ब्राह्मणके धनको तीनों लोकनमें कौन पचायसकैहै ॥ ३९ ॥

न करनहारे जे द्विज सर्व भक्ष्य अर्थात् कुम्हार धोबी आदिकेभी अन्न खायँ हैं और अपरीक्षित कहिये लेने योग्य न लेने योग्यकी परीक्षा विना किये भोजन करै हैं वे शून्य वनमें बाघ होय हैं ॥ १७ ॥ जो गायत्रीको स्मरण नहीं करै है और संध्योपासन नहीं करै है और भीतरसों दुष्ट है, तथा बाहरसों साधु है वह ब्राह्मण बगुला होय है ॥ १८ ॥ अयाज्य जो नहीं याजन कराने योग्य है ताको जो याजन

गायत्रींनस्मरेद्यस्तुयोनसंध्यामुपासते ॥ अन्तर्दुष्टोबहिः साधुः सभवेद्ब्राह्मणो बकः ॥ १८ ॥ अयाज्ययाज
कोविप्रः सभवेद्ग्रामसूकरः ॥ खरोवैबहुयाजित्वात्काकोनिर्मन्त्रभोजनात् ॥ १९ ॥ पात्रेविद्यामदाताचबली
वर्दो भवेद्द्विजः ॥ गुरुसेवामकर्ताचशिष्यः स्याद्गोखरः पशुः ॥ २० ॥ गुरुंहुंकृत्यतुंकृत्यविप्रंनिर्जित्यवादतः॥
अरण्ये निर्जलेदेशेजायतेब्रह्मराक्षसः ॥ २१ ॥ प्रतिश्रुतंद्विजेदानमदत्त्वाजम्बुकोभवेत् ॥ सतामसत्कारकरः
फेत्कारोऽग्निमुखोभवेत् ॥ २२ ॥

करावै है वह ब्राह्मण गाँवको सुअर होय है बहुतको पुरोहित गधा होय है और मंत्ररहित भोजन करनेसों कौआ होय है ॥ पात्रको जो विद्या नहीं देयहै वह ब्राह्मण बलवान् बैल होयहै जो शिष्य गुरुकी सेवा नहीं करै है वह गोखर पशु होयहै ॥ १९ ॥ २० ॥ गुरुसे हुंकार तुंकार करिके और ब्राह्मणको वादमें जीतिके निर्जल आरण्य देशमें ब्रह्मराक्षस होयहै ॥ २१ ॥ प्रतिज्ञा करिके जो ब्राह्मणको दान नहीं देयहै वह जंबुक कहिये सियार होयहै जो सज्जनको सत्कार नहीं करै है वह अग्निमुख फेत्कार होयहै ॥ २२ ॥

जो आपही देकर और आपही छीनिलेय है वह पापी प्रलयकालपर्यंत नरकमें वास करै है ॥ ४६ ॥ भूमिको दान देकै दी हुई जीविकाकी यत्नसों रक्षा करै और जो रक्षा नहीं करता है आपही लेलेता है वह पंगु कुत्ता होय है ॥ ४७ ॥ ब्राह्मणकी जीविका करनेमें लाख गौ देनेका पुण्य होय है और ब्राह्मणकी जीविका हर लेनेसों मर्कट कुत्ता और बंदर होय है ॥ ४८ ॥ हे गरुड !

स्वयमेवचयो दत्त्वास्वयमेवापकर्षति ॥ सपापीनरकंयातियावदाभूतसंप्लवम् ॥ ४६ ॥ दत्त्वावृत्तिंभूमिदानं यत्नतः परिपालयेत् ॥ नरक्षतिहरेद्यस्तुसपंगुः श्वाभिजायते ॥४७॥ विप्रस्यवृत्तिकरणेलक्षधेनुफलंभवेत् ॥ विप्रस्यवृत्तिहरणान्मर्कटः श्वा कपिर्भवेत् ॥४८॥ एवमादीनिचिह्नानियोनयश्चखगेश्वर ॥ स्वकर्मविहितालो केदृश्यन्तेऽत्रशरीरिणाम् ॥ ४९ ॥ एवंदुष्कर्मकर्तारोभुक्त्वानिरययातनाम्॥जायन्तेपापशेषेणप्रोक्तास्वेतासु योनिषु ॥ ५० ॥ ततोजन्मसहस्रेषुप्राप्यतिर्यक्छरीरिताम् ॥ दुःखानिभारवहनोद्भवादीनिलभन्तिते ॥ ५१ ॥

इत्यादिक चिह्न और योनि अपने कर्मनकरि दीभई देहीनकी देखि परै है ॥४९॥ या प्रकार बुरे कर्मनके करनहारे नरकनकी यातना नको भोगिकै बाकी रहे भये पापनसों इन कही भई योनिनमें जन्म लेय हैं ॥ ५० ॥ ता पीछे हजारन जन्ममें पशु पक्षी आदिकी देहको प्राप्त होकै भारके ले चलने योग्य पशुकी देहको अर्थात् ऊंट गधा आदिकी देहको प्राप्त होय हैं ॥ ५१ ॥

ता पीछे वर्षा शीत घामसों उत्पन्न भये पक्षीनके दुःखको भोगिकै जब शुभ अशुभ शांत हो जायँ है तब पीछे मनुष्यदेह पावैहैं॥५२॥ स्त्रीपुरुषको प्रसंगसों यह गर्भमें क्रमसों होकै गर्भसों आदि ले मरणपर्यंतलौं दुःख पाकै फिर मरिजाय है ॥५३॥ सब देहनकी उत्पत्ति और विनाश होय है चारि प्रकारके जे भूतग्राम हैं अंडज, स्वेदज, उद्भिज्ज और जरायुज तिनमें या प्रकारको चक्र चलि रहो है ॥५४॥ मर्त्य जे

पक्षिदुःखंततोभुक्त्वावृष्टिशीतातपोद्भवम् ॥ मानुषंलभतेपश्चात्समीभूतेशुभाशुभे ॥ ५२ ॥ स्त्रीपुंसोस्तुप्रसं गेनभूत्वागर्भेक्रमादसौ ॥ गर्भादिमरणान्तंचप्राप्यदुःखंम्रियेत्पुनः ॥ ५३ ॥ समुत्पत्तिर्विनाशश्चजायतेसर्व देहिनाम् ॥ एवंप्रवर्तितंचक्रंभूतग्रामेचतुर्विधे ॥ ५४ ॥ घटीयन्त्रंयथामर्त्याभ्रमन्तिममंमायया ॥ भूमौक दाचिन्नरकेकर्मपाशसमावृताः ॥ ५५ ॥ अदत्तदानाच्चभवेद्दरिद्रोदरिद्रभावाच्चकरोतिपापम् ॥ पापप्रभावान्नर कंप्रयातिपुनर्दरिद्रःपुनरेवपापी ॥ ५६ ॥

जीव हैं ते मेरी मायासों घटीयंत्रके समान भ्रमण करै हैं कर्मकी फाँसीमें बँधे भये कबहूँ भूमिमें कबहूँ नरकमें जायहैं॥५५॥ नहीं दियो भयो जो दान है तासों दरिद्री होयहै और दरिद्री होनेसों पाप करै है और पापके प्रभावसों नरकमें जाय है और वारंवार दरिद्री होय है और

वारंवार पापी होय है ॥५६॥ कियो भयो शुभ अशुभ अवश्यही भोगनो होयगो विना भोगे लाखन कल्पनताई क्षीण नहीं होयहै॥५७॥
इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ गरुड
बोले हे केशव! नरकते आयो भयो प्राणी माताके पेटमें कैसे उत्पन्न होय है और गर्भआदिकेदुःखको जो भोगैहै सो मोसों कहो॥ १ ॥श्रीभ-

अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि ॥५७॥ इति श्रीगरुडपुराणे
सारोद्धारेपापचिह्ननिरूपणोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ गरुडउवाच ॥ कथमुत्पद्यतेमातुर्जठरेनरकागतः ॥
गर्भादिदुःखंयद्भुंक्ततन्मेकथयकेशव॥ १॥विष्णुरुवाच ॥ स्त्रीपुंसोस्तुप्रसंगेननिरुद्धेशुक्रशोणिते ॥ यथायंजा
यतेमर्त्यस्तथावक्ष्याम्यहंतव ॥२॥ ऋतुमध्येहिपापानांदेहोत्पत्तिःप्रजायते ॥ इन्द्रस्यब्रह्महत्यास्तियस्मिंस्त
स्मिन्दिनत्रये ॥ ३ ॥ प्रथमेहनिचाण्डालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी ॥ तृतीयेरजकीह्येतानरकागतमातरः ॥ ४ ॥

गवान् बोले स्त्री तथा पुरुषके प्रसंगसों वीर्य और रजके गर्भमें ठहर जानेपै जैसे यह प्राणी उत्पन्न होयहै सो मैं तुमसों कहौंगो॥२॥ जा ऋतुके
मध्यमें हत्या चतुर्थांश रहैहै उन्हीं तीनि दिननमें पापीनके देहकी उत्पत्ति होय है अर्थात् जा तीनि दिननमें इंद्रकी ब्रह्महत्या रहैहै उन तीनों
दिननमें पापीनकी उत्पत्ति होय है ॥३॥ऋतुदर्शन होके पहले दिन तो स्त्री चांडाली और दूसरे दिन ब्रह्महत्यारी तीसरे दिन रजकी अर्थात्

ब्राह्मणके धनसों पुष्ट वाहन और सेना ये सब युद्धके समय ऐसे बिखरिजाय हैं जैसे बालूके बांध ॥ ४० ॥ देवतानके द्रव्यके भोग-
नेसों और ब्राह्मणके धन हरनेसों तथा ब्राह्मणके अतिक्रमसों कुल अकुल होजाय हैं अर्थात् नष्ट होजाय हैं ॥ ४१ ॥ अपना
आश्रित वेदशास्त्रको जाननहारो ब्राह्मण है ताको छोडिकै जो दान औरके लिये दियो जाय है वह ब्राह्मणको अतिक्रम है ॥ ४२ ॥

ब्रह्मस्वरसपुष्टानिवाहनानिबलानि च ॥ युद्धकालेविशीर्यन्तेसैकताः सेतवोयथा ॥ ४० ॥ देवद्रव्योपभोगे
नब्रह्मस्वहरणेनच ॥ कुलान्यकुलतांयान्तिब्राह्मणातिक्रमेणच ॥ ४१ ॥ स्वमाश्रितंपरित्यज्यवेदशास्त्रपराय
णम् ॥ अन्येभ्योदीयतेदानं कथ्यतेऽयमतिक्रमः ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणातिक्रमोनास्तिविप्रेवेदविवर्जिते ॥ ज्वलं
तमग्निमुत्सृज्यनहिभस्मनिहूयते ॥४३॥ अतिक्रमेकृतेतार्क्ष्यभुक्त्वाचनरकान्क्रमात् ॥ जन्मान्धः सन्दरिद्रः
स्यान्नदाताकिंतुयाचकः॥४४॥स्वदत्तांपरदत्तांवायोहरेच्चवसुन्धराम्॥षष्टिवर्षसहस्राणिविष्ठायांजायते कृमिः॥४५

वेदकरि रहित जो ब्राह्मण है ताको अतिक्रम नहीं है काहेसों कि जरती भई अग्निको छोडकै भस्ममें होम नहीं किया जाय है
॥ ४३ ॥ हे गरुड ! अतिक्रम करनेपै क्रमसों नरकनको भोगि जन्मको अंधा वह दरिद्री होय है देनेवालो नहीं होय है किंतु मांगन
हारो होय है ॥ ४४ ॥ अपनी अथवा औरकी दीभई पृथिवीको जो छीनलेय है वह साठि हजार वर्षलों विष्ठामें कीरा होय है ॥ ४५ ॥

महीनेमें क्षुधा तृषाकी उत्पत्ति होय है और छः महीनेमें झिल्ली जिसको जरायु कहै हैं वामें लपटा भयो दाहिनी कोखिमें भ्रमण करैहै ॥८॥ माताकरि खाये भये अन्नपान आदिसों बढी हैं रस रक्त आदि धातु जाकी ऐसो प्राणी असंमत कहिये जामें दुर्गंध आवै है और जामें जीवनको संभव है ऐसो गर्त जो गढिल्लो है तामें सोवै है॥९॥कैसे उत्पन्न होय है या प्रश्नका उत्तर देकै"गर्भादिदुःखं यद्भुक्ते"याको उत्तर देय है कि वहां गर्भमें स्थित भूंखे खाते भये कीडोंकरि सुकुमार होनेके कारण क्षत हैं सब अंग जाको ऐसो प्राणी क्षण २ में मूर्च्छित होजाय है

मातुर्जग्धान्नपानाद्यैरेधद्धातुरसंमते ॥ शेतेविण्मूत्रयोर्गर्तेसजन्तुर्जन्तुसंभवे ॥ ९ ॥ कृमिभिः क्षतसर्वांगः सौकुमार्यात्प्रतिक्षणम् ॥ मूर्च्छामाप्नोत्युरुक्लेशस्तत्रत्यैः क्षुधितैर्मुहुः ॥ १० ॥ कटुतीक्ष्णोष्णलवणरूक्षाम्लादिभिरुल्बणैः ॥ मातृभुक्तैरुपस्पृष्टः सर्वांगोत्थितवेदनः॥ उल्बेनसंवृतस्तस्मिन्नन्त्रैश्चबहिरावृतः ॥ ११ ॥ आस्तेकृत्वाशिरः कुक्षौभुग्नपृष्ठशिरोधरः ॥ अकल्पः स्वांगचेष्टायांशकुन्तइवपञ्जरे ॥ १२ ॥

और वहां स्थित उन भूंखे कीडनसों वारंवार उरुक्लेशसे जी मचलनोहै सो होयहै॥१०॥और माताकरि खाये भये कडुये तीक्ष्ण उष्ण नोन रूखे और खट्टे आदि उल्वण पदार्थनकरिकै छुये जानेसों सब अंगमें उठी है पीडा जाके ऐसो वह उल्वण जो झिल्ली (जेर) है ताकरिके परो भयो और बाहर आंतनकरिकै लपेटो गयो ॥११॥ शिरको कोखीमें कारकै टेढी हैं पीठि और ग्रीवा जाकी ऐसो वह प्राणी अपने अंगकी चेष्टा

करनेमें असमर्थ हो पिंजरेमें पक्षीके समान रहै है ॥१२॥ वहां दैव जो पूर्वकर्मको वश है तासो पायोहै स्मरण जानै ऐसो वह प्राणी सौ जन्मके पापनको स्मरण करिकै दीर्घश्वास लेत भयो सुखको नहीं पावै है॥१३॥नाथमान कहिये याचना कियो अथवा उपतप्यमान भयो वह ऋषि कहिये देहात्मदर्शी और सात वध्री कहिये बन्धनभूत हैं सातों धातु जाके ऐसो वह हाथ जोरिके व्याकुल वाणीसों वाकी स्तुति करै है जाते

तत्रलब्धस्मृतिर्दैवात्कर्मजन्मशतोद्भवम् ॥ स्मरन्दीर्घमनुच्छ्वासंशर्मकिंनामविन्दते ॥ १३ ॥ नाथमानऋषिर्भीतः सप्तवध्रिः कृताञ्जलिः ॥ स्तुवीततंविक्लवयावाचायेनोदरेर्पितः ॥ १४ ॥ आरभ्यसप्तमान्मासाल्लब्धबोधोपिवेपितः ॥ नैकत्रास्तेसूतिवातैर्विष्ठाभूरिवसोदरः ॥ १५ ॥ जीवउवाच ॥ श्रीपतिंजगदाधारमशुभक्षयकारकम् ॥ व्रजामिशरणंविष्णुंशरणागतवत्सलम् ॥ १६ ॥ त्वन्मायामोहितोदेहेतथापुत्रकलत्रके ॥ अहंममाभिमानेनगतोऽहंनाथसंसृतिम् ॥ १७ ॥

पेटमें स्थापित कियो है ॥ १४ ॥ सातवें महीनेको लगाके लब्ध कहिये प्राप्त है बोध जाको ऐसे वह प्राणी सूतिके कारण ऐसे वात जे पवन हैं तिन करिकै कँपायो गयो एक स्थानमें नहीं ठहरेहै समान उदरमें जन्म जाको ऐसी विष्ठामें उत्पन्नकृमिके समान॥१५॥जीव बोलो॥श्रीके पति जगत्के आधार और अशुभके नाश करनहारे और शरणागत हैं प्यारे जिनको ऐसे विष्णुमहाराजकी शरणमें मैं जाऊँ हों॥१६॥तुम्हारी

मायाकरि मोहित मैं देहमें तथा पुत्र स्त्रीमें अहं मम यह जो अभिमान है ताकरिकै हे नाथ ! मैं संसारमें प्राप्तहूँ ॥ १७ ॥ कुटुंबके लिये मैंने शुभ अशुभ कर्म कियो वाकरिके मैं अकेले दग्ध भयो और फलके भोगनहारे वे गये ॥ १८ ॥ जो मैं योनिसों छूटों तो आपके चरणनको स्मरण करोंगो और वा उपायको करोंगो जाते मुक्तिको प्राप्त होऊँ ॥ १९ ॥ विष्ठामूत्रमें परो भयो मैं जठराग्निसों

कृतंपरिजनस्यार्थेमयाकर्मशुभाशुभम् ॥ एकाकीतेनदग्धोऽहंगतास्तेफलभागिनः ॥ १८ ॥ यदियोन्याः प्रमुच्येऽहंतत्स्मारिष्येपदंतव ॥ तमुपायंकरिष्यामियेनमुक्तिंव्रजाम्यहम् ॥१९॥ विण्मूत्रकूपेपतितोदग्धोहंजठराग्निना ॥ इच्छन्नितोविवासितुंकदानिर्यास्यतेबहिः ॥ २० ॥ येनेदृशंमेविज्ञानंदत्तंदीनदयालुना ॥ तमेवशरणंयामिपुनर्मेमाऽस्तुसंसृतिः ॥ २१ ॥ नच निर्गन्तुमिच्छामिबहिर्गर्भात्कदाचन ॥ यत्रयातस्यमेपापकर्मणादुर्गतिर्भवेत् ॥२२॥तस्मादत्रमहद्दुःखेस्थितोपिविगतक्लमः॥उद्धरिष्यामिसंसारादात्मानंतेपदाश्रयः ॥२३॥

दग्ध होरहोहौं यहांते निकरनेकी इच्छा करतोभयो कब बाहर निकरोंगो ॥ २० ॥ जा दीनदयालुने मोको ऐसो विज्ञान दियो है वाहीके मैं शरणमें जाऊँ हूँ मोको फिर संसार न होय ॥ २१ ॥ और गर्भतें बाहर मैं कदाचन नहीं निकरो चाहोहौं जहां गये भये मेरी पापसों दुर्गति होय॥२२॥तातें यहां बडे दुःखमें स्थितभी मैं खेदरहितहूँ तुम्हारे चरणका आश्रय लेकै मैं संसारते अपने उद्धार करूंगो॥२३॥

धोबिनी ये नरकते आये भये पापीनकी माता हैं अर्थात् नरकतें आये भये पापीनकी यही माता होय हैं वे इन्हींमें उत्पन्न होय हैं ॥ ४ ॥ देव जो ईश्वर है सोई है नेता कहिये प्रवर्त्तक जाको ऐसो प्राणी वा पूर्वकेभये कर्मसों देहकी प्राप्तिके लिये पुरुषके वीर्यके बून्द वाको आश्रय होके स्त्रीके पेटमें प्रविष्ट हो जाय है यहां यह विशेष है शुक्र तथा शोणितके संयोगसों पिंडकी उत्पत्ति होय है रक्तके अधिक होनेपै नारी उत्पन्न होयहै और वीर्य अधिक होनेपै पुरुष होयहै और जो दोनों समानहोय तो नपुंसक होयहै और बहुधा वीर्यके विभाग होनेपै कहीं दोइ

कर्मणादैवनेत्रेण जन्तुर्देहोपपत्तये ॥ स्त्रियाः प्रविष्टउदरंपुंसोरेतःकणाश्रयः ॥ ५ ॥ कललंत्वेकरात्रेणपञ्चरात्रेणबुद्बुदम् ॥ दशाहेनतुकर्कन्धूः पेश्यण्डं वा ततः परम् ॥ ६ ॥ मासेनतुशिरोद्वाभ्यांबाह्वंगाद्यंगविग्रहः ॥ नखलोमास्थिचर्माणिलिंगच्छिद्रोद्भवस्त्रिभिः ॥ ७ ॥ चतुर्भिर्धातवस्सप्तपंचभिः क्षुत्तृडुद्भवः ॥ षड्भिर्जरायुणावीतः कुक्षौभ्राम्यतिदक्षिणे ॥ ८ ॥

उत्पन्न होयहैं॥५॥एक रात्रिकरिकै कलल पाँच रात्रिमें बुद्बुद कहिये गोल होजाय है और दश रात्रिमें कर्कंधू जो बेरी है ताके फलके समान कठोर मांसकी पेशी कहिये मांसको पिंड होय है अथवा दूसरी योनिमें अंडा होय है ॥६॥ ता पीछे दो महीनेमें शिर होय है और बाँह आदि अंगनको विग्रह कहिये विभाग होय है और तीनि महीनेमें नख रोम हड्डी चाम और लिंगछेद होय हैं ॥७॥ चारि महीनेमें सातों धातु होयहैं पांचवें

दुःखको पराधीनताईसों भोगै है ॥ २९ ॥ गर्भके दुःख कहिकै अब बालकपनके दुःख कहैहैं पराये अभिप्रायको नहीं जानतो भयो जो जन है ताकरि पालन कियो गयो और आपसो प्रतिकूलको पाकै मने करनेको असमर्थ होय है ॥ ३० ॥ स्वेदजजीव जे जूं आदि हैं तिनकरिकै दूषित अशुद्ध सज्जापर सुवाया गया अंगोंके खुजानेको समर्थ नहीं होयहै और आसनते उठने तथा चेष्टा करनेकोहू समर्थ नहीं

परच्छन्दंनविदुषापुष्यमाणोजनेनसः ॥ अनभिप्रेतमापन्नःप्रत्याख्यातुमनीश्वरः ॥ ३० ॥ शायितोशुचिपर्यंङ्के जंतुस्वेदजदूषिते॥नेशः कण्डूयनेङ्गानामासनोत्थानचेष्टने ॥ ३१ ॥ तुदन्त्यामत्वचंदंशामशकामत्कुणादयः॥ रुदन्तंविगतज्ञानंकृमयः कृमिकंयथा ॥ ३२ ॥ इत्येवंशैशवंभुक्त्वादुःखंपौगण्डमेवच ॥ ततोयौवनमासाद्यया तिसंपदमासुरीम् ॥ ३३ ॥ तदादुर्व्यसनासक्तोनीचसंगपरायणः ॥ शास्त्रसत्पुरुषाणांचद्वेष्टास्यात्कामलम्पटः ॥ ३४ ॥ दृष्ट्वास्त्रियंदेवमायांतद्भावैरजितेन्द्रियः ॥ प्रलोभितः पतत्यन्धेतमस्यग्नौपतंगवत् ॥ ३५ ॥

होयहै ॥ ३१ ॥ डांस मसा खटकीरा आदि नरम त्वचामें काटे हैं और रोवते भये वा ज्ञानरहित कृमी है ऐसी कंथाके कीडे काटैं हैं ॥३२॥ या प्रकार बालकपनको भोगिकै फिरि पौगंड अवस्थाके पढने आदिके दुःख भोगै है तापीछे यौवनको आसुरी संपत्ति दंभ दर्प और अभिमानताको प्राप्त होय है॥३३॥ता पीछे यौवनमें दुर्व्यसनमें आसक्त और नीचके संगमें लगोभयो और शास्त्र तथा सत्पुरुषनको द्वेष्टा होता है और काममें लंपट होय है॥३४॥ देवमाया जो स्त्री हैं ताहि देखिकै वाके कटाक्षआदि भावनकरि लुभायो गयो इंद्रिनके वशमें

हो आगमें पतंगके समान अंधतममें गिरै है ॥ ३५ ॥ कुरंग हरिण मातंग हाथी पतंग जो दीपकमें गिरै हैं भृंग भँवर और मीन (मछली) ये पांचपांचही विषयनकरि मारे जांयहै और एक यह प्रमादी पुरुष जो पांच इन्द्रीनसों पांच विषयनकी सेवा करे है वह काहे न मारो जाय ॥ ३६ ॥ दो श्लोकनसों वा हननकोही कहैं हैं नहीं पायो है वांछित कामिनी आदिको सुख जानै और अज्ञान जो

कुरङ्गमातंगपतंगभृङ्गमीनाहताः पंचभिरेवपंच ॥ एकःप्रमादीसकथंनहन्यतेयःसेवते पंचभिरेवपंच ॥ ३६ ॥ अलब्धाभीप्सितोज्ञानादिद्धमन्युः शुचार्पितः ॥ सहदेहेनमानेनवर्धमानेनमन्युना ॥ ३७ ॥ करोति विग्रहं कामीकामिष्वंतायचात्मनः ॥ बलाधिकः स हन्यतेगजैरन्यैर्गजोयथा ॥ ३८ ॥ एवंयोविषयासक्त्यान रत्वमातिदुर्लभम् ॥ वृथानाशयतेमूढस्तस्मात्पापतरोहिकः ॥ ३९ ॥

अविचार है तासों इद्ध कहिये बढोभये जो क्रोध है तासों शुचार्पित कहिये शोक ताके साथही लगो भयो बढते भये क्रोधके साथही वृद्धिको प्राप्त होयहै ॥ ३७ ॥ अपनो अहित जो नाश है ताके लिये कामी जो और जारपुरुष हैं तिनमें कामिनीके लिये विरोधको करै हैं तब वह कामी युवा बलमें अधिक ऐसे जनकरि मारो जाय है जैसे अन्यगजनकरि गज मारो जायहै ॥ ३८ ॥ या प्रकार जो मूढ

पुरुष विषयनकी आसक्तिसों अतिदुर्लभ जो नरत्व है ताहि वृथा नाश करेहै यातें अधिक पापी कौन है ॥ ३९ ॥ पशु भू आदि असंख्यात जातिनमें भुवि कहिये कर्मभूमिमें जो मनुष्यशरीर पावै है वह निश्चय दुर्लभ है । हे तपस्वी मनुष्यो ! वहांभी अर्थात् मनुष्य शरीरके पावनमें वह दुर्लभ काहेसों कि यह भगवन्नामके स्मरणके योग्य होनेके कारण ऐसो उत्कृष्ट है वहां नरदेहमें द्विजत्व जो ब्राह्मण होनी है सो अतिदुर्लभ है यातें हे गरुड ! जो द्विज वा तरुणाईमें देहको पालै है अर्थात् विषयोंके भोगनेमें इंद्रीनको लंपट करै

जातीशतेषुलभतेभुविमानुषत्वंतत्रापिदुर्लभतरंखलु भा द्विजत्वम् ॥ यस्तन्नपालयतिलालयतीन्द्रियाणि तस्यामृतंक्षरतिहस्तगतंप्रमादात् ॥ ४० ॥ ततस्तांवृद्धतांप्राप्यमहाव्याधिसमाकुलः ॥ मृत्युंप्राप्यमहद्दुःखं नरकंयाति पूर्ववत् ॥ ४१ ॥ एवंगतागतैःकर्मपाशैर्बद्धाश्चपापिनः ॥ कदापिनविरज्यन्तेममभाया विमोहिताः ॥ ४२ ॥

है वा ब्राह्मणके हाथमें आयो अमृत है सो प्रमाद जो पीनेमें आलकस है तासों वृथाही गिरजाय है ॥ ४० ॥ ता पीछे तरुणाईके अनंतर वा वृद्धताको प्राप्त हो महाव्याधिनसों व्याकुल हो बडो है दुःख जामें ऐसे मृत्युको प्राप्त हो पहलेकी भाँति नरकमें जाय है ॥ ४१ ॥ ऐसे गत आगत प्रकारनसों अर्थात् कबहूँ नरकमें और नरकनते पृथिवीमें या भाँति कर्मफाँसनमें बँधे

श्रीभगवान् बोले, ऐसी की है मति जाने ऐसो दशमासको ऋषि कहिये जीव नीचेको है मुख जाको ऐसे सूतिको कारण जो वायु है वह शीघ्रही प्रसूतिके लिये प्रेरणा करै है ॥ २४ ॥ वा पवनकरि अब सृष्टि कहिये प्रेरणा कियो गयो प्राणी नीचेको शिर करिके उच्छ्वासरहित नष्ट हो गई है स्मृति जाकी ऐसो कष्टसो निकरै है ॥२५॥ पृथ्वीमें विष्ठामूत्रमें परो भयो विष्ठाभू जो कीरा है ताकीसी चेष्टा

श्रीभगवानुवाच ॥ एवंकृतमतिर्गर्भेदशमास्यःस्तुवन्नृषिः ॥ सद्यःक्षिपत्यवाचीनंप्रसूत्यैसूतिमारुतः ॥ २४॥ तेनावसृष्टः सहसाकृत्वावाक्शिरआतुरः ॥ विनिष्क्रामतिकृच्छ्रेणनिरुच्छ्वासोहतस्मृतिः ॥२५॥ पतितो भुवि विण्मूत्रे विष्ठाभूरिवचेष्टते ॥ रोरूयतिगतेज्ञानेविपरीतांगतिंगतः ॥ २६ ॥ गर्भेव्याधौश्मशानेचपुराणेयाम तिर्भवेत् ॥ सायदिस्थिरतांयाति कोनमुच्येतबन्धनात् ॥ २७ ॥ यदागर्भाद्बहिर्यातिकर्मभोगादनन्तरम् ॥ तदैववैष्णवीमाया मोहयत्येवपूरुषम् ॥२८॥ सतदामाययास्पृष्टोनकिंचिद्वदतेवशः ॥ शैशवादिभवंदुः खंपराधीनतयाऽश्नुते ॥ २९ ॥

करै है ज्ञानके जाननेपै विपरीत गतिको प्राप्त हो बहुतही रोवै है ॥ २६ ॥ गर्भमें रोगमें श्मशानमें मृतकके साथ जानेमें और पुराणके सुननेमें जो मति होय है वह तो स्थिर वनी रहे तो कौन बंधनते न छूटिजाय ॥ २७ ॥ कर्मभोगके पीछे जब गर्भते बाहर आवै है तभी वैष्णवी माया पुरुषको मोहित करिदेय है ॥ २८ ॥ वह तब मायाकरि छुओगयो परवश हो कुछ नहीं कहै है, बालकपन आदिसे भये

अर्थके जो निश्चय है ताहि कहौ वह ऐसो उपाय है हे माधव! जातें मनुष्य सद्गतिको प्राप्त होय॥४॥श्रीभगवान् बोले, हे गरुड! तुमने मनुष्यके हितके लिये बहुत अच्छो प्रश्न कियो अब तुम सावधान चित्त होके सुनो मैं तुमसों सब कहोंगो ॥५॥ पहले मैंने पुत्रकरि रहित जे पापी तिनकी दुर्गति कही हे खगेश्वर! पुत्रवाले जे धर्मात्मा उनकी कबहूँ दुर्गति नहीं होय है ॥ ६ ॥ यदि उन धर्मात्माके काहू कर्मके विरोधसों पुत्रकी उत्पत्ति न होय तो काहू उपायसों पुत्र उत्पन्न होनेकी उत्पत्तिको साधन करै ॥ ७ ॥ पुत्रकी

श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टंत्वया तार्क्ष्यमानुषाणांहितायवै ॥ शृणुष्वावहितोभूत्वासर्वंतेकथयाम्यहम् ॥५॥ दुर्गतिः कथितापूर्वमपुत्राणांचपापिनाम् ॥ पुत्रिणांधार्मिकाणांतुनकदाचित्खगेश्वर ॥ ६ ॥ पुत्रजन्मनिरोधः स्याद्यदिकेनापिकर्मणा॥तदाकश्चिदुपायेनपुत्रोत्पत्तिंप्रसाधयेत्॥७॥हरिवंशकथांश्रुत्वाशतचंडीविधानतः॥ भक्त्याश्रीशिवमाराध्यपुत्रमुत्पादयेत्सुधीः॥८। पुन्नाम्नोनरकाद्यस्मात्पितरंत्रायतेसुतः॥तस्मात्पुत्रइतिप्रोक्तः स्वयमेवस्वयंभुवा॥९॥एकोपिपुत्रोधर्मात्मासर्वंतारयतेकुलम्॥पुत्रेणलोकाञ्जयति श्रुतिरेषासनातनी ॥ १० ॥

उत्पन्न होनेको उपाय कहैहै हरिवंशपुराणकी कथाको सुनिकै और भक्तिसों शतचंडीको विधानकरिकै और भक्तिसों शिवको आराधन करि अच्छी बुद्धिवालो मनुष्य पुत्रको उत्पन्न करै ॥८॥ पुत्र जाते पुन्नामकनरकनते पिताको बचावे है तातें स्वयम्भूने आपही याको पुत्र कह्यो है ॥ ९ ॥ एकहू धर्मात्मा पुत्र सब कुलको तारिदेय है और पुत्रकरि लोकनको जीतिले है यह सनातनी श्रुति है ॥ १० ॥

यह उत्तम पुत्रको माहात्म्य वेदनहूँने कह्यो है तातें पुत्रको मुख देखि पिता पैतृक कहिये पितरनको जो ऋण है ताते मुक्त होजाय है ॥ ११ ॥ पौत्रके स्पर्श करनेसों मनुष्य तीनि प्रकारके ऋणसों छूटिजाय है और यमलोक आदि लोकनको उल्लंघि जाय है और पुत्र पौत्र प्रपौत्रनसों स्वर्गकी प्राप्ति होय है॥१२॥ ब्राह्मविवाहसों व्याहीगई जो पत्नी है वाते उत्पन्न पुत्र ब्राह्मोढापुत्र होय है वह पुत्र ऊर्ध्व कहिये ऊपरके स्वर्गलोक

इतिवेदैरपिप्रोक्तंपुत्रमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ तस्मात्पुत्रमुखंदृष्ट्वामुच्यतेपैतृकादृणात् ॥ ११ ॥ पौत्रस्यस्पर्शनान्मर्त्योमुच्यतेचऋणत्रयात् ॥ लोकानंत्यंदिवःप्राप्तिः पुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः ॥ १२ ॥ ब्राह्मोढापुत्रोन्नयतिसंगृहीतस्त्वधोनयेत् ॥ एवंज्ञात्वाखगश्रेष्ठहीनजातिसुतांस्त्यजेत्॥ १३॥ सवर्णेभ्यःसवर्णासुयेपुत्राऔरसाःखग ॥ तएवश्राद्धदानेनापितॄणांस्वर्गहेतवः ॥ १४ ॥ श्राद्धेनपुत्रदत्तेनस्वर्यांतीतिकिमुच्यते ॥ प्रेतोपिपरदत्तेनगतः स्वर्गमथोशृणु ॥ १५ ॥

आदिमें पहुँचावे है और संगृहीत कहिये विना विवाहितातें उत्पन्न पुत्र अधोगति जो नरक है तामें पहुँचावे है. या बातको जानके मनुष्य हीनजातिके पुत्रोंको त्याग करै ॥ १३ ॥ हे गरुड! सवर्ण स्त्रीनमें सवर्णपतिनसों सवर्ण जे औरस पुत्र उत्पन्न होय हैं वेही श्राद्धके दानसों पित्रनको स्वर्गके कारण होय हैं॥१४॥ यह तुम कहा कि पुत्रकरि दियेभये श्राद्धसों मनुष्य स्वर्गको जाय प्रेतहू पराये दिये भयेसों स्वर्गको

गयो सो सुनो॥१५॥यहांही पुराने इतिहासको मैं उदाहरण देऊँगो. जो औध्वंदेहिक दानको बडो माहात्म्य है ताको सूचित करनवारो है॥१६॥ हे गरुड ! पहले त्रेतायुगमें बभ्रुवाहन नाम राजा सुन्दर महोदयपुरमें महाबलवान् और धर्ममें निष्ठा राखनवालो होत भयो ॥१७॥ वह यज्वा हो दानको पति हो लक्ष्मीवान् हो ब्राह्मणका भक्त हो और साधु जाके प्यारे हैं और शील आचार तथा गुणकरिकै युक्त हो

अत्रैवोदाहरिष्येहमितिहासंपुरातनम् ॥ औध्वंदेहिकदानस्यपरं माहात्म्यसूचकम् ॥ १६ ॥ पुरात्रेतायुगे ताक्ष्यराजासीद्बभ्रुवाहनः ॥ महोदयेपुरेरम्येधर्मनिष्ठोमहाबलः ॥ १७ ॥ यज्वादानपतिः श्रीमान्ब्रह्मण्यः साधुवत्सलः ॥ शीलाचारगुणोपेतोदयादाक्षिण्यसंयुतः ॥ १८ ॥ पालयामास धर्मेणप्रजाःपुत्रानिवौरसान्॥ क्षत्रधर्मरतो नित्यंसदण्डयान्दण्डयन्नृपः ॥ १९ ॥ सकदाचिन्महाबाहुः ससैन्यो मृगयांगतः ॥ वनंविवेशगहनंनानावृक्षसमन्वितम् ॥ २० ॥

और दया तथा दाक्षिण्य जो चतुराई है ताकरिकै युक्त हो ॥ १८ ॥ धर्मसों प्रजानको अपने औरसपुत्रके समान पालन करे हो और दंड देने योग्यनको दंड देतो भयो वह राजा नित्यही क्षत्रियनके धर्ममें तत्पर रहतो भयो ॥ १९ ॥ काहू समय वह महाबाहु राजा सेना समेत मृगया जो शिकार है ताको जात भयो और नाना प्रकारके वृक्षनकरि युक्त घने वनमें प्रवेश करत भयो ॥ २० ॥

भये पापी मेरी मायासों मोहित कबहूँ वैराग्यको नहीं प्राप्त होय हैं ॥ ४२ ॥ हे गरुड ! या प्रकार मैंने तुमसों नरककी गति कही और अंत्येष्टिकर्म करिकै हीन जे पापी हैं तिनकी गति फिर सुनो ॥ ४३ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ सूतजी बोले या प्रकार सुनिकै गरुड पीपलके पत्तेके समान काँपने लगे

इतितेकथितातार्क्ष्यपापिनांनारकीगतिः ॥ अन्त्येष्टिकर्महीनानांकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४३ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेपापिजन्मादिदुःखनिरूपणोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ सूतउवाच ॥ इति श्रुत्वातुगरुडः कम्पितोश्वत्थपत्रवत् ॥ जनानामुपकारार्थंपुनः पप्रच्छकेशवम् ॥ १ ॥ गरुडउवाच ॥ कृत्वापापानिमनुजाः प्रमादाद्बुद्धितोपिवा ॥ नयान्तियातनायाम्याः केनोपायेनकथ्यताम् ॥ २ ॥ संसारार्णवमग्नानांनराणां दीनचेतसाम् ॥ पापोपहतबुद्धीनांविषयोपहतात्मनाम् ॥ ३ ॥ उद्धारार्थंवदस्वामिन्पुराणार्थविनिश्चयम् ॥ उपायंयेनमनुजाः सद्गतिंयान्तिमाधव ॥ ४ ॥

और जननके उपकारके लिये श्रीकेशव भगवान्सों फिर पूँछत भये ॥१॥ गरुड बोले मनुष्य जानकै अथवा विना जाने पापनको करिकै यमकी यातनानको न जाय अर्थात् जिनको यमके दंड नहीं मिलैं ऐसे कौनसे उपायसों होय सो कहो ॥ २ ॥ संसाररूप समुद्रमें डूबेभये और निश्चयरहित हैं चित्त जिनके और विषयनकरि ताडित हैं आत्मा जिनकी ॥३॥ हे स्वामिन् ! पापी नरकनके उद्धारके लिये पुराणके

देखतभयो बडी २ तौ वाकी शाखाहै तिनसों बहुतही विस्तीर्ण कहिये चौडोहै और नानाप्रकारके पक्षीनके समूहसों शब्दायमानहोरहोहै ॥२६॥ वह वन कैसो है कि, सबसों ऊँचो होनेके कारणसों बडे भारी पताकाक समान स्थितहै वाके मूलके समीप पहुँचिकै राजा बैठि जात भयो ॥२७॥ या पीछे वह राजा क्षुधा तृषासों पीडित होनेसों व्याकुल हैं इंद्रिय जाकी और ऊपरको हैं बाल जाके और मैले रूप

वनस्यतस्यसर्वस्यमहाकेतुमिवस्थितम् ॥ मूलंतस्यसमासाद्यनिषसादमहीपतिः ॥ २७ ॥ अथप्रेतंददर्शासौ क्षुत्तृड्भ्यांव्याकुलेन्द्रियम् ॥ उत्कचंमलिनंकुब्जंनिर्मांसंभीमदर्शनम् ॥ २८ ॥ तंदृष्ट्वाविकृतं घोरं विस्मितो बभ्रुवाहनः ॥ प्रेतोपिदृष्ट्वातंघोरामटवीमागतंनृपम् ॥ २९ ॥ समुत्सुकमनाभूत्वातस्यान्तिकमुपागतः ॥ अब्रवीत्सतदाताक्ष्यर्यप्रेतराजोनृपं वचः ॥ ३० ॥ प्रेतभावोमयात्यक्तः प्राप्तोस्मिपरमांगतिम् ॥ त्वत्संयोगान्महाबाहोजातो धन्यतरोस्म्यहम् ॥ ३१ ॥

कुबडा जाक मांस नहीं और भयानक है दर्शन जाक ऐसे प्रेतको देखत भये ॥२८॥ वा विकृत और घोरराक्षसको देखिकै बभ्रुवाहन बहुत विस्मित होतभये और प्रेतहू वा घोर वनमें आये भये वा राजाको देखि विस्मित होतभयो ॥२९॥ और वह प्रेतहू उत्कंठित मन होकै वा राजाके समीप आवत भयो और हे तार्क्ष्य ! प्रेतराज वा समय राजासों बोलत भयो ॥ ३० ॥ प्रेतभाव मैंने छोडो और ॥ ३७ ॥

परगतिको प्राप्त भयो । हे महाबाहु ! तुम्हारे संयोगसों आज मैं अतिधन्य भयो ॥ ३१ ॥ राजा बोलो कारो है वर्ण जाको और बडो भयानक है मुख जाको और बहुतही घोर है दर्शन जाको ऐसो बडो अमंगल रूप प्रेतपन तैंने कौनसे कर्मके परिणामसों पायो है ॥३२॥ हे तात ! तू मोसों सगरो प्रेतपनको कारण कह तू कौन है और कौनसे दानसों तेरो प्रेतपन दूरि होय ॥३३॥ प्रेत बोलो कि, हे राजनमें श्रेष्ठ ! मैं तुमसों सब आदिते लगाकै कहोंगो और मेरे प्रेतपनके कारणको सुनिकै तुम दया करनेको योग्य हौ ॥ ३४ ॥ सब

राजोवाच ॥ कृष्णवर्णकरालास्यप्रेतत्वंघोरदर्शनम् ॥ केनकर्मविपाकेनप्राप्तंतेबहमङ्गलम् ॥ ३२ ॥ प्रेतत्व कारणतातब्रूहिसर्वमशेषतः ॥ कोसित्वंकेनदानेनप्रेतत्वंतेविनश्यति ॥ ३३ ॥ प्रेतउवाच ॥ कथयामि नृप श्रेष्ठसर्वमेवादितस्तव ॥ प्रेतत्वकारणंश्रुत्वादयांकर्तुंत्वमर्हसि ॥ ३४ ॥ वैदेशंनामनगरंसर्वसंपत्समान्वितम् ॥ नानाजनपदाकीर्णंनानारत्नसमाकुलम् ॥ ३५ ॥ हर्म्यप्रासादशोभाढ्यंनानाधर्मसमन्वितम् ॥ तत्राहंन्यव संतातदेवार्चनरतः सदा ॥ ३६ ॥

सम्पत्तीनसों पूरो भया वैदेशनाम एक नगर है वह नानाप्रकारके जननसों तथा रत्ननसों परिपूर्ण होरहो है ॥ ३५ ॥ हर्म्य जो धनवान्के घर हैं और प्रासाद जे राजानके घर हैं तिनकी शोभाकरिकै युक्त है और नाना प्रकारके जे धर्म श्रौत स्मार्त्त आदि हैं

तिनकरिकै युक्त है. हे तात ! वा पुरमें मैं सदा देवतानको पूजन करतोभयो वास करौंहौं ॥३६॥ वैश्य जातिको मैं सुदेव यह मेरो नाम
आपको विदित हो और हव्य जो अन्न देवतानको दियोजाय है तासों देवतानको और कव्य जो अन्न पितरनको दियो जाय है
तासों पितरनको संतुष्ट कियो ॥३७॥ और नाना प्रकारके दाननके योगसों मैंने ब्राह्मण संतुष्ट किये और दीन अन्धे तथा कृपण मनु
ष्यनको मैंने अनेक प्रकारसों अन्नदान दियो॥३८॥हे राजा ! वह सब मेरो दैवयोगसों निष्फल होगयो और जैसे मेरो सुकृत निष्फल

वैश्योजात्यासुदेवोहंनाम्नाविदितमस्तुते ॥ हव्येनतर्पितादेवाः कव्येन पितरस्तथा ॥ ३७ ॥ विविधैर्दानयो
गैश्च विप्राः संतर्पितामया ॥ दीनान्धकृपणेभ्यश्चदत्तमन्नमनेकधा ॥ ३८ ॥ तत्सर्वंनिष्फलंराजन्ममदैवादुपा
गतम् ॥ यथामेनिष्फलंजातंसुकृतंतद्वदामिते ॥ ३९ ॥ ममैवसंततिर्नास्तिनसुहृन्नचबान्धवः ॥ नचामित्रंहिमे
तादृग्यःकुर्यादौर्ध्वदैहिकम् ॥ ४० ॥ यस्यनस्यान्महाराजश्राद्धंमासिकषोडशम् ॥ प्रेतत्वंसुस्थिरंतस्यदत्तैः
श्राद्धशतैरपि ॥ ४१ ॥

होगयो सो मैं तुमसों कहौं हौं ॥३९॥मेरेही सन्तति नहीं न कोई मित्र हो न बांधव हो और मेरो ऐसो मित्र कोउ नहीं हो जो और्ध्व ॥ ३८ ॥
देहिक अर्थात् परलोककी क्रिया करै ॥४०॥ हे महाराज ! जाको षोडश और मासिक श्राद्ध नहीं होयहै ताको पुत्रके होने हूपैऔर
सैंकरन श्राद्ध करनेहूपै प्रेतत्व स्थिरही रहै अर्थात् नहीं जायहै ॥ ४१ ॥

वह वन कैसो है नाना प्रकारके जे मृगनके गणहैं तिनकरिकै भरो भयाहै और नाना प्रकारके पक्षीन करिकै शब्दायमान है वा समय तब राजा
वनके मध्यमें दूरिसों मृग जो है ताहि देखत भयो ॥२१॥वा राजाकरि अतिपुष्ट बाणसों वेध्योगयो वह मृग वा राजाके बाणको लेकै अह
श्य होजात भयो॥२२॥वह राजा रुधिरसों गीली घासको देखतो भयो वा हिरनके पीछे जात भयो ता पीछे मृगके प्रसंगसों दूसरे

नानामृगगणाकीर्णंनानापक्षिविनादितम् ॥ वनमध्येतदाराजामृगंदूरादपश्यत ॥ २१ ॥ तेनविद्धोमृगोतीव
बाणेनसुदृढेनच ॥ बाणमादायतंतस्यवनेऽदर्शनमेयिवान् ॥२२॥ कक्षेणरुधिरार्द्रेणसराजानुजगामतम्॥ततो
मृगप्रसंगेनवनमन्यद्विवेशसः॥ २३ ॥क्षुत्क्षामकण्ठोनृपतिःश्रमसंतापमूर्च्छितः॥जलाशयंसमासाद्यसाश्वएव
व्यगाहत ॥ २४ ॥ पपौतदुदकंशीतंपद्मगन्धादिवासितम् ॥ ततोवतीर्यसलिलाद्विश्रमोबभ्रुवाहनः ॥ २५ ॥
ददर्श न्यग्रोधतरुंशीतच्छायंमनोहरम् ॥ महाविटपविस्तीर्णंपक्षिसंघविनादितम् ॥ २६ ॥

वनमें प्रवेश करत भयो॥२३॥क्षुधासों क्षाम कहिये दुर्बल है कंठ जाको और श्रमको जो संताप है तासों मूर्च्छित राजा जलाशय जो
तालाब है तापै पहुँचि घोडेसमेतही स्नान करतभया ॥२४॥ और कमलन आदिके गंधसों सुगंधित वाको शीतल जल पियत भयो ता
पीछे वह बभ्रुवाहन राजा जलतें बाहर निकरि श्रमरहित होजात भयो ॥ २५ ॥ और शीतल है छाया जाकी ऐसे मनोहर वटके वृक्षको

तौ निश्चय मेरा प्रेतपनो नष्ट होजाय यामें संदेह नहीं है वेद मंत्र तप दान तथा सब जीवनपर दया ॥४७॥ उत्तम शास्त्रको सुननो विष्णुकी पूजा सज्जनकी सगात ये सब बातें प्रेतयोनिके नाशके लिये होयहैं यह मैंने सुनो है॥४८॥याते प्रेतत्वकी नाश करनहारो विष्णुकी पूजाको तुमसों कहागो न्यायसों जोडे भये सुवर्णमेंसे दो सुवर्ण अर्थात् ३२मासे सुवर्ण लेकर हे राजन्! वाकी एक नारायणकी प्रतिमा

तदानश्यतिमेनूनंप्रेतत्वंनात्रसंशयः ॥ वेदामन्त्रास्तपोदानंदयासर्वेषुजन्तुषु ॥ ४७ ॥ सच्छास्त्रश्रवणंविष्णोः पूजासज्जनसंगतिः ॥ प्रेतयोनिविनाशायभवन्तीतिमयाश्रुतम् ॥ ४८॥ अतोवक्ष्यामितेविष्णुपूजांप्रेतत्व नाशिनीम् ॥ सुवर्णद्वयमानीयसुवर्णन्यायसंचितम् ॥ तस्यनारायणस्यैकांप्रतिमांभूपकल्पयेत् ॥ ४९ ॥ पीतवस्त्रयुगच्छन्नांसर्वाभरणभूषिताम् ॥ स्नापितांविविधैस्तोयैरधिवास्ययजेत्ततः ॥ ५० ॥ पूर्वेतुश्रीधरंत स्यादक्षिणे मधुसूदनम् ॥ पश्चिमेवामनंदेवमुत्तरेचगदाधरम् ॥ ५१ ॥

बनावे॥४९॥वा प्रतिमाको पीले कपरानके जोडासों आच्छादित करै और सब आभरणसों शोभित करै और नाना प्रकारके जलनसों स्नान करायकै सिंहासनपर स्थापित करिकै पूजन करै ॥ ५० ॥ वा सुवर्णमयी प्रतिमाके पूर्वभागमें श्रीधरकी और दक्षिणमें मधुसूद ॥ ३९ ॥

नकी और वाके पश्चिममें वामनदेवकी और उत्तरमें गदाधरकी स्थापना करै ॥ ५१ ॥ और मध्यमें पितामह जो देव हैं ब्रह्मा तिनकी तथा महेश्वर देवको विधानसों गंध पुष्प आदिसों पृथक् पृथक् पूजन करै ॥५२॥ ता पीछे प्रदक्षिणा करिकै और अग्निमें देवतानको तृप्त करिकै घी दही और दूधसों विश्वेदेवानको तृप्त करै ॥ ५३ ॥ ता पीछे न्हायो भयो और विनीत है आत्मा जाको ऐसो सावधान यजमान नारायणके

मध्येपितामहंचैवतथादेवंमहेश्वरम् ॥ पूजयेच्चविधानेनगन्धपुष्पादिभिःपृथक् ॥ ५२ ॥ ततः प्रदक्षिणीकृ त्यवह्नौ संतर्प्यदेवताः ॥ घृतेनदध्नाक्षीरेणविश्वेदेवांश्चतर्पयेत् ॥ ५३ ॥ ततःस्नातोविनीतात्मायजमानः समाहितः ॥ नारायणाग्रेविधिवत्स्वःक्रियामौर्ध्वदेहिकीम् ॥ ५४ ॥ आरभेतयथाशास्त्रंक्रोधलोभविवर्जितः ॥ कुर्याच्छ्राद्धानिसर्वाणिवृषस्योत्सर्जनंतथा ॥ ५५ ॥ ततः पदानिविप्रेभ्योदद्याच्चैवत्रयोदश ॥ शय्यादानं प्रदत्त्वाचघटंप्रेतस्य निर्वपेत् ॥ ५६ ॥

आगे विधिपूर्वक और्ध्वदेहिक क्रियाको करै ॥ ५४ ॥ क्रोध तथा लोभकरि रहित होकै शास्त्रकी रीतिसों आरम्भ करै सब श्राद्ध और वृषोत्सर्ग करै ॥५५॥ ता पीछे ब्राह्मणोंके लिये तेरह पदनका दान करै और शय्यादान करिकै प्रेतके लिये घटको दान करै ॥ ५६ ॥

राजा बोले। हे प्रेत! कैसे घट करै और कौनसी विधिसों दान करै सो तू सब जीवनपर दया करिकै प्रेतकी मुक्तिके देनहारे घटको कहौ ॥५७॥ प्रेत बोला हे महाराज! तुमने अच्छा प्रश्न कियो सो मैं कहौंहौं आप मन लगायके सुनिये जा सुदृढ दानसों प्रेतत्व न होय॥५८॥ यह प्रेतघट नाम दान सब अशुभनको नाश करनहारो है दुर्गतिनको क्षय करनहारो है यह सब लोकनको दुर्लभहै॥५९॥ तपाये भये सोनेको घटबना

राजोवाच ॥ कथंप्रेतघटंकुर्याद्दद्यात्केनविधानतः॥ब्रूहिसर्वानुकम्पार्थंघटंप्रेतविमुक्तिदम् ॥५७॥ प्रेतउवाच ॥ साधुपृष्टंमहाराजकथयामिनिबोधते ॥ प्रेतत्वंनभवेद्येनदानेनसुदृढेनच ॥ ५८ ॥ दानंप्रेतघटंनामसर्वाशुभविनाशनम् ॥ दुर्लभंसर्वलोकानांदुर्गतिक्षयकारकम् ॥५९॥ संतप्तहाटकमयंतु घटंविधायब्रह्मेशकेशवयुतं सह लोकपालैः ॥ क्षीराज्यपूर्णविवरंप्रणिपत्यभक्त्याविप्रायदेहितवदानशतैः किमन्यैः ॥ ६० ॥ ब्रह्मामध्ये तथाविष्णुः शङ्करः शङ्करोऽव्ययः ॥ प्राच्यादिषुचतत्कण्ठेलोकपालान्क्रमेणतु ॥ ६१ ॥

यके ब्रह्मा, ईश, केशव और लोकपाल जे इंद्र आदि हैं तिनकरिकै युक्त करै फिरि वामें दूध और घी भरिकै ब्राह्मणको दान करै इस घटते अन्य सैंकरन दाननसौं तुमको कौनसो प्रयोजनहै॥६०॥ वा घटके मध्यमें ब्रह्मा तथा विष्णु और अविनाशी जे शंकर हैं तिनको पूजन करै और

हे महीपते! तुम और्ध्वदेहिक करिके मेरो उद्धार करो और या लोकमें सगरे वर्णनको राजा बन्धु कहो जाय है ॥ ४२ ॥ हे राजन्! ताते मोको तारो मैं तुमको मणि रत्न देउँगो जैसे मेरी सद्गति होय और प्रेतकी योनि छूटि जाय ॥ ४३ ॥ हे महाराज! जो मेरो प्रिय किया चाहतेहो तो तुमको वैसो करना चाहिये भूख प्यास आदिके दुःखनसों प्रेतपनो मोको बहुतही दुःसह है ॥४४ ॥ या वनमें सुन्दर

त्वमौर्ध्वदेहिकंकृत्वामामुद्धरमहीपते ॥ वर्णानां चैवसर्वेषांराजाबन्धुरिहोच्यते ॥ ४२ ॥ तन्मांतारयराजेन्द्रमणिरत्नंददामिते ॥ यथामेसद्गतिर्भूयात्प्रेतयोनिश्चगच्छति ॥ ४३ ॥ तथाकार्यंत्वयावीरममचेदिच्छसि प्रियम् ॥ क्षुधातृषादिभिर्दुःखैःप्रेतत्वंदुःसहंमम ॥ ४४ ॥ स्वादूदकंफलंचास्तिवनेस्मिञ्छीतलंशिवम् ॥ नप्राप्नोमिक्षुधार्तोऽहंतृषार्तोनजलंक्वचित् ॥ ४५ ॥ यदिमेहिभवेद्राजन्विधिर्नारायणोमहान् ॥ तदग्रेवेदमन्त्रैश्चक्रियासर्वौर्ध्वदेहिकी ॥ ४६ ॥

स्वादिष्ट शीतल जल तथा फल हैं क्षुधासों पीडित मैं उन फलनको नहीं पाउँहौं और प्यासो कहूं जलको नहीं पाउँहौं ॥ ४५ ॥ हे राजन्! जो मेरी यह बडी नारायणविधि होय और वाके आगेकी सब विधि वेदके मंत्रनसों कीन्ही जाय ॥ ४६ ॥

हे गरुड ! सब औध्वदेहिक विधि अर्थात् मरनेके पीछेकी क्रियानको विधिसों करत भयो वाके पुण्यके देनेसों प्रेतयोनितें छूटिकै वह स्वर्गलोकको जातभयो ॥ ६७ ॥ पराय दियेभये श्राद्धसों प्रेतहू उत्तमगतिको प्राप्त होतभयो और जो पुत्रकारि दियेभये श्राद्ध करि पिता सद्गतिको प्राप्त होय तो यामें कहा आश्चर्य है ॥ ६८ ॥ या पवित्र इतिहासको जो सुनैगो और सुनावैगो वे दोनों पापीहू होनेपै प्रेतयोनिको

चकारविधिवत्पक्षिन्नौर्ध्वदेहिकजंविधिम् ॥ तस्यपुण्यप्रदानेनप्रेतोमुक्तोदिवंययौ ॥ ६७ ॥ श्राद्धेनपरदत्तेन गतः प्रेतोपिसद्गतिम् ॥ किंपुनः पुत्रदत्तेनपितायातीतिचाद्भुतम् ॥ ६८ ॥ इतिहासमिमंपुण्यंशृणोतिश्रावयेच्चयः ॥ नतौ प्रेतत्वमायातःपापाचारयुतावपि ॥ ६९ ॥ इतिश्रीगरुड० सारोद्धारेबभ्रुवाहनप्रेतसंस्कारोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ गरुडउवाच ॥ आमुष्मिकींसुकृतिनांक्रियांसर्वांवदस्वमे ॥ कर्तव्यासायथापुत्रैस्तथाचकथय प्रभो ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टंत्वयाताक्ष्र्यमानुषाणांहितायवै ॥ धार्मिकार्हंचयत्कृत्यंतत्सर्वंकथयामिते ॥ २ ॥

नहीं प्राप्त होयगो ॥ ६९ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणभाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ गरुड बोले, हे महाराज! परलोकमें सहाय करनहारी ऐसी सुकृत मनुष्यनकी आमुष्मिकी क्रिया है ता सबको कहो और वह जैसे पुत्रनको करनी चाहिये सो सब कहो ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले, हे गरुड ! तुमने मनुष्यनके हितके लिये अच्छो प्रश्न कियो जो कृत्य

धर्मात्मा मनुष्यके योग्य है सब मैं तुमसों कहौंगो ॥ २ ॥ सुकृती पुरुष वृद्धअवस्थामें शरीरको रोगयुक्त देखि और सूर्य आदि ग्रहनको प्रतिकूल अर्थात् मारक देखि और कानके रुकजानेपै भीतर शब्दके असुननेको देखि ॥ ३ ॥ तब अपने मरनको जानि निर्भय और आलस्यरहित हो जाने विना जानेभये पापनका प्रायश्चित्त करै ॥ ४ ॥ और जब आतुरकाल कहिये अंतसमय होय तब स्नानको

सुकृतीवार्धकेदृष्ट्वाशरीरंव्याधिसंयुतम् ॥ प्रतिकूलान्ग्रहांश्चैवप्राणघोषस्यचाश्रुतिम् ॥ ३ ॥ तदास्वमरणंज्ञात्वा निर्भयः स्यादतन्द्रितः ॥ अज्ञातज्ञातपापानांप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ ४ ॥ यदास्यादातुरः कालस्तदास्नानं समारभेत् ॥ पूजन कारयेद्विष्णोःशालग्रामस्वरूपिणः ॥ ५ ॥ अर्चयेद्गन्धपुष्पैश्चकुंकुमैस्तुलसीदलैः ॥ धूपैर्दीपैश्चनैवेद्यैर्बहुभिर्मोदकादिभिः ॥ ६ ॥ दत्त्वाचदक्षिणांविप्रान्नैवेद्यादेवभोजयेत् ॥ अष्टाक्षरंजपेन्मन्त्रंद्वादशाक्षरमेवच ॥ ७ ॥

आरंभ करै और शालग्रामरूप जे विष्णुभगवान् हैं तिनको पूजन करावै ॥ ५ ॥ और गंध पुष्प तथा तुलसीदलनसों पूजन करै और धूप दीप नैवेद्य और बहुतसे मोदक आदिकनसों पूजन करै ॥ ६ ॥ और ब्राह्मणको दक्षिणा देकै नैवेद्यहीमेंते भोजन करावै और

अष्टाक्षर अथवा द्वादशाक्षर मंत्रको जप करै ॥ ७ ॥ और विष्णु तथा शिवके नामको स्मरण करै और सुने हरिको नाम मनुष्यनके कानमें परनेसों पापनको हरि लेय है ॥ ८ ॥ रोगीके समीप जाके भाई बंधुओंको शोच न करना चाहिये और वारंवार मेरे पवित्रनामको स्मरण करनो योग्य है ॥ ९ ॥ मत्स्य १ कूर्म २ वराह ३ नरसिंह ४ वामन ५ परशुराम ६ रामचंद्र ७ कृष्ण ८ बुद्ध ९ कल्की १० ॥ १० ॥

संस्मरेच्छृणुयाच्चैव विष्णोर्नामशिवस्यच ॥ हरेर्नामहरेत्पापंनृणांश्रवणगोचरम् ॥ ८ ॥ रोगिणोन्तिकमासाद्य शोचनीयंनबान्धवैः ॥ स्मरणीयंपवित्रंमे नामधेयंमुहुर्मुहुः ॥ ९ ॥ मत्स्यः कूर्मोवराहश्चनारसिंहश्चवामनः ॥ रामोरामश्चकृष्णश्चबुद्धःकल्कीतथैवच॥१०॥ एतानिदशनामानिस्मर्तव्यानिसदाबुधैः॥ समीपेरोगिणोब्रूयु र्बान्धवास्ते प्रकीर्तिताः ॥११॥ कृष्णेतिमङ्गलंनामयस्यवाचिप्रवर्तते ॥ तस्यभस्मीभवन्त्याशुमहापातककोटयः ॥१२॥ म्रियमाणोहरेर्नामगृणन्पुत्रोपचारितम् ॥ अजामिलोप्यगाद्धामकिंपुनःश्रद्धयागृणन् ॥१३॥

ये दशनाम पंडितोंकरि सदा स्मरणकरने योग्य हैं और बांधव इन कहेहुए दश नामनको रोगीके समीप कहै ॥ ११ ॥ कृष्ण यह मंगलनाम जाकी वाणीसों निकलैहै ताके करोडों महापाप शीघ्रही भस्म होजाँयहैं ॥ १२ ॥ पुत्रकरि कहे गये हरिके नामनको कहतो भयो मरनेहारो अजामिलहू वैकुंठधामको गयो और श्रद्धासों जो हरिको कहै ता पुरुष मुक्तिको प्राप्त होयहै ताको कहा कहनोहै ॥१३॥

प्राची आदि दिशानमें और वा घटके कंठमें क्रमसों लोकपालननको पूजै ॥ ६१ ॥ हे राजन्! धूप, फूल और चंदन इनसों विधिपूर्वक पूजन करिकै ता पीछे दूध और घीसमेत वा सोनेके घटको दान करनो चाहिये ॥ ६२ ॥ महापातकनको नाश करनहारो यह सब दाननते अधिक है तातें हे राजा! प्रेतपन दूरि करिवेके लिये मनुष्यनको यह दान अवश्य करनो चाहिये ॥ ६३ ॥ श्रीभगवान् बोले,

संपूज्यविधिवद्राजन्धूपैःकुसुमचन्दनैः ॥ ततोदुग्धाज्यसहितंघटंदेयंहिरण्मयम् ॥ ६२ ॥ सर्वदानाधिकंचैतन्महापातकनाशनम् ॥ कर्तव्यंश्रद्धयाराजन्प्रेतत्वविनिवृत्तये ॥६३॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एवंसंजल्पतस्तस्य प्रेतेनसहकाश्यप ॥ सेनाजगामानुपदंहस्त्यश्वरथसंकुला ॥ ६४ ॥ ततो बलेसमायातेदत्त्वाराज्ञेमहामणिम् ॥ नमस्कृत्यपुनः प्रार्थ्यप्रेतोऽदर्शनमेयिवान् ॥ ६५ ॥ तस्माद्वनाद्विनिष्क्रम्य राजापिस्वपुरंययौ ॥ स्वपुरंचसमासाद्यतत्सर्वंप्रेतभाषितम् ॥ ६६ ॥

हे काश्यप! या प्रेतके साथ वह राजा बात करि रहो हो वाही समय हाथी घोडा तथा रथनसों भरी हुई वा राजाकी सेनाहू पीछेसों आवतभई ॥ ६४ ॥ तापीछे सेनाके आवनेपै राजाको महामणि देकै और नमस्कारकरि फिरि प्रार्थना करि प्रेत अंतर्धान होजात भयो ॥ ६५ ॥ फिरि वा वनते निकसिकै राजाहू अपने नगरको आवतो भयो और अपने पुरमें पहुँचिकै वह सब प्रेतको कहोभयो ॥ ६६ ॥

मनुष्यनको बहुत दूरसे त्याग करो ॥ १८ ॥ और जे दुष्ट हैं तथा मुकुन्द जे श्रीभगवान् हैं तिनके चरणकमलका जो मकरंद है तातें जे सदा विमुख अर्थात् हरिकी भक्तिसों रहित और दरिद्रियोंकरि सदा सेवित और नरकके मार्गमें बांधी है तृष्णा जिन्होंने ऐसे मनुष्यनको लाओ ॥ १९ ॥ और जिनकी जीभ हरिके नामका उच्चारण नहीं करे है और जिनका चित्त उनके चरणारविंदको स्मरण नहीं करे है

तानानयध्वमसतोविमुखान्मुकुन्दपादारविन्दमकरन्दरसादजस्रम् ॥ निष्किञ्चनैः परमहंसकुलैरसङ्गैर्जुष्टाद्गृहेनिरयवर्त्मनिबद्धतृष्णान् ॥ १९ ॥ जिह्वानवक्तिभगवद्गुणनामधेयंचेतश्चनस्मरतितच्चरणारविन्दम् ॥ कृष्णायनोनमतियच्छिरएकदापितानानयध्वमसतोकृतविष्णुकृत्यान् ॥ २० ॥ तस्मात्संकीर्तनंविष्णोर्जगन्मंगलमंहसाम् ॥ महतामपिपक्षीन्द्रविद्ध्यैकान्तिकनिष्कृतिम् ॥ २१ ॥ प्रायश्चित्तानिचीर्णानिनारायणपराङ्मुखम् ॥ ननिष्पुनन्तिदुर्बुद्धिंसुराकुम्भमिवापगाः ॥ २२ ॥

और जिनका शिर एकबारहु श्रीकृष्णके चरणमें नहीं नमैं हैं ऐसे विष्णुके कृत्यके न करनहारे दुष्टनको लाओ ॥ २० ॥ ताते हे गरुड ! जगत्कोहू मंगलरूप और बडे भारी पापनको एकही प्रायश्चित्त रूप हरिको नाम जानो ॥ २१ ॥ जाने प्रायश्चित्त तौ कीन्हे हैं और नारायणते विमुख है ताको वे प्रायश्चित्त ऐसे शुद्ध नहीं करसकै हैं जैसे मदिराके घटको नदी नहीं पवित्र करैं हैं अर्थात् वे नरकहीमें

जाय हैं ॥ २२ ॥ कृष्णके नामसों दूरि हो गये हैं पाप जिनके ऐसे मनुष्य नरकको नहीं देखैं हैं और यमको तथा उनके दूतनका स्वप्नहूमें कदापि नहीं देखैं हैं ॥ २३ ॥ मांस अस्थि रुधिर हैं जामें ऐसी काया ही वैतरणी नदी है क्योंकि वैतरणीभी कठिन है और मांस रुधिर की वामें कीच है वा वैतरणीमें ब्राह्मणको गोदान करनहारो मनुष्य नहीं गिरै हैं वैसेही जो अंतसमयमें नंदनन्दन यह जो गो वाणी है ताहि द्विज जे दाँत हैं तिनको देय है वह पुरुष कायारूपी वैतरणीमें नहीं गिरै है अर्थात् मुक्त होजाय है ॥ २४ ॥ यातें पापनके समूहको नाश

कृष्णनाम्नानरकंपश्यन्तिगतकिल्बिषाः ॥ यमंचतद्भटांश्चैवस्वप्नेपिनकदाचन ॥ २३ ॥ मांसास्थिरक्तवत्कायवैतरण्यांपतेन्नसः ॥ योन्तेदद्याद्द्विजेभ्यश्चनंदनंदनगामिति ॥ २४ ॥ अतःस्मरेन्महाविष्णोर्नामपापौघनाशनम् ॥ गीतासहस्रनामानिपठेद्वाशृणुयादपि ॥ २५ ॥ एकादशीव्रतंगीतागङ्गाम्बुतुलसीदलम् ॥ विष्णोःपादाम्बुनामानिमरणेमुक्तिदानिच ॥ २६ ॥ ततःसंकल्पयेदन्नंसघृतंचसकांचनम् ॥ सवत्साधेनवोदेयाः श्रोत्रियायद्विजातये ॥ २७ ॥

करनहारो जो विष्णुको नाम है ताको स्मरण करै अथवा गीता तथा विष्णुसहस्रनामको पाठ करै वा औरसे सुनै ॥ २५ ॥ एकादशीको व्रत, गीताको पाठ, गंगाजल, तुलसीदल, विष्णुका चरणामृत और विष्णुके नाम ये सब मरण समयमें मुक्तिके देनहारे हैं ॥ २६ ॥ ता पीछे घी और सुवर्णसमेत अन्नको संकल्प करै और वेदपाठी ब्राह्मणके लिये बछरा सहित गौवनको दान करै ॥ २७ ॥

अन्तसमयमें जो मनुष्य थोडा अथवा बहुत दान करै हे गरुड ! वह सब अक्षय होय है और जो पुत्र देनो चाहै वहू अक्षय होय है ॥२८॥ सत्पुत्र अन्तसमयमें पितासे सब दान दिवावै जाते याही आतुरदान करनेके लिये धर्मज्ञ पुरुष पुत्रकी चाहना करै हैं ॥२९॥ आधे खुले हैं नेत्र जाके और भूमिमें पडेभये पिताको देखि पिता करि पहले संचित धनमें पुत्रोंको तृष्णा न करनी चाहिये ॥ ३० ॥ वह सत्पुत्र जो देय है

अन्तेजनोयद्ददातिस्वल्पंवायदिवाबहु ॥ तदक्षयंभवेत्तार्क्ष्ययत्पुत्रश्चानुमोदते ॥ २८ ॥ अन्तकालेतुसत्पुत्रः सर्वदानानिदापयेत् ॥ यत्तदर्थंसुतोलोकेप्रार्थ्यतेधर्मकोविदैः ॥ २९ ॥ भूमिष्ठंपितरंदृष्ट्वाअर्धोन्मीलितलोचनम् ॥ पुत्रैस्तृष्णानकर्तव्यातद्धनेपूर्वसंचिते ॥ ३० ॥ सतद्ददातिसत्पुत्रोयावज्जीवत्यसौचिरम् ॥ अतिवाहस्तुतान्मार्गेदुःखंनलभतेयतः ॥ ३१ ॥ आतुरेचोपरागेचद्वयंदानंविशिष्यते ॥ अतोवश्यंप्रदातव्यमष्टदानंतिलादिकम् ॥ ३२ ॥

तासों जितने कालपर्यंत वह जीवै है तवलौं परलोकको जाननहारो मार्गमें उन पहले कहेभये दुःखनको नहीं पावै है ॥३१॥ आतुर अर्थात् मरनेके समय और ग्रहणके समय ये दो दान सब दाननते अधिक हैं यातें तिल आदि आठ दान अवश्य देने चाहिये ॥ ३२ ॥

दुष्ट जिनके चित्त हैं ऐसे पुरुषनकरिहू स्मरण करे गये हरि पापनको हरिलेय हैं यामें दृष्टांत है कि विना इच्छाकेहू छूनेसों अग्नि जराय देय है ॥ १४ ॥ हे पक्षीन्द्र ! पापनके हरिलेनेमें जो सामर्थ्य है उतने पाप पापी मनुष्यहू करनेको समर्थ नहीं है ॥ १५ ॥ यमने अपने दूतनसों कही कि, नास्तिक मनुष्यको लेआओ और हे दूतो ! जो हरिको नाम स्मरण करतो होय ता नरको मत लाना ॥ १६ ॥ अच्युत

हरिर्हरतिपापानिदुष्टचित्तैरपिस्मृतः ॥ अनिच्छयापिसंस्पृष्टोदहत्येवहिपावकः ॥१४॥ हरेर्नाम्नश्चयाशक्तिः पापनिर्हरणेद्विज ॥ तावत्कर्तुंसमर्थोनपातकंपातकीजनः ॥ १५ ॥ किंकरेभ्योयमः प्राहानयध्वंनास्तिकंजनम् ॥ नैवानयतभोदूताहरिनामस्मरंनरम् ॥ १६ ॥ अच्युतंकेशवंरामनारायणंकृष्णदामोदरंवासुदेवंहरिम् ॥ श्रीधरंमाधवंगोपिकावल्लभंजानकीनायकंरामचन्द्रंभजे ॥ १७ ॥ कमलनयनवासुदेवविष्णोधरणिधराच्युतशंखचक्रपाणे ॥ भवशरणमितीरयन्तियेवैत्यजभटदूरतरेणतानपापान् ॥ १८ ॥

केशव राम नारायण कृष्ण दामोदर वासुदेव हरि श्रीधर माधव गोपिकावल्लभ और जानकीके नायक ऐसे जे रामचंद्र हैं तिनको मैं भजौं हौं ॥ १७ ॥ कमलनयन वासुदेव विष्णु धरणिधर अच्युत शंखचक्रपाणि शरण हो या प्रकार जे उच्चारण करै हैं हे दूतो ! उन पापरहित

यमके आयुध कहिये शस्त्रकी प्रसन्नताके लिये वह दान कहोगयो है तातें यमलोकमें सुख देनेहारे लोहके दानको करें ॥ ३९ ॥ ऊरन और कालाडोरा शुण्डामक उदुम्बर शेषंबल महादूत ये लोहके दानसों सुखके देनहारे होय हैं ॥ ४० ॥ हे गरुड ! परमगुह्य कहिये बहुतही छिपाने योग्य सब दाननमें उत्तम दानको सुनिये वा दानके करनेसों भूमिलोक भुवर्लोक और स्वर्गके वसनहारे संतुष्ट होय हैं ॥४१॥

यमायुधानांसंतुष्ट्यैदानमेतदुदाहृतम् ॥ तस्माद्दद्याल्लोहदानंयमलोकेसुखावहम् ॥३९॥ ऊरणःश्यामसूत्रश्च
शुण्डामर्कोप्युदुम्बरः॥शेषंबलोमहादूतालोहदानात्सुखप्रदाः॥४०॥शृणुतार्क्ष्यपरंगुह्यंदानानांदानमुत्तमम्॥
दत्तेनतेनतुष्यन्तिभूर्भुवःस्वर्गवासिनः ॥ ४१ ॥ ब्रह्माद्याऋषयोदेवाधर्मराजसभासदः ॥ स्वर्णदानेनसन्तुष्टा
भवन्तिवरदायकाः॥४२॥तस्माद्देयंस्वर्णदानंप्रेतोद्धरणहेतवे॥नयातियमलोकंसस्वर्गतिंतातगच्छति ॥४३॥
चिरंवसेत्सत्यलोकेततोराजाभवेदिह ॥ रूपवान्धार्मिकोवाग्मीश्रीमानतुलविक्रमः ॥ ४४ ॥

ब्रह्मा आदि देवता ऋषि और इन्द्र आदि देवता और धर्मराजकी सभाके लोग सुवर्णके दानसों संतुष्ट होय हैं और वरके देनहारे होय हैं ॥ ४२ ॥ जाते प्रेतके उद्धारके लिये सुवर्णको दान करनो चाहिये. हे तात ! वह यमलोकको जायहै स्वर्गकी गतिको प्राप्त होय है ॥ ४३ ॥ फिरि बहुतकालतक सत्यलोकमें वास करिकै या लोकमें राजा होय है और रूपवान् धर्मात्मा बोलनेमें चतुर लक्ष्मीवान् और बडो पराक्रमी होय है ॥४४॥कपासके दानसों दूतनतें भय नहीं होय है और लवण जो दियो जाय है ताते यमते भय नहीं होयहै ॥४५॥लोहा नोन कपास तिल सुवर्णके दानसों यमपुरके वसनहारे चित्रगुप्त आदि सब संतुष्ट होयहैं ॥ ४६ ॥ सतनजाके दानसों धर्मध्वज प्रसन्न होय हैं और जे यमपुरके तीनि द्वारनमें स्थित हैं वेहू प्रसन्न होय हैं ॥ ४७ ॥ धान १ जव २ गेहूं ३ मूँग ४ उरद ५

कार्पासस्यतुदानेनदूतेभ्योनभयंभवेत् ॥ लवणंदीयतेयच्चतेननैवभयंयमात् ॥ ४५ ॥ अयोलवणकार्पासति
लकाञ्चनदानतः ॥ चित्रगुप्तादयस्तुष्टायमस्यपुरवासिनः ॥४६॥ सप्तधान्यप्रदानेनप्रीतो धर्मध्वजोभवेत् ॥
तुष्टा भवन्तियेन्येपित्रिषुद्वारेष्वधिष्ठिताः ॥ ४७ ॥ व्रीहयोयवगोधूमामुद्गामाषाःप्रियङ्गवः ॥ चणकाःसप्तमा
ज्ञेयाःसप्तधान्यमुदाहृतम् ॥ ४८ ॥ गोचर्ममात्रंवसुधादत्तापात्रेविधानतः ॥ पुनातिब्रह्महत्यायादृष्टमेतन्मुनी
श्वरैः ॥ ४९ ॥ नव्रतेभ्योनतीर्थेभ्योनान्यदानाद्विनश्यति ॥ राज्येकृतंमहापापंभूमिदानाद्विलीयते ॥ ५० ॥

कँगुनी ६ और सातवें ७ चने ये सात धान्य कहे हैं ॥ ४८ ॥ भूमिके देनेको फल कहें हैं, गोचर्म मात्र अर्थात् एक बैलसमेत सो गो जितनी भूमिमें बैठें उतनी भूमिके प्रमाणको गोचर्म कहें हैं तौ जा पुरुषने गोचर्म प्रमाणभूमि विधिसों पात्रको दीहै वह ब्रह्महत्यासों पवित्र होजाय है यह मुनीश्वरने देखो है ॥ ४९ ॥ न तो व्रतनसों न तीर्थनसों और अन्यदानसों राज्यमें कियो भयो महापापनाशको प्राप्त

॥ ४५ ॥

होय है किंतु भूमिके दानसों दूरि होय है ॥५०॥ जो मनुष्य धान्यसों भरीभई पृथिवीको ब्राह्मणको दान करै वह सुर असुरनकारि पूजित हो इंद्रलोकको जाय है ॥ ५१॥ हे काश्यप ! और दान बहुतही थोडे फलके देनहारे होय हैं और पृथिवीके दानसों उत्पन्न पुण्य दिन दिन बढै है ॥ ५२ ॥ जो राजा होके ब्राह्मणके लिये भूमिके दानको नहीं करै है वह गाँवमें कुटी नहीं पावै है और जन्म जन्ममें

पृथिवींसस्यसम्पूर्णांयोददातिद्विजातये ॥ सप्रयातीन्द्रभुवनेपूज्यमानः सुरासुरैः ॥ ५१ ॥ अत्यल्पफल दानिस्युरन्यदानानिकाश्यप ॥ पृथिवीदानजंपुण्यमहन्यहनिवर्द्धते ॥ ५२ ॥ योभूत्वाभूमिपोभूमिंनोददातिद्विजातये ॥ सनाप्नोतिकुटिंग्रामे दरिद्रीस्याद्भवेभवे ॥ ५३॥ अदानाद्भूमिदानस्य भूपतित्वाभिमानतः ॥ निवसेन्नरकेयावच्छेषोधारयतेधराम् ॥ ५४ ॥ तस्माद्भूमीश्वरोभूमिदानमेवप्रदापयेत् ॥ अन्येषांभूमिदानार्थंगोदानंकथितं मया ॥ ५५ ॥

दरिद्री होय है ॥ ५३ ॥ भूमिको दान न देनेसों तथा भूपतिपनके अभिमानसों तबलौं नरकमें बास करै है जबलौं शेष भूमिको धारण करै है ॥ ५४ ॥ तातें भूमिको स्वामी होके भूमिके दानहीको करै औरोंको भूमिदानके लिये मैंने गोदान कहा है क्योंकि ॥ ४६ ॥

उनकाही गिनावैं हैं तिल १ लोह २ सोना ३ कपास ४ तथा नोन ५ सतनजा ६ भूमि ७ गो ८ इनमें एकसों एक पवित्र है ॥ ३३ ॥ ये आठ महादान महापातकनके नाश करनहारे हैं अंतकालमें देने चाहिये इनको जो फल है ताहि तुम सुनो ॥ ३४ ॥ मेरे पसीनेसों उत्पन्न पवित्र तिल तीनि प्रकारके होय हैं और असुर दानव दैत्य ये सब तिलनके दानसों तृप्त होय हैं ॥ ३५ ॥ सफेद काले और कपिल कहिये

तिलालोहंहिरण्यंचकार्पासोलवणंतथा॥सप्तधान्यंक्षितिर्गावोह्येकैकंपावनंस्मृतम् ॥३३॥ एतदष्टमहादानंमहापातकनाशनम्॥अन्तकालेप्रदातव्यंश्रृणुतस्यचयत्फलम्॥३४॥ममस्वेदसमुद्भूताः पवित्रास्त्रिविधास्तिलाः॥ असुरादानवादैत्यास्तृप्यन्तितिलदानतः ॥३५॥ तिलाःश्वेतास्तथाकृष्णादानेनकपिलास्तिलाः॥ संहरन्तित्रिधापापंवाङ्मनःकायसंचितम्॥३६॥लोहदानंचदातव्यंभूमियुक्तेनपाणिना ॥ यमसीमांनचाप्नोतिनगच्छेत्तस्यवर्त्मनि॥३७॥कुठारोमुसलोदण्डः खड्गश्चच्छुरिकातथा ॥ शस्त्राणियमहस्तेचनिग्रहेपापकर्मणाम् ॥३८॥

भूरे रंगके तिल दान करनेसों वाणी मन तथा कायसों करेभये तीनि प्रकारके पापनको नाश करनहारे हैं ॥ ३६ ॥ भूमिमें हाथ धरिके लोहको दान करनो चाहिये या दानको करनहारो मनुष्य यमराजकी सीमामें नहीं जायहै और न वाके मार्गमें जाय है ॥ ३७ ॥ पापी मनुष्यके दंड देनेके लिये यमके हाथमें कुल्हाडी अर्थात् फरसा मूसल दंड खड्ग छुरी विद्यमान हैं ॥ ३८ ॥

लिये दान करिके सब पापनते छूटि जाय है वह अन्तकालमें दाताको पापके समूहते उद्धार करै है ॥ ६१ ॥ सावधान पुरुषको एक गौ आतुरको सौ गौवें और जो तत्काल मरनेको है ताको दानको अनुसंधान न होनेसों एक हजार गौको दान है ॥ ६२ ॥ और मरेभयेको अर्थात् मरनेके पीछे एक लाख गौको विधिपूर्वक दानसमान फल देनेहारो होयहै और तीर्थ तथा सत्पात्रयुक्त वह दान लाख प्रकारको

एकागौः स्वस्थचित्तस्यह्यातुरस्यचगोशतम् ॥ सहस्रंम्रियमाणस्य दत्तंचित्तविवर्जितम् ॥ ६२ ॥ मृतस्यैतत्पुनर्लक्षंविधिपूतंचतत्समम् ॥ तीर्थपात्रसमोपेतंदानमेकंचलक्षधा ॥ ६३ ॥ पात्रेदत्तंचयद्दानंतल्लक्षगुणितं भवेत् ॥ दातुः फलमनन्तंस्यान्नपात्रस्यप्रतिग्रहः ॥ ६४ ॥ स्वाध्यायहोमसंयुक्तः परपात्रविवर्जितः ॥ रत्नपूर्णामपिमहींप्रतिगृह्यनलिप्यते ॥ ६५ ॥ विषशीतापहौमन्त्रवह्नीकिंदोषभागिनौ ॥ अपात्रेसाचगौर्दत्तादातारंनरकंनयेत् ॥ ६६ ॥

होय है ॥ ६३ ॥ जो दान पात्रमें दियो जायहै वह लाखगुणो होयहै और देनहारेको अनंत फल होय है पात्रको प्रतिग्रहको दोष नहीं लगे है ॥ ६४ ॥ स्वाध्याय कहिये वेदको पाठ और होमकरि युक्त तथा पराये पाकसों वर्जित् अर्थात् स्वयंपाकी ब्राह्मण रत्ननभरि भईहू पृथिवीको दान लेकर प्रतिग्रहके दोषकरि लिप्त नहीं होय है ॥ ६५ ॥ विष तथा शीतके दूरि करनहारे मंत्र और अग्नि ॥ ४७ ॥

क्या दोषभागी होय हैं अर्थात् नहीं अपात्रमें दान करीगई गौ दाताको नरकमें पहुँचावे है ॥ ६६ ॥ और एक सौ एक कुलसमेत लेनहारेको नरकमें डारे है अपनो कल्याण चाहनहारे विद्वान्को अपात्रमें गौको दान न करनो चाहिये ॥ ६७ ॥ एक गौ एकही मनुष्यको देनी योग्य है और बहुत मनुष्यनको कबहूँ न देनी चाहिये बेंचीगई अथवा बाँटीगई वह गौ सातवें कुलपर्यंत जराय देयहै ॥ ६८ ॥ मैंने पहिले जो तुमसों वैतरणी नाम नदी कही है ताके पार जानेको उपायरूप गोदानको मैं कहों हौं ॥ ६९ ॥

कुलैकशतसंयुक्तंग्रहीतारंतुपातयेत् ॥ नापात्रेविदुषादेयाह्यात्मनःश्रेयइच्छता॥६७॥ एकाह्येकस्यदातव्याबहूनांनकदाचन ॥ साविक्रीताविभक्तावादहत्यासप्तमंकुलम् ॥६८॥ कथितायामयापूर्वंतववैतरणीनदी ॥ तस्याह्युद्धरणोपायंगोदानं कथयामिते ॥ ६९ ॥ कृष्णांवापाटलांवापिधेनुंकुर्यादलंकृताम् ॥ स्वर्णशृंगींरौप्यखुरीं कांस्यपात्रोपदोहिनीम्॥७०॥कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नांकण्ठघण्टासमन्विताम् ॥ कार्पासोपरिसंस्थाप्यताम्रपात्रं सचैलकम् ॥७१॥ यमं हैमंन्यसेत्तत्रलोहदण्डसमन्वितम् ॥ कांस्यपात्रंघृतंकृत्वासर्वंतस्योपरिन्यसेत् ॥ ७२ ॥

कृष्णाको वा पाटलवर्णा गौको आभूषणनसों शोभित करै और सोनेकी सींगोटी चांदीके खुर और काँसेको पात्र है दोहनी जाकी ऐसा होय ॥७०॥ और काले वस्त्रनके जोडेसों ढकीभई और कंठमें सुन्दर घंटासों शोभित गौको कपासके ऊपर ठाढी कर अथवा बैठायके वस्त्रनसमेत तांबेको पात्र धरै ॥ ७१ ॥ और वहाँ लोहेके दंडके लिये भये सुवर्णके बनेभये यमराजकी स्थापना करै ता पीछे

कांसिके पात्रमें घीको डारि सब वाके ऊपर धर देवै ॥ ७२ ॥ ईखकी नाव बनायके रेसमके सूतसों लपेटै और जलसमेत गढिह्लेमें वा नावको डारै ॥ ७३ ॥ सूर्यकी देहसों उत्पन्न वा गौके वाको ऊपर स्थापित करि शास्त्रमें कहीभई विधिसों वहां धेनुको संकल्प करै ॥ ७४ ॥ और अलंकारसमेत वस्त्र ब्राह्मणको दान करै और गंध पुष्प अक्षत आदिसों विधिपूर्वक पूजन करै ॥७५॥ गौकी पूंछ पकरि

नावमिक्षुमयींकृत्वापट्टसूत्रेणवेष्टयेत् ॥ गर्तंविधायसजलंकृत्वातस्मिन्क्षिपेत्तरीम् ॥ ७३ ॥ तस्योपरिस्थितां कृत्वा सूर्यदेहसमुद्भवाम् ॥ धेनुंसंकल्पयेत्तत्रयथाशास्त्रविधानतः ॥ ७४ ॥ सालंकाराणिवस्त्राणिब्राह्मणायप्र कल्पयेत् ॥ पूजांकुर्याद्विधानेनगन्धपुष्पाक्षतादिभिः ॥७५॥ पुच्छंसंगृह्यधेनोस्तुनावमाश्रित्यपादतः ॥ पुर स्कृत्यततो विप्रमिमंमन्त्रमुदीरयेत् ॥७६॥ भवसागरमग्नानांशोकतापोर्मिदुःखिनाम् ॥ त्रातात्वंहिजगन्नाथ शरणागतवत्सल ॥७७॥ विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठमामुद्धरमहीसुर ॥ सदक्षिणामयादत्तातुभ्यंवैतरणींनमः ॥७८॥

पाँवको नावमें धरि ब्राह्मणको आगे करिके मंत्रको पढै ॥ ७६ ॥ हे जगन्नाथ ! हे शरणागतवत्सल ! संसाररूपी सागरमें डूबेभये और शोकसंतापरूपी लहरिन करि दुःखी मनुष्यके आप रक्षक हैं ॥ ७७ ॥ हे विष्णुरूप द्विजश्रेष्ठ ! महीसुर ! मेरो उद्धार करो मैंने तुम्हारे ॥ ४८ ॥

भूमिहू गोरूपही है ॥ ५५ ॥ अंतधेनु और आठ दानमें कही भई रुद्रधेनु क्योंकि रुद्र मृत्युंजय हैं तातें मृत्युको दुःख दूरि होनेके लिये रुद्रधेनु कही तापीछे ऋणधेनु अर्थात् जाने भये और विना जाने भये ऋणके दूरि होनेके लिये और मोक्षधेनु अर्थात् मोक्षके लिये धेनुको दान करै ॥ ५६ ॥ हे गरुड ! विशेषविधिसों वैतरणीधेनुको अर्थात् वैतरणी उतरनेके लिये दान करै हे गरुड ! गौवें तीनि प्रकारके

ततोन्तधेनुर्दातव्यारुद्रधेनुंप्रदापयेत् ॥ ऋणधेनुंबतोदत्त्वामोक्षधेनुंप्रदापयेत् ॥५६ ॥ दद्याद्वैतरणींधेनुंविशेष विधिनाखग ॥ तारयन्तिनरंगावस्त्रिविधाच्चैवपातकात् ॥ ५७ ॥ बाल्येयच्चकौमारेयत्पापंयौवनेकृतम् ॥ वयः परिणतौयच्चयच्चजन्मान्तरेष्वपि ॥५८॥ यन्निशायांतथाप्रातर्यन्मध्याह्नापराह्नयोः ॥ संध्ययोर्यत्कृतंपापंका येनमनसागिरा ॥ ५९ ॥ दत्त्वाधेनुंसकृद्वापिकपिलांक्षीरसंयुताम् ॥ सोपस्करांसवत्सांचतपोवृत्तसमन्विते ॥ ६० ॥ ब्राह्मणेवेदविदुषिसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ उद्धरेदन्तकालेसदातारंपापसंचयात् ॥ ६१ ॥

पापतें तारै हैं ॥ ५७ ॥ बालकपनेमें कुमार अवस्थामें और तरुणावस्थामें जे पाप किये हैं और बुढापेमें तथा दूसरे जन्ममें जे पाप किये हैं ॥ ५८ ॥ और जो रातिमें प्रातःकाल और मध्याह्न तथा अपराह्नमें और दोनों संध्यानमें मन वाणि तथा कायासों जे पाप करे हैं ॥ ५९ ॥ जन्मभरमें एकवारहू दूधयुक्त कपिलागौको सब सामग्री तथा बच्चेसमेत तपस्वी ब्राह्मणको दान करै ॥६०॥ वेदके जाननहारे ब्राह्मणके

स्वस्थ है अवस्था जाकी ऐसो शरीर होनेपै वैतरणीको व्रत करै और वा नदीके पार होवेको है इच्छा जाकी ऐसे विद्वान्कारि धेनुदान करनो चाहिये ॥ ८५ ॥ हे गरुड! वह महानदी गोदान करनेसे महामार्गमें नहीं आवै है तातें पुण्यकालमें अवश्य गोदान करनो योग्य है ॥ ८६ ॥ गंगाआदि सब तीर्थनमें और ब्राह्मणनके स्थानमें और चंद्र सूर्यके ग्रहणमें संक्रांतिमें तथा अमावास्याको ॥ ८७ ॥ अयनोंमें और

स्वस्थावस्थशरीरेतुवैतरण्याव्रतंचरेत् ॥ देयाचविदुषाधेनुस्तांनदींतर्तुमिच्छता ॥ ८५ ॥ सानायातिमहामार्गे गोदानेननदीखग ॥ तस्मादवश्यंदातव्यंपुण्यकालेषुसर्वदा ॥ ८६ ॥ गङ्गादिसर्वतीर्थेषुब्राह्मणावसथेषुच ॥ चन्द्रसूर्योपरागेषुसंक्रांतौदर्शवासरे ॥ ८७ ॥ अयनेविषुवेचैवव्यतीपातेयुगादिषु ॥ अन्येषुपुण्यकालेषुदद्याद्गोदानमुत्तमम् ॥ ८८ ॥ यदैवजायतेश्रद्धापात्रंसम्प्राप्यतेयदा ॥ सएवपुण्यकालः स्याद्यतः सम्पत्तिरास्थिरा ॥ ८९ ॥ अस्थिराणिशरीराणिविभवोनैवशाश्वतः ॥ नित्यंसन्निहितोमृत्युः कर्तव्योधर्मसंचयः ॥ ९० ॥

मेष कर्क मकर और तुलाकी संक्रांतिमें व्यतीपातमें और युगादि जो अक्षयतृतीया आदि तिथि हैं तिनमें और सब पुण्य कालनमें उत्तम गोदान करनो योग्य है ॥ ८८ ॥ जबही श्रद्धा उत्पन्न होती है जभी पात्र मिलजाता है वही पुण्यकाल है कारण यह है कि जातें संपत्ति स्थिर नहीं है ॥ ८९ ॥ शरीर अस्थिर है और विभव सदा नहीं रहे है और मृत्यु सदा निकटही है तातें धर्मको संग्रह करनो चाहिये ॥ ९० ॥

अपने वित्तके अनुसार उन समयनमें दियोभयो दान अनंत होय है अपना कल्याण चाहनेवाले पुरुषको विद्वान् ब्राह्मणके लिये देनो योग्य है ॥ ९१ ॥ अपने हाथनसों अपने लिये कियोगयो थोरहू दान अक्षय होय है और तत्काल प्राप्त होय है ॥ ९२ ॥ जाने दानरूपी राहको खरच ले लियो है वह महामार्गमें सुखसों जाय है अन्यथा राहको खरच विना प्राणी मागम क्लेशको पावे है ॥ ९३ ॥ जो जो दान पृथि

आत्मवित्तानुसारेणतत्रदानमनन्तकम् ॥ देयंविप्रायविदुषेस्वात्मनः श्रेयइच्छता ॥ ९१ ॥ अल्पेनापिहि वित्तेनस्वहस्तेनात्मनेकृतम् ॥ तदक्षय्यंभवेद्दानंतत्कालंचोपतिष्ठति ॥ ९२ ॥ गृहीतदानपाथेयः सुखंयाति महाध्वनि ॥ अन्यथाक्लिश्यते जन्तुः पाथेयरहितः पथि ॥ ९३ ॥ यानियानिचदानानिदत्तानिभुविमानवैः ॥ यमलोकपथेतानिह्युपतिष्ठन्तिचाग्रतः ॥ ९४ ॥ महापुण्यप्रभावेणमानुषंजन्मलभ्यते ॥ यस्तत्प्राप्यचरेद्धर्मंसयातिपरमांगतिम् ॥ ९५ ॥

वीमें मनुष्यनकारि दिये गये हैं वे वे यमलोकके मार्गमें आगे प्राप्त होय हैं ॥ ९४ ॥ बडे पुण्यके प्रभावसों मनुष्यजन्म मिले है जो वा मनुष्य देहको पायकै धर्म करे है वह परमगति जो मोक्ष है ताको प्राप्त होय है ॥ ९५ ॥

मनुष्य धर्मको न जानिकै दुःखसों आवै है और चलीजाय है मनुष्यजन्मको सफल होनो केवल धर्मको सेवन है ॥९६॥ धन पुत्र आदि और शरीरहू तथा भाई बंधु ये सब अनित्य हैं तातें धर्मको करै ॥९७॥ तबलौं बंधु पिता और माता हैं जबलौं मनुष्य जीवै है मरेभयोंका अंतर जानिकै क्षणमेंही स्नेह दूरि होजाय है ॥९८॥ अपनो आत्माही अपनो बंधु है या बातको बारंबार जानै जीवते भयेहू यह चिंतवन करके मरे

अविज्ञायनरोधर्मंदुःखमायातियातिच ॥ मनुष्यजन्मसाफल्यंकेवलंधर्मसेवनम् ॥ ९६ ॥ धनपुत्रकलत्रादि शरीरमपिबान्धवाः॥अनित्यंसर्वमेवेदंतस्माद्धर्मंसमाचरेत् ॥९७॥ तावद्बन्धुः पितातावद्यावज्जीवतिमानवः॥ मृतानामन्तरंज्ञात्वाक्षणात्स्नेहोनिवर्तते ॥९८॥ आत्मैवह्यात्मनोबन्धुरितिविद्यान्मुहुर्मुहुः ॥ जीवन्नपीतिसंचिन्त्यमृतानां कः प्रदास्यति ॥९९॥ एवंजानन्निदंसर्वंस्वहस्तेनैवदीयताम् ॥ अनित्यंजीवितंयस्मात्पश्चात्कोपिनदास्यति॥ १००॥ मृतंशरीरमुत्सृज्यकाष्ठलोष्ठसमंक्षितौ॥ विमुखाबान्धवायान्तिधर्मस्तमनुगच्छति ॥ १०१॥

भयोंको कौन देगो॥९९॥ऐसो जानतो भयो पुरुष यह सब अपने हाथहीसों दान करै यह जीवनो अनित्य है पीछे कोई नहीं देयगो ॥१००॥ मरेभये शरीरको काष्ठ तथा कंकरके समान पृथ्वीमें छोडके मुख मोरिकै बांधव चले जाय हैं धर्मही वाके साथ जाय है ॥ १०१ ॥

अर्थ दक्षिणासमेत वैतरणी दीन्हीं तुमको नमस्कार है ॥७८॥ अतिघोर यमलोकके मार्गमें सौ योजन चौंडी वा नदीसे उतरो चाहतो मैं तुम्हारे लिये या वैतरणीको देऊहौं नमस्कार है ॥७९॥ हे धेनुके! यमद्वारके महापथमें हे देवेशि! उतारनेके लिये तू मेरी राह देखियो ताको नमस्कार है ॥८०॥ गौ मेरे आगे होय और गौ मेरे पीछे तथा हृदयमें होय और गौवनके मध्यमें मैं वास करौहौं ॥ ८१ ॥ जो

यममार्गे महाघोरेतांनदींशतयोजनाम् ॥ तर्तुकामोददाम्येतांतुभ्यंवैतरणींनमः ॥ ७९ ॥ धेनुकेमांप्रतीक्षस्व यमद्वारमहापथे ॥ उत्तारणार्थंदेवेशिवैतरण्यैनमोस्तुते ॥ ८० ॥ गावोमेअग्रतः सन्तुगावोमेसन्तुपृष्ठतः ॥ गावोमेहृदयेसन्तुगवांमध्येवसाम्यहम् ॥ ८१ ॥ यालक्ष्मीः सर्वभूतानांयाचदेवेप्रतिष्ठिता ॥ धेनुरूपेणसादेवी ममपापंव्यपोहतु ॥ ८२॥ इतिमन्त्रैश्चसंप्रार्थ्यसाञ्जलिर्धेनुकांयमम् ॥ सर्वंप्रदक्षिणीकृत्यब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ ८३ ॥ एवंदद्याद्विधानेनयोगांवैतरणींखग ॥ सयातिधर्ममार्गेणधर्मराजसभान्तरे ॥ ८४ ॥

लक्ष्मी सब भूतनमें और देवतामें स्थित है वह धेनुके रूपसों मेरे पापनको नाश करौ ॥ ८२ ॥ हाथ जोरेभये इन मंत्रनको पढिके धेनुकाकी और यमकी प्रार्थना करि प्रदक्षिणा करिकै सब ब्राह्मणनको दे देवै ॥८३॥ हे खग! या प्रकार विधानसों जो गौको वैतरणीमें देय है वह धर्मके मार्गमें होके धर्मराजकी सभाके मध्यमें जाय है ॥ ८४ ॥

पूर्वजन्ममें करे भये दानसों यहां धन बहुतसो प्राप्त भयो तातें ऐसो जानिकै धर्मके अर्थ धन देनो चाहिये ॥१०८॥ धर्मते अर्थ होयहै और धर्मते काम होयहै धर्मही मोक्षके लिये होयहै तातें धर्म करै ॥ १०९ ॥ धर्म श्रद्धासों धारण कियो जाय है बहुतसे धनके समूहसों नहीं धनहीन मुनि श्रद्धाके कारण स्वर्गको गये ॥ ११० ॥ पत्र पुष्प फल और जल जो मोको देय है श्रद्धासों पवित्र है

पूर्वजन्मकृताद्दानादत्रलब्धंधनंबहु ॥ तस्मादेवंपरिज्ञायधर्मार्थंदीयतांधनम् ॥ १०८॥ धर्मात्संजायतेऽर्थश्च धर्मात्कामोभिजायते ॥ धर्मएवापवर्गायतस्माद्धर्मंसमाचरेत् ॥ १०९ ॥ श्रद्धयाधार्यतेधर्मोबहुभिर्नार्थरा शिभिः ॥ निष्किञ्चनाहिमुनयः श्रद्धावन्तोदिवंगताः ॥ ११० ॥ पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः॥ १११॥ तस्मादवश्यंदातव्यंतदादानंविधानतः॥ अल्पंवा बहुवेतीमां गणनांनैवकारयेत्॥११२॥धर्मात्माचसुपुत्रोवैदेवतैरपिपूज्यते॥दापयेद्यस्तुदानानिपितरंह्यातुरंभुवि ॥११३॥

चित्त जाको ऐसे मनुष्यनकी भक्तिसों समर्पण कियेगये वाको मैं भोजन करौं हौं ॥ १११ ॥ तातें विधानसो दान अवश्य देनो चाहिये थोडा है अथवा बहुत है या बातकी गिनती न करै ॥ ११२ ॥ धर्मात्मा और सुपुत्र देवतानकरिहू पूजो जाय है जो भूमिमें आतुर पिताको दान दिवावै है ॥ ११३ ॥

माता पिताके निमित्त जो धन पुत्रनकरि पात्रको दियोजायहै वा धनसों वाने पुत्र पौत्र प्रपौत्रलौं आत्माहू पवित्र कीन्हों॥११४॥पिताको सौगुनो पुण्य होयहै और माताको हजार गुनो और बहिनको दशहजारगुनो और सहोदरमें दियो अक्षय है॥११५॥ देनहारेको कोई उपद्रव नहीं होय है और नरककी यातनाहू नहीं होय है और मरनेके समय यमके दूतनसों उत्पन्न भयहू नहीं होय है ॥ ११६ ॥ जे

पित्रोर्निमित्तंयद्वित्तं पुत्रैःपात्रेसमर्पितम्॥आत्मापिपावितस्तनपुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः॥ ११४॥ पितुःशतगुणंपुण्यं सहस्रंमातुरेवच ॥ भगिनीदशसाहस्रंसोदरेदत्तमक्षयम् ॥११५॥ नचैवोपद्रवादातुर्नवानरकयातनाः ॥ मृत्यु कालेचनभयंयमदूतसमुद्भवम् ॥ ११६ ॥ यदिलोभान्नयच्छन्तिकाले ह्यातुरसंज्ञके ॥ मृताः शोचन्तितेसर्वे कदर्याःपापिनः खग ॥ ११७॥ पुत्राः पौत्राः सहभ्रात्रासगोत्राःसुहृदस्तुये ॥ ददंतिनातुरेदानंब्रह्मघ्नास्तेन संशयः ॥ ११८ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेआतुरदाननिरूपणोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

आतुरसमयमें लोभसों नहीं दान करै हैं हे गरुड ! वे कृपण पापी मरनेके पीछे शोच करे हैं ॥११७॥ भाईसमेत पुत्र पौत्र सगोत्री और जे मित्र हैं वे आतुरसमयमें दान नहीं देय हैं यातें वे निस्संदेह ब्रह्महत्यारे हैं ॥ ११८॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

हीसों नर स्वर्गलोकको जाय हैं ॥ १२ ॥ कुशके मूलमें ब्रह्मा स्थित है और कुशके मध्यमें जनार्दन और कुशके अग्र कहिये नोकमें शंकरदेव या प्रकार तीनों देवता कुशमें स्थित हैं ॥ १३ ॥ यातें कुश अग्नि मंत्र तुलसी ब्राह्मण और गौ ये वारंवार काममें लगानेहू पर निर्माल्य नहीं होते हैं ॥ १४ ॥ दर्भ पिंडनमें निर्माल्य होय हैं और ब्राह्मण प्रेतके भोजनमें निर्माल्य होयहै मंत्र गौ तुलसी नीचमें और

कुशमूलेस्थितोब्रह्मा कुशमध्येजनार्दनः ॥ कुशाग्रेशङ्करो देवस्त्रयोदेवाःकुशेस्थिताः ॥ १३॥ अतःकुशावह्नि मन्त्रतुलसीविप्रधेनवः ॥ नैतेनिर्माल्यतांयान्तिक्रियमाणाः पुनः पुनः ॥ १४॥ दर्भाः पिण्डेषुनिर्माल्याब्राह्मणाः प्रेतभोजने ॥ मन्त्रा गौस्तुलसीनीचेचितायांचहुताशनः ॥ १५ ॥ गोमयेनोपलिप्तेतुदर्भास्तरणसंस्कृते ॥ भूत लेह्यातुरंकुर्यादंतरिक्षं विवर्जयेत् ॥ १६ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चसर्वेदेवाहुताशनः ॥ मण्डलोपरितिष्ठन्तितस्मा त्कुर्वीतमण्डलम् ॥ १७ ॥ सर्वत्रवसुधापूतालेपोयत्रनविद्यते ॥ यत्रलेपःकृतस्तत्रपुनर्लेपेनशुध्यति ॥ १८ ॥

चितामें अग्नि निर्माल्य हो जायहै ॥१५॥ दर्भके बिछौनेसों संस्कार करे भये और गोबरसों लिपेभये स्थानमें आतुरको रखे अंतरिक्षको त्याग करै ॥१६॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र और अग्नि ये सब देवता मंडलके ऊपर बैठे हैं तातें मंडल करै ॥१७॥ विना लिपी सब भूमि ॥ ९३ ॥

पवित्र और जहां लिपी है वहां फिरि लिपनेसों पवित्र होयहै ॥१८॥ पिशाच राक्षस भूत प्रेत और यमके दूत विना लिपेभये स्थानमें खाटमें और अंतरिक्षमें प्रवेश करै हैं॥१९॥यातें अग्निहोत्र श्राद्ध ब्राह्मणभोजन और देवतानको पूजन इन सबको विना मंडलकी भूमिमें आतुरसों न करावै ॥२०॥ ता पीछे वा आतुरको लिपीभई भूमिमें पराके वाके मुखमें सुवर्ण और रत्न डारै फिरि शालग्रामस्वरूप जे विष्णु

राक्षसाश्च पिशाचाश्चभूताःप्रेतायमानुगाः ॥ अलिप्तदेशेखट्वायामन्तरिक्षेविशंतिच ॥१९॥ अतोग्निहोत्रंश्राद्धंचब्रह्मभोज्यंसुरार्चनम् ॥ मण्डलेनविनाभूम्यामातुरंनैवकारयेत् ॥२०॥ लिप्तभूम्यामतःकृत्वास्वर्णरत्नंमुखेक्षिपेत् ॥ विष्णोःपादोदकंदद्याच्छालग्रामस्वरूपिणः ॥२१॥ शालग्रामशिलातोयंयःपिबेद्बिन्दुमात्रकम्॥ ससर्वपापनिर्मुक्तोवैकुण्ठभुवनंव्रजेत् ॥२२॥ ततोगङ्गाजलंदद्यान्महापातकनाशनम्॥ सर्वतीर्थकृतस्नानदान पुण्यफलप्रदम्॥२३॥चान्द्रायणंचरेद्यस्तुसहस्रंकायशोधनम्॥पिबेद्यश्चैवगंगाम्भःसमौस्यातामुभावपि ॥२४॥

हैं तिनको चरणामृत डारै॥२१॥फिर शालग्राम शिलाके जलको जो बिंदुमात्रहू पीवैहैं वह सब पापनसों छूटिकै मुक्तिको प्राप्त होयहै ॥२२॥ ता पीछे महापातकके नाश करनहारे गंगाजलको देय वह गंगाजल सब तीर्थनमें करेभये जो हैं स्नान दान और पुण्य तिनके फलको देनहारो है॥२३॥जो कायाके शुद्ध करनहारे एकहजार चांद्रायण व्रत करै है वह और गंगाजलको जो पीवै है वह ये दोनों पृथिवी

समान होतेहैं॥ २४॥हे गरुड ! आगिको पाके जैसे रुईको ढेर नष्ट हो जायहै तैसेही गंगाजलके पीनेसों संपूर्ण पाप भस्म होजायहैं ॥२५॥
जो सूर्यकी किरणनसों तपे भये गंगाजलको पीवै है वह सब योनिनतें छूटिकै हरिके घरको जायहै ॥ २६ ॥ नदीजलमें स्नान करनेसों
इतर मनुष्यनको पवित्र करतीहै और गंगा दर्शनसों स्पर्शनसों पीनेसों और गंगा या नामके कहनेसों ॥ २७ ॥ सैकरन हजारन

अग्निंप्राप्ययथातार्क्ष्यतूलराशिर्विनश्यति ॥ तथागंगाम्बुपानेनपातकंभस्मसाद्भवेत् ॥ २५ ॥ यस्तुसूर्यांशु
सन्तप्तंगंगायाः सलिलंपिबेत् ॥ ससर्वयोनिनिर्मुक्तः प्रयातिसदनंहरेः ॥ २६ ॥ नद्योजलावगाहेनपावयन्ती
तराञ्जनान् ॥ दर्शनात्स्पर्शनात्पानात्तथागङ्गेति कीर्तनात् ॥ २७ ॥ पुनात्यपुण्यान्पुरुषाञ्छतशोथसह
स्रशः ॥ गंगातस्मात्पिबेत्तस्याजलंसंसारतारकम् ॥२८ ॥ गंगागङ्गेतियोब्रूयात्प्राणैःकण्ठगतैरपि ॥ मृतोवि
ष्णुपुरंयातिनपुनर्जायतेभुवि ॥ २९ ॥ उत्क्रामद्भिश्चयःप्राणैःपुरुषःश्रद्धयान्वितः ॥ चिन्तयेन्मनसागंगां
सोपियातिपरांगतिम् ॥ ३० ॥

अपवित्र पुरुषनको पवित्र करैहै. तातें संसारके तारनहारो जो वाको जल है ताहि पीवै ॥२८॥ जो पुरुष कंठमें आये भयेहू प्राणनसों गंगा ॥ ५४ ॥
ऐसे कहैहै वह मरिके विष्णुपुरको जाय है पृथिवीमें फिर नहीं उत्पन्न होय है ॥२९ ॥ श्रद्धायुक्त जो पुरुष निकलते भये प्राणनसों गंगाको

मरनेसों मुक्ति होय है वह सर्वदानसों दुर्लभ है ॥ ६ ॥ जाके घरमें तुलसीके वृक्षको स्थान है वह गृह तीर्थरूप है वामें यमके दूत
नहीं जावैहैं॥७॥जो तुलसीकी मंजरीकरि युक्त हो प्राणनको छोडै है तौ सैकरों पापनकरि युक्तहू वा प्राणीको यम नहीं देखिसकै है ॥८॥
तुलसीको दल मुखमें धरके तिल कुशके आसनपर मरो भयो प्राणी पुत्रहीन होनेहू पर निस्संदेह विष्णुपुरको जाय है ॥ ९ ॥ तीनि

तुलसीविटपस्थानंगृहेयस्यावतिष्ठते ॥ तद्गृहंतीर्थरूपंहिनयान्तियमकिंकराः ॥ ७ ॥ तुलसीमञ्जरीयुक्तोयस्तु
प्राणान्विमुञ्चति ॥ यमस्तंनेक्षितुंशक्तोयुक्तंपापशतैरपि ॥ ८ ॥ तस्यादलंमुखे कृत्वातिलदर्भासनेमृतः ॥ नरो
विष्णुपुरंयातिपुत्रहीनोप्यसंशयः ॥ ९ ॥ तिलाः पवित्रास्त्रिविधादर्भाश्चतुलसी तथा ॥ नरंनिवारयन्त्येतेदुर्गतिं
यान्तमातुरम् ॥ १०॥ ॥ ममस्वेदसमुद्भूतायतस्तेपावनास्तिलाः ॥ असुरादानवादैत्याविद्रवन्तितिलैस्ततः
॥ ११ ॥ दर्भाविभूतिर्मेतार्क्ष्यममरोमसमुद्भवाः ॥ अतस्तत्स्पर्शनादेवस्वर्गंगच्छान्तिमानवाः ॥ १२ ॥

प्रकारके तिल दर्भ और तुलसीदल ये सब दुर्गतिको प्राप्त होतेभये आतुरको निवारण करैं हैं ॥ १० ॥ मेरे स्वेदसों उत्पन्न हैं यातें तिल
पवित्र हैं तातें तिलनसों असुर दानव दैत्य भागै हैं ॥ ११॥ हे गरुड ! मेरे रोमसों उत्पन्न तिल मेरी विभूति हैं यातें उनके स्पर्शमात्र

भूमिमें फिर नहीं उत्पन्न होय है ॥ ३५ ॥ या प्रकार जाको आतुरकृत्य भयो है ऐसे धर्मात्मा पुरुषके प्राण मुखसों ऊपरके छिद्रमें होकै निकरैंहैं ॥ ३६ ॥ मुख आँख नाक और दोनों कान ये सात द्वार हैं इनमें होकै सुकृतीके प्राण जांयहैं और योगीके तालुके छिद्रमें होकै जांय हैं ॥ ३७ ॥ मिले भये प्राण जब अपानते जुदे होय हैं तब वायु सूक्ष्म होकर पुतलेतें निकलजाय है ॥ ३८ ॥ या प्रकार कालकरि आहत

एवंजातविधानस्यधार्मिकस्यतदाखग ॥ ऊर्ध्वंच्छिद्रेणगच्छन्तिप्राणास्तस्यसुखेनाहि ॥३६॥ मुखंचचक्षुषी नासेकर्णौद्वाराणिसप्तच ॥ एभ्यःसुकृतिनो यान्तियोगिनस्तालुरन्ध्रतः॥३७॥अपानान्मिलितप्राणौयदाहिभ वतःपृथक् ॥ सूक्ष्मीभूत्वातदावायुर्विनिष्क्रामतिपुत्तलात् ॥३८॥ शरीरंपततेपश्चान्निर्गतेमरुतीश्वरे ॥ काला हतंपतत्येवंनिराधारोयथाद्रुमः ॥३९॥ निर्विचेष्टंशरीरंतुप्राणैर्मुक्तंजुगुप्सितम् ॥ अस्पृश्यंजायतेसद्यो दुर्गन्धं सर्वनिन्दितम् ॥४०॥ त्रिधावस्थाशरीरस्यकृमिविड्भस्मरूपतः॥किंगर्वःक्रियतेदेहेक्षणविध्वंसिभिर्नरैः॥४१॥

शरीर ईश्वर जो वायु तिसके निकल जानेपर निराधार वृक्षके समान पतित होजाय है ॥ ३९ ॥ प्राणनकरिकै छोडो गयो शरीर चेष्टा रहित और जुगुप्सित तथा नहीं छूने योग्य और शीघ्रही दुर्गधयुक्त तथा निन्दित होजाय है ॥ ४० ॥ कृमि विष्ठा और भस्म रूपसों शरीरकी तीनि प्रकारकी अवस्था होय है और क्षणमें विध्वंस होनेवाले शरीरपर मनुष्यनकरि काहेको गर्व कियो जाय है ॥ ४१ ॥

पृथिवीमें पृथिवी और जलमें जल और तेजमें तेज लीन होय है और पवनमें पवन लीन होजायहै ॥ ४२ ॥ वैसेही आकाशमें आकाश लीन होजाय हैं वह आकाश सर्व व्यापी और शिवरूप है नित्य मुक्त जगत्का साक्षीरूप अमर आत्मा देहमें स्थित रहैहै ॥ ४३ ॥ सब इंद्रियों करिकै युक्त जीव शब्द आदि विषयों करि घेरा गया काम राग आदि करिकै तथा कर्म कोशकरि युक्त

पृथिव्यांलीयते पृथ्वीआपश्चैवतथाप्सुच ॥ तेजस्तेजसिलीयेतसमीरस्तुसमीरणे ॥ ४२ ॥ आकाशश्चतथाका शेसर्वव्यापीचशङ्करः ॥ नित्यमुक्तोजगत्साक्षीआत्मादेहेष्वजोमरः ॥ ४३ ॥ सर्वेन्द्रिययुतोजीवः शब्दादिवि षयैर्वृतः ॥ कामरागादिभिर्युक्तःकर्मकोशसमन्वितः ॥ ४४ ॥ पुण्यवासनयायुक्तोनिर्मितेस्वेनकर्मणा ॥ प्रवि शेत्सनवेदेहेगृहेदग्धेयथागृही ॥ ४५ ॥ तदाविमानमादायकिंकिणीजालमालियत् ॥ आयान्तिदेवदूताश्चल सच्चामरशोभिताः॥४६॥धर्मतत्त्वविदःप्राज्ञाःसदाधार्मिकवल्लभाः॥तदैनंकृतकृत्यंस्वर्विमानेननयन्तिते॥४७॥

हो ॥ ४४ ॥ पुण्यकी वासना करिकै युक्त हो अपने कर्मकारि बनायेभये नवीन देहमें जैसे जरिजानेपर घरवाला दूसरे घरमें प्रवेश करै है ऐसे प्रविष्ट होजायहै ॥ ४५ ॥ तब किंकिणीके जालनकी है माला जामें ऐसे विमानको लेकरि चलते भये चमरोंसों शोभित देवतानके दूत आवैं हैं ॥ ४६ ॥ धर्मको तत्त्व जाननहारे पंडित और जिनको सदा धर्मात्मा प्यारे हैं ऐसे देवतानके दूत तब

कृतकृत्य या प्राणीको विमानमें बैठाय स्वर्गको लेजावे हैं ॥४७॥सुन्दर दिव्य है देवतारूप देह जाको और निर्मल हैं वस्त्र तथा माला
जाकी और रत्नकरि जडे भये आभरणनकरि युक्त और दानके प्रतापसों महानुभाव वह पुरुष देवतानकरि पूज्यमान हो स्वर्गमें प्राप्त
होय है॥४८॥इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां नवमोऽध्यायः॥९॥

सुदिव्यदेहोविरजाम्बरस्रक्सुवर्णरत्नाभरणैरुपेतः ॥ दानप्रभावात्समहानुभावःप्राप्नोतिनाकंसुरपूज्यमानः
॥४८॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेम्रियमाणकृत्यनिरूपणोनामनवमोऽध्यायः ॥९॥ गरुडउवाच॥देहदाह
विधानंचविभोसुकृतिनांवद ॥ सतीयदिभवेत्पत्नीतस्याश्चमहिमांवद ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्य
प्रवक्ष्यामिसर्वमेवौर्ध्वदेहिकम् ॥ यत्कृत्वापुत्रपौत्राश्चमुच्यन्तेपैतृकादृणात् ॥ २ ॥ किंदत्तैर्बहुभिर्दानैः
पित्रोरन्त्येष्टिमाचरेत् ॥ तेनाग्निष्टोमसदृशं पुत्रःफलमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥

गरुड बोले ॥ हे विभो ! समर्थ सुकृती पुरुषनकी देहके दाहको विधान कहिये और जो वाकी स्त्री सती होय तो
वाकीहू महिमा कहिये ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले हे गरुड ! सुनो मैं और्ध्वदेहिक अर्थात् मरनेके पीछेके कर्म कहौंगो जाको करिकै
पुत्र पौत्र पिताके ऋणसे मुक्त होजाय है ॥२॥ दियेभये बहुतसे दानतसों कहा है माता पिताकी अंत्येष्टि करै तातें पुत्र अग्निष्टोमयज्ञके ॥ ५६ ॥

मनमें चिंतवन करैहै वह मोक्षको प्राप्त होय है॥३०॥यातें गंगाजीको ध्यान करै नमस्कार करै स्मरण करै और वाके जलको पीवै तापीछे
मोक्षको देनहारो कुछ भागवत सुनै ॥ ३१ ॥ एक श्लोक वा आधा श्लोक अथवा चौथाई श्लोकहू भागवतको जो अंतसमयमें पढे है वाको
ब्रह्मलोकतें कबहूँ लौटनो नहीं होय है ॥ ३२ ॥ उपनिषदोंके पाठसों और शिव तथा विष्णुके स्तोत्रनसों ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य

अतोध्यायेन्नमेद्गंगांसंस्मरेत्तज्जलंपिबेत् ॥ ततोभागवतंकिंचिच्छृणुयान्मोक्षदायकम् ॥३१॥ श्लोकंश्लोकार्ध
पादंवायोन्तेभागवतंपठेत् ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ॥ ३२ ॥ वेदोपनिषदांपाठाच्छिवविष्णुस्त
वादपि ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशांमरणंमुक्तिदायकम् ॥ ३३ ॥ प्राणप्रयाणसमयेकुर्यादनशनंखग ॥ दद्यादातुर
संन्यासंविरक्तस्यद्विजन्मनः ॥ ३४ ॥ संन्यस्तमितियोब्रूयात्प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ मृतोविष्णुपुरंयातिनपुन
र्जायतेभुवि ॥ ३५ ॥

नकी मृत्यु मुक्तिकी देनहारी है ॥ ३३ ॥ हे गरुड ! प्राणीनके यात्राके समय अनशन व्रत करै अर्थात् कुछ न खाय और विरक्त द्विज
न्माके आतुर संन्यास देवै ॥ ३४ ॥ जो कंठमें आयेभये प्राणनसों मैंने संन्यास लियो ऐसे कहै है वह मरिकै विष्णुलोकको जाय है

होय है ॥ ९ ॥ द्वारदेशमें वह पांथ हो ताके नामसों पिंडदान करै वा द्वार पिंडसों भूतनकी गणनामें दुष्ट अशुद्धस्थानमें प्राप्तभये वे विघ्न करनेको समर्थ नहीं होयहैं ॥ १० ॥ ता पीछे प्रदक्षिणाकारि पुत्र वधू आदिकारि पूजने योग्य है वा समय और बांधवोंसमेत पुत्रको कंधा लगानो चाहिये ॥ ११॥ पिताको कंधोंमें धरिकै जो श्मशानको जाय है वह पुत्र पदपदमें अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्त होय है ॥१२॥

द्वारदेशेभवेत्पान्थस्तस्यनाम्नाप्रदापयेत् ॥ तेननैवोपघातायभूतकोटिषुदुर्गताः ॥ १० ॥ ततः प्रदक्षिणां कृत्वा पूजनीयः स्नुषादिभिः ॥ स्कन्धः पुत्रेणदातव्यस्तदान्यैर्बान्धवैः सह ॥ ११ ॥ धृत्वास्कन्धेस्वपितरं यः श्मशानायगच्छति ॥ सोश्वमेधफलंपुत्रोलभतेचपदेपदे ॥ १२ ॥ नीत्वास्कन्धेस्वपृष्ठेकेसदातातेनला लितः ॥ तदेवतद्दणान्मुच्येन्मृतंस्वपितरंवहेत् ॥ १३ ॥ ततोर्धमार्गेविश्रामंसंमार्ज्याभ्युक्ष्य कारयेत् ॥ संस्नाप्यभूतसंज्ञायतस्मैतेनप्रदापयेत् ॥ १४ ॥

सदा पिता करि प्यार कियोगयो पुत्र अपने मरेभये पिताको कंधेमें अथवा अपनी पीठिपर लेजातो भयो तत्कालवा ऋणसों छूटि जाय है ॥ १३ ॥ ता पीछे आधे मार्गमें भूमिको झार छिरकाव करिकै विश्राम करावै तापीछे भूत है संज्ञा जाकी ऐसे वा प्रेतके

लिये पिंडदान करावै ॥ १४ ॥ पिशाच राक्षस यक्ष तथा और जे अन्यदिशामें स्थित हैं वाकी होम करनेके योग्य देहको अयोग्य करानेवाले हैं ॥ १५ ॥ ता पीछे श्मशानमें लेजायकै उत्तराभिमुख स्थापित करै वहां देहके दाहके लिये स्थलको शोधन करै ॥ १६ ॥ भूमि झाडकै और गोबरसों लीपिकै वासे दर्भसों लकीरैं करै अर्थात् दर्भसों ऊर्ध्वरेखा कर बीचमें अनामिका और अँगूठेसों उठाके

पिशाचाराक्षसायक्षायेचान्येदिक्षुसंस्थिताः ॥ तस्य होतव्यदेहस्यनैवायोग्यत्वकारकाः ॥ १५ ॥ ततोनीत्वा श्मशानेषु स्थापयेदुत्तरामुखम् ॥ तत्रदेहस्यदाहार्थं स्थलंसंशोधयेद्यथा ॥ १६ ॥ सम्मार्ज्यभूमिंसंलिप्यो ल्लिख्योद्धृत्यचवेदिकाम् ॥ अभ्युक्ष्योपसमाधायवह्निंतत्रविधानतः ॥ १७ ॥ पुष्पाक्षतैरथाभ्यर्च्यदेवंक्रव्या दसंज्ञकम् ॥ लोमभ्यस्त्वनुवाकेनहोमंकुर्याद्यथाविधि ॥ १८ ॥

जलसों छिरकि वहां अग्निको स्थापित करि क्रव्याद है नाम जाको अर्थात् कच्चे मांसके भक्षक वह्निको फूल आदिसों पूजन कारि “ लोमभ्यःस्वाहा त्वग्भ्यःस्वाहा मांसेभ्यः स्वाहा ” इत्यादि अनुवाक वेदमंत्रकारि विधिपूर्वक होम करै ॥१७॥ क्रव्याद है नाम जाको ऐसो देव अग्नि है तिनकी फूल अक्षतोंसे पूजा कारि लोमनसों अनुवाककारि यथाविधि होमको करै ॥ १८ ॥

तुम भूतनके धारण करनहारे और जगत्की योनि कहिये उत्पत्तिस्थान हो और तुम भूतनके पालनहारे हो ताते मरोभयो जो यह सांसारिक है ताको तुम स्वर्गकी गतिको पहुँचाओ ॥ १९ ॥ ऐसे अग्निकी प्रार्थना करि वहांई चंदन तुलसीको काष्ठ पलाश तथा पीपलकी लकरीनसों चिता बनावै ॥ २० ॥ वा प्रेतको चितामें धरिकै वहां चितामें प्रेतके हाथपर प्रेतके नामसों दो पिंड देवै चिताके

त्वंभूतभृज्जगद्योनिस्त्वंभूतपरिपालकः ॥ मृतः सांसारिकस्तस्मादेनंत्वंस्वर्गतिंनय ॥ १९ ॥ इति संप्रार्थयि त्वाग्निंचितांतत्रैवकारयेत् ॥ श्रीखण्डतुलसीकाष्ठैः पलाशाश्वत्थदारुभिः ॥ २०॥ चितामारोप्यतंप्रेतंपिंडौद्वौ तत्रदापयेत् ॥ चितायांशवहस्तेचप्रेतनाम्नाखगेश्वर ॥ चितामोक्षप्रभृतिकंप्रेतत्वमुपजायते ॥ २१ ॥ केपि तं साधकं प्राहुःप्रेतकल्पविदोजनाः ॥ चितायांतेननाम्ना वा प्रेतनाम्नाथवाकरे ॥ २२ ॥ इत्येवंपञ्चभिः पिंडैः शवस्याहुतियोग्यता ॥ अन्यथाचोपघातायपूर्वोक्तास्तेभवंतिहि ॥ २३ ॥

छोडनेसे लगाकै प्रेतत्व होयहै ॥ २१ ॥ कोई प्रेतकल्पके जाननहारे वाको साधक कहैं हैं चितामें वा नामसों अथवा प्रेतके नामसों हाथहीमें देवै ॥ २२ ॥ या प्रकार पांच पिंडनसो शवकी आहुतिकी योग्यता होय है अन्यथा कहिये पांच पिंड देनेसों पहले कहे भयो

समान फलको प्राप्त होय ॥ ३ ॥ तापीछे शोकको छोडिकै पुत्र मुंडन करावै सब पापनके दूरि होनेके लिये सब भाई बंधुनसमेत मुंडन करावै ॥ ४॥ माता पिता जाके मरिगये और जाने मुंडन नहीं करायो वह संसारसमुद्रको तारनहारो पुत्र अपनी आत्माते उत्पन्न कैसे जानिये ॥ ५ ॥ यातें नख और काँखको छोडिकै मुंडन अवश्य करवानो चाहिये ता पीछे बांधवन समेत स्नान करिकै धुलेभये

तदा शोकं परित्यज्य कारयेन्मुंडनं सुतः ॥ समस्तबांधवैर्युक्तः सर्वपापापनुत्तये ॥४॥ मातापित्रोर्मृतौ येन कारितं मुंडनं नहि ॥ आत्मजः स कथं ज्ञेयः संसारार्णवतारकः ॥ ५ ॥ अतो मुंडनमावश्यं नखकक्षवि वर्जितम् ॥ ततःसबांधवःस्नात्वाधौतवस्त्राणिधारयेत् ॥ ६॥ सद्योजलंसमानीयततस्तंस्नापयेच्छवम् ॥ मण्ड येच्चन्दनैःस्रग्भिर्गङ्गामृत्तिकयाथवा ॥ ७ ॥ नवीनवस्त्रैःसंच्छाद्यतदापिण्डंसदक्षिणम् ॥ नामगोत्रंसमुच्चार्य संकल्पेनापसव्यतः॥८॥ मृत्युस्थानेशवोनामतस्यनाम्नाप्रदापयेत् ॥ तेनभूमिर्भवेत्तुष्टातदधिष्ठातृदेवता ॥९॥

वस्त्रनको धारण करै ॥ ६ ॥ हालको नवनि जल मँगवाकै वा मृतकशरीरको स्नान करावै फिरि चन्दन माला आदिसों अथवा गंगाकी मृत्तिकासों शोभित करै ॥ ७ ॥ नवीन वस्त्रनसों वाहि ढाकि फिरि दक्षिणासमेत पिंड देवै नाम और गोत्रको उच्चारणकरि अपसव्य हो संकल्प करै ॥ ८ ॥ मृत्युस्थानमें शवनाम है ताके नामसों पिंड दिवावै ता पिंडसों भूमि और उसकी अधिष्ठातृ देवता प्रसन्न

बने होय और नक्षत्रनके मंत्रनसों अभिमंत्रित होंय ॥ २९ ॥ सोना तपावनो चाहिये और "प्रेताजयत" या मंत्रनसों प्रेतनामको संपुटित करिकै होम करनो चाहिये ॥ ३० ॥ ता पीछे उन पुत्तलनके साथ दाह करनो और पुत्र सपिंडीके दिन बाकी शांतिविधिको करै ॥ ३१ ॥ तिलको पात्र और सुवर्ण रूपा रत्न इनको यथाक्रम काँसेके पात्रमें घी भरिकै दोषकी शांतिके लिये दान करैं ॥ ३२ ॥

तप्तहेमप्रकर्त्तव्यंवहन्तिऋक्षनामभिः ॥ प्रेताजयतमन्त्रेणपुनर्होमस्तुसंपुटैः ॥ ३० ॥ ततोदाहः प्रकर्तव्यस्तैश्चपुत्तलकैः सह ॥ सपिण्डनदिनेकुर्यात्तस्यशान्तिविधिंसुतः ॥ ३१ ॥ तिलपात्रंहिरण्यंच रूप्यंरत्नंयथाक्रमम् ॥ घृतपूर्णकांस्यपात्रंदद्याद्दोषप्रशान्तये ॥ ३२ ॥ एवंशान्तिविधानंतुकृत्वादाहंकरोतियः ॥ नतस्यविघ्नोजायेत प्रेतायान्तिपराङ्गतिम् ॥ ३३ ॥ एवंपञ्चकदाहः स्यात्तद्विनाकेवलंदहेत् ॥ सतीयदिभवेत्पत्नी तयासहविनिर्दहेत् ॥ ३४ ॥ पतिव्रतायदानारीभर्तुः प्रियहितेरता ॥ इच्छेत्सहैवगमनंतदास्नानंसमाचरेत् ॥ ३५ ॥

ऐसे शांतिविधानको करिकै जो दाह करै है ताके विघ्न नहीं होय हैं और प्रेत परमगतिको प्राप्त होय है ॥ ३३ ॥ ऐसे पंचकमें दाह होय है वा पंचकके विना अकेलेहीको जरावै जो पत्नी सती स्त्री होय तो वाके साथ जरावै ॥ ३४ ॥ जो नारी पतिव्रता होय और पतिके

हितमें तत्पर होय और साथही जानो चाहै तो स्नान करै ॥ ३५ ॥ कुंकुम अंजन उत्तम वस्त्र भूषणसों शरीरको भूषित करै और ब्राह्मणनको दान दे और बंधुवर्गको देय ता पीछे गुरुको नमस्कार करिकै तब घरते बाहर निकलै ता पीछे देवालयमें जाके भक्तिसों उन हरिको प्रणाम करै ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ वहां आभरण देके और श्रीफलको ग्रहण करि लज्जा तथा मोहको छोडि श्मशानभवन जो मुर्दघाट

कुंकुमांजनसद्वस्त्रभूषणैर्भूषितांतनुम् ॥ दानंदद्याद्द्विजातिभ्योबंधुवर्गेभ्यएवच ॥ ३६ ॥ गुरुंनमस्कृत्यतदा निर्गच्छेन्मन्दिराद्बहिः ॥ ततोदेवालयंगत्वाभक्त्यातंप्रणमेद्धरिम् ॥ ३७ ॥ समर्प्याभरणंतत्रश्रीफलंपरिगृह्यच ॥ लज्जां मोहंपरित्यज्यश्मशानभवनंव्रजेत् ॥ ३८ ॥ तत्रसूर्यंनमस्कृत्यपरिक्रम्याचितांतदा ॥ पुष्पशय्यां तदारोहेन्निजांके स्वापयेत्पतिम् ॥ ३९ ॥ सखिभ्यः श्रीफलंदद्याद्दाहमाज्ञापयेत्ततः ॥ गंगास्नानसमंज्ञात्वाशरीरंपरिदाहयेत् ॥ ४० ॥ नदहेद्गर्भिणीनारीशरीरंपतिनासह ॥ जनयित्वाप्रसूतिंचबालंपोष्यसतीभवेत् ॥ ४१ ॥

है ताको जाय ॥ ३८ ॥ वहां सूर्यको नमस्कार करि और चिताकी परिक्रमा करि तब फूलनकी सेजपर चढै और अपनी गोदीमें पतिको सुवावै ॥ ३९ ॥ सखीनको श्रीफल देय ता पीछे दाहकी आज्ञा देवे गंगास्नानके समान शीतल जानि शरीरको जरावै ॥ ४० ॥ गर्भिणी स्त्री पतिके साथ शरीरको न जरावै किंतु संततिको उत्पन्न करि वाको पालन करिकै फिरि सती होय ॥ ४१ ॥

जो नारी भर्ताको प्राप्त हो जो शरीरको जरावे है तो अग्नि वाके शरीरको जराय देय है और आत्माको पीडा नहीं देय है ॥ ४२ ॥ जैसे आगिमें धौंकीभई धातूनको मल जरिजाय है वैसेही नारी अमृतके समान जो अग्नि है तामें पापको जराय देय है ॥ ४३॥ दिव्य जो शपथ आदि हैं तिनमें सत्ययुक्त धर्मात्मा मनुष्य शुद्ध होय है और तपायेभये लोहके पिंडसों कभी नहीं जरे है ॥ ४४॥ ऐसेही वह

नारीभर्तारमासाद्यशरीरंदहतेयदि ॥ अग्निर्दहतिगात्राणिनैवात्मानंप्रपीडयेत् ॥ ४२ ॥ दह्यतेध्मायमानानां धातूनांचयथामलः ॥ तथानारीदहेत्पापंहुताशेह्यमृतोपमे ॥४३॥ दिव्यादौसत्ययुक्तश्चशुद्धोधर्मयुतोनरः ॥ यथानदह्यतेतप्तलोहपिण्डेनकर्हिचित् ॥ ४४ ॥ तथासापतिसंयुक्तादह्यतेनकदाचन ॥ अन्तरात्मात्मनाभर्तुर्मृतस्यैकत्वमाप्नुयात् ॥ ४५ ॥ यावच्चाग्नौमृतेपत्यौस्त्रीनात्मानंप्रदाहयेत् ॥ तावन्नमुच्यतेसाहि स्त्रीशरीरात्कथंचन ॥ ४६ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन स्वपतिंसेवयेत्सदा ॥ कर्मणामनसावाचामृतेजीवतितद्गता ॥४७॥

स्त्री पतिके साथ पतिसमेत कभी नहीं जरती है अंतरात्मा मरेभये भर्ताके साथ एकताको प्राप्त होजाय है ॥ ४५ ॥ पतिके मरनेपै जबलौं स्त्री अपनी देहको नहीं जरावै है तबलौं वह स्त्रीके शरीरते कभी नहीं छूटै है ॥ ४६ ॥ तातें सब यत्ननसों कर्मसों मनसों वचनसों सदा

वे विघ्नके लिये उपस्थित होय हैं ॥ २३ ॥ प्रेतको पांच पिंड देकै पहले " लोमभ्यः स्वाहा " या अनुवाकसों होमीगई वाही अग्निको तृणनमें लेकै पुत्र अग्नि देवै और जे अग्निहोत्री हैं उनको अग्निहोत्रते लेकै देवै जो पंचक न होय तो ॥२४॥ और जो नर पंचकमें मरे हैं वह गतिको नहीं प्राप्त होय है पंचकमें दाह न करनो चाहिये जो कियो जाय तो दूसरेको मरण होय ॥ २५ ॥ आदिमें आधी धनिष्ठाते

प्रेतेदत्त्वा पंचपिण्डान्हुतमादायतंतृणैः ॥ अग्निपुत्रस्तदादद्यान्नभवेत्पञ्चकंयदि ॥२४ ॥ पंचकेषुमृतोयस्तुन गतिं लभतेनरः ॥ दाहस्तत्रनकर्तव्यः कृतेन्यमरणंभवेत्॥२५॥ आदौकृत्वाधनिष्ठार्धमेतन्नक्षत्रपञ्चकम् ॥ रेवत्यन्तंनदाहेर्हदाहेचनशुभंभवेत् ॥२६ ॥ गृहेहानिर्भवेत्तस्यऋक्षेष्वेषुमृतोहियः ॥ पुत्राणांगोत्रिणांचापिकश्चिद्विघ्नः प्रजायते ॥ २७ ॥ अथवाऋक्षमध्येहिदाहःस्याद्विधिपूर्वकः ॥ तद्विधिंतेप्रवक्ष्यामिसर्वदोषप्रशान्तये ॥ २८ ॥ शवस्यनिकटेतार्क्ष्यनिक्षिपेत्पुत्तलांस्तदा ॥ दर्भमयांश्चचतुरऋक्षमन्त्राभिमन्त्रितान् ॥ २९ ॥

लगाके अंतमें रेवतीतक ये पांच नक्षत्र दाहमें योग्य नहीं हैं और जो दाह करै तो शुभ न होय ॥ २६ ॥ जो इन पंचनक्षत्रमें मरैहै ताके घरमें हानि होय है पुत्रनमें तथा गोत्रवालेनमें कोई विघ्न होय है ॥ २७ ॥ अथवा नक्षत्रहीके मध्यमें विधिपूर्वक दाह होय है सब दोषनकी शांतिके लिये वा विधिको मैं तुमसों कहोंगो ॥ २८ ॥ हे गरुड ! शवके निकट चारि पुत्तलनको डारे वे पुत्तल दर्भके

प्रात होय है॥५३॥ जो क्षणभरके दाहके दुःखसों ऐसों सुखको छोडि देय है वह मूर्ख जन्मपर्यंत विरहकी आगिसों तपाई जाय है ॥५४॥ तातें पतिको शिव जानि वाके साथ शरीरको जरावै है हे गरुड ! जो सती न होय है तौ वाको या प्रकार जरावै ॥ ५५ ॥ आधा दग्ध होनेपै अथवा पूरा दग्ध होनेपै वा मृतकके मस्तकको फोडै गृहस्थोंके मस्तकको काष्ठसों और यतिनके मस्तकको श्रीफलसे फोडै ॥५६॥

याक्षणंदाहदुःखेनसुखमेतादृशंत्यजेत् ॥ सामूढाजन्मपर्यंतंदह्यतेविरहाग्निना ॥ ५४ ॥ तस्मात्पतिंशिवंज्ञात्वा सहतेनदहेत्तनुम्॥ यदि नस्यात्सतीतार्क्ष्यतमेवंप्रदहेत्तदा॥५५॥ अर्धेदग्धेऽथवापूर्णे स्फोटयेत्तस्यमस्तकम्॥ गृहस्थानांतुकाष्ठेनयतीनांश्रीफलेनच ॥५६॥ प्राप्तयेपितृलोकानांभित्त्वातद्ब्रह्मरन्ध्रकम् ॥ आज्याहुतिंततो दद्यान्मन्त्रेणानेनतत्सुतः ॥५७॥ अकारादभिजातोसित्वदयंजायतांपुनः ॥ असौस्वर्गायलोकायस्वाहाज्वल तुपावकः॥५८॥ एवमाज्याहुतिंदत्त्वातिलमिश्रांसमन्त्रकाम्॥ रोदितव्यं ततोगाढंतेनतस्यसुखंभवेत् ॥५९॥

ब्रह्मलोकनकी प्राप्तिके लिये वाके ब्रह्मरंध्रको भेदन करि ता पीछे वाको मंत्र या मंत्रसों घीकी आहुति दे ॥ ५७ ॥ हे पावक ! तुम वासुदेवतें उत्पन्न हो और तुमसों स्वर्गलोकके लिये अर्थात् स्वर्गमें जानेको तेजोमय दिव्यशरीरसों उत्पन्न होय है यह स्थूलदेह तुममें होव ॥ ६१ ॥
होऊ यातें तुम प्रज्वलित होऊ ॥ ५८ ॥ या प्रकार तिलयुक्त मंत्रसहित घीकी आहुति देकै ता पीछे खूब रोवनो चाहिये तासों प्राणीको

सुख होयहै ॥ ५९ ॥ दाहके पीछे पहले स्त्रीनको और पीछे पुत्रनको स्नान करनो चाहिये ता पीछे नाम और गोत्रको उच्चारण करि तिलांजलि देय॥६०॥ नींबकी पत्ती दाँतनसों कतरे और मृतकको गुणनको कहै पहले स्त्रीजन घरको जांय तापीछे मनुष्यनको समूह जाय॥६१॥घरमें फिरि स्नान करिकै गोग्रासदेय पत्रावलीमें भोजन करै घरको अन्न न खाय॥६२॥ तापीछे दक्षिणको मुख करि मृतकके

दाहादनन्तरंकार्यंस्त्रीभिःस्नानंततः सुतैः ॥ तिलोदकंततोदद्यान्नामगोत्रोपकल्पितम् ॥ ६० ॥ प्राशये न्निम्बपत्राणिमृतकस्यगुणान्वदेत् ॥ स्त्रीजनोग्रेगृहंगच्छेत्पृष्ठतोनरसंचयः ॥ ६१ ॥ गृहेस्नानंपुनः कृत्वा गोग्रासंचप्रदापयेत् ॥ पत्रावल्यांचभुञ्जीयाद्गृहान्नंनैवभक्षयेत् ॥ ६२ ॥ मृतकस्थानमालिप्यदक्षिणाभि मुखंततः ॥ द्वादशाहकपर्यन्तंदीपंकुर्यादहर्निशम् ॥६३ ॥ सूर्येस्तमागतेतार्क्ष्यश्मशानेवाचतुष्पथे ॥ दुग्धं चमृन्मयेपात्रेतोयंदद्याद्दिनत्रयम् ॥६४॥ अपक्वमृन्मयंपात्रंक्षीरनीरप्रपूरितम् ॥ काष्ठत्रयंगुणैर्बद्धंधृत्वामन्त्रं पठेदिमम् ॥ ६५ ॥ श्मशानानलदग्धोसिपरित्यक्तोसिबान्धवैः ॥ इदंनीरमिदंक्षीरमत्रस्नाहिइदंपिब ॥ ६६ ॥

स्थानको लीपै फिर बारह दिनलौं रातिदिन दीपक जगावे॥६३॥ हे गरुड ! सूर्यके अस्त होनेपै श्मशानमें अथवा चौराहेमें मट्टीके पात्रमें दूध और जल तीनि दिनलौं देय॥६४॥ दूध और जल भरोभयो कच्चो मट्टीको पात्र लेवे तामें सूतसों बँधीभई तीनि लकरी धरिकै यह मंत्र पढै ॥६५॥ श्मशानमें आगिसों जराये गयेहो और बांधवों करिके त्याग किये गयेहो यह जल और यह दूध है यहां जलसों स्नान करो और

दूधको पीवो ॥ ६६ ॥ अग्निहोत्रवाले पुरुषनको चौथे दिन अस्थिसंचय करनो चाहिये और अग्निहोत्ररहितनको तीसरे दिन अथवा दूसरे दिन करनो योग्य है विरोधके विना ॥ ६७ ॥ श्मशानभूमिमें जाके स्नान करिकै शुद्ध होय है ऊनको सूत लपेटिकै पवित्रीको पहिरै ॥६८॥ तापीछे पुत्र श्मशानवासिनके "यमाय त्वा" यामंत्रसों मांसबलि देवै और तीनि परिक्रमा करै ॥६९॥ हे गरुड ! ता पीछे चिताके

चतुर्थेसञ्चयःकार्यःसाग्निकैश्चनिराग्निकैः ॥ तृतीयेह्निद्वितीयेवाकर्तव्यश्चाविरोधतः ॥ ६७ ॥ गत्वाश्मशान भूमिं चस्नानंकृत्वाशुचिर्भवेत् ॥ ऊर्णासूत्रंवेष्टयित्वापवित्रींपरिधायच ॥ ६८ ॥ दद्याच्छ्मशानवासिभ्यस्त्व तोमांसबलिं सुतः ॥ यमायत्वेतिमन्त्रेणतिस्रःकुर्यात्परिक्रमाः ॥ ६९ ॥ ततोदुग्धेनचाभ्युक्ष्यचितास्थानंख गेश्वर ॥ जलेन सेचयेत्पश्चादुद्धरेदस्थिवृन्दकम् ॥ ७० ॥ कृत्वापलाशपत्रेषुक्षालयेद्दुग्धवारिभिः ॥ संस्था प्यमृन्मयेपात्रेश्राद्धंकुर्याद्यथाविधि ॥ ७१ ॥ त्रिकोणंस्थण्डिलंकृत्वागोमयेनोपलेपितम् ॥ दक्षिणाभिमु खोदिक्षुदद्यात्पिण्डत्रयंत्रिषु ॥ ७२ ॥

स्थानको दूधसे छिरकि पीछे जलसे छिरकि अस्थि संचय करै ॥ ७० ॥ उन अस्थिनको ढाकके पत्तेमें धरिकै दूधसों धोवै फिरि जलसों धोवै फिर मट्टीके पात्रमें रखकै विधिसों श्राद्ध करै ॥ ७१ ॥ तिकोना स्थंडिल करिकै गोबरसों लीपै फिरि दक्षिणाभिमुख हो तीन ॥ ६२ ॥

जीवते भये अपने पतिको सेवन करै और मरनेपै वाके साथ जाय ॥ ४७ ॥ भर्त्ताके मरनेपै जो नारी अग्निमें प्रवेश करै है वह अरुंधतीके समान होकै स्वर्गलोकमें आनंद करै है ॥ ४८॥ भर्त्तासेहू अधिक शोभायमान है रूप जाको ऐसी वह अप्सरानके गणनकारि स्तुति करीगई नारी जबलौं चौदह इंद्र रहैहैं तबलौं पतिके साथ विहार करै है॥ ४९ ॥ माताके पिताके और जहां वह ब्याही जाय इन तीनों

मृते भर्तरियानारीसमारोहेद्धुताशनम् ॥ साऽरुन्धतीसमाभूत्वास्वर्गलोकेमहीयते ॥ ४८ ॥ तत्रसाभर्तृ परमास्तूयमानाप्सरोगणैः ॥ रमतेपतिनासार्धंयावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ ४९ ॥ मातृकंपैतृकंचैवयत्रसाचप्र दीयते ॥ कुलत्रयंपुनात्यत्रभर्तारंयानुगच्छति ॥ ५० ॥ तिस्रः कोटयोर्द्धकोटीचयानिरोमाणिमानुषे ॥ ताव त्कालंवसेत्स्वर्गेपतिनासहमोदते ॥ ५१ ॥ विमानेसूर्यसंकाशेक्रीडतेरमणेनसा ॥ यावदादित्यचंद्रौचभर्तृलो केचिरंवसेत् ॥५२॥ पुनश्चिरायुः साभूत्वाजायतेविमलेकुले ॥ पतिव्रतातुयानारीतमेवलभतेपतिम् ॥ ५३ ॥

कुलनको भर्त्ताकेसाथ जानेवाली स्त्री पवित्र करै है ॥५०॥ साढे तीनि करोड जो रोम मनुष्यकी देहमें हैं उतने कालपर्यंत वह स्त्री स्वर्ग लोकमें पतिके साथ आनंद करैहै॥५१॥सूर्यकीसी है कांति जाकी ऐसे विमानमें पतिके साथ विहार करैहै और जबलौं सूर्य चंद्रमा प्रकाश करैं तबलौं भर्त्ताके लोकमें चिरकाल वास करै॥५२॥फिरि अधिक उमर पाकै निर्मल कुलमें उत्पन्न होय और पतिव्रता नारी वाही पतिको

परिक्रमा और नमस्कारको करि गंगाके मध्यमें डारिदेय ॥ ७८ ॥ दशदिनके भीतर जाके हड्डी गंगाके जलमें डूबै है वाकी ब्रह्मलोकतें कबहू पुनरावृत्ति कहिये फिर लौटनो नहीं होय है ॥७९॥ जितने वर्षनलौं मनुष्यकी हड्डी गंगाजलमें स्थित रहैहैं उतनेही हजार वर्षलौं स्वर्गलोकमें आनंद करै है ॥८०॥ गंगाजलकी लहरोंको छूकै पवन जब मृतकको छुवै है तौ वाको पाप शीघ्रही नाशको प्राप्त होय है ॥८१॥

अन्तर्दशाहंयस्यास्थिगंगातोयेनिमज्जति ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ॥७९॥ यावदस्थिमनुष्यं स्यगंगातोयेषुतिष्ठति ॥ तावद्वर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते ॥ ८० ॥ गंगाजलोर्मिसंस्पृश्यमृतकंपवनो यदा ॥ स्पृशतेपातकंतस्यसद्यएवविनश्यति ॥८१॥ आराध्यतपसोग्रेणगंगादेवींभगीरथः॥उद्धारार्थंपूर्वजा नामानयद्ब्रह्मलोकतः ॥ ८२ ॥ त्रिषुलोकेषुविख्यातं गंगायाः पावनंयशः ॥ यापुत्रान्सगरस्यैतान्भस्माख्यान नयद्दिवम्॥ ८३ ॥पूर्ववयसिपापानियेकृत्वामानवा मृताः ॥ गंगायामस्थिपतनात्स्वर्गलोकंप्रयान्तिते ॥८४॥

भगीरथ उग्रतपसों आराधन करि अपने पुरिखनके उद्धारके लिये गंगादेवीको ब्रह्मलोकतें लाये ॥८२॥ गंगाको पवित्र करनहारो यश तीनों लोकनमें प्रसिद्ध है जो गंगा भस्मही है नाम जिनको ऐसे ६० हजार सगरके पुत्रनको स्वर्गमें पहुँचावत भई ॥ ८३ ॥ जे मनुष्य

पहली अवस्थामें पापकरिकै मारिगये हैं वे गंगामें हड्डी गिरनेसों स्वर्गलोकको जांय है ॥ ८४ ॥ बडे वनमें सब प्राणीनको मारनहारो व्याध सिंह करि मारोगयो जबतांई नरकको जाय ॥ ८५ ॥ उतनेही कालमें वाकी हड्डी गंगामें गिरी तब वह दिव्य विमानपर चढकै देवमंदिरको गयो॥८६॥ गंगाही मुक्तिकी देनहारी है याही कारणतें हड्डीनको सत्पुत्र गंगामें आप डारै और अस्थिसंचयनके पीछे दश

कश्चिद्व्याधोमहारण्येसर्वप्राणिविहिंसकः ॥ सिंहेननिहतोयावत्प्रयातिनरकालये ॥ ८५ ॥ तावत्कालेनतस्या स्थिगंगायांपतितंतदा ॥ दिव्यंविमानमारुह्यसगतोदेवमान्दिरम् ॥ ८६ ॥ अतःस्वयंहिसत्पुत्रोगंगायामस्थि पातयेत् ॥ अस्थिसञ्चयनादूर्ध्वंदशगात्रंसमाचरेत् ॥ ८७ ॥ अथकश्चिद्विदेशेवावनेचोरभयेमृतः ॥ नलब्ध स्तस्यदेहश्चेच्छृणुयाद्यद्दिनेतदा ॥ ८८ ॥ दर्भपुत्तलकंकृत्वापूर्ववत्केवलंदहेत् ॥ तस्यभस्मसमादायगंगातो येविनिक्षिपेत् ॥८९॥ दशगात्रादिकंकर्मतद्दिनादेवकारयेत् ॥ स एवदिवसोग्राह्यःश्राद्धेसांवत्सरादिके ॥९०॥

गात्र करै ॥ ८७ ॥ कोई पुरुष विदेशमें वनमें अथवा चोरोंके भयसों मरिगयो होय और वाकी देह न मिलीहोय तौ जा दिन वाके मरनेको वृत्तांत सुन वाही दिन ॥ ८८ ॥ दर्भनको पुत्तला बनाय पहलेकी भाँति अकेलेहीको दाह करै वाकी भस्मको लेके गंगाके जलमें डारिदेय ॥ ८९ ॥ और वाही दिनतें दशगात्र विधान आदि करै और सांवत्सर श्राद्ध आदिमें वही दिन

लेनो चाहिये ॥९०॥ जो गर्भ पूरा होनेपै नारी मरजाय तौ पेटको चीरि बालकको निकारिकै भूमिमें गाडदेय और वाहीको दाह करै॥९१॥
गंगाके तीरमें जो बालक मरे ताको गंगाहीमें डारिदेय अन्यदेशमें सत्ताईस महीनेतकके बालकको भूमिमें गाडै ॥ ९२ ॥ या सत्ताईस मही
नेसों अधिक अवस्थाके बालकको दाह करै और वाकी हड्डी गंगामें पहुँचावै जलको घट और बालकनको भोजन देना चाहिये ॥ ९३॥

पूर्णेगर्भेमृतानारीविदार्यजठरंतदा ॥ बालंनिष्कास्यनिक्षिप्यभूमौतामेवदाहयेत् ॥ ९१ ॥ गंगातीरेमृतंबालं
गंगायामेवपातयेत् ॥ अन्यदेशेक्षिपेद्भूमौसप्तविंशतिमासजम् ॥ ९२ ॥ अतःपरंदहेत्तस्यगंगायामस्थिनिक्षि
पेत् ॥ जलकुम्भश्चदातव्यंबालानामेवभोजनम् ॥ ९३ ॥ गर्भेनष्टेक्रियानास्तिदुग्धंदेयंमृतेशिशौ ॥ घटंच
पायसंभोज्यंदद्याद्बालविपत्तिषु ॥९४॥ कुमारेचमृतेबालान्कुमारानेवभोजयेत् ॥ सबालान्भोजयेद्विप्रान्पौग
ण्डेसव्रतेमृते॥९५॥मृतश्चपंचमादूर्ध्वमव्रतःसव्रतोपिवा ॥ पायसेनगुडेनापिपिंडान्दद्याद्दशक्रमात् ॥ ९६ ॥

गर्भके नष्ट होनेपै क्रिया नहीं है और बालकके मरनेपै दूंध देनो चाहिये घट और भोजनको खीर बालकके मरनेमें देनी चाहिये ॥९४॥ ॥ ६
कुमारबालकके मरनेपे कुमारनकोहीं जिमावै और जो व्रतसमेत पौगंड मरे तौ बालक समेत ब्राह्मणको भोजन करावै ॥ ९५ ॥ पांचवें

दिशानमें तीनि पिंड देवै ॥७२॥ चिताकी भस्मको इकट्ठे कारि वहां त्रिपादुका कारिकै वहां खुलोभयो घट जल भारिकै स्थापित करै ॥७३॥
ता पीछे तंडुलनको पाक करि दही और घी करिकै युक्त विधिपूर्वक जलसमेत मीठी बली प्रेतके लिये देय ॥ ७४ ॥ और दश
पांच पैंड उत्तरदिशाको चल और वहां हे गरुड ! गढिल्ला खोदि हड्डीनके पात्रको स्थापित करै ॥ ७५ ॥ ताके ऊपर दाहकी पीडाके नाश

पुञ्जीकृत्यचिताभस्मतत्रधृत्वात्रिपादुकाम् ॥ स्थापयेत्तत्रसजलमनाच्छाद्यमुखंघटम् ॥ ७३ ॥ ततस्तण्डुल
पाकेनदधिघृतसमन्वितम् ॥ बलिंप्रेतायसजलंदद्यान्मिष्टंयथाविधि ॥ ७४ ॥ पदानिदशपञ्चैवचोत्तरस्यांदि
शिव्रजेत् ॥ गर्तविधायतत्रास्थिपात्रंसंस्थापयेत्खग ॥ ७५ ॥ तस्योपरिततोदद्यात्पिंडंदाहार्तिनाशकम् ॥ गर्ता
दुद्धृत्यतत्पात्रंनीत्वागच्छेज्जलाशयम् ॥७६ ॥ तत्रप्रक्षालयेद्दुग्धजलादस्थिपुनःपुनः ॥ चर्चयेच्चन्दनेनाथ कुङ्कु
मेनविशेषतः॥७७॥ धृत्वासम्पुटकेतानिकृत्वाचहृदिमस्तके॥ परिक्रम्यनमस्कृत्यगंगामध्येविनिक्षिपेत्॥७८॥

करनेहारे पिंडको देय गढिल्लेते वा पात्रको निकारि जलाशय जो नदी तालाव आदि हैं तिनपर जाय ॥ ७६ ॥ वहां दूध और जलसों वार
वार हड्डीनको धोवै फिर उनको चंदनसों चर्चै और विशेषकरि कुंकुमसों ॥ ७७ ॥ उनको संपुटमें धरिकै हृदय और मस्तकमें लगावै फिर

न तो दाह है और न उदकक्रिया है और सुत आदिकनकरिकै उनके दशगात्र आदि न करने चाहिये ॥ १०२ ॥ दंडके ग्रहणमात्रहीसों नर नारायणको रूप होजाय है और त्रिदंडके ग्रहणसों उनको प्रेतत्व नहीं होयहै ॥ १०३ ॥ ज्ञानी स्वरूपके अनुभवसों सदा मुक्त होय हैं याहीते वे दियेभये पिंडनकी चाहना नहीं राखैं हैं ॥ १०४ ॥ तातें उनके पिंडदान आदि और जलदान आदि न करैं किंतु पिताकी

दंडग्रहणमात्रेणनरोनारायणोभवेत् ॥ त्रिदंडग्रहणात्तेषांप्रेतत्वंनैवजायते ॥ १०३ ॥ ज्ञानिनस्तुसदामुक्ताःस्व रूपानुभवेनहि ॥ अतस्तेतुप्रदत्तानांपिंडानांनैवकांक्षिणः ॥ १०४ ॥ तस्मात्पिण्डादिकं तेषांनतुनोदकमाच रेत् ॥ तीर्थश्राद्धंगयाश्राद्धंपितृभक्त्यासमाचरेत् ॥ १०५ ॥ हंसंपरमहंसंचकुटीचकबहूदकौ ॥ एतान्संन्या सिनस्तार्क्ष्यपृथिव्यांस्थापयेन्मृतान् ॥ १०६ ॥ गङ्गादीनामभावेहिपृथिव्यांस्थापनंस्मृतम् ॥ यत्रसन्तिमहान द्यस्तदातास्वेवनिक्षिपेत् ॥ १०७ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेदाहास्थिसंचयकर्मनिरूपणोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

भक्तिसों तीर्थ श्राद्ध और गया श्राद्ध करै ॥ १०५ ॥ हंस परमहंस कुटीचक बहूदक इन संन्यासीनको हे गरुड ! मरनेपै भूमिमें स्था पित करै ॥ १०६ ॥ गंगा आदि नदियोंके न होनेपै पृथिवीमें स्थापन कहा है और जहां महानदी है वहां उन्हींमें प्रवाह करदेय ॥ १०७ ॥
इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

गरुड बोले, दशगात्रकी विधि कहो वाके करनेसों कहा सुकृत होय है और पुत्रके न होनेपै कौन करै, हे केशव ! यह मोते कहो ॥ १ ॥ श्रीभ गवान् बोले, हे गरुड ! सुनो मैं तुमसों दशगात्रकी विधि कहौंगो जाको करिकै सत्पुत्र पिताके ऋणते छूटि जाय है॥२॥पुत्र शोकको छोडि सतोगुणी धैर्यको धरिकै पिताके पिंड आदि करै आंसूनको न गिरावै ॥ ३ ॥ बांधवों करिकै त्याग कियोगयो श्लेष्माको आंसूको अवश

गरुडउवाच ॥ दशगात्रविधिंब्रूहिकृतेकिंसुकृतंभवेत् ॥ पुत्राभावेतुकःकुर्यादितिमेवदकेशव ॥ १ ॥ श्रीभगवा नुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामिदशगात्रविधिंतव ॥ यद्विधायचसत्पुत्रोमुच्यतेपैतृकादृणात् ॥ २ ॥ पुत्रः शोकंपरित्यज्यधृतिमास्थायसात्त्विकीम् ॥ पितुःपिण्डादिकंकुर्यादश्रुपातंनकारयेत् ॥ ३ ॥ श्लेष्माश्रुबान्धवैर्मु क्तंप्रेतोभुंक्तेयतोऽवशः ॥ अतोनरोदितव्यंहितदाशोकान्निरर्थकात् ॥ ४ ॥ यदिवर्षसहस्राणिशोचतेहर्निशं नरः ॥ तथापिनैवनिधनंगतोदृश्येतकर्हिचित् ॥ ५ ॥ जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ तस्मादप रिहार्येर्थेनशोकंकारयेद्बुधः ॥ ६ ॥

होके प्रेत खाय है यातें निरर्थक शोक होनेके कारण रोवनो न चाहिये॥४॥जो मनुष्य हजार वर्षलों रातिदिन शोच करै तौहू मरोभयो कबहू नहीं दिखाई देयगो ॥ ५ ॥ उत्पन्न भयेकी निश्चय मौत है और मरेभयेको निश्चय जन्म है तातें नहीं निवारण करने योग्य अर्थमें पंडित

शोकको न करै ॥६॥ दैवी अथवा मानुषी ऐसो कोई उपाय नहीं है जाते मरो भयो जीव फिरि यहां आवै ॥७॥ अवश्य होनेवाले भावनको जो कुछ उपाय होता तो नलराजा रामचंद्र और युधिष्ठिर दुःखकरि युक्त न होते ॥ ८ ॥ स्वप्नके शरीरहूसा काहूको काहूके साथ यह अत्यंत सहवास नहीं होय है और पृथक् जननको कहा कहनो है ॥ ९ ॥ जैसे कोई बटोही छायाको सहारा लेकै विश्राम करै है और

नहिकश्चिदुपायोस्तिदैवोवामानुषोपिवा ॥ योहिमृत्युवशंप्राप्तोजन्तुःपुनरिहाव्रजेत् ॥७॥ अवश्यंभाविभावा
नांप्रतीकारोभवेद्यदि ॥ तदादुःखैर्नयुज्येरन्नलरामयुधिष्ठिराः ॥ ८ ॥ नायमत्यन्तसंवासःकस्यचित्केनचि
त्सह ॥ अपिस्वेनशरीरेणकिमुतान्यैः पृथग्जनैः ॥ ९ ॥ यथाहिपथिकः कश्चिच्छायामाश्रित्यविश्रमेत् ॥
विश्रम्यचपुनर्गच्छेत्तद्वद्भूतसमागमः ॥ १० ॥ यत्प्रातः संस्कृतंभोज्यंसायंतच्चविनश्यति ॥ तदन्नरससं
पुष्टेकायेकानामनित्यता ॥ ११ ॥

विश्राम लेकै फिरि चलदेय है ऐसेही प्राणिनको समागम है ॥ १० ॥ प्रातःकाल जो भोजनयोग्य वस्तु बनाई जाय है और सायंकालमें नष्ट होजायहै वा अन्नके रससों पालेभये शरीरमें कौनसी नित्यता है अर्थात् और कोई नहीं ॥ ११ ॥

वर्षके उपरांत यज्ञोपवीत समेत अथवा विना यज्ञोपवीतके मरे तो वाको खीरसों वा गुडसों क्रमसों दश पिंड देय ॥ ९६ ॥ एकादशाह और द्वादशाह करै और वृषोत्सर्गविधि न करै और महादान जे शय्यादान आदि हैं तिनके विना पौगंड अवस्थामें करै ॥ ९७ ॥ पिताके जीवते भये पौगंड अवस्थावालेको सपिंडन नहीं होयहै यातें वाको बारह दिनलों एकोदिष्ट श्राद्ध करै ॥ ९८ ॥ स्त्री और शूद्रनको यज्ञोपवी

एकादशंद्वादशंचवृषोत्सर्गविधिंविना ॥ महादानविहीनंचपौगण्डेकृत्यमाचरेत् ॥ ९७ ॥ जीवमानेचपित
रिनपौगंडेसपिंडनम् ॥ अतस्तस्य द्वादशाहन्येकोदिष्टंसमाचरेत् ॥ ९८ ॥ स्त्रीशूद्राणांविवाहस्तुव्रतस्थाने
प्रकीर्तितः ॥ व्रतात्प्राक्सर्ववर्णानांवयस्तुल्याक्रियाभवेत् ॥ ९९ ॥ स्वल्पात्कर्मप्रसंगाच्चस्वल्पाद्विषयबंध
नात् ॥ स्वल्पेवयसि देहेचक्रियांस्वल्पामपीच्छति ॥ १०० ॥ किशोरेतरुणेकुर्याच्छय्यावृषमखादिकम् ॥
पददानंमहादानंगोदानमपिदापयेत् ॥ १०१ ॥ यतीनांचैवसर्वेषांनदाहोनोदकक्रिया ॥ दशगात्रादिकंतेषां
नकर्तव्यंसुतादिभिः ॥ १०२ ॥

तके स्थानमें विवाह कहागया है व्रत जो यज्ञोपवीत है तातें पहले अवस्थाके तुल्य क्रिया होय है ॥ ९९ ॥ स्वल्प कहिये थोडे कर्मके प्रसंगते और स्वल्पही विषयके बंधनसे और स्वल्पही अवस्थामें और देहकेहू स्वल्प होनेपै क्रिया कीहू स्वल्पही इच्छा करै है ॥ १०० ॥ किशोर अवस्थामें तथा तरुण अवस्थामें शय्या और वृषोत्सर्ग आदि करै पददान महादान और गोदानहू करावै ॥१०१॥ सब यतीनको

करै ॥ १७ ॥ कोई स्त्री कोई पुरुष जो इष्टकी क्रिया करै तौ वह अनाथ प्रेतके संस्कारसों कोटि यज्ञके फलको प्राप्त होय ॥ १८ ॥ हे गरुड ! पुत्रकरि पिताके दशगात्र आदि करने चाहिये ज्येष्ठपुत्रके मरनेपै अतिस्नेहसों पिता न करै ॥ १९ ॥ जो बहुतसे पुत्र होय तौ विधि एक पुत्र करै अर्थात् दशगात्र सपिंडी तथा और सोलह श्राद्ध इन सबनको एकही करै ॥ २० ॥ धनके

स्त्रीवाथपुरुषः कश्चिदिष्टस्यकुरुतेक्रियाम् ॥ अनाथप्रेतसंस्कारात्कोटियज्ञफलंलभेत् ॥ १८ ॥ पितुःपुत्रेणकर्तव्यं दशगात्रादिकंखग ॥ मृतेज्येष्ठेप्यतिस्नेहान्नकुर्वीतपितासुते ॥ १९ ॥ बहवोपियदापुत्राविधिमेकःसमाचरेत् ॥ दशगात्रंसपिंडत्वंश्राद्धान्यन्यानिषोडश ॥ २० ॥ एकेनैवतुकार्याणिअविभक्तधनेष्वपि ॥ विभक्तैस्तुपृथक्कार्यं श्राद्धंसांवत्सरादिकम् ॥ २१ ॥ तस्माज्ज्येष्ठःसुतोभक्त्यादशगात्रंसमाचरेत् ॥ एकभोजीभूमिशायीभूत्वाब्रह्मपरःशुचिः ॥ २२ ॥ सप्तवारंपरिक्रम्यधरणींयत्फलंलभेत् ॥ क्रियांकृत्वापितुर्मातुस्तत्फलंलभतेसुतः ॥ २३ ॥

विभाग न होजानेपर एकहीको करने चाहिये और जिनमें विभाग होगयो है उनको संवत्सर श्राद्ध आदि पृथक् करने चाहिये ॥ २१ ॥ तातें ज्येष्ठपुत्र भक्तिसों दशगात्र करै इन गात्रनके करनेमें एकवार भोजन करै भूमिमें सोवे और सदा शुद्ध तथा ब्रह्मके ध्यानमें तत्पर रहे ॥ २२ ॥ सातवार पृथवीकी परिक्रमा करनेसों जा फलको प्राप्त होय है वा फलको माता पिताकी क्रियाको करिकै पुत्र प्राप्त होय

है ॥ २३ ॥ दशगात्रनको आरंभ करि जबलौं बरसी होय तबलौं पुत्र क्रियाको करतो भयो गया श्राद्धके फलको प्राप्त होय है ॥ २४ ॥ कुएँमें तालाबमें अथवा बगीचेमें तीर्थमें और देवालयमें जायकै मध्यम पहरमें विना मंत्र स्नान करै ॥ २५ ॥ शुद्ध हो वृक्षके मूलमें दक्षिणाभिमुख स्थित होय वहां वेदिको बनावै और गोबरसों लीपै ॥ २६ ॥ वामें पत्तेपर कुशके विश्वामित्रको स्थापित करै वसुनकी पाद्य

आरभ्य दशगात्रंचयावद्वैवार्षिकंभवेत् ॥ तावत्पुत्रःक्रियांकुर्वन्गयाश्राद्धफलंलभेत् ॥ २४ ॥ कूपेतडागेवारामेतीर्थेदेवालयेपिवा ॥ गत्वामध्यमयामेतुस्नानंकुर्यादमन्त्रकम् ॥ २५ ॥ शुचिर्भूत्वावृक्षमूलेदक्षिणाभिमुखःस्थितः ॥ कुर्याच्चवेदिकांतत्रगोमयेनोपलिप्यताम् ॥ २६ ॥ तस्यांपर्णेदर्भमयंस्थापयेत्कौशिकंद्विजम् ॥ तपाद्यादिभिरभ्यर्च्यप्रणमेदतसीतिच ॥ २७ ॥ तदग्रेचततोदत्त्वापिण्डार्थंकौशमासनम् ॥ तस्योपरिततःपिंडं नामगोत्रोपकल्पितम् ॥ २८ ॥ दद्यात्तण्डुलपाकेनयवपिष्टेनवासुतः ॥ उशीरंचन्दनंभृंगराजपुष्पंनिवेदयेत् ॥ धूपंदीपंचनैवेद्यंमुखवासंचदक्षिणाम् ॥ २९ ॥

आदिसों पूजाकरि 'अतसीपुष्पसंकाशम्' इत्यादि मंत्रको पढके प्रणाम करै ॥ २७ ॥ तापीछे उनके आगे पिंडको लिये कुशको आसन डारै ताके ऊपर नाम गोत्रको उच्चारण करि पिंडको धरै ॥ २८ ॥ चावलोंके पाकसों अथवा जवके चूनसों पुत्र वा पिंडको बनावै

तापीछे उशीर चंदन और भांगरेको फूल वाके ऊपर चढावै फिरि धूप नैवेद्य मुखवास और दक्षिणा वाके आगे धरै ॥२९॥ दूध और पानीके पात्रमें काकके लिये अन्न धरै और वर्द्धमान जलकी अंजली देय और कहे कि "अमुकनाम्नेप्रेतायमदत्तम् उपतिष्ठतु" अर्थात अमुकनाम प्रेतके लिये मेरो दियोभयो प्राप्त हो ॥ ३० ॥ अन्न वस्त्र और जल अथवा अन्य वस्तु जो प्रेत शब्दसों दीजाय है वा मृतकको आनंद फल देनहारो होय है ॥ ३१ ॥ तातें आदिके दिनसों लगाके सपिंडी विधानतें पहले स्त्रीको और पुरुषको प्रेत

काकान्नंपयसोःपात्रेवर्धमानजलांजलीन् ॥ प्रेतायामुकनाम्नेचमद्दत्तमुपतिष्ठतु ॥ ३० ॥ अन्नंवस्त्रंजलंद्रव्य मन्यद्वादीयतेचयत् ॥ प्रेतशब्देनयद्दत्तंमृतस्यानन्त्यदायकम् ॥३१॥ तस्मादादिदिनादूर्ध्वं प्राक्सपिंडीविधानतः ॥योषितः पुरुषस्यापिप्रेतशब्दंसमुच्चरेत्॥३२॥प्रथमेहनियत्पिण्डोदीयतेविधिपूर्वकम् ॥ तेनैवविधिनान्नेननवपिण्डान्प्रदापयेत् ॥३३॥ नवमेदिवसेचैवसपिण्डैःसकलैर्जनैः॥ तैलाभ्यङ्गःप्रकर्तव्योमृतकस्वर्गकाम्यया॥३४॥बहिःस्नात्वागृहीत्वाचदूर्वालाजसमन्विताः ॥अग्रतःप्रमदांकृत्वासमागच्छेन्मृतालयम् ॥३५॥

शब्दको उच्चारण करै ॥ ३२ ॥ पहले दिन पिंड विधिपूर्वक दियोजाय वाही विधिसों अन्नकारि नव पिंडनको देय ॥ ३३ ॥ नवम दिन सब सपिंडलोग मृतकके स्वर्गकी कामना करकै तैलाभ्यंग करैं अर्थात् सब तेल लगावैं ॥ ३४ ॥ बाहर न्हायकै खीलन समेत दूधको ले आगे स्त्रीको कारिकै मृतकके घरमें जाय ॥ ३५ ॥

विचारको या दुःखकी औषध चिन्तवन कारिकै अज्ञानतें उत्पन्न भये शोकको छोडिकै पुत्र क्रिया करै ॥१२॥ पुत्रके न होनेपै वधू करै वाकेहू न होनेपै सगा भाई करै अथवा ब्राह्मणकी क्रिया शिष्य करै अथवा सपिण्ड करै ॥ १३॥ हे गरुड ! मनुष्यके पुत्रहीन होनेपै जेठे भाई अथवा छोटे भाईके पुत्र पौत्र दशगात्र आदि करै ॥ १४ ॥ एक पितातें उत्पन्न भये भाईनमें जो एक पुत्रवान् होय तो वाही

भैषज्यमेतद्दुःखस्यविचारंपरिचिन्त्यच ॥ अज्ञानप्रभवंशोकंत्यक्त्वाकुर्यात्क्रियांसुतः ॥ १२॥ पुत्राभावेवधूः कुर्याद्भार्याभावेचसोदरः ॥ शिष्योवाब्राह्मणस्यैवसपिंडोवासमाचरेत् ॥ १३ ॥ ज्येष्ठस्यवाकनिष्ठस्यभ्रातुः पुत्रैश्चपौत्रकैः ॥ दशगात्रादिकं कार्यंपुत्रहीनेनरेखग ॥१४॥ भ्रातृणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान्भवेत् ॥ सर्वे तेतेनपुत्रेणपुत्रिणोमनुरब्रवीत्॥१५॥पत्न्यश्चबह्व्यएकस्यचैकापुत्रवतीभवेत्॥ सर्वास्ताःपुत्रवत्यःस्युस्तेनैके नसुतेनहि ॥१६॥ सर्वेषांपुत्रहीनानांमित्रं पिण्डंप्रदापयेत् ॥ क्रियालोपोनकर्तव्यःसर्वाभावेपुरोहितः ॥१७॥

पुत्रसों सब पुत्रवाले हैं यह मनुने कहा है ॥ १५ ॥ एकके जो बहुतसी पत्नी होयँ और उनमेंसों एकके पुत्र होय तो वा एक पुत्रसों सब पुत्रवती होयँ हैं ॥ १६ ॥ सब पुत्रहीननको मित्र पिण्डदान करै क्रियाको लोप न करनो चाहिये मित्रहू न होय तो पुरोहित पिण्डदान

प्रेतको मुक्ति देनहारे होऊ ॥ ४१ ॥ या प्रार्थनाके मंत्रको श्राद्धके अंतमें प्रतिदिन पढै न्हायके घरमें जायके और गोग्रास देकै आप
भोजन करै ॥ ४२ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्माद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायामेकादशो
ऽध्यायः ॥ ११ ॥ गरुड बोले ॥ हे सुरेश्वर ! एकादश दिनकीहू विधि कहो हे जगदीश्वर ! वृषोत्सर्ग विधानहूको मोते कहो ॥ १ ॥

इतिसंप्रार्थनामन्त्रंश्राद्धान्तेप्रत्यहंपठेत् ॥ स्नात्वागत्वागृहेदत्त्वागोग्रासंभोजनंचरेत् ॥ ४२ ॥ इति श्रीगरुड
पुराणेसारोद्धारेदशगात्रविधिनिरूपणंनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ गरुडउवाच ॥ एकादशदिनस्यापि
विधिंब्रूहिसुरेश्वर ॥ वृषोत्सर्गविधानंचवदमेजगदीश्वर ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एकादशेऽह्निगन्तव्यंप्रा
तरेवजलाशये ॥ और्ध्वदेहिक्रियासर्वाकरणीयाप्रयत्नतः ॥ २ ॥ निमन्त्रयेद्ब्राह्मणांश्चवेदशास्त्रपरायणान् ॥
प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिंचनमस्कृत्यकृताञ्जलिः ॥ ३ ॥ स्नानसंध्यादिकंकृत्वाह्याचार्योऽपिशुचिर्भवेत् ॥ विधानंवि
धिवत्कुर्यादेकादशदिनोचितम् ॥ ४ ॥

श्रीभगवान् बोले ग्यारहवें दिन प्रातःकालही जलाशयपर जानो चाहिये और सब और्ध्वदेहिक प्रयत्नसों करनो चाहिये ॥ २ ॥ और वेद
शास्त्रमें परायण ब्राह्मणको निमंत्रण करै हाथ जोरि नमस्कार करिकै प्रेतकी मुक्तिकी चाहना ॥ ३ ॥ स्नान संध्या आदि करिकै आचार्यहू

शुद्ध होय और एकादश दिनका जो विधान है ताको विधिवत् करै ॥ ४ ॥ और विना मंत्रके नामगोत्रको उच्चारण करि दशदिन श्राद्ध करै
और ग्यारहवें दिन प्रेतको पिंडदान करै ॥५॥ सुवर्णकी विष्णुकी मूर्ति बनावै और ब्रह्माकी रूपेकी बनावै और रुद्रकी मूर्ति तांबेकी
बनावै और हे गरुड ! यमकी मूर्ति लोहेकी बनावै ॥ ६ ॥ पश्चिमादिशामें गंगाजलसमेत विष्णुको कलश धरै ताके ऊपर पीले कपडेमें

अमन्त्रंकारयेच्छ्राद्धंदशाहंनामगोत्रतः ॥ एकादशेऽह्निप्रेतस्यदद्यात्पिण्डंसमन्त्रकम् ॥५॥ सौवर्णकारयेद्विष्णुं
ब्रह्माणंरौप्यकंतथा ॥ रुद्रस्ताम्रमयः कार्योयमोलोहमयः खग ॥६॥ पश्चिमेविष्णुकलशंगंगोदकसमन्वितम् ॥
तस्योपरिन्यसेद्विष्णुंपीतवस्त्रेणवेष्टितम् ॥७॥ पूर्वेतुब्रह्मकलशंक्षीरोदकसमन्वितम् ॥ ब्रह्माणंस्थापयेत्तत्रश्वे
तवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ ८ ॥ उत्तरस्यांरुद्रकुम्भंपूरितंमधुसर्पिषा ॥ श्रीरुद्रंस्थापयेत्तत्ररक्तवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ ९ ॥
दक्षिणस्यांयमघटमिन्द्रोदकसमन्वितम् ॥ कृष्णवस्त्रेणसंवेष्ट्यतस्योपरियमंन्यसेत् ॥ १० ॥

लपेटिकै विष्णुमूर्ति स्थापित करै ॥७॥ और पूर्वदिशामें दूध और जलसमेत ब्रह्माको कलश धरै वापै सफेद कपरा लपेटि ब्रह्माकी मूर्ति
स्थापित करै ॥८॥ और उत्तरमें सहत और घीसों भरेभये रुद्रक कलशको धरै ताके ऊपर लालवस्त्रसों लपेटि श्रीरुद्रको स्थापित
करै॥९॥और दक्षिणदिशामें इंद्रके जलसे भरेभये यमके घटको धरै ताके ऊपर काले कपरासों लपेटि यमकी मूर्ति स्थापित करै॥१०॥

और मध्यमें मंडल करिकै पुत्र कौशिकको स्थापित करै और दक्षिणाभिमुख होकै अपसव्यसों तर्पण करै ॥ ११ ॥ विष्णु ब्रह्मा शिव और धर्म इनको वेदके मंत्रसों तर्पण करै और होमकरिकै पीछे दशघट आदि श्राद्ध करै ॥ १२ ॥ फिरि पितरनके तारनेको गोदान दे हे माधव ! मोकरिकै दिईभई यह गौ तुम्हारी प्रसन्नताके लिये होय ॥१३॥ और वा मृतकके भोगे भये जे वस्त्र भूषण तथा वाहन होंय

मध्येतुमण्डलंकृत्वास्थापयेत्कौशिकंसुतः ॥ दक्षिणाभिमुखोभूत्वाऽपसव्येनचतर्पयेत् ॥ ११ ॥ विष्णुंविधिं
शिवंधर्मंवेदमन्त्रैश्चतर्पयेत् ॥ होमंकृत्वाचरेत्पश्चाच्छ्राद्धंदशघटादिकम् ॥ १२ ॥ गोदानंचततोदद्यात्पितॄणां
तारणायवै ॥ गौरेषाहिमयादत्ताप्रीतयेतेऽस्तुमाधव ॥ १३ ॥ उपभुक्तंतुतस्यासीद्वस्त्रभूषणवाहनम् ॥ घृतपूर्णं
कांस्यपात्रंसप्तधान्यंतदीप्सितम् ॥ १४ ॥ तिलाद्यष्टमहादानमन्तकालेनचेत्कृतम् ॥ शय्यासमीपंधृत्वैतद्दा
नंतस्याः प्रदापयेत् ॥ १५ ॥ प्रक्षाल्यविप्रचरणौपूजयेदम्बरादिभिः ॥ सिद्धान्नंतस्यदातव्यंमोदकापूपकाःपयः १६

उनको और घीसों भरोभयो कांसेको पात्र और सतनजा तथा वाकी प्यारी वस्तु ॥ १४ ॥ और तिल आदि आठ महादान और जो अंतकालमें कियोगयो होय इन सबको श य्याके समीप धरिकै दान करै ॥ १५ ॥ ब्राह्मणके चरण धोयक वस्त्र आदिसों पूजन करै और

दूबके समान तेरे कुलकी वृद्धि होय और खीलनके समान तेरे विकास होय ऐसे कहिकै वाके घरमें दूबसमेत खीलैं डारि देय ॥ ३६ ॥ हे गरुड ! दशमें दिन मांसके पिंड देय वा मांसको कलियुगमें निषेध है तौ उरदके देवै कारण यह है कि कलियुगमें पितरनको मांसके पिंड नहीं दिये जायहैं ॥ ३७ ॥ दशवें दिन सब बांधव मुंडन करावें और क्रिया करनहारो पुत्रकोहू फिरि मुंडन करावै ॥ ३८ ॥ दश दिनलों एक

दूर्वावत्कुलवृद्धिस्तेलाजाइवविकासता ॥ एवमुक्त्वात्यजेद्गेहेलाजान्दूर्वासमन्वितान् ॥ ३६ ॥ दशमेहानिमांसेन
पिंडंदद्यात्खगेश्वर ॥ माषेणतंनिषेधाद्वाकलौनपलपैतृकम् ॥ ३७ ॥ दशमेदिवसेक्षौरंबान्धवानांचमुण्डनम् ॥
क्रियाकर्तुःसुतस्यापिपुनर्मुण्डनमाचरेत् ॥ ३८ ॥ मिष्टान्नैर्भोजयेदेकंदिनेषुदशसुद्विजम् ॥ प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिं
चहरिंध्यात्वाकृताञ्जलिः ॥ ३९ ॥ अतसीपुष्पसङ्काशंपीतवाससमच्युतम् ॥ येनमस्यन्तिगोविन्दंनतेषांविद्य
तेभयम् ॥ ४० ॥ अनादिनिधनोदेवःशंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यःपुण्डरीकाक्षःप्रेतमोक्षप्रदोभव ॥ ४१ ॥

ब्राह्मणको मिष्टान्न भोजन करावै और हाथ जोरि हरिको ध्यान करि प्रेतके मुक्ति प्रार्थना करै ॥ ३९ ॥ अलसीके फूलके समान है कांति जिनकी और पीले जिनके वस्त्र और अच्युत कहिये अविनाशी जो विष्णु भगवान् गोविंद है तिनको जे नमस्कार करै हैं तिनको भय नहीं है ॥ ४० ॥ नहीं हैं आदि और अंत जिनको और शंख चक्र तथा गदाको धारण कियेभये ऐसे अक्षय्य पुण्डरीकाक्ष देव विष्णु तुम

वर्ण और सींग तथा खुर जाके लाल और पेट सफेद पीठ काली ऐसो वृष ब्राह्मणको कहो है ॥ २२ ॥ अच्छा चिकना लालरंगका क्षत्रियके लिये कहो है और पीले रंगका वैश्यको और शूद्रको काला कहा है ॥ २३ ॥ जाको सब अंग तो पिंगवर्ण होय और पूंछ तथा पांय सफेद होंय वाको पिंगवृष कहैं हैं वह पितरनकी प्रीतिको बढावनहारो है ॥ २४ ॥ जा बैलके पाँव मुख और पूँछ

सुस्निग्धवर्णोयोरक्तः क्षत्रियस्यविधीयते॥ पीतवर्णश्चवैश्यस्यकृष्णः शूद्रस्यशस्यते॥२३॥यस्तुसर्वाङ्गपिंगः स्याच्छ्वेतःपुच्छेपदेषुच ॥ सपिंगो वृष इत्याहुः पितॄणांप्रीतिवर्द्धनः॥२४॥चरणास्तुमुखंपुच्छंयस्यश्वेतानि गोपतेः॥ लाक्षारससवर्णोयःसनीलइतिकीर्तितः ॥ २५ ॥ लोहितोयस्तुवर्णेनमुखेपुच्छेचपाण्डुरः ॥ पिंगः खुरविषाणाभ्यांरक्तनीलोनिगद्यते ॥ २६ ॥ सर्वांगेष्वेकवर्णोयःपिंगःपुच्छेखुरेषुयः ॥ तन्नीलपिंगमित्याहुः पूर्वजोद्धारकारकम् ॥ २७ ॥

सफेद होय और लाखके रसके समान देहको रंग होय ताको नील कहे हैं ॥ २५ ॥ जो रङ्गमें लाल होय और जाके मुख तथा पूँछ पांडुवर्ण होय और खुर तथा सींग पिंगलवर्ण होय वाको रक्तनील कहै हैं ॥ २६ ॥ सब अंगमें जो एक रंग

होय और खुर तथा पूँछमें पिंगवर्ण होय वाको नीलपिंग कहैं हैं वह पुरुषोंको उद्धार करनहारो है ॥ २७ ॥ जाको कबूतरकोसो रंग होय और माथेमें जाके तिलक होय वाको बभ्रुनील कहै हैं, वह पूर्ण है और सब अंगनसों शोभन है ॥ २८ ॥ जाको सब शरीर नीला होय और दोनों आँखैं लाल होंय वाको महानील कहै है, नील पांच भांतिको होय है ॥ २९ ॥ अवश्यही छोडने योग्य होय है वह

पारावतसवर्णस्तुललाटेतिलकान्वितः ॥ तंबभ्रुनीलमित्याहुः पूर्णसर्वांगशोभनम् ॥ २८ ॥ नीलः सर्वशरीरेषु रक्तश्चनयनद्वये ॥ तमप्याहुर्महानीलंनीलःपञ्चविधःस्मृतः ॥ २९ ॥ अवश्यमेवमोक्तव्योनसधार्योगृहे भवेत् ॥ तदर्थमेषाचरतिलोकेगाथापुरातनी ॥३०॥ एष्टव्याबहवः पुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेत् ॥ गौरींविवाहये त्कन्यांनीलंवावृषमुत्सृजेत् ॥ ३१ ॥ सएवपुत्रोमन्तव्योवृषोत्सर्गंतुयश्चरेत् ॥ गयायांश्राद्धदाताचयोऽन्यो विष्ठासमः किल ॥ ३२ ॥

घरमें राखन योग्य नहीं होय है ताके लिये पुरानी गाथा लोकमें प्रचलित होरही है ॥ ३० ॥ बहुतसे पुत्रकी इच्छा करने योग्य है इस लिये कि, उनमेंसों एकहू गयाको जाय गौरी कन्याको व्याहै अथवा नील बैलको छोडे ॥ ३१ ॥ वही पुत्र मानने योग्य है जो वृषोत्सर्ग

करैं और जो गयाके श्राद्ध करैं वह पुत्र है अन्य विष्ठाके समान है ॥ ३२ ॥ जे कोई जाके पुरखे रौरवादि नरकनमें पचाये जांय हैं उन सबनको वृषोत्सर्ग करिकै इक्कीस पीढीनको तारदे ॥ ३३ ॥ स्वर्गमें गये भयेहू पितर निश्चय वृषोत्सर्गकी इच्छा करे हैं कि, हमारे वंशमें कोई पुरुष वृषोत्सर्ग करैगो॥ ३४॥ वाके उत्सर्गसों हम सब परमगतिको प्राप्त होयँगे सब यज्ञमें वृषयज्ञ हमको निश्चय मुक्ति

रौरवादिषुयेकेचित्पच्यन्तेयस्यपूर्वजाः॥ वृषोत्सर्गेणतान्सर्वांस्तारयेदेकविंशतिम् ॥ ३३॥ वृषोत्सर्गंकिलेच्छन्तिपितरः स्वर्गताअपि॥ अस्मद्वंशेसुतःकोपिवृषोत्सर्गंकरिष्यति॥ ३४॥ तदुत्सर्गाद्वयंसर्वेयास्यामः परमांगतिम् ॥ सर्वयज्ञेषुचास्माकंवृषयज्ञोहि मुक्तिदः॥ ३५॥ तस्मात्पितृविमुक्त्यर्थंवृषयज्ञंसमाचरेत् ॥ यथोक्तेनविधानेनकुर्यात्सर्वंप्रयत्नतः ॥ ३६ ॥ ग्रहाणांस्थापनंकृत्वातत्तन्मन्त्रैश्चपूजनम् ॥ होमंकुर्याद्यथाशास्त्रंपूजयेद्वृषमातुरः ॥ ३७ ॥ वत्सवत्सींसमानाय्यबध्नीयात्कङ्कणंतयोः॥ वैवाह्येनविधानेनस्तम्भमारोपयेत्तदा ॥ ३८ ॥

देनहारो है ॥ ३५॥ तातें पितरनकी मुक्तिके लिये वृषयज्ञको करै यथोक्त विधानसों सब यत्नपूर्वक करै ॥ ३६॥ ग्रहनको स्थापन करिके उनके मंत्रनसों पूजन करै और शास्त्रके अनुसार होम करै और आतुर वृषको पूजन करै ॥ ३७॥ बछरा और बछियाको लायकै उन दोनोंके

लड्डू पुआ आदि सिद्ध अन्न तथा दूध वाको देनो चाहिये ॥ १६॥ वा समय पुत्र शय्याके ऊपर सुवर्णके पुरुषको स्थापित करै वाको पूजन कारक कहेके अनुसार मृतशय्या देनी चाहिये ॥ १७ ॥ हे विप्र! प्रेतकी प्रतिमा करि युक्त और संपूर्ण सामग्री समेत यह प्रेतशय्या मैंने तुमसों कही ॥ १८ ॥ या प्रकार कुटुंबी आचार्यके लिये देनी चाहिये ता पीछे प्रदक्षिणा करिकै नमस्कार करि विसर्जन करै ॥ १९॥

स्थापयेत्पुरुषंहैमंशय्योपरितदासुतः ॥ पूजयित्वाप्रदातव्यामृतशय्यायथोदिता ॥ १७ ॥ प्रेतस्यप्रतिमायुक्तासर्वोपकरणैर्वृता॥ प्रेतशय्यामयाह्येषातुभ्यंविप्रनिवेदिता॥ १८॥ इत्याचार्यायदातव्याब्राह्मणायकुटुम्बिने॥ ततः प्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ १९ ॥ एवंशय्याप्रदानेन श्राद्धेननवकादिना ॥ वृषोत्सर्गविधानेन प्रेतोयातिपरांगतिम् ॥ २० ॥ एकादशेह्निविधिनावृषोत्सर्गंसमाचरेत्॥ हीनाङ्गंरोगिणंबालंत्यक्त्वाकुर्यात्सलक्षणम्॥ २१॥ रक्ताक्षः पिङ्गलोयस्तुरक्तः शृंगेगलेखुरे ॥ श्वेतोदरः कृष्णपृष्ठोब्राह्मणस्यविधीयते ॥ २२ ॥

या प्रकार शय्याके देनेसों और नवकादि श्राद्धसों और वृषोत्सर्गके विधानसों प्रेत परमगतिको प्राप्त होय है ॥ २० ॥ ग्यारहवें दिन विधिसों वृषोत्सर्ग करै हीन अंगवालेको रोगीको बच्चोंको छोडकै सलक्षण अर्थात् चिह्नसमेत करै ॥ २१ ॥ लाल जाकी आंखें और पिंगल

सूर्यचंद्रके ग्रहणमें पवित्र तीर्थमें दोनों अयननमें और दोनों विषुवत्में वृषोत्सर्ग करे ॥ ४५ ॥ शुभलग्नमें तथा शुभमुहूर्तमें शुद्ध देशमें सावधान हो विधिके जाननेवाले शुभलक्षण ब्राह्मणको बुलाय ॥ ४६ ॥ जप होम तथा दाननसों देहको शोधन करे और पह

ग्रहणद्वितयेचैव पुण्यतीर्थेऽयनद्वये ॥ विषुवद्वितये चापिवृषोत्सर्गंसमाचरेत् ॥ ४५ ॥ शुभलग्नेमुहूर्तेचशुचौ देशेसमाहितः ॥ ब्राह्मणंतुसमाहूयविधिज्ञंशुभलक्षणम् ॥४६॥ जपैर्होमैस्तथादानैःप्रकुर्याद्देहशोधनम् ॥ पूर्ववत्सकलंकृत्यंकुर्याद्धोमादिलक्षणम् ॥४७॥ शालग्रामंचसंस्थाप्यवैष्णवंश्राद्धमाचरेत् ॥ आत्मश्राद्धंततः कुर्याद्द्याद्दानंद्विजन्मने ॥ ४८ ॥ एवं यः कुरुते पक्षिन्नपुत्रश्चापिपुत्रवान् ॥ सर्वकामफलंतस्यवृषोत्सर्गात्प्रजायते ॥ ४९ ॥ अग्निहोत्रादिभिर्यज्ञैर्दानैश्चविविधैरपि ॥ नतांगतिमवाप्नोतिवृषोत्सर्गेणयांलभेत् ॥ ५० ॥

ले[illegible]भाँति होमादिलक्षण सब विधिको करे ॥४७॥ शालग्रामको स्थापित करि वैष्णव श्राद्ध करै ता पीछे अपनो श्राद्ध करै और ब्राह्मणके लिये दान देय ॥४८॥ हे पक्षिन् ! पुत्रवान् तथा अपुत्र जो या प्रकार करे है वाको वृषोत्सर्गते सब कामनाके फल मिलै हैं ॥४९॥ अग्निहोत्र आदि यज्ञनकरिकै और नानाप्रकारके दानन करिकै वा गतिको नहीं पावे है जाको वृषोत्सर्गते प्राप्त होयहै ॥ ५० ॥

बालक अवस्थामें कुमार अवस्थामें और पौगंड अवस्थामें यौवनमें तथा बुढापेमें कियोभयो जो पाप वह वृषोत्सर्गते दूरि होजाय है यामें संदेह नहीं है मित्रको द्रोही कृतघ्न जो किये भये उपकारको न माने और सुवर्ण चुरावनहारो ये सब वृषोत्सर्गते मुक्त हो जाय है ॥५१॥५२॥ तातें सब यत्ननसों करे हे गरुड ! तीनों लोकनमें वृषोत्सर्गके समान पुण्य नहीं है ॥५३॥ पतिपुत्रवाली स्त्री जो दोनोंते पहिले मरिजाय तो

बाल्येकौमारेपौगण्डेयौवनेवार्धकेकृतम् ॥ यत्पापंतद्विनश्येतवृषोत्सर्गान्नसंशयः ॥५१॥ मित्रद्रोहीकृतघ्नश्चसुरापोगुरुतल्पगः ॥ ब्रह्महाहेमहारीचवृषोत्सर्गात्प्रमुच्यते ॥ ५२ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनवृषयज्ञंसमाचरेत् ॥ वृषोत्सर्गसमंपुण्यंनास्तितार्क्ष्यजगत्त्रये ॥ ५३ ॥ पतिपुत्रवतीनारीद्वयोरग्रेमृतायदि ॥ वृषोत्सर्गंनैवकुर्याद्द्याद्गांचपयस्विनीम् ॥५४॥ वृषभंवाहयेद्यस्तुस्कन्धेपृष्ठेचखेचर॥ सपतेन्नरकेघोरेयावदाभूतसंप्लवम् ॥५५॥ वृषभंताडयेद्यस्तुनिर्दयोमुष्टियष्टिभिः ॥ सनरःकल्पपर्यन्तंभुनक्तियमयातनाम् ॥ ५६ ॥

वह वृषोत्सर्ग न करे किंतु दूध देती भई गौको दान करे ॥५४॥ हे गरुड ! जो बैलको कंधेमें जोतै है और जो पीठिपर लादे है वह महाप्रलयपर्यंत घोरनरकमें पडो रहे है ॥ ५५ ॥ जो निर्दयी घूँसनसों अथवा लाठीनसों मारेहै वह मनुष्य कल्पपर्यन्त यमकी यातनानको भोगे

है ॥ ५६ ॥ या प्रकार वृषोत्सर्ग करिकै सोलह श्राद्ध करैं सपिंडीकरणसों पहले सो मैं तुमसों कहौ हौं ॥ ५७ ॥ स्थानमें द्वारपर आधे मार्गमें चितापर मृतकके हाथपर अस्थिके संचयमें छठो और दशदिनके दश पिंड देवै ॥ ५८ ॥ मैंने जो तुमसो यह षोडश प्रथम कहो सो मलिन है औरहू दूसरो षोडश मध्यमें तुमसों कहौ हौं ॥ ५९ ॥ पहलो विष्णुके निमित्त देय और दूसरो श्रीशिवके निमित्त और तीसरो

एवंकृत्वावृषोत्सर्गंकुर्याच्छ्राद्धानिषोडश ॥ सपिण्डीकरणादर्वाक्तदहंकथयामिते ॥५७॥ स्थानेद्वारेर्धमार्गेच चितायांशवहस्तके ॥ अस्थिसंचयनेषष्ठोदशपिण्डादशाह्निकाः ॥ ५८ ॥ मलिनंषोडशंचैतत्प्रथमंपरिकीर्तितम् ॥ अन्यच्चषोडशंमध्येद्वितीयंकथयामिते ॥ ५९ ॥ प्रथमंविष्णवेदद्याद्द्वितीयंश्रीशिवायच ॥ याम्यायपरिवारायतृतीयं पिण्डमुत्सृजेत् ॥ ६० ॥ चतुर्थंसोमराजायहव्यवाहायपञ्चमम् ॥ कव्यवाहायषष्ठंचदद्यात्कालायसप्तमम् ॥ ६१ ॥ रुद्रायचाष्टमंदद्यान्नवमंपुरुषायच ॥ प्रेतायदशमंचैवैकादशंविष्णवेततः ॥ ६२ ॥

परिवार समेत यमके लिये पिंडदान करे ॥ ६० ॥ चौथो सोमराजके लिये और पंचम हव्यवाहके लिये छठा कव्यवाहके लिये और साँतवा कालके निमित्त पिंडदान करे ॥६१॥ रुद्रके लिये आठवां पिंडदान करे और नववाँ पुरुषके प्रेतके लिये दशवाँ और ग्यारहवां ॥ ७४ ॥

लायकै उन दोनोंके कंकण बांधे ओर विवाहके विधानसों तब खंभ गाडे ॥ ३८ ॥ वृषको और बछियाको रुद्रकुंभके जलसों स्नान करावै फिरि गंध ओर मालासों पूजन करि प्रदक्षिणा करावे ॥ ३९ ॥ दाहिनी ओर त्रिशूल और बांई ओर चक्र लगावे वाको छोडिके हाथ जो[illegible] पुत्र यह मंत्र पढै ॥ ४० ॥ तू धर्म है पहले ब्रह्माकरि बैलके रूपमें बनायो गयो है तेरे उत्सर्ग प्रदान करि भवरूपी समुद्रते तार ॥४१॥

स्नापयेच्चवृषंवत्सींरुद्रकुम्भोदकेनच ॥ गन्धमाल्यैश्चसंपूज्यकारयेच्चप्रदक्षिणाम् ॥ ३९ ॥ त्रिशूलंदक्षिणेपार्श्वेवामेचक्रंप्रदापयेत् ॥ तंविमुच्याञ्जलिंबद्ध्वापठन्मन्त्रमिमंसुतः ॥ ४० ॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणब्रह्मणानिर्मितःपुरा ॥ तवोत्सर्गप्रदानेनतारयस्व भवार्णवात् ॥४१॥ इतिमन्त्रान्नमस्कृत्यवत्संवत्सींसमुत्सृजेत् ॥ वरदोहंसदातस्यप्रेतमोक्षंददामिच ॥४२॥ तस्मादेषप्रकर्त्तव्यस्तत्फलंजीवतोभवेत् ॥ अपुत्रस्तुस्वयंकृत्वासुखंयातिपरांगतिम् ॥४३॥ कार्त्तिकादौशुभेमासेचोत्तरायणगेरवौ ॥ शुक्लपक्षेऽथवा कृष्णे द्वादश्यादितिथौतथा ॥४४॥

या मंत्रसों नमस्कार करि बछरा और बछियाको छोडदे मैं सदा वाको वर देनहारो हौं प्रेतके मोक्षको देउहौं ॥ ४२ ॥ तातें यह करनो चाहिये कि जीवते भयेहू वाको फल होय है पुत्ररहित पुरुष आपही या विधिको करिकै सुखपूर्वक परमगतिको प्राप्त होय है ॥ ४३ ॥ कार्तिक आदि शुभ महीनेमें सूर्यके उत्तरायण होनेपै शुक्लपक्षमें अथवा कृष्णपक्षमें तथा द्वादशी आदि तिथिमें ॥ ४४ ॥

दियो और परदत्त कहिये दूसरेको दियो नहीं प्राप्त होय है ॥६९॥ तातें पुत्रकरि विधिसों षोडशत्रय करनो चाहिये और भर्ताको जो पत्नी करै तौ वाको अनन्त कल्याण होय ॥७०॥ जो स्त्री मरे भये पतिको और्ध्वदेहिक कर्म करै है अर्थात् क्षयाह और पाक्षिक श्राद्ध वह मुझकरिके सती कही जाती है ॥७१॥ वह पतिव्रता जो जीवै है वह भर्ताके उपकारके लिये जीवै है वाको जीवनो सफल है जो मरे

तस्मात्पुत्रेणकर्तव्यंविधिनाषोडशत्रयम् ॥ भर्तुर्वाकुरुतेपत्नीतस्याः श्रेयोह्यनन्तकम् ॥७०॥ संपरेतस्ययापत्युः कुरुतेचौर्ध्वदेहिकम् ॥ क्षयाहंपाक्षिकश्राद्धंसासतीत्युच्यतेमया ॥७१॥ उपकारायसाभर्तुर्जीवत्येषापतिव्रता ॥ जीवितंसफलंतस्यायामृतंस्वामिनंभजेत् ॥७२॥ अथकश्चित्प्रमादेनम्रियतेवह्निवारिभिः ॥ संस्कारप्रमुखंकर्म सर्वंकुर्याद्यथाविधि ॥ ७३ ॥ प्रमादादिच्छयावापिनागाद्वाम्रियतेयदि ॥ पक्षयोरुभयोर्नागंपञ्चमीषुप्रपूज येत् ॥७४॥ कुर्यात्पिष्टमयींलेख्यांनागभोगाकृतिंभुवि ॥ अर्चयेत्तांसितैः पुष्पैःसुगन्धैश्चन्दनेनच ॥ ७५ ॥

भये स्वामीको भजती है ॥७२॥ और जो कोई प्रमादसों आगि वा जलसों मरिजाय ताको संस्कार आदि सब कर्म विधिपूर्वक करै ॥ ७३ ॥ प्रमादसों इच्छा करिकै अथवा साँपसे जो मनुष्य मरे तो दोनों पक्षनमें ५ तिथिमें नागको पूजन करै ॥ ७४ ॥ पृथिवीमें सर्पके शरीरकी आकृति चूनकी बनावै ताको सफेद फूलनसों और सुगंधी तथा चंदनसों पूजै ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

धूप दीप दे और तंदुलनको और तिलनको डारै कच्चा पिसो भयो नैवेद्य और दूध निवेदन करै ॥ ७६ ॥ शक्तिके अनुसार सुवर्णको नाग और गौ ब्राह्मणको दान करै ता पीछे हाथ जोरिके नागराज प्रसन्न होउ ऐसे कहै ॥ ७७ ॥ फिर उनकी नारायणबलिकी क्रिया करिकै स्वर्गवासको पावै है और सब पापनतें छूटि जायहै ॥ ७८ ॥ या प्रकार सब क्रिया करके अन्न तथा जल समेत घट वर्षपर्यंत

प्रदद्याद्धूपदीपौचतण्डुलांश्चतिलान्क्षिपेत् ॥ आमपिष्टंचनैवेद्यंक्षीरंचविनिवेदयेत् ॥ ७६ ॥ सौवर्णशक्तितोना गंगांचदद्याद्द्विजन्मने ॥ कृतांजलिस्ततोब्रूयात्प्रीयतांनागराडिति ॥ ७७ ॥ पुनस्तेषांप्रकुर्वीतनारायणब लिक्रियाम् ॥ तयालभन्तेस्वर्वासंमुच्यन्तेसर्वपातकैः ॥ ७८ ॥ एवंसर्वक्रियांकृत्वाघटंसान्नंजलान्वितम् ॥ दद्यादाब्दंयथासंख्यान्पिण्डान्वासजलान्क्रमात् ॥ ७९ ॥ एवमेकादशेकृत्वाकुर्यात्सापिंडनंततः ॥ शय्या पदानांदानंचकारयेत्सूतके गते ॥ ८० ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

दान करै अथवा अर्घ्य समेत क्रमसों पिंड देय ॥७९॥ ऐसे एकादशवें दिन करके ता पीछे सपिंडन करै और सूतकके जानेपै शय्या तथा पदनको दान करै ॥ ८० ॥ इति श्रीगरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

गरुड बोले, सपिंडनकी विधि कहो और मृतकको निर्णय कहो और शय्या तथा पदनकी सामग्रीको और हे प्रभो ! उनकी महिमाको कहो ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले, हे गरुड ! सुनो सापिण्डय आदि संपूर्ण क्रिया मैं तुमसों कहौंहौं जा क्रियासों प्राणी प्रेतको नाम छोडिकैं पितृगणमें प्रवेश करैहै ॥ २ ॥ जिनको पिण्ड पितामह शिव आदिकनमें नहीं मिलो है उनको पुत्रकारिके दिये भये

गरुडउवाच ॥ सपिण्डनविधिंब्रूहिसूतकस्यचनिर्णयम् ॥ शय्यापदानांसामग्रींतेषांचमहिमांप्रभो ॥ १ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्यंप्रवक्ष्यामिसापिंडयाद्याखिलांक्रियाम् ॥ प्रेतनामपरित्यज्ययथापितृगणे
विशेत् ॥ २ ॥ नपिण्डोमिलितोयेषांपितामहाशिवादिषु ॥ नोपतिष्ठन्तिदानानिपुत्रैर्दत्तान्यनेकधा ॥ ३ ॥
अशुद्धःस्यात्सदा पुत्रोनशुध्यतिकदाचन ॥ सूतकंननिवर्तेतसपिण्डीकरणंविना ॥ ४ ॥ तस्मात्पुत्रेणकर्त
व्यंसूतकान्तेसपिण्डनम् ॥ सूतकान् तेप्रवक्ष्यामिसर्वेषांचयथोचितम् ॥ ५ ॥

नानाप्रकारके दान नहीं मिलै हैं ॥ ३ ॥ पुत्र सदा अशुद्ध रहै है कदाचन शुद्ध नहीं होयहै कारण यह है कि सपिंडी करनेके विना सूतक नहीं जायहै ॥ ४॥ तातें पुत्रको सूतकके अंतमें सपिण्डन करनो चाहिये और सबको यथोचित सूतक मैं तुमसों कहौंहैं ॥५॥ ॥ ७६ ॥

विष्णुके निमित्त दान करै ॥ ६२ ॥ बारहवां ब्रह्माके निमित्त और तेरहवां विष्णुके लिये चौदहवां शिवके लिये और पंद्रहवां यमके लिये पिंडदान करै ॥ ६३ ॥ हे गरुड ! सोलहवां पिंड वा पुरुषके लिये दान करै तत्त्वके जाननेहारे पुरुष याको मध्यषोडशक कहै हैं ॥ ६४ ॥ बारहौं महीनेमें पाक्षिक त्रैपक्षिक और न्यून षाण्मासिक पिंड तथा न्यूनाब्दिक पिंडको दान करै ॥ ६५ ॥ यह उत्तम षोडश मैंने तुमसों

द्वादशंब्रह्मणेदद्याद्विष्णवेचत्रयोदशम् ॥ चतुर्दशंशिवायैवयमायदशपञ्चकम् ॥ ६३ ॥ दद्यात्तत्पुरुषायैवपि
ण्डंषोडशकंखग ॥ मध्यंषोडशकंप्राहुरेतत्तत्त्वविदोजनाः ॥ ६४ ॥ द्वादशप्रतिमासेषुपाक्षिकंचत्रिपाक्षिकम्॥
न्यूनषाण्मासिकंपिण्डंदद्यान्न्यूनाब्दिकंतथा ॥ ६५ ॥ उत्तमंषोडशंचैतन्मयातेपरिकीर्तितम् ॥ श्रपयित्वा
चरुंतार्क्ष्यं कुर्यादेकादशाहनि ॥ ६६ ॥ चत्वारिंशत्तथैवाष्टौश्राद्धंप्रेतत्वनाशनम् ॥ यस्यजातंविधानेनसभवे
त्पितृपंक्तिभाक् ॥ ६७ ॥ पितृपंक्तिप्रवेशार्थंकारयेत्षोडशत्रयम् ॥ एतच्छ्राद्धविहीनश्चेत्प्रेतोभवतिसुस्थि
रम् ॥ ६८ ॥ यावन्नदीयतेश्राद्धंषोडशत्रयसंज्ञकम् ॥ स्वदत्तंपरदत्तंचतावन्नैवोपतिष्ठते ॥ ६९ ॥

कहो हे गरुड ! खीरको पक्क करि ग्यारहवें दिन करै ॥६६॥ चालीस और आठ कहिये ४८ श्राद्ध प्रेतपनके नाश करनहारे जाके ये विधिपूर्वक होय है वह पितरनकी पंक्तिमें गिनो जायहै ॥ ६७ ॥ पितरनकी पंक्तिमें प्रवेश करनेके लिये षोडशत्रय करावे वा श्राद्धकारिके जो हीन है वह सुस्थिर प्रेत होय है ॥ ६८ ॥ षोडशत्रय है संज्ञा जाकी ऐसो श्राद्ध जबलौं नहीं दिये जाय है तबलौं स्वदत्त कहिये अपनो

पहले तीनि रात्रिको सूतक जानिये और वर्षके बीतिजानेपर स्नानमात्रतें शुद्ध होय है ॥ ११ ॥ मृतकके सूतकके पहले दो भाग बीति जानेपर जो दूसरो सूतक होय तौ पहल सूतकके साथ शुद्धि कही है ॥ १२ ॥ बालकनके दांत उत्पन्न होनेसो पहले सद्यःशौच अर्थात् स्नानमात्रहीसो शुद्धि होयहै और मुंडनपर्यंत एक रात्रि कहीहै और यज्ञोपवीत पर्यंत तीनिरात्रि यांते परे दशरात्रिमें शुद्धि होय है ॥ १३ ॥

आद्यभागद्वयंयावन्मृतकस्यचसूतके ॥ द्वितीयेपतितेचाद्यात्सूतकाच्छुद्धिरिष्यते॥ १२॥ आदन्तजननात्सद्यआचौलान्नैशिकीस्मृता॥त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रमतःपरम् ॥ १३॥ आजन्मतस्तुचौलान्तंयत्रकन्याविपद्यते ॥सद्यःशौचंभवेत्तत्रसर्ववर्णेषुनित्यशः ॥१४॥ ततोवाग्दानपर्यन्तंयावदेकाहमेवहि ॥ अतःपरंप्रवृद्धानां त्रिरात्रमितिनिश्चयः ॥१५॥ वाक्प्रदानेकृतेत्वत्रज्ञेयंचोभयतस्त्र्यहम्॥ पितुर्वरस्यचततोदत्तानांभर्तुरेवहि॥ १६॥

जन्मसों लगाके मुंडनपर्यंत जो कन्या मरजाय तो सब वर्णनमें सदा सद्यःशौच अर्थात् स्नानमात्रसों शुद्धि होय है ॥ १४ ॥ ता पीछे वाग्दानपर्यंत अथात् सगाईलौं एकही दिनको सूतक होयहै यातेपरे बढीभई कन्याको तीनिरात्रिको सूतक होय है यह निश्चय है॥ १५॥ और वाग्दान करनेपर तौ दोनों ओर तीनि दिनको जानिये अर्थात् तीनि दिनको पिताके कुलमें और तीनि दिनको वरके कुलमें सूतक जानिये और जो व्याहीभई हैं उनको सूतक भर्ताहीके कुलमें होयहै पिताकेमें नहीं होयहै ॥१६॥ छः महीनेके भीतर जो गभस्राव होय तौ उनकी महीननके बराबर दिननमें शुद्धि कहीहै अर्थात् जितने महीनेको गर्भ होय उतनेही दिननमें शुद्धि होयहै ॥ १७ ॥ यातें उपरांत अपनी जातिमें कहो भयो आशौच उन मातानमें विद्यमान है और गर्भके पतन होनेपै सपिंडनको सद्यःशौच कहोहै ॥ १८॥

षण्मासाभ्यन्तरेयावद्गर्भस्रावोभवेद्यदि ॥ तदामाससमैस्तासांदिवसैःशुद्धिरिष्यते ॥ १७॥ अतऊर्ध्वस्वजात्युक्तमाशौचंतासुविद्यते ॥ सद्यःशौचंसपिण्डानांगर्भस्यपतनेसति ॥ १८॥ सर्वेषामेववर्णानांसूतकेमृतकेपिवा ॥ दशाहाच्छुद्धिरित्येषकलौ शास्त्रस्यनिश्चयः ॥१९॥ आशीर्वादंदेवपूजांप्रत्युत्थानाभिवन्दनम् ॥ पर्यंकेशयनं स्पर्शनकुर्यान्मृतसूतके ॥२०॥ संध्यांदानंजपंहोमंस्वाध्यायंपितृतर्पणम् ॥ ब्रह्मभोज्यंव्रतंनैवकर्तव्यंमृतसूतके ॥२१॥ नित्यनैमित्तिकंकाम्यंसूतकेयः समाचरेत् ॥ तस्यपूर्वकृतंनित्यादिकंकर्मविनश्यति ॥ २२ ॥

सब वर्णनके सूतकमें और मृतकमें दशदिननमें शुद्धि होय है कलियुगमें यह शास्त्रको निश्चय है ॥ १९ ॥ आशीर्वाद देवतानकी पूजा प्रत्युत्थान अभिवंदन शय्यापर सोवना और स्पर्श न सबनको मृतक सूतकमें न करे ॥ २० ॥ संध्या दान जप होम वेदका पढना पितरोंका तर्पण, ब्राह्मणभोजन और व्रत इन सबको मृतसूतकमें न करे ॥ २१ ॥ जो सूतकमें नित्यनैमित्तक और काम्य जो काहू

वस्तुकी कामनासों कियो गयो होय इन सबनको जो सूतकमें करैहै वाको पहले कियो भयो नित्य आदि सब कर्म नाशको प्राप्त होय है ॥२२॥ व्रतीको और जो मँत्रसों पवित्र है ताको अग्निहोत्री और ब्रह्मनिष्ठ गृहस्थको और यतीको तथा राजाको सूतक नहीं लगैहै॥२३॥ विवाह उत्सव और यज्ञमें मृतसूतक होनेपै वाको पहले कियोभयो अन्न खानो चाहिये यह मनुने कहाहै ॥२४॥ सूतकको न जानकर

व्रतिनोमन्त्रपूतस्यसाग्निकस्यद्विजस्यच॥ब्रह्मनिष्ठस्ययतिनोनहिराज्ञांचसूतकम्॥२३॥विवाहोत्सवयज्ञेषुजाते चमृतसूतके॥तस्यपूर्वकृतंचान्नंभोज्यंतन्मनुरब्रवीत्॥२४॥सूतकेयस्तुगृह्णातितदज्ञानान्नदोषभाक् ॥ दाता दोषमवाप्नोतियाचकायददन्नपि ॥ २५॥ प्रच्छाद्यसूतकंयस्तुददात्यन्नंद्विजायच ॥ ज्ञात्वागृह्णन्तियेविप्रादोषभाजस्तुतेऽपि ॥ २६ ॥ तस्मात्सूतकशुद्ध्यर्थपितुःकुर्यात्सपिण्डनम् ॥ ततः पितृगणैःसार्द्धंपितृलोकंसगच्छति ॥ २७॥ द्वादशाहेत्रिपक्षेवाषण्मासेवत्सरेपिवा ॥ सपिंडीकरणंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥२८॥

जो सूतकमें ग्रहण करैहै वह दोषभागी नहीं होय और याचकको देतो भयोहू दाता दोषको प्राप्त होय है ॥२५॥ जो सूतकको छिपायकै ब्राह्मणको अन्न देय है और जे ब्राह्मण जानिकै लेय हैं वेभी दोषभागी हैं॥२६॥तातें सूतककी शुद्धिके लिये पिताको सपिंडन करे तापीछे पितृगणनके साथ पितृलोकको जाय है॥२७॥बारहेंवें दिन वा तीनि पाखमें छः महीनेमें अथवा वर्षमें तत्त्वके देखनहारे मुनीश्वरनने सपिंडी ॥ ७८ ॥

ब्राह्मण तो दश दिनकरिकै और क्षत्रिय बारह दिनकरिकै वैश्य पंद्रह दिनकरिकै और शूद्र एक महीने करिकै शुद्ध होय है ॥ ६ ॥ दश दिन करिकै सपिंड प्रेतके सूतकमें शुद्ध होय हैं और कुलके लोग तीनि रात्रिमें शुद्ध होय हैं और गोत्रके स्नानकरिकै शुद्ध होयहैं ॥ ७ ॥ चौथी पीढीमें दशरात्रिलों सूतक रहैहै और पांचवीं पीढीमें छः रात्री और छठी पीढीमें चार दिन और सातवींमें तीनि दिन सूतक रहै है ॥ ८ ॥

ब्राह्मणस्तुदशाहेनक्षत्रियोद्वादशेहनि ॥ वैश्यः पंचदशाहेनशूद्रो मासेनशुध्यति॥ ६ ॥ दशाहेनसपिण्डास्तुशुध्यन्तिप्रेतसूतके ॥ त्रिरात्रेणसकुल्यास्तुस्नात्वाशुद्ध्यन्तिगोत्रजाः ॥ ७॥ चतुर्थेदशरात्रंस्यात्षण्निशाः पुंसि पञ्चमे ॥ षष्ठेचतुरहःप्रोक्तंसप्तमेचदिनत्रयम् ॥ ८ ॥ अष्टमेदिनमेकंतुनवमेप्रहरद्वयम् ॥ दशमेस्नानमात्रंहि मृतकंजन्मसूतकम् ॥ ९ ॥ देशान्तरगतः कश्चिच्छृणुयाद्यो ह्यनिर्दशम् ॥ यच्छेषंदशरात्रस्यतावदेवाशुचिर्भवेत् ॥ १० ॥ अतिक्रान्तेदशाहेतुत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ संवत्सरे व्यतीतेतुस्नानमात्राद्विशुध्यति ॥ ११ ॥

आठवींमें एक दिन नववींमें दो पहर और दशवींमें स्नान करनेहीसों मृतकसूतक और जन्मसूतक जायँ हैं ॥ ९ ॥ परदेश गयो भयो कोई जो दशदिनके भीतर सुने तो दश रात्रिमें जो बाकी दिन रहैं उतनाही सूतक जानिये ॥ १० ॥ दश दिनके बीति जानेपै वर्षसों

जो फल सब तीर्थनमें होय है और जो फल सब यज्ञमें वा फलको बारहवें दिन सपिंडन करनेसों प्राप्त होय है॥३४॥यातें स्नान करिकै मृतकस्थानमें गोबरसों लीपै और शास्त्रमें कहेभये विधानसों पुत्र सपिंडी करावै ॥ ३५ ॥ पाद्य अर्घ्य आचमन आदिसों विश्वेदेवानको पूजन करै और कुत्सित पितृको विकिरपिंड देकै फिरि जलसों आचमन करै ॥३६॥ वसुरुद्रादित्य स्वरूप पितामह आदिकनको

यत्फलंसर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषुयत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिद्वादशाहेसपिण्डनात् ॥ ३४ ॥ अतःस्नात्वामृतस्थानेगोमयेनोपलेपिते ॥ शास्त्रोक्तेनविधानेनसपिण्डींकारयेत्सुतः ॥३५॥ पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैर्विश्वेदेवांश्च पूजयेत् ॥ कुपित्रेविकिरंदत्त्वापुनश्चापउपस्पृशेत् ॥ ३६ ॥ दद्यात्पितामहादीनांत्रीन्पिंडांश्चयथाक्रमम् ॥ वसुरुद्रार्करूपाणांचतुर्थंमृतकस्यच॥३७॥ चन्दनैस्तुलसीपत्रैर्धूपैर्दीपैःसुभोजनैः ॥ मुखवासैःसुवस्त्रैश्चदक्षिणाभिश्चपूजयेत्॥३८॥प्रेतपिण्डंत्रिधाकृत्वासुवर्णस्यशलाकया ॥ पितामहादिपिण्डेषुमेलयेत्तंपृथक्पृथक ॥३९॥

यथाक्रम तीनि पिंड देय और चौथा मृतकको देय ॥ ३७ ॥ चंदन तुलसीपत्र धूप दीप उत्तम भोजन मुखवास इलायची आदि उत्तम वस्त्र और दक्षिणासों पूजन करै ॥३८॥ सोनेकी शलाकासों प्रेतके पिण्डके तीनि भाग करके पितामह आदिके पिंडनमें वाको पृथक्

पृथक् मिलावै ॥ ३९ ॥ पितामहीके समान माताको और पितामहके समान पिताको सपिंडीकरण करै है । हे गरुड ! मेरो मत यह है ॥४०॥ पिताके मरनेपै पितामह विद्यमान होय तौ वा कारिकै प्रपितामहको पहले देकै तीनि पिंड देने चाहिये ॥ ४१॥ पिताके पिंडके तीनि भाग करिक उनमें क्रमसों मिलाय दे माताके पहले मरजानेपै पितामही विद्यमान होय तौ॥४२॥मातृकश्राद्धमेंहू पिताके पिंडकीसी

पितामह्यासमंमातुः पितामहसमंपितुः ॥ सपिण्डीकरणंकुर्यादिति तार्क्ष्यमतंमम ॥४०॥ मृतेपितरियस्याथ विद्यतेचपितामहः॥तेनदेयास्त्रयः पिण्डाः प्रपितामहपूर्वकाः ॥४१॥ तेभ्यश्चपैतृकंपिण्डंमेलयेत्तंत्रिधाकृतम्॥ मातर्यग्रेप्रशांतायांविद्यतेचपितामही॥४२॥तदामातृकश्राद्धेपिकुर्यात्पैतृकवद्विधिम्॥यद्वामयिमहालक्ष्म्यां तयोः पिंडंचमेलयेत्॥४३॥अपुत्रायाः स्त्रियाः कुर्यात्पतिः सापिंडनादिकम्॥श्वश्र्वादिभिःसहैवास्याःसपिंडीकरणंभवेत्॥४४॥भर्त्रादिभिस्त्रिभिःकार्यंसपिण्डीकरणंस्त्रियाः॥नैतन्ममंमतंतार्क्ष्यपत्यासापिण्ड्यमर्हति ॥४५॥

विधि करै अर्थात् पितामही आदिके तीनि पिंड देकै उनके साथ माताके पिंडके तीनि भाग करिकै उनमें क्रमसों मिलावै पक्षांतर कहते हैं॥ अथवा उन माता पिताके पितामहरूप जो मैं हों तामें पिताको और पितामहीरूप जे लक्ष्मी है तिनमें माताको पिंड मिलावै ॥ ४३ ॥ पुत्ररहित स्त्रीको सपिंडन आदि पति करै सास आदिके साथमें याको सपिंडन होय है ॥४४॥ स्त्रीको सपिंडीकरण भर्त्ता आदि तीनिके

साथ करनो चाहिये हे गरुड ! यह मेरो मत नहीं है वह पतिके साथ सपिंडताके योग्य नहीं है ॥ ४५ ॥ हे गरुड ! जो स्त्रीपुरुष दोनों एक चितापर चढे होय तो श्वशुर आदिकनके तृण बीचमें करके वह सतीको सपिंडन करै ॥ ४६ ॥ पहले एकही पिताको पिंड आदि करे ताके पीछे सतीको करे ता पीछे स्नान करे ॥ ४७ ॥ जो सती दश दिनके भीतर अग्निमें प्रवेश करे वाको भर्त्ताके दिनही शय्यादान और सपिण्डन

एकांचितां समारूढौदम्पतीयदिकाश्यप ॥ तृणमन्तरतः कृत्वाश्वशुरादेस्तदाचरेत् ॥ ४६ ॥ एकएवसुतःकुर्यादादौपिण्डादिकंपितुः ॥ तदूर्ध्वंचप्रकुर्वीतसत्याः स्नानंपुनश्चरेत् ॥ ४७ ॥ हुवाशंयासमारूढादशाहाभ्यन्तरे सती ॥ तस्याभर्तुर्दिनेकार्यंशय्यादानंसपिण्डनम् ॥ ४८ ॥ कृत्वासपिंडनंतार्क्ष्यंप्रकुर्यात्पितृतर्पणम् ॥ उदाहरेत्स्वधाकारंवेदमन्त्रैः समन्वितम् ॥ ४९ ॥ अतिथिंभोजयेत्पश्चाद्धन्तकारंचसर्वदा ॥ तेनतृप्यन्तिपितरोमुनयोदेवदानवाः ॥ ५० ॥ ग्रासमात्राभवेद्भिक्षाचतुर्ग्रासंतुपुष्कलम् ॥ पुष्कलानिचचत्वारिहन्तकारोविधीयते ॥ ५१ ॥

करनो चाहिये ॥ ४८ ॥ हे गरुड! सपिंडन और पितरोंका तर्पण करे और वेदके मंत्रनके साथ स्वधाकारको उच्चारण करैं ॥ ४९ ॥ पीछे अतिथिको भोजन कराके और हंतकार जो बलिवैश्वदेव है ताको सदा करे तासों पितर मुनि देवता और दानव सब तृप्त होयहैं ॥ ५० ॥ एकग्रास मात्र ॥ ८० ॥

करण कहोहै ॥ २८ ॥ हे गरुड ! मैंने धर्मशास्त्रके अनुसार चारों वर्णनको बारहवें दिन सपिंडन कहो है ॥ २९ ॥ कलिधर्मनकी अनित्यतासों और पुरुषनकी आयुके कम होनेसों और शरीरके स्थिर न होनेसों बारह दिन करनो ठीक है ॥ ३० ॥ व्रतबंध कहिये यज्ञोपवीत और उत्सव यज्ञ आदिकनके और आदिशब्दसों होली आदिकोहू और व्रत और उद्यापन और विवाह आदि गृहमेधी जो वृद्ध है ताके मरनेपे

मयातुप्रोच्यतेतार्क्ष्यशास्त्रधर्मानुसारतः । चतुर्णामेववर्णानांद्वादशाहेसपिण्डनम् ॥ २९ ॥ अनित्यात्कलिधर्माणांपुंसांचैवायुषःक्षयात् ॥ अस्थिरत्वाच्छरीरस्यद्वादशाहेप्रशस्यते ॥ ३० ॥ व्रतबन्धोत्सवादीनिव्रतस्योद्यापनानिच ॥ विवाहादिभवेन्नैवमृतेचगृहमेधिनि ॥ ३१ ॥ भिक्षुर्भिक्षांनगृह्णाति हन्तकारोनगृह्यते ॥ नित्यंनैमित्तिकंलुप्येद्यावत्पिंडोनमेलितः ॥ ३२ ॥ कर्मलोपात्प्रत्यवायीभवेत्तस्मात्सपिंडनम् ॥ निरग्निकः साग्निकोवा द्वादशाहेसमाचरेत् ॥ ३३ ॥

नहीं होय है ॥ ३१ ॥ संन्यासी भिक्षाको नहीं लेय है और हंतकार कहिये वैश्वदेवके न करनहारे मनुष्य न पंचसूनाको दूरि करनहारे अन्नको विभाग नहीं ग्रहण कियो जाय है जबलों पिंड नहीं मिलायो जाय है तबलों नित्य और नैमित्तिक सब लुप्त हो जांय हैं ॥ ३२ ॥ और कर्मके लोपसे प्रत्यवायी होय है तातें सपिंडन करनो चाहिये चाहे निरग्निक होय और चाहे साग्निक होय बारहवें दिन सपिंडन करे ॥ ३३ ॥

योग्य हैं अर्थात् ब्राह्मण जलको क्षत्रिय आयुधको वैश्य प्रतोदको और शूद्र दंडको छुवै तब शुद्ध होय हैं ॥ ५७ ॥ या
प्रकार सपिंडनकरिकै क्रियाके वस्त्रनको त्याग करै और शुक्ल वस्त्र धारण करिकै शय्या दान करै ॥ ५८ ॥ इन्द्रसमेत सब देवता
शय्यादानकी प्रशंसा करै हैं तासों मरनेपै अथवा जीवते शय्या दान करनी योग्य है ॥ ५९ ॥ पुष्ट काष्ठकी बनी भई मनोहर

एवं सपिंडनंकृत्वाक्रियावस्त्राणिसंत्यजेत् ॥ शुक्लाम्बरधरोभूत्वाशय्यादानंप्रदापयेत् ॥ ५८ ॥ शय्यादानंप्रशं
सन्तिसर्वेदेवाः सवासवाः ॥ तस्माच्छय्याप्रदातव्यामरणेजीवितेपिवा ॥ ५९ ॥ सारदारुमयींरम्यां सुचित्रै
श्चित्रितांदृढाम् ॥ पट्टसूत्रैर्वितानितांहेमपत्रैरलंकृताम् ॥ ६० ॥ हंसतूलीप्रतिच्छन्नांशुभशीर्षोपधानिकाम् ॥
प्रच्छादनपटीयुक्तांपुष्पगन्धैःसुवासिताम् ॥ ६१ ॥ दिव्यबन्धैः सुबद्धांचसुविशालांसुखप्रदाम् ॥ शय्यामे
वंविधांकृत्वाह्यास्तृतायांन्यसेद्भुवि ॥ ६२ ॥

चित्रनकरिकै चित्रित पुष्ट रेशमी सूतोंसों बुनीभई और सुवर्णके पत्रनसों शोभित होय ॥ ६० ॥ हंसके समान सफेद रुईसों ढकी
होय और सुन्दर जामें शिरके नीचेको तकिया होय और ऊपर ढापनेके वस्त्र करिकै युक्त गंध आदिसों सुगंधित होय ॥ ६१ ॥
सुन्दर दिव्य बंधनसों बँधी विशाल होय सुखकी देनहारी होय ऐसी शय्या बनायके आस्तृतभूमिमें स्थापित करै ॥ ६२ ॥

छाता चांदीकी दीवट चमर आसन पात्र झारी गडुआ दर्पण और पांचरंगका शामियाना ॥ ६३ ॥ और जो कुछ वस्तु शय्याकी
उपकारक होय वे सब वाके चारों ओर अपने स्थानमें स्थापित करै ॥ ६४ ॥ वा शय्यापर सुवर्णके बनेभये लक्ष्मीसमेत विष्णुको
स्थापित करै विष्णुकी मूर्ति कैसी बनावै संपूर्ण गहने और आभूषण करिकै युक्त होय और चक्र आदि आयुधनकरिकै तथा वस्त्रन

छत्रदीपालयंरौप्यंचामरासनभाजनम् ॥ भृङ्गारकरकादर्शपञ्चवर्णवितानकम् ॥ ६३ ॥ शयनस्यभवेत्किंचि
द्यच्चान्यदुपकारकम् ॥ तत्सर्वंपरितस्तस्याःस्वेस्वेस्थानेनियोजयेत् ॥ ६४ ॥ तस्यांसंस्थापयेद्धैमंहरिंलक्ष्मी
समन्वितम् ॥ सर्वाभरणसंयुक्तमायुधाम्बरसंयुतम् ॥ ६५ ॥ स्त्रीणांचशयनेधृत्वाकज्जलालक्तकुंकुमम् ॥ वस्त्रं
भूषादिकंयच्चसर्वमेवप्रदापयेत् ॥ ६६ ॥ ततोविप्रंसपत्नीकंगंधपुष्पैरलंकृतम् ॥ कर्णांगुलीयाभरणैःकण्ठसूत्रैश्च
काञ्चनैः ॥ ६७ ॥ उष्णीषमुत्तरीयंचचोलकंपरिधायच ॥ स्थापयेत्सुखशय्यायांलक्ष्मीनारायणाग्रतः ॥ ६८ ॥

करिकै युक्त होय ॥ ६५ ॥ स्त्रीनकी शय्यापर काजल महावर रोली वस्त्र और जो भूषण आदि हैं वे सब स्थापित करै ॥ ६६ ॥ ता
पीछे गंध और फूलनसों भूषित ब्राह्मणको कानके भूषण अँगूठी आदि भूषणनसों और सोनेके गलेके तोडेसों शोभित करै ॥ ६७ ॥
पगडी दुपट्टा और जामा पहिराय सुखशय्यापर लक्ष्मीनारायणके आगे बैठावै ॥ ६८ ॥

कुंकुम और फूलनकी मालानसों हरिकी तथा लक्ष्मीकी पूजा करे और लोकपाल ग्रह देवी और विनायककी पूजा करे ॥ ६९ ॥ उत्तराभिमुख हो फूलनकी अंजली ले ब्राह्मणके आगे स्थित हो या मंत्रको उच्चार करे ॥ ७० ॥ हे कृष्ण ! क्षीरसागरमें जैसी तुम्हारी शय्या है वैसेही जन्म २ में मोको यह अशून्य होय ॥ ७१ ॥ या प्रकार पुष्पां

कुंकुमैःपुष्पमालाभिर्हरिंलक्ष्मींसमर्चयेत् ॥ पूजयेल्लोकपालांश्चग्रहान्देवींविनायकम् ॥ ६९ ॥ उत्तराभिमुखो भूत्वागृहीत्वाकुसुमाञ्जलिम् ॥ उच्चारयेदिमंमन्त्रंविप्रस्यपुरतःस्थितः ॥७०॥ यथाकृष्णत्वदीयास्तिशय्याक्षीरोदसागरे ॥ तथाभूयादशून्येयंममजन्मनिजन्मनि ॥ ७१ ॥ एव पुष्पाञ्जलिंविप्रेप्रतिमायांहरेःक्षिपेत् ॥ ततः सोपस्करंशय्यादानंसंकल्पपूर्वकम् ॥ ७२ ॥ दद्याद्व्रतोपदेष्ट्रेचगुरवेब्रह्मवादिने ॥ गृहाणब्राह्मणैनांत्वंकोददातीतिकीर्तयन् ॥७३॥आन्दोलयेद्द्विजंलक्ष्मीं हरिंचशयनेस्थितम् ॥ततःप्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥७४॥

जलिको विप्रपर हरिकी प्रतिमापर छोडि देवै और तापीछे सामग्रीसमेत शय्यापर सुखसों सोवनेके लिये संकल्प पूर्वक अतिसुन्दर दान करे ॥ ७२ ॥ व्रतके उपदेश करनहारे ब्रह्मवादी गुरुको देवै ऐसा कहै, हे ब्राह्मण ! तू याको कौन देयहै ऐसे कहतो भयो दान करे ॥ ७३ ॥ शयन पर बैठेभये ब्राह्मण लक्ष्मी और हरिको आंदोलन करे तापीछे प्रदक्षिणा करिकै

॥ ८२ ॥

भिक्षा होय है और चारिग्रासको एक पुष्कल होयहै और चारि पुष्कलको हंतकार होय है ॥ ९१ ॥ सपिंडीमें चंदन अक्षतोंसे ब्राह्मणके चरण पूजै अक्षय तृप्तिके लिये वाको दान देनो चाहिये ॥ ९२ ॥ वर्षकी जीविका घी अन्न सुवर्ण चांदी गौ घोडा हाथी रथ भूमि ये सब आचार्यके लिये दान करे ॥ ९३ ॥ तापीछे स्वस्तिवाचन करिकै मंत्रनसों कुंकुम अक्षत और नैवेद्य

सपिंड्यांविप्रचरणौपूजयेच्चन्दनाक्षतैः ॥ दानंतस्मैप्रदातव्यमक्षय्यतृप्तिहेतवे ॥९२॥ वर्षवृत्तिघृतंचान्नंसुवर्णरजतंसुगाम्॥ अश्वंगजंरथंभूमिमाचार्यायप्रदापयेत्॥९३॥ ततश्चपूजयेन्मंत्रैःस्वस्तिवाचनपूर्वकम्॥ कुंकुमाक्षतनैवेद्यैर्ग्रहान्देवींविनायकम् ॥९४॥ आचार्यस्तुततःकुर्यादभिषेकंसमन्त्रकम् ॥ बद्धासूत्रंकरेदद्यान्मंत्रपूतांस्तथाक्षतान् ॥ ९५ ॥ ततश्चभोजयेद्विप्रान्मिष्टान्नैर्विविधैःशुभैः ॥ दद्यात्सदक्षिणांस्तेभ्यः सजलान्नान्द्विषड्घटान् ॥ ९६ ॥ वार्यायुधप्रतोदस्तुदण्डस्तुद्विजभोजनात् ॥ स्प्रष्टव्यानन्तरंवर्णैःशुद्ध्येरंस्तेततःक्रमात् ॥९७॥

करिकै नवग्रहोंको देवीको और विनायकको पूजन करे ॥ ९४ ॥ तापीछे आचार्य मंत्रसहित अभिषेक करे और हाथमें सूत बांधकै मंत्रनसों पवित्र अक्षत देय ॥ ९५ ॥ तापीछे नानाप्रकारके सुन्दर मिष्टान्नसों ब्राह्मणनको भोजन करावे और उनको दक्षिणाके साथ जल और अन्न सहित छः घट दान करे ॥ ९६ ॥ ब्राह्मणभोजनके पीछे चारों वर्णनको क्रमसों जल आयुध प्रतोद और दंड छूने

चढाभयो अप्सरानके गणनकरि सेवन कियोगयो महाप्रलयपर्यंत पीडारहित स्थित रहे है ॥ ८० ॥ सब तीर्थनमें और सब पर्वनमें जो पुण्य होय है तातें अधिक शय्यादानके प्रभावसों प्राप्त होय हैं ॥ ८१ ॥ पुत्र या प्रकार शय्यादान करि पदनको दान करै सो तुम मोतें सुनो मैं तुमसों यथावत् कहूँ हूँ ॥ ८२ ॥ छाता जूता वस्त्र अंगूठी कमंडलु आसन पंचपात्र यह पद पांच प्रकारको कह्यो है ॥ ८३ ॥ दंडकारि

सर्वतीर्थेषुयत्पुण्यं सर्वपर्वदिनेषुच ॥ तेभ्यश्चाप्यधिकंपुण्यंशय्यादानोद्भवंभवेत् ॥ ८१ ॥ एवंदत्त्वासुतःशय्यां पददानंप्रदापयेत्॥तच्छृणुष्वमयाख्यातंयथावत्कथयामिते ॥८२॥ छत्रोपानहवस्त्राणिमुद्रिकाचकमण्डलुः॥ आसनंपञ्चपात्राणिपदंपञ्चविधंस्मृतम् ॥८३॥ दंडेनताम्रपात्रेणह्यामान्नैर्भोजनैरपि ॥ अथयज्ञोपवीतैश्चपदंस पूर्णतांव्रजेत् ॥ ८४ ॥ त्रयोदशपदानीत्थंयथाशक्त्याविधायच ॥ त्रयोदशभ्योविप्रेभ्यःप्रदद्याद्द्वादशेहनि ॥ ८५ ॥ अनेनपददानेन धार्मिकायान्तिसद्गतिम् ॥ यममार्गगतानांचपददानंसुखप्रदम् ॥ ८६ ॥

तांबेके पात्रकरि आम अन्नन करि भोजननकरि और यज्ञोपवीतनकरि पद सम्पूर्ण होय है ॥८४॥ या प्रकार यथाशक्ति तेरह पदनका करिके बारहें दिन तेरह ब्राह्मणनको तेरह दान करै ॥ ८५ ॥ या पददानकरिकै धार्मिकपुरुष सद्गतिको प्राप्त होय है और जे यमके ॥ ८३ ॥

मार्गमें गये हैं उनको वह पददान सुख देनहारो है ॥ ८६ ॥ वहां निश्चय बडा रौद्र घाम जासों मनुष्य जरिजाय है तो वामें छातेनको दान करनेसों वाके माथेपै सुंदर छाया होय है ॥८७॥ बडी ससंकटसों घिरे भये यमके मार्गमें घोडेपर चढिकै वे जाय हैं जे उपानह कहिये जूतेको दान करै हैं ॥ ८८ ॥ हे गरुड ! वहां शीत उष्ण और पवनके घोर दुःख हैं परंतु वस्त्रदानके प्रभावसों मनुष्य सुखसों पार होजाय

आतपस्तत्रवैरौद्रोदह्यतेयेनमानवः ॥ छत्रदानेनसुच्छायाजायतेतस्यमूर्द्धनि ॥८७॥ अतिसंकटसंकीर्णेयम लोकस्यवर्त्मनि ॥ अश्वारूढाश्चतेयान्तिददन्तेयह्युपानहौ ॥ ८८ ॥ शीतोष्णवातदुःखानितत्रघोराणिखेचर ॥ वस्त्रदानप्रभावेणसुखंनिस्तरतेपथि ॥ ८९ ॥ यमदूतामहारौद्राःकरालाःकृष्णपिङ्गलाः ॥ नपीडयन्तितंमार्गे मुद्रिकायाःप्रदानतः ॥ ९० ॥ बहुघर्मसमाकीर्णेनिर्वातेतोयवर्जिते ॥ कमण्डलुप्रदानेनतृषितः पिबते जलम् ॥ ९१ ॥ मृतोद्देशेनयोदद्यादुदपात्रंचताम्रजम् ॥ प्रपादानसहस्रस्ययत्फलंसोऽश्नुतेध्रुवम् ॥ ९२ ॥

है ॥८९॥ यमके दूत महारौद्र भयंकर और कृष्णपिंगल वर्णके हैं वे मुद्रिका दान करनहारेको मार्गमें पीडा नहीं देय हैं ॥९०॥ बहुतसे घामसों भरेभयेके पवन तथा जलकरिकै रहित वा यमके मार्गमें कमंडलु दान करनेसों प्यासो जलको पीवै है ॥९१॥ मरेभयेके लिये जो तांबेके जलपात्रको दान करै है वह हजार प्याऊ लगानेके फलके समान फलको प्राप्त होय है ॥ ९२ ॥

आसन और पात्र ब्राह्मणको देनेसों मार्गमें हौले २ जातो भयो प्राणी पाथेय जो राहको खरच है ताको सुखसों खाय है ॥ ९३ ॥ या प्रकार सपिंडनके दिन विधानसों दान देकै बहुतसे ब्राह्मणका जिमावै और चांडाल आदिकोभी खवावै ॥ ९४ ॥ तापिछे सपिंडनके उपरांत और वर्षके भीतर पिंडसमेत जलको कुंभदान करनो चाहिये ॥९५॥ हे गरुड ! प्रेतकार्यके विना कियेको करनो नहीं है और

आसनेभोजनेचैवदत्तेसम्यग्द्विजातये॥सुखेनभुंक्तेपाथेयंपथिगच्छञ्छनैःशनैः ॥९३॥ एवंसपिंडनदिनेदत्त्वा दानंविधानतः ॥बहून्संभोजयेद्विप्रान्यः श्वपाकादिकानपि ॥९४॥ ततः सपिंडनादूर्ध्वमर्वाक्संवत्सरादपि ॥ प्रतिमासंप्रदातव्योजलकुम्भःसपिंडकः ॥९५॥ कृतस्यकरणंनास्तिप्रेतकार्याद्दतेखग ॥ प्रेतार्थंतुपुनःकुर्यादक्ष य्यतृप्तिहेतवे ॥ ९६ ॥ अतोविशेषंवक्ष्यामिमासिकस्याब्दिकस्यच ॥ पाक्षिकस्यविशेषंचविशेषतिथिषु मृते ॥ ९७ ॥ पौर्णमास्यांमृतोयस्तुचतुर्थीतस्यऊनिका ॥ चतुर्थ्यांतुमृतोयस्तुनवमीतस्यऊनिका ॥ ९८ ॥

प्रेतके लिये तो अक्षय तृप्तिके निमित्त फिरि करै ॥ ९६ ॥ यातें मासिक और वार्षिकको विशेष कहौंगो और पाक्षिकको विशेष तिथिनमें मरनेपर ॥ ९७ ॥ पूर्णमासीको जो मरो है ताकी चौथी ऊनिका कहिये पाक्षिक श्राद्ध तिथि हैं ॥ ९८ ॥

नमस्कार करि विसर्जन करै॥७४॥सब सामग्री युक्त अति सुंदर करै शय्यामें सुखसों सोवनेके लिये और विभव होय तो घरहूको दान करै ॥ ७५ ॥ जीवतो भयो पुरुष अपने हाथसों जो शय्या दान करै है तो जीवतेही भये वाको पर्वनमें वृषोत्सर्ग करनो चाहिये ॥ ७६ ॥ यह शय्या एकको देनी चाहिये बहुतनको कबहू न देवै. बाँटीगई अथवा बेंचीगई वह दाताको नरकमें डारै है ॥ ७७ ॥ पात्रमें शय्यादान

सर्वोपस्करणैर्युक्तंप्रदद्यादतिसुन्दरम् ॥ शय्यायांसुखसुप्त्यर्थंगृहंचविभवेसति ॥७५॥ जीवमानःस्वहस्तेनय दिशय्यांददातियः ॥ तज्जीवतावृषोत्सर्गं पर्वणीषुसमाचरेत् ॥ ७६ ॥ इयमेकस्यदातव्याबहूनांनकदाचन॥ साविभक्ताचविक्रीतादातारंपातयत्यधः ॥७७॥ पात्रेप्रदायशयनंवांछितंफलमाप्नुयात् ॥ पिताचदातातनयः परत्रेहचमोदते ॥ ७८ ॥ पुरन्दरगृहेदिव्येसूर्यपुत्रालयेपिच ॥ उपतिष्ठेन्नसन्देहः शय्यादानप्रभावतः ॥ ७९ ॥ विमानवरमारूढः सेव्यमानोप्सरोगणैः ॥ आभूतसम्प्लवंयावत्तिष्ठत्यातङ्कवर्जितः ॥ ८० ॥

कारिकै वांछित फलको प्राप्त होय है पिता और दाता पुत्र परलोकमें और यालोकमें प्रसन्न होय है ॥ ७८ ॥ शय्यादानके प्रभावसों सुंदर दिव्य इन्द्रके घरमें और सूर्यपुत्र जे यम हैं तिनके घरमें उपस्थित होय यामें संदेह नहीं है ॥ ७९ ॥ श्रेष्ठ विमानमें

क्रिया तेरहवें महीनेमें करनी चाहिये॥ १०४॥संक्रांतिरहित मासमें पिंडवर्जित और संक्रांतिसहित मासमें पिंडसहित ऐसे दोनों मासनमें प्रतिवर्ष श्राद्ध करनो चाहिये ॥ १०५ ॥ या प्रकार संवत्सरके पूरे होनेपै वार्षिक श्राद्ध करे वामेंहू विशेषकारि ब्राह्मण भोजन करानो योग्य है ॥ १०६॥संवत्सरके उपरांत श्राद्धमें तीनि पिंड सदा करने चाहिये एकोद्दिष्ट न करै वाके करनेसों पितृघातक होय है॥ १०७॥तीर्थश्राद्ध

पिंडवर्ज्यमसंक्रान्तेसंक्रान्तेपिंडसंयुतम् ॥प्रतिसंवत्सरं श्राद्धमेवंमासद्वयेपिच॥ १०५॥एवंसंवत्सरेपूर्णेवार्षिकं श्राद्धमाचरेत् ॥ तस्मिन्नपिविशेषेणभोजनीयाद्विजातयः ॥१०६ ॥ कुर्यात्संवत्सरादूर्ध्वंश्राद्धेपिंडत्रयंसदा॥ एकोद्दिष्टंनकर्तव्यंतेनस्यात्पितृघातकः ॥१०७॥ तीर्थश्राद्धंगयाश्राद्धंगजच्छायंचपैतृकम्॥ अब्दमध्येनकुर्वीतग्रहणेनयुगादिषु ॥ १०८ ॥ यदापुत्रेणवैकार्यंगयाश्राद्धंखगेश्वर ॥ तदासंवत्सरादूर्ध्वंकर्तव्यंपितृभक्तितः॥ १०९॥गयाश्राद्धात्प्रमुच्यन्तेपितरोभवसागरात् ॥गदाधरानुग्रहेणतेयान्तिपरमांगतिम् ॥११०॥

गयाश्राद्ध गजच्छाय पितृसंबंधी वर्षके मध्यमें न करने चाहिये न ग्रहणमें और न युगादिमें ॥१०८॥ हे गरुड ! जब पुत्रको गयाश्राद्ध करनो होय तौ संवत्सरके उपरांत पिताकी भक्तिसों करनो चाहिये ॥ १०९ ॥ गयाश्राद्ध करनेसों पितर भवसागरतें छूटि जाय हैं गदाधरके ॥ ८५ ॥ अनुग्रहसों वे परमगतिको प्राप्त होय हैं॥ ११०॥ तुलसीकी मंजरिनसों विष्णुकी पादुकानको पूजन करै और उनके आलवादि तीर्थनमें यथा क्रम पिंडदान करै॥ १११ ॥ जो गयाके शिरमें शमीके पत्तेके प्रमाणसों पिंड दे वह सात गोत्र और एक ऊपर सो कुलनको उद्धार करै॥ ११२॥कुलको आनंद देनेहारो जो पुरुष गयामें प्राप्त होके पिंडदान करै है पितरनको संतोष देनेहारो वह वाको जन्म सफल है॥ ११३॥

तुलसीमञ्जरीभिश्चपूजयेद्विष्णुपादुकाम् ॥ तस्यालवादितीर्थेषुपिण्डान्दद्याद्यथाक्रमम् ॥ १११॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणिकुलमेकोत्तरंशतम् ॥ शमीपत्रप्रमाणेनपिंडंदद्याद्गयाशिरे ॥ ११२ ॥ गयामुपेत्ययः श्राद्धं करोतिकुलनन्दनः ॥ सफलंतस्यतज्जन्मजायतेपितृतुष्टिदम् ॥ ११३ ॥ श्रूयतेचापिपितृभिर्गीतागाथाखगेश्वर ॥ इक्ष्वाकोर्मनुपुत्रस्यकलापोपवनेसुरैः ॥ ११४ ॥ अपिनस्तेभविष्यन्तिकुलेसन्मार्गशीलिनः ॥ गयामुपेत्ययेपिण्डान्दास्यन्त्यस्माकमादरात् ॥ ११५ ॥ एवमामुष्मिकींतार्क्ष्ययःकरोतिक्रियांसुतः ॥ सस्यात्सुखीभवेन्मुक्तःकौशिकस्यात्मजायथा ॥ ११६ ॥

हिमालयके समीप वर्तमान कलाप नाम ग्राम है ताके उपवनमें मनुके पुत्र इक्ष्वाकुकी पितरनकरि गाई गई गाथा सुनी जाती है ॥११४ ॥ हमारे कुलमें वे सन्मार्गशील होयँगे जे गयामें जायके हमको आदरसों पिंड देंयगे॥ ११५॥ हे गरुड ! या प्रकार जो पुत्र आमुष्मिकी

कहिये या लोककी क्रियाको करे है वह सुखी और मुक्त होजाय है जैसे कौशिकके पुत्र ॥ ११६॥ भरद्वाजके सात पुत्र जन्मकी परंपराको भोगिकै हे गरुड ! गौको वध करकैहू पितरनके प्रतापसों मुक्त होगये ॥ ११७ ॥ सात व्याध दशार्णदेशनमें और कालिंजरापर्वतमें मृग शरद्वीपमें चक्रवाक और मानससरोवरमें हंस ॥ ११८॥ वही कुरुक्षेत्रमें वेदके पारगामी ब्राह्मण भये वे ब्राह्मणनके पुत्र पिताकी भक्तिसों

भरद्वाजात्मजाःसप्तभुक्त्वाजन्मपरंपराम् ॥ कृत्वापिगोवधंताक्ष्यर्मुक्ताः पितृप्रसादतः ॥ ११७॥ सप्तव्याधा दशार्णेषुमृगाःकालिंजरेगिरौ ॥ चक्रवाकाः शरद्वीपेहंसाः सरसिमानसे ॥ ११८॥ तेपिजाताःकुरुक्षेत्रेब्राह्मणा वेदपारगाः ॥ पितृभक्त्याचतेसर्वेगतामुक्तिंद्विजात्मजाः ॥ ११९ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपितृभक्तोभवेन्नरः ॥ इहलोकेपरेवापिपितृभक्त्यासुखीभवेत् ॥ १२०॥ एतत्ताक्ष्यर्मयाख्यातंसर्वमेवौर्ध्वदेहिकम् ॥ पुत्रवाञ्छाप्रदं पुण्यंपितुर्मुक्तिप्रदायकम् ॥ १२१ ॥ निर्धनोपिनरःकश्चिद्यःशृणोतिकथामिमाम् ॥ सोपिपापविनिर्मुक्तो दानस्य फलमाप्नुयात् ॥ १२२ ॥

मुक्तिको प्राप्त भये ॥ ११९॥ यासों सर्व यत्नकरि नर पितृभक्त होय या लोक तथा परलोकमें पितृभक्तिसों सुखी होय है ॥ १२०॥ हे गरुड ! मैंने यह सब और्ध्वदेहिक कहो यह पुत्रकी वांछाको देनहारो पवित्र और मुक्तिको देनहारो है ॥ १२१ ॥ निर्धनहू जो कोई

नवमीको जो मरो है वाकी रिक्ता चतुर्दशी पाक्षिक श्राद्धतिथि है या प्रकार वीसवें दिन पाक्षिक श्राद्ध करे ॥ ९९॥ जब एकही मासमें दो संक्रांति होयँ तब दोनों महीनेको श्राद्ध मलमासमें विधान कियो जायहै ॥ १००॥ एक महीनेमें जो दो महीने होयँ तो दोनों मासोंमें वेही पक्ष तिथि जाननी योग्य है ॥ १०१ ॥ जो प्रथम तिथ्यर्द्ध होय तो पूर्व जानिये और दूसरा आधा होय तो वातें आगेको मास जानिये

नवम्यांतुमृतोयस्तुरिक्तातस्यचतुर्दशी ॥ इत्येवंपाक्षिकंश्राद्धंकुर्याद्विंशतिमेदिने ॥ ९९ ॥ एक एवयदामासः संक्रान्तिद्वयसंयुतः ॥ मासद्वयगतंश्राद्धंमलमासेहिशस्यते ॥ १००॥ एकस्मिन्मासिमासौद्वौयदिस्यातांतयो र्द्वयोः॥ तावेवपक्षौताएवतिथयस्त्रिंशदेवहि ॥ १०१॥ तिथ्यर्धेप्रथमेपूर्वोद्वितीयेऽर्धेतदुत्तरः ॥ मासावितिबुधैश्चि न्त्यौमलमासस्यमध्यगौ ॥ १०२॥ असंक्रान्तेचकर्त्तव्यंसपिंडीकरणंखग ॥ तथैवमासिकंश्राद्धंवार्षिकंप्रथमं तथा ॥ १०३॥ संवत्सरस्यमध्येतुयदिस्यादधिमासकः ॥ तदात्रयोदशेमासिक्रियाप्रेतस्यवार्षिकी ॥ १०४॥

या प्रकार पंडितन करि मलमासके मध्यके मास चिंतवन करने योग्य है ॥ १०२ ॥ हे खग ! संक्रान्तिरहित मासमें सपिंडीकरण करनो चाहिये तैसेही मासिक श्राद्ध और वार्षिक तथा प्रथम करनो चाहिये ॥ १०३॥ वर्षके मध्यमें जो अधिकमास होय तो प्रेतकी वार्षिक

गरुड बोले; यमलोक कितनो है और कैसो है और कौनने वाही बनायो है और सभा कैसी है वा सभामें धर्म किनके साथ रहैहै ॥ १ ॥ जे धार्मिक जिन धर्ममार्गनहीं कारिकै धर्मके मंदिरको जांय हैं उन धर्मनको और मार्गनको हे दयानिधे! मोसों कहो ॥२॥ श्रीभगवान् बोले, हे गरुड! जो नारद आदि देवर्षिनकरिकै जाने योग्य है वह दिव्य धर्मनगर बडे पुण्यनसों मिलैहै॥ ३॥ याम्य और नैर्ऋत्यके बीचमें जो वैव स्वतको

गरुडउवाच ॥ यमलोकःकियन्मात्रःकीदृशःकेननिर्मितः ॥सभाचकीदृशीतस्यांधर्मआस्तेचकैःसह ॥ १ ॥
येधर्ममार्गैर्गच्छन्तिधार्मिकाधर्ममन्दिरम् ॥ तान्धर्मानपिमार्गांश्चममाख्याहिदयानिधे ॥ २ ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ शृणुतार्क्ष्यंप्रवक्ष्यामियद्रम्यंनारदादिभिः ॥ तद्धर्मनगरंदिव्यंमहापुण्यैरवाप्यते ॥ ३ ॥ याम्यनैर्ऋत
योर्मध्येपुरंवैवस्वतस्ययत् ॥ सर्ववज्रमयंदिव्यमभेद्यंतत्सुरासुरैः ॥४॥ चतुरस्रंचतुर्द्वारमुच्चप्राकारवेष्टितम् ॥
योजनानांसहस्रंहिप्रमाणेनतदुच्यते ॥ ५ ॥

पुर है वह संपूर्ण वज्रमय है आर दिव्य है वह सुर असुरनकरिकै भेदन करने योग्य नहीं है अर्थात् वाको देवता और असुर कोई नहीं तोडी सके है॥४॥ चौखुटो है आर चारि वाके द्वार हैं और ऊंचे परकोटेसों घिरो है और सहस्रयोजन अर्थात् चार हजार कोशको वाके विस्ता

रको प्रमाण कहो जाय है ॥ ५ ॥ वा पुरमें बहुत सुंदर चित्रगुप्तको मंदिर है सैकरो पच्चीस योजन अर्थात् सौ कोसको लंबो चौडो है ॥ ६ ॥ दशयोजन ऊंचो है बडो दिव्य है और लोहेके परकोटेसों घिरो भयो है सैकरों गलीनमें चलनो फिरनो है और पताका तथा ध्वजानसों शोभित है ॥ ७ ॥ विमाननके गणसों संकीर्ण कहिये भरोभयो है और गावने बजानेसों शब्दायमान होरहो है और चतुर

तस्मिन्पुरेऽस्तिसुभगंचित्रगुप्तस्यमन्दिरम् ॥ पञ्चविंशतिसंख्याकैर्योजनैर्विस्तृतायतम् ॥ ६ ॥ दशोच्छ्रितं
महादिव्यंलोहप्राकारवेष्टितम् ॥ प्रतोलीशतसंचारंपताकाध्वजभूषितम् ॥ ७ ॥ विमानगणसंकीर्णगीतवादि
त्रनादितम् ॥ चित्रितंचित्रकुशलैर्निर्मितंदेवशिल्पिभिः ॥८॥ उद्यानोपवनैरम्यंनानाविहगकूजितम् ॥ गन्धर्वै
रप्सरोभिश्चसमन्तात्परिवारितम् ॥ ९ ॥ तत्सभायांचित्रगुप्तःस्वासनेपरमाद्भुते ॥ संस्थितोगणयेदायुर्मानु
षाणांयथातथम्॥ १०॥नमुह्यतिकथंचित्ससुकृतेदुष्कृतेपिवा ॥ यद्येनोपार्जितंकर्मशुभंवायादिवाशुभम् ॥ ११ ॥

चितेरिनकरिकै जामें चित्र बनाये गये हैं और देवतानके शिल्पीन करिकै बनायो गयो है ॥ ८ ॥ बाग और फुलवारिनसों मनोहर होरहोहै और अनेक प्रकारके पक्षी उनमें बोलरहे हैं गंधर्व और अप्सरानकरिकै चारों ओरसो शोभायमान है ॥ ९ ॥ वह सभा है जामें चित्रगुप्त परम अद्भुत आसनपर बैठेभये मनुष्यनकी यथार्थ आयुकी गणना करैहैं ॥ १० ॥ वे चित्रगुप्त पाप तथा पुण्यमें

कबहूँ नहीं भूलै हैं जो शुभ अथवा अशुभ कर्म इकट्ठो कियो है ॥ ११ ॥ जहां चित्रगुप्तकी आज्ञासों वह सब भोगै है और चित्रगुप्तकी घरसों पूर्व दिशामें ज्वरको बडो भारी घर है॥ १२॥ और दक्षिणमें शूलको और लूता तथा विस्फोटको घर है और पश्चिममें कालपाशको अजीर्णको तथा अरुचिको घर है ॥ १३ ॥ उत्तरदिशामें राजरोगको और पांडुरोगको घर है और ईशानदिशामें शिरकी पीडाको और

तत्सर्वंभुञ्जतेयत्रचित्रगुप्तस्यशासनात् ॥ चित्रगुप्तालयात्प्राच्यांज्वरस्यातिमहागृहम्॥ १२॥ दक्षिणस्यांचशूलस्यलूताविस्फोटयोस्तथा ॥ पश्चिमेकालपाशस्यचाजीर्णस्यारुचेस्तथा ॥ १३ ॥ उदीच्यांराजरोगोस्तिपांडुरोगस्तथैवच॥ ऐशान्यांतुशिरोर्तिःस्यादाग्नेय्यामस्तिमूर्च्छना ॥१४॥ अतिसारोनैर्ऋतेतुवायव्यांशीतदाहकौ ॥एवमादिभिरन्यैश्चव्याधिभिः परिवारितः ॥ १५ ॥ लिखतेचित्रगुप्तस्तुमानुषाणांशुभाशुभम् ॥ चित्रगुप्तालयादग्रेयोजनानांचविंशतिः ॥ १६ ॥

आग्निकोणमें मूर्च्छाको घर है ॥ १४॥ और नैर्ऋतकोणमें अतिसारको और वायव्यमें शीत और दाहको घर है इत्यादि अनेक रोगन करि घिरो भयोहै ॥ १५ ॥ चित्रगुप्त मनुष्यनके शुभ अशुभ कर्मनको लिखेहै और चित्रगुप्तके घरके आगे वीस योजनपर ॥ १६ ॥

मनुष्य या कथाको सुनैगो वह पापनतें छूटिकै दानके फलको प्राप्त होय है ॥ १२२ ॥ जो कोई मेरो कहोभयो श्राद्ध और दान करैगो गरुडपुराणको सुनेगो ताकोहू फल सुनो ॥ १२३ ॥ पिता सत्पुत्रनको देय है और पितामह गोधन, धन दाता प्रपितामह होयहै ॥ १२४ ॥ वृद्ध प्रपितामह बहुतसे अन्न आदिको देय है और श्राद्धकरि तृप्त भये वे सब पुत्रको वांछित देकर ॥ १२५ ॥ धर्मके मार्गनमें होकर धर्म

विधिनाकुरुतेयस्तुश्राद्धंदानंमयोदितम्॥ शृणुयाद्गारुडंचापिशृणुतस्यापियत्फलम्॥ १२३॥ पितादृदातिसत्पुत्रान्गोधनानिपितामहः॥धनदाताभवेत्सोपियस्तस्यप्रपितामहः।१२४।दद्याद्विपुलमन्नाद्यंवृद्धस्तुप्रपितामहः ॥ तृप्ताः श्राद्धेनतेसर्वे दत्त्वापुत्रस्यवाञ्छितम्॥ १२५॥ गच्छान्तिधर्ममार्गैश्चधर्मराजस्यमन्दिरम्॥तत्रधर्मसभायांतेतिष्ठन्तिपरमादरात्॥ १२६॥सूतउवाच॥एवंश्रीविष्णुनाप्रोक्तमौर्ध्वदानसमुद्भवम्॥श्रुत्वामाहात्म्यमतुलंगरुडोहर्षमागतः ॥१२७॥ इतिश्रीगरुडपुराणे०सपिंडनादिसर्वकर्मनिरूपणंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

राजके मंदिरको जाय हैं वहां वे धर्मसभामें बडे आदरसों स्थित होय हैं ॥ १२६ ॥ सूत बोले, याप्रकार श्रीविष्णु करि कहोभयो और्ध्वदेहिक दानको जो माहात्म्य है ताको सुनिकै गरुड बडे आनंदको प्राप्त होत भयो ॥ १२७ ॥ इति श्रीपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां त्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥

शब्दकारि युक्त है और सोनेके तोरण शोभायमान हैं ॥ २१ ॥ नानाप्रकारके आश्चर्यरूप हैं और सोनेके सैकरन किवाँरनसों भरो है जिनमें कांटे नहीं ऐसे नानाप्रकारके वृक्ष लता और गुल्मनसों विराजित है ॥ २२ ॥ इत्यादिक तथा और हूँ भूषणसों सदा शोभित है और अपने योगके प्रभावसों विश्वकर्माकरि बनायो गयो है ॥ २३ ॥ वामें सौ योजनकी चौडी दिव्यसभा है सूर्यकेसो जाको प्रकाश

नानाश्चर्यमयंस्वर्णकपाटशतसंकुलम् ॥ नानाद्रुमलतागुल्मैर्निष्कण्टैःसुविराजितम् ॥ २२ ॥ एवमादिभिरन्यैश्चभूषणैर्भूषितंसदा ॥ आत्मयोगप्रभावैश्चनिर्मितंविश्वकर्मणा ॥ २३ ॥ तस्मिन्नस्तिसभादिव्याशतयोजनमायता ॥ अर्कप्रकाशाभ्राजिष्णुः सर्वतः कामरूपिणी ॥ २४ ॥ नातिशीतानचात्युष्णामनसोत्यन्तहर्षिणी ॥ नशोकोन जरातस्यांक्षुत्पिपासेनचाप्रियम् ॥ ॥ २५ ॥ सर्वेकामाः स्थितायस्यां ये दिव्यायेच मानुषाः ॥ रसवच्चप्रभूतंचभक्ष्यंभोज्यंचसर्वशः ॥ २६ ॥

है चमकीली और सर्वत्र कामरूप है ॥२४॥ न तो बहुत शीत है न गरम है मनको अत्यंत आनंद देनहारी है वामें न तो शोक है और न बुढापा है और क्षुधा पिपासा तथा अप्रिय नहीं है ॥ २५ ॥ और दिव्य तथा मानुष सब काम वामें स्थित हैं और बडे स्वादिष्ट तथा बहुतसों भोजन सर्वत्र है ॥ २६ ॥

बहुत मीठे स्वादिष्ट जल शीतल और उष्ण दोनों प्रकारके पवित्र शब्द आदि विषय और सदा कामनाके देनहारे वृक्ष वा सभामें वर्तमान हैं ॥ २७ ॥ हे गरुड ! वह सभा असंबाधा कहिये सांकरी नहीं मनोहर है और कामनाकी देनहारी है और बहुत कालतक तपकरिकै विश्वकर्माने बनाई है ॥२८॥ वामें उग्रतपके करनहारे जांय हैं और सुंदरव्रतके करनहारे तथा सत्यके बोलन हारे शांतस्वभाव संन्यासी

रसवन्तिचतोयानिशीतान्युष्णानिचैवहि ॥ पुण्याः शब्दादयस्तस्यांनित्यंकामफलद्रुमाः ॥ २७ ॥ असंबाधाचसाताक्ष्यंरम्याकामागमासभा ॥ दीर्घकालंतपस्तप्त्वानिर्मिताविश्वकर्मणा ॥ २८ ॥ तामुग्रतपसोयान्तिसुव्रताःसत्यवादिनः ॥ शान्ताः संन्यासिनः सिद्धाः पूताः पूतेनकर्मणा ॥ २९॥ सर्वेभास्वरदेहास्तेऽलंकृताविरजोम्बराः॥ स्वकृतैःकर्मभिः पुण्यैस्तत्रतिष्ठन्तिभूषिताः ॥३०॥ तस्यांसधर्मोभगवानासनेऽनुपमेशुभे ॥ दशयोजनविस्तीर्णेसर्वरत्नैः सुमण्डिते ॥ ३१ ॥

और सिद्ध पवित्रकर्मकरिकै वा सभामें जाय हैं ॥२९॥ जिनके सब देह तेजोमय हैं और अलंकृत हैं और निर्मल जिनके वस्त्र हैं ऐसे पुरुष अपने किये भये पुण्यकर्मनकरि वामें अलंकृत हो स्थित रहैं हैं ॥ ३० ॥ वा सभामें वह भगवान् धर्म जाकी उपमा नहीं और सुन्दर

दशयोजन चौडे सब रत्ननकरिकै मंडित ऐसे आसनपर ॥ ३१ ॥ बैठे भये सज्जनमें श्रेष्ठ और छत्रसों शोभित हैं मस्तक जिनको और कुंडलनसों भूषित और बडे मुकुटसों शोभित हैं ॥३२॥ फिरि कैसे हैं सब अलंकारनसों युक्त और नीले मेघके समान है कांति जिनकी और चमर हैं हाथनमें जिनके ऐसी अप्सरानकरिकै पवन करेगये हैं ॥ ३३ ॥ गंधर्वनके समूह और अप्सरानके समूह गाने बजानेसों

उपविष्टःसतांश्रेष्ठश्छत्रशोभितमस्तकः ॥ कुण्डलालंकृतः श्रीमान्महामुकुटमंडितः ॥ ३२ ॥ सर्वालङ्कारसंयुक्तोनीलमेघसमप्रभः॥वालव्यजनहस्ताभिरप्सरोभिश्चवीजितः ॥३३॥ गन्धर्वाणांसमूहाश्चसंघशश्चाप्सरोगणाः ॥ गीतवादित्रनृत्याद्यैः परितः सेवयन्तितम् ॥ ३४ ॥ मृत्युनापाशहस्तेनकालेनचबलीयसा ॥ चित्रगुप्तेनचित्रेण कृतान्तेननिषेवितः ॥ ३५ ॥ पाशदंडधरैरुग्रैर्निदेशवशवर्तिभिः ॥ आत्मतुल्यबलैर्नानासुभटैः परिवारितः ॥३६॥ अग्निष्वात्ताश्चपितरःसोमपाश्चोष्मपाश्चये ॥ स्वधावन्तोबर्हिषदोमूर्तामूर्ताश्चयेखग ॥३७॥

चहूँ ओरसे जिनकी सेवा करिरहे हैं ॥३४॥ पाश जाके हाथमें ऐसे मृत्यु करि और बलवान् काल करिकै और चित्र है रूप जिनको ऐसे चित्रगुप्तकरि और कृतांतकरि सेवित हैं ॥३५॥ आज्ञामें चलनहारे पाश तथा दंडको धारण कियेभये उग्र हैं रूप जिनके और अपने तुल्य हैं बल जिनमें ऐसे नानाप्रकारके सुन्दर योद्धानकरिकै वेष्टित हैं ॥३६॥ हे गरुड ! अग्निष्वात्त पितर और जे सोमपा तथा उष्मपा हैं और स्वधा

पुरके मध्यमें महादिव्यधर्मराजको रत्नमय मंदिर है बहुत दिव्य है और बिजलीकी ज्वाला और सूर्यके समान वाको तेज है ॥ १७ ॥ लंबाई चोडाईमें दोसौ योजन स्फुट है और पचास योजनके प्रमाणमें ऊंचो है ॥ १८ ॥ हजारन खंभनकरि धारण कियो है और वैडूर्यके मणिनकरि भूषित है सुवर्णसों अलंकृत है और नानाप्रकारके हर्म्य और प्रासादनसों संकुल कहिये भरोभयो है ॥ १९ ॥

पुरमध्येमहादिव्यंधर्मराजस्यमन्दिरम् ॥ अस्तिरत्नमयंदिव्यंविद्युज्ज्वालार्कवर्चसम् ॥ १७ ॥ द्विशतंयोजनानांचविस्तारायामतः स्फुटम् ॥ पञ्चाशच्चप्रमाणेनयोजनानांसमुच्छ्रितम् ॥ १८ ॥ धृतंस्तम्भसहस्रैश्च वैडूर्यमणिमंडितम् ॥ कांचनालंकृतंनानाहर्म्यप्रासादसंकुलम् ॥ १९॥ शारदाभ्रनिभंरुक्मकलशैः सुमनोहरम् ॥ चित्रस्फटिकसोपानंवज्रकुट्टिमशोभितम् ॥ २० ॥ मुक्ताजालगवाक्षंचपताकाध्वजभूषितम् ॥ घंटानेकनिनादाढ्यंहेमतोरणमंडितम् ॥ २१ ॥

शरत्कालके मेघके समान है और सुवर्णके कलशनसों सुन्दर मनोहर है चित्र विचित्र स्फटिककी सीढियाँ बनीहैं और वज्रकी कुट्टिमनसों शोभायमान है ॥ २० ॥ और झरोखनमें मोतीनकी झालरैं लटकरहीहैं और पताका तथा ध्वजानसों शोभित है घंटा और नगारनके

पवित्र कीर्तिमान् और बहुश्रुत ये राजा बहुतसे अश्वमेधनसों यजन करिकै धर्मके सभासद भये ॥ ४५ ॥ धर्मराजकी सभामें धर्मही प्रवृत्त होयहै वहां पक्षपात नहीं है न झूंठ है न मत्सर है ॥ ४६ ॥ सब सभाके बैठनेहार शास्त्रके ज्ञाता हैं और धर्ममें परायण हैं वा सभामें सदा वैवस्वत जे धर्मराज हैं तिनकी उपासना करें हैं ॥ ४७ ॥ हे गरुड ! धर्मराज महात्माकी वह ऐसी सभा है वाको जे पापी

एतेराजर्षयःपुण्याःकीर्तिमन्तोबहुश्रुताः॥ इष्ट्वाश्वमेधैर्बहुभिर्जाताधर्मसभासदः ॥ ४५ ॥ सभायांधर्मराजस्य धर्मएवप्रवर्तते॥नतत्रपक्षपातोस्तिनानृतंनचमत्सरः ॥४६॥ सभ्याःसर्वेशास्त्रविदः सर्वेधर्मपरायणाः ॥ तस्यां सभायांसततंवैवस्वतमुपासते ॥४७॥ ईदृशीसासभाताक्ष्र्यधर्मराजमहात्मनः ॥ नतांपश्यन्तियेपापादक्षिणेन पथागताः ॥ ४८ ॥ धर्मराजपुरेगन्तुंचतुर्मार्गाभवन्तिच ॥ पापिनांगमनेपूर्वंसतुतेपरिकीर्तितः ॥ ४९ ॥ पूर्वादिभिस्त्रिभिर्मार्गैर्येगताधर्ममन्दिरे ॥ तेहिसुकृतिनः पुण्यैस्तस्यांगच्छन्तिताञ्छृणु ॥ ५० ॥

हैं और दक्षिणके मार्गमें होकै गये हैं वे नहीं देखे हैं ॥ ४८ ॥ धर्मराजके पुरमें जानेको चारि मार्ग होय हैं पहले पापीनके जानेमें वह तो तुमसों कह चुका ॥ ४९ ॥ पूर्व आदि तीनि मार्गनसों जे धर्मके मंदिरमें गये हैं वे सुकृती पुण्यनसों वामें जाय हैं उनको सुनो ॥ ५० ॥

यहां एक पूर्वको मार्ग है वह सब भोगनकरिकै युक्त है और पारिजात जो देवतानको वृक्ष है ताकी छायासों आच्छादित है और रत्नसों शोभित है ॥ ५१ ॥ विमानके गणसों भरोभयो है और हंसनकी पंक्तिनकरि विराजमान है मूंगनको जो बाग है तासों भरो है और अमृतरूपी जलकरिकै युक्त है ॥ ५२ ॥ वा द्वारमें होकै पवित्र देवर्षि जाय हैं निर्मल राजर्षि जाय हैं और वाहीमें होकै अप्सरानके गण

पूर्वमार्गस्तुतत्रैकःसर्वभोगसमन्वितः ॥ पारिजाततरुच्छायाच्छादितोरत्नमंडितः ॥ ५१ ॥ विमानगणसङ्कीर्णोहंसावलिविराजितः॥विद्रुमारामसंकीर्णपीयूषद्रवसंयुतः ॥५२॥ तेनब्रह्मर्षयोयान्तिपुण्यराजर्षयोमलाः ॥ अप्सरोगणगन्धर्वविद्याधरमहोरगाः ॥ ५३ ॥ देवताराधकाश्चान्येशिवभक्तिपरायणाः ॥ ग्रीष्मेप्रपादानरता माघेकाष्ठप्रदायिनः ॥ ५४ ॥ विश्रामयन्तिवर्षासुविरक्तान्दानमानतः ॥ दुःखितस्यामृतंब्रूतेददतेह्याश्रमंतुये ॥ ५५ ॥ सत्यधर्मरतायेचक्रोधलोभविवर्जिताः ॥ पितृमातृषुयेभक्तागुरुशुश्रूषणेरताः ॥ ५६ ॥

गंधर्व विद्याधर और बडे सर्प जांय हैं ॥ ५३ ॥ तथा और जे देवतानके आराधन करनहारे हैं तथा अन्य पुरुष जे शिवकी भक्तिमें तत्पर हैं और ग्रीष्मऋतुमें जे जलकी प्याऊ लगावे हैं और माघमें जे लकरी देकै तपावै हैं ॥ ५४ ॥ और जे वर्षाऋतुमें विरक्तनको दान और मानसों विश्राम देय हैं और दुःखीसों जे अमृतसमान वचन बोलै हैं और जे आश्रम देय हैं ॥ ५५ ॥ और जे सत्यधर्ममें रत हैं और क्रोध

लोभसों रहित हैं और पितामाताके जे भक्त हैं और गुरुकी सेवामें जे रत हैं ॥ ५६ ॥ भूमिके देनहारे गौके देनहारे और विद्यादानके देनहारे पुराणके कहनहारे तथा सुननहारे और पारायणमें तत्पर ॥ ५७ ॥ ये सुकृती तथा अन्य पूर्वके द्वारमें होके प्रवेश करे हैं अर्थात् भीतर जाय हैं और सुशील और शुद्धबुद्धि वे धर्मसभामें जाय है ॥ ५८ ॥ दूसरो उत्तरको मार्ग सैकरन महारथनसों युक्त

भूमिदागृहदागोदाविद्यादानप्रदायकाः ॥ पुराणवक्तृश्रोतारः पारायणपरायणाः ॥ ५७ ॥ एतेसुकृतिनश्चान्येपूर्वद्वारेविशन्तिच ॥ यान्तिधर्मसभायांतेसुशीलाःशुद्धबुद्धयः ॥५८॥ द्वितीयस्तूत्तरोमार्गोमहारथशतैर्वृतः ॥ नरयानसमायुक्तोहरिचन्दनमण्डितः ॥ ५९ ॥ हंससारससंकीर्णश्चक्रवाकोपशोभितः ॥ अमृतद्रवसंपूर्णस्तत्रभातिसरोवरः ॥ ६० ॥ अनेनवैदिकायान्तितथाभ्यागतपूजकाः ॥ दुर्गाभान्वोश्चयेभक्तास्तीर्थस्नाताश्चपर्वसु ॥ ६१ ॥

है और नरयान जे पालकी हैं तिनकरिकै युक्त है और हरिचंदन जो देवतानको वृक्ष हैं ताकरिकै भूषित हैं ॥ ५९ ॥ हंस और सारसनसों भरोभयो है और चकई चकवानसों शोभित है । अमृतरूप जलसों भरो भयो सरोवर वहां शोभायमान है ॥ ६० ॥ या द्वारमें होके वैदिक अर्थात् वेदके पठनहारे और अभ्यागतकी

वन्त तथा बर्हिषद मूर्तिमान् और जे अमूर्तिमान् ॥ ३७ ॥ अर्यमा आदि पितृगण हैं तथा और मूर्तिमान् हैं वे सब मुनिनसमेत धर्मराजकी उपासना करे हैं ॥ ३८ ॥ अत्रि, वसिष्ठ, पुलह, दक्ष, क्रतु, अंगिरा, जामदग्न्य, भृगु, पुलस्त्य, अगस्त्य और नारद ॥ ३९ ॥ ये तथा और बहुतसे पितृराजके सभासद हैं उनकी नामसों और कर्मनसों संख्या नहीं होसके है ॥ ४० ॥ धर्मशास्त्रकी व्याख्यानसों यथार्थ निर्णय

अर्यमाद्याः पितृगणामूर्तिमन्तस्तथापरे ॥ सर्वेतेमुनिभिः सार्धधर्मराजमुपासते ॥३८॥ अत्रिर्वसिष्ठः पुलहोदक्षःक्रतुरथांगिराः॥जामदग्न्योभृगुश्चैवपुलस्त्यागस्त्यनारदाः॥३९॥एतेचान्येचबहवः पितृराजसभासदः॥ नशक्याः परिसंख्यातुंनामभिःकर्मभिस्तथा ॥ ४० ॥ व्याख्याभिर्धर्मशास्त्राणांनिर्णेतारो यथातथम् ॥ सेवन्तेधर्मराजंतेशासनात्परमेष्ठिनः ॥ ४१ ॥ राजानःसूर्यवंशीयाः सोमवंश्यास्तथापरे ॥ सभायांधर्मराजंतेधर्मज्ञाः पर्युपासते ॥ ४२ ॥ मनुर्दिलीपोमान्धातासगरश्चभगीरथः ॥ अम्बरीषोनरण्यश्चमुचुकुन्दो निमिःपृथुः ॥ ४३ ॥ ययातिर्नहुषः पूरुर्दुष्यन्तश्चशिबिर्नलः ॥ भरतःशंतनुःपांडुःसहस्रार्जुन एवच ॥ ४४ ॥

करनहारे वे सब परमेष्ठीकी आज्ञासों धर्मराजको सेवन करे हैं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ मनु, दिलीप, मांधाता, सगर, भगीरथ, अंबरीष, अनरण्य, मुचुकुंद, निमि और पृथु ॥ ४३ ॥ ययाति, नहुष, पूरु, दुष्यंत, शिबि, नल, भरत, शंतनु, पांडु और सहस्रार्जुन ॥ ४४ ॥

चिंतवन करनहारे जाय हैं और अनन्य विष्णुके भक्त और गायत्रीमंत्रके जपनहारे जाय हैं ॥ ६७ ॥ पराई हिंसा परायो द्रव्य और परायो वाद्ते जे पराङ्मुख हैं और अपनी स्त्रीमें भोग करनहारे सज्जन अग्निहोत्रके कर्त्ता और वेदके पढनहारे ॥ ६८ ॥ ब्रह्मचर्यव्रतके धारण करनहारे और वानप्रस्थ तथा तपस्वी श्रीपाद जो संन्यास हैं तामें लगे भये और जिनको कंकर पत्थर और सोना बराबर है ॥ ६९ ॥ ज्ञान

परहिंसापरद्रव्यपरवादपराङ्मुखाः ॥ स्वदारनिरताःसन्तःसाग्निकावेदपाठकाः ॥ ६८ ॥ ब्रह्मचर्यव्रतधरावानप्रस्थास्तपस्विनः ॥ श्रीपादसंन्यासपराःसमलोष्टाश्मकाञ्चनाः ॥ ६९ ॥ ज्ञानवैराग्यसंपन्नाःसर्वभूतहितेरताः ॥ शिवविष्णुव्रतकराः कर्मब्रह्मसमर्पकाः ॥ ७० ॥ ऋणैस्त्रिभिर्विनिर्मुक्ताः पञ्चयज्ञरताःसदा ॥ पितॄणांश्राद्धदातारः कालेसंध्यामुपासकाः ॥ ७१ ॥ नीचसंगविनिर्मुक्ताः सत्संगतिपरायणाः ॥ एतेप्सरोगणैर्युक्ताविमानवरसंस्थिताः ॥ ७२ ॥ सुधापानंप्रकुर्वन्तोयान्तितेधर्ममंदिरम् ॥ विशन्तिपश्चिमद्वारेयान्तिधर्मसभान्तरे ॥ ७३ ॥

और वैराग्यसों संपन्न और सब भूतनके हितमें लगे भये और शिव तथा विष्णुके जे व्रत हैं तिनके करनहारे और कर्मनको ब्रह्ममें समर्पण करनहारे ॥ ७० ॥ तीनि ऋणनते छूटेभये और सदा पंचयज्ञमें रत और पितृनको श्राद्ध देनेके कालमें संध्योपासनके करनहारे ॥ ७१ ॥ नीचनके संसर्गतें बचेभये और सत्संगतिमें लगेभये ये अप्सरानके गणसों युक्त श्रेष्ठ विमाननमें बैठेभये ॥ ७२ ॥ अमृतके पानको करते

भये धर्ममंदिरमें प्रवेश करैं हैं और पश्चिमके द्वारमें होंके भीतर जाय हैं और धमसभाके मध्यमें जाय हैं ॥ ७३ ॥ यम उनको आये भये देखि वारंवार स्वागत करैं हैं और उनके सन्मुख आवनेपै यम अभ्युत्थान करै है ॥ ७४ ॥ वा समय चतुर्भुज होंकै शंख चक्र गदा और खड्गको धारण करेभये पुण्यकर्ममें जे रत हैं उनको स्नेहसों मित्रकोसो आचरण करैं हैं ॥ ७५ ॥ सिंहासन देय है और नमस्कार करैं है

यमस्तानागतान्दृष्ट्वास्वागतंवदतेमुहुः ॥ समुत्थानंचकुरुतेतेषांगच्छतिसंमुखम् ॥ ७४ ॥ तदाचतुर्भुजोभूत्वाशंखचक्रगदासिभृत् ॥ पुण्यकर्मरतानांचस्नेहान्मित्रवदाचरेत् ॥ ७५ ॥ सिंहासनंचददतेनमस्कारंकरोतिच ॥ पादार्घंकुरुतेपश्चात्पूजतेचन्दनादिभिः ॥ ७६ ॥ नमस्कुर्वन्तुभोःसभ्याज्ञानिनंपरमादरात् ॥ एषमेमण्डलंभित्त्वा ब्रह्मलोकंप्रयास्यति ॥ ७७ ॥ भोभोबुद्धिमतांश्रेष्ठानरकक्लेशभीरवः ॥ भवद्भिःसाधितंपुण्यैर्दैवत्वंसुखदायकम् ॥ ७८ ॥ मानुषंदुर्लभंप्राप्यनित्यंयस्तुनसाधयेत् ॥ सयातिनरकंघोरंकोन्यस्तस्मादचेतनः ॥ ७९ ॥

पादार्घ करैहै और पीछे चंदन आदिसों पूजन करै है ॥ ७६ ॥ भो सभाके लोगो ! ज्ञानीको वडे आदरसों नमस्कार करो यह मेरे मंडलको फोडके ब्रह्मलोकको जायगो ॥ ७७ ॥ भोभो बुद्धिमाननमें श्रेष्ठ और नरकके क्लेशसों डरेभये तुमने पुण्य करिकै सुखको देनेहारो देवत्व सिद्ध कियो ॥ ७८ ॥ दुर्लभ मनुष्यशरीर पायकै जो नित्यसाधन नहीं करै है वह घोरनरकमें जाय है वातें अन्य जड कौन है ॥ ७९ ॥

अस्थिर शरीरकारिकै और अस्थिर धनादिकनकारिकै जो पुरुष स्थिरधर्मको इकट्ठो करै वही एक बुद्धिमान् है ॥८०॥ तातें सब यत्नसों धर्मको संग्रह करनो चाहिये सब भोगनकरिकै युक्त पुण्यवान्के स्थानको जाइये ॥८१॥ याप्रकार धर्मको वचन सुनिकै उनको और वा सभाको प्रणाम करि देवतानकरिकै पूजा कियेगये वे और मुनीश्वरकरिकै स्तुति किये गये ॥८२॥ विमानके गणसों संकीर्ण हो परमपदको

अस्थिरेणशरीरेणयोऽस्थिरैश्चधनादिभिः ॥ संचिनोतिस्थिरंधर्मंसएकोबुद्धिमान्नरः ॥ ८० ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकर्तव्योधर्मसंचयः ॥ गच्छध्वंपुण्यवत्स्थानंसर्वभोगसमन्वितम् ॥ ८१ ॥ इतिधर्मवचः श्रुत्वातंप्रणम्यसभांचताम् ॥ अमरैःपूज्यमानास्तेस्तूयमानामुनीश्वरैः ॥ ८२ ॥ विमानगणसंकीर्णाः प्रयान्तिपरमंपदम् ॥ केचिद्धर्मसभायांहितिष्ठन्तिपरमादरात् ॥ ८३ ॥ उषित्वातत्रकल्पांतंभुक्त्वाभोगानमानुषान् ॥ प्राप्नोतिपुण्यशेषेणमानुष्यंपुण्यदर्शनम् ॥८४॥ महाधनीचसर्वज्ञःसर्वशास्त्रविशारदः ॥ पुनःस्वात्मविचारेणततोयातिपरांगतिम् ॥ ८५ ॥

जांयहैं और कोई बडे आदरसों धर्मसभामें स्थित रहैहैं॥८३॥वहां कल्पके अंतलौं वास करिकै और दिव्य भोगनको भोगिकै पुण्यके शेषसों पुण्य कहिये पवित्र है दर्शन जाको ऐसो वह जीव मनुष्यलोकमें प्राप्त होय है ॥ ८४ ॥ महाधनी और सर्वज्ञ तथा सब शास्त्रमें चतुर ऐसो

पूजा करनहारे जाय हैं और दुर्गा तथा सूर्यके जे भक्त हैं और जे पर्वनमें तीर्थ न्हाये वे जाय हैं ॥६१॥ जे धर्मयुद्धमें मारे गये हैं और जे अनशन जो लंघन है तासों जे मरे हैं और काशी गौके घरमें और तीर्थके जलमें जे मरे हैं॥६२॥ ब्राह्मणके लिये स्वामीके कार्यमें तथा क्षेत्रमें जे मरे हैं और जे देवताके विध्वंसमें मरे हैं और योगाभ्याससों जे मरे हैं ॥ ६३ ॥ और जे सत्पात्रमें पूजनहारे हैं और जे नित्य

येमृताधर्मसंग्रामेऽनशनेनमृताश्चये॥वाराणस्यांगोगृहेचतीर्थतोयेमृताविधेः॥६२॥ ब्राह्मणार्थेस्वामिकार्येतीर्थक्षेत्रेषुयेमृताः ॥ येमृतादेवविध्वंसेयोगाभ्यासेनये मृताः ॥६३॥सत्पात्रपूजकानित्यं महादानरताश्चये ॥ प्रविशन्त्युत्तरेद्वारेयान्तिधर्मसभांचते॥ ६४॥तृतीयःपश्चिमोमार्गोरत्नमन्दिरमंडितः ॥ सुधारससदापूर्णदीर्घिकाभिर्विराजितः ॥६५॥ ऐरावतकुलोद्भूतमत्तमातङ्गसंकुलः ॥ उच्चैःश्रवःसमुत्पन्नहयरत्नसमान्वितः ॥६६॥ एतेनात्मपरायान्तिसच्छास्त्रपरिचिन्तकाः ॥ अनन्यविष्णुक्ताश्चगायत्रीमन्त्रजापकाः ॥ ६७ ॥

महादानमें रत रहै हैं ये सब उत्तरके द्वारमें होके प्रवेशकरिकै धर्मसभामें जाय हैं ॥६४॥ तीसरो पश्चिमको मार्ग है वह रत्नके बने भये मंदिरसों शोभित है और सदा अमृतरूपी जलसों भरीभई बावरीनसों शोभायमान है॥६५॥ और ऐरावतके कुलमें उत्पन्न मत्त हाथीनसों भरोभयो है और उच्चैःश्रवासों उत्पन्न अश्वरत्नकारिकै युक्त है ॥ ६६ ॥ या मार्गमें होके आत्मामें जे परायण हैं वे और उत्तम शास्त्रके

आस्पद है ॥ ४ ॥ योगी जैसे यामें षट्चक्रको चिंतवन करै है और ब्रह्मरंध्रमें चिदानंदरूपको जैसे ध्यान करै है सो सुनो ॥ ५ ॥
जैसो सुकृति शुद्ध और श्रीमान्‌के घरमें उत्पन्न होय है वैसो विधान और नियम उनके माता पिताको कहौंगो ॥ ६ ॥
ऋतुकालमें नारीनके चार दिन त्याग करै और जबलौं शरीरमें पाप अर्थात् इंद्रकी ब्रह्महत्यातें उत्पन्न रहै तबलौं स्त्रीनको मुख न

षट्चक्रचिन्तनंयस्मिन्यथाकुर्वन्तियोगिनः ॥ ब्रह्मरन्ध्रेचिदानन्दरूपध्यानन्तथा शृणु ॥ ५ ॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेजायतेसुकृतीयथा ॥ तथाविधानंनियमंतत्पित्रोःकथयामिते ॥६॥ ऋतुकालेतुनारीणांत्यजेद्दिनचतुष्टयम् ॥ तावन्नालोकयेद्वक्त्रंपापंवपुषिसंभवेत् ॥७॥ स्नात्वासचैलंसानारीचतुर्थेहनिशुध्यति ॥ सप्ताहात्पितृदेवानांभवेद्योग्याव्रतार्चने ॥८॥ सप्ताहमध्येयोगर्भःसभवेन्मलिनाशयः ॥ प्रायशःसम्भवन्त्यत्रपुत्रास्त्वष्टाहमध्यतः ॥९॥ युग्मासुपुत्राजायन्तेस्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु॥पूर्वंसप्तकमुत्सृज्यतस्माद्युग्मासुसंविशेत् ॥१०॥

देखै ॥ ७ ॥ वा नारी सचैल स्नान करिकै चौथे दिन शुद्ध होय है और सात दिन पीछे पितृ और देवतानके व्रत तथा पूजनके योग्य होय है ॥ ८ ॥ सात दिनके भीतर जो गर्भ होय है वह मलिन है अपाय कहिये नाश जाको ऐसो होय है यहां बहुधा पुत्र आठ दिनके मध्यमें होय है ॥ ९ ॥ युग्मरात्रिनमें पुत्र उत्पन्न होय है तातें पहलेके सात दिन छोडिकै युग्मरात्रिनमें स्त्रीसों गमन करै ॥१०॥

सोलह ऋतुकी रातैं स्त्रीनकी सामान्यसों कहीगई हैं और निश्चयकरिक जो चौदहवीं रात्रि है वामें गर्भकी स्थिति होय है ॥ ११ ॥
तब गुण और भाग्यको निधि कहिय स्थान धर्मात्मा पुत्र उत्पन्न होय है यह रात्रि प्राकृतजीवनको कबहू नहीं मिले है ॥ १२ ॥
पांचवें दिन नारीनको मधुर भोजन करनो चाहिये और कडुआ खारी तीक्ष्ण और उष्ण दूरसों त्यागनो चाहिये ॥ १३ ॥ वह क्षेत्र

षोडशर्तुनिशाः स्त्रीणांसामान्याःसमुदाहृताः ॥ यावैचतुर्दशीरात्रिर्गर्भस्तिष्ठतितत्रवै ॥११॥ गुणभाग्यनिधिःपुत्रस्तदाजायेतधार्मिकः ॥ सानिशाप्राकृतैर्जीवैर्नलभ्येतकदाचन ॥ १२ ॥ पंचमेहनिनारीणांकार्यंमधुरभोजनम् ॥ कटुक्षारंचतीक्ष्णंचत्याज्यमुष्णंचदूरतः ॥ १३ ॥ तत्क्षेत्रमोषधीपात्रंबीजंचाप्यमृतायनम् ॥ तस्मिन्नुप्त्वानरःस्वामीसम्यक्फलमवाप्नुयात् ॥ १४॥ ताम्बूलपुष्पश्रीखण्डैःसंयुक्तःशुचिवस्त्रभृत् ॥ धर्ममादायमनसिसुतल्पंसंविशेत्पुमान् ॥ १५ ॥ निषेकसमयेयादृङ्नराचित्तविकल्पना ॥ तादृक्स्वभावसंभूतिर्जन्तुर्विशतिकुक्षिगः ॥ १६ ॥

औषधीनको पात्र है और बीज अमृत है स्वामी नर वाको वा क्षेत्रमें अच्छे फलका प्राप्त होय है ॥ १४ ॥ पान खायेभये फूल तथा चंदनको धारण किये भये और शुद्ध वस्त्र पहिरेभये पुरुष मनमें धर्मको धारण करि उत्तम शय्यापर सोवै ॥ १५ ॥ वीर्यके निषेकसमयमें जैसी

चित्तकी कल्पना होय है वैसेही स्वभावको जंतु कोखिमें प्रवेश करै है ॥ १६ ॥ बीज हुआ चैतन्य सदा वीर्यमें स्थित रहै है काम
चित्त और शुक्र जब एकताको प्राप्त होयहै ॥ १७ ॥ तब मनुष्य स्त्रीके गर्भाशयमें द्रावको प्राप्त होयहै और शुक्र तथा शोणित जो
रुधिर है ताके संयोगसों पिंडकी उत्पत्ति होय है ॥ १८ ॥ गर्भमें प्राप्त सुकृती पुत्र परमआनंदको देनेहारो होय है वाकी संपूर्ण

चैतन्यंबीजभूतंहिनित्यंशुक्रेप्यवस्थितम् ॥ कामश्चित्तंचशुक्रंचयदाह्येकत्वमाप्नुयात् ॥१७॥ तदाद्रावमवा
प्नोतियोषिद्गर्भाशयेनरः ॥शुक्रशोणितसंयोगात्पिण्डोत्पत्तिःप्रजायते ॥ १८ ॥ परमानन्ददःपुत्रोभवेद्गर्भगतः
कृती॥भवन्तितस्यानिखिलाःक्रियाःपुंसवनादिकाः ॥ १९॥ जन्मप्राप्नोतिपुण्यात्माग्रहेषूच्चगतेषुच ॥ तज्जन्म
समयेविप्राःप्राप्नुवन्तिधनंबहु ॥२०॥ विद्याविनयसंपन्नोवर्धतेपितृवेश्मनि ॥ सतांसंगेनसभवेत्सर्वागमवि
शारदः ॥२१॥ दिव्याङ्गनादिभोक्तास्यात्तारुण्येदानवान्धनी ॥ पूर्वकृततपस्तीर्थंमहापुण्यफलोदयात् ॥२२॥

पुंसवन आदि क्रिया होयहै ॥ १९ ॥ पुण्यात्मा ऊंचे घरमें जन्म पावैहै वाके जन्मसमयमें ब्राह्मण बहुतसों धन पावैं हैं ॥ २० ॥ विद्या
और विनयसों संपन्न वह पिताके घरम बढे है और सज्जनके संगसों वह सब शास्त्रनमें चतुर होय है ॥ २१ ॥ पहले जन्ममें किये भये ॥ ९६ ॥
जे तप तीर्थ और महापुण्य हैं तिनके फलके उदय होनेसों युवा अवस्थामें दिव्य अंगना आदिको भोग न हारो होय है ॥ २२ ॥

वह जीव फिर अपने आत्माके विचारसो ता पछि परमगति जो मुक्ति है ताको प्राप्त होय हैं ॥ ८५ ॥ तुम करिकै पूछो गयो यमालय मैंने
तुमसों सब कहो याको भक्तिसों सुनतो भयो मनुष्य धर्मराजकी सभामें जायहै ॥ ८६ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसाद
शर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥ गरुडबोले धर्मात्मा स्वर्गकी गतिको छोडके निर्मल

एतत्तेकथितंसर्वंत्वयापृष्टंयमालयम् ॥ इदंशृण्वन्नरोभक्त्याधर्मराजसभांव्रजेत् ॥८६॥ इतिश्रीसारोद्धारेगरुड
पुराणेधर्मराजनगरनिरूपणोनामचतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥ गरुडउवाच॥धर्मात्मास्वर्गतिंभुक्त्वाजायतेविमले
कुले॥अतस्तस्यसमुत्पत्तिंजननीजठरेवद॥१॥यथाविचारंकुरुतेदेहेस्मिन्सुकृतीजनः॥तथाहंश्रोतुमिच्छामि
वदमेकरुणानिधे ॥२॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टंत्वयाताक्ष्यं परंगोप्यंवदामिते ॥ यस्यविज्ञानमात्रेणसर्व
ज्ञत्वंप्रजायते ॥३॥ वक्ष्यामिचशरीरस्यस्वरूपंपारमार्थिकम् ॥ब्रह्माण्डगुणसंपन्नंयोगिनां धारणास्पदम् ॥४॥

कुलमें उत्पन्न होय हैं यातें माताके पेटमें वाकी उत्पत्ति कहो ॥ १ ॥ सुकृती मनुष्य या देहमें जैसे विचार करै है वैसे मैं सुनो चाहौंहौं हे
करुणानिधि ! मोसों कहो ॥ २ ॥ श्रीभगवान् बोले हे गरुड ! तुमने अच्छो प्रश्न कियो परम गोप्य मैं तुमसों कहौंहौं जाके जाननेही
मात्रसों सर्वज्ञपन हो जाय है ॥ ३ ॥ और शरीरके पारमार्थिक स्वरूप कहौंहौं ब्रह्मांडके गुणनसों संपन्न है योगिनको धारणके

गुण सर्वयोगीश्वरोंने कहेहैं॥२८॥आकुंचन कहिये समेटनो दौडनो उलांघनो फैलानो और चेष्टित ये पांच गुण वायुके कहे गये हैं ॥२९॥ शब्द चिंता शून्यता मोह और संदेह ये पांचगुण आकाशके हैं वे प्रयत्नसे जाननेयोग्य हैं ॥३०॥ मन बुद्धि अहंकार और चित्त ये चारि अंतःकरणके कहे भये हैं वह अंतःकरण पूर्वजन्मके कर्मनसों अधिवासित कहिये वासनायुक्त होय है ॥ ३१ ॥ कान, त्वचा आँख

आकुंचनंधावनंचलंघनंचप्रसारणम्॥ चेष्टितंचेतिपंचैवगुणावायोःप्रकीर्तिताः॥२९॥घोषश्चिन्ताचशून्यत्वंमोहश्चिन्ताचसंशयः॥आकाशस्यगुणाःपंचज्ञातव्यास्तेप्रयत्नतः॥३०॥मनोबुद्धिरहंकारश्चित्तंचेतिचतुष्टयम्॥ अन्तः करणमुद्दिष्टंपूर्वकर्माधिवासितम् ॥३१॥श्रोत्रंत्वक्चक्षुषीजिह्वाघ्राणंज्ञानेंद्रियाणिच ॥ वाक्पाणिपादपायूपस्थानिकर्मेन्द्रियाणिच ॥३२॥ दिग्वातार्कप्रचेतोश्विवह्नीन्द्रोपेन्द्रमित्रकाः ॥ ज्ञानकर्मेन्द्रियाणांचदेवताः परिकीर्तिताः॥३३॥इडाचपिङ्गलाचैवसुषुम्नाख्यातृतीयका॥गान्धारीगजजिह्वाचपूषाचैवयशस्विनी ॥३४॥

जीभ, नाक ये ज्ञानेंद्रियें हैं और वाक्, पाणि, पाद, गुदा और लिंग ये कर्मेंद्रियें हैं॥३२॥ दिशा, वात, अर्क, प्रचेता, अश्विनीकुमार, वह्नि, इंद्र और उपेंद्र और मित्र य ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रियनके देवता कहेगयेहैं ॥३३॥ इडा, पिंगला और तीसरी सुषुम्ना, गांधारी,

गजजिह्वा, पूषा, यशस्विनी ॥३४॥ अलंबुषा, कुहू तथा दशमी शंखिनी ये प्रधान दश नाडी मध्यमें स्थित हैं ॥३५॥ प्राण, अपान समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय ॥ ३६॥ हृदयमें प्राण, गुदामें अपान, समान नाभिमंडलमें स्थित हैं उदान कंठ देशमें और व्यान सब शरीरमें स्थित है ॥३७॥ उद्गार जा डकार है वह नाग है और उन्मीलनमें कूर्म कहा गयाहै कृकल क्षुधाको करनहारो

अलम्बुषाकुहूश्चापिशंखिनीदशमीतथा ॥ पिण्डमध्येस्थिताह्येताःप्रधानादशनाडिकाः ॥ ३५ ॥ प्राणोपानः समानाख्यउदानोव्यानएवच ॥ नागःकूर्मश्चकृकलोदेवदत्तोधनञ्जयः ॥ ३६ ॥ हृदिप्राणोगुदेऽपानःसमानो नाभिमंडले ॥ उदानःकंठदेशेस्याद्व्यानःसर्वशरीरगः ॥ ३७ ॥ उद्गारेनागआख्यातःकूर्मउन्मीलनेस्मृतः ॥ कृकलःक्षुत्करोज्ञेयोदेवदत्तोविजृम्भणे ॥ ३८ ॥ नजहातिमृतंवापिसर्वव्यापीधनञ्जयः ॥ कवलैर्भुक्तमन्नंहिपुष्टिदंसर्वदेहिनाम् ॥ ३९ ॥ नयतेव्यानकोवायुः सारांशंसर्वनाडिषु ॥ आहारोभुक्तमात्रोहिवायुनाक्रियते द्विधा ॥ ४० ॥

जानना चाहिये और विजृंभणमें देवदत्त जानिये॥३८॥सर्वव्यापी जो धनंजय वायु है और सो मरेभयेकोहू नहीं छोडैहै कवलनसों खायो अन्न सब देहिनको पुष्टि देनेहारो है ॥३९॥ व्यान वायु सारांशको सब नाडीनमें पहुँचाय देयहै भुक्तमात्र आहारके वायु दोभागकरिदेय हैं ॥४०॥

गुदामें अच्छे प्रवेशकरि अन्नको पृथक् और जलको पृथक् करि देयहै अग्निके ऊपर जलको करिके और अन्नको जलके ऊपर करिकै ॥४१॥ और आप प्राण अग्निके नीचे स्थित होंके होले होले धोंकेहै और वायुकरिकै धौंकीगई अग्नि रसको और मलको पृथक् करि देयहै ॥ ४२ ॥ और व्यान शरीरमें सब ओर रसको पहुँचावैहै बारह द्वारनकरिकै भिन्न करेभये मलको बाहर निकालैहै॥४३॥कान, आंखि, नाक, जीभ

संप्रविश्यगुदेसम्यक्पृथगन्नंपृथग्जलम् ॥ ऊर्ध्वमग्नेर्जलंकृत्वाकृत्वान्नंचजलोपरि॥४१॥अग्नेश्चाधःस्वयंप्राणः स्थित्वाग्निंधमतेशनैः ॥ वायुनाध्मायमानोग्निःपृथक्किट्टंपृथग्रसम् ॥ ४२ ॥ कुरुतेव्यानकोवायुर्विष्वक्संप्रापयेद्रसम् ॥ द्वारैर्द्वादशभिर्भिन्नंकिट्टंदेहाद्बहिः स्रवेत् ॥ ४३ ॥ कर्णाक्षिनासिकाजिह्वादन्तानाभिर्नखागुदम् ॥ गुह्यंशिरावपुर्लोममलस्थानानिचक्षते ॥ ४४ ॥ एवंसर्वेप्रवर्तन्तेस्वस्वकर्मणिवायवः ॥ उपलभ्यात्मनः सत्तांसूर्यालोकंयथाजनाः ॥ ४५ ॥ इदानींनरदेहस्यशृणुरूपद्वयंखग ॥ व्यावहारिकमेकंचद्वितीयंपारमार्थिकम् ॥ ४६ ॥

दांत, नाभि, नख, गुदा, लिंग, शिरा, वपु और लोम इनको मलस्थान कहेहैं ॥ ४४ ॥ या प्रकार सब वायु अपने कर्मनमें प्रवृत्त होयहैं जैसे सूर्यके प्रकाशको पायके अपनी सत्ताको जन ॥ ४५ ॥ हे खग ! नरदेहके दो रूप सुनो एक व्यावहारिक और दूसरो पारमार्थिक ॥ ४६ ॥

तापीछे आत्मा और अनात्माके विचारमें सदा यत्न करै है और अध्यारोप तथा अपवादकरिकै ब्रह्मको चिंतवन करै है॥२३॥अन्वय करनहारेहू या ब्रह्मके असंग यह पुरुष संगरहित है या वार्ताके जाननेको क्षिति आदि जे अनात्मवर्ग पंचभूत हैं तिनके गुणनको मैं तुमसों कहोहों ॥२४॥क्षिति पृथिवी और वारि जल हविर्भोक्ता अग्नि वायु पवन और आकाश ये पांचों स्थूल भूत कहे यह पिंड पांचभूत

ततश्चयततेनित्यमात्मानात्मविचारणे ॥अध्यारोपापवादाभ्यांकुरुतेब्रह्मचिन्तनम् ॥२३॥ अस्यासंगावबोधायब्रह्मणोन्वयकारिणः ॥ क्षित्याद्यनात्मवर्गस्यगुणांस्तेकथयाम्यहम्॥२४॥ क्षितिर्वारिहविर्भोक्तावायुराकाशएवच ॥ स्थूलभूताइमेप्रोक्ताः पिंडोयंपाञ्चभौतिकः ॥२५॥ त्वगस्थिनाड्योरोमाणिमांसंचैवखगेश्वर ॥ एतेपञ्चगुणाभूमेर्मयातेपरिकीर्तिताः॥२६॥लालामूत्रंतथाशुक्रंमज्जारक्तंचपंचमम्॥ अपांपंचगुणाःप्रोक्तास्तेजसोविनिशामय ॥२७॥ क्षुधातृषातथालस्यंनिद्राकान्तिस्तथैवच॥तेजःपंचगुणंतार्क्ष्यप्रोक्तंसर्वत्रयोगिभिः ॥२८॥

नसों बनाहै ॥ २५ ॥ हे गरुड ! त्वचा हड्डी नाडी रोम और मांस ये पांच गुण भूमिके मैंने तुमसों कहे ॥२६॥ लार मूत्र वीर्य मज्जा और पांचमो रक्त ये पांचगुण जलके कहे अब तेजकेभी सुनिये॥२७॥ क्षुधा, तृषा, आलस्य, निद्रा और कांति हे गरुड ! ये पांच तेजके

कफके हैं ॥ ५१ ॥ और सदा उत्पन्न होनेवाली विष्ठा और मूत्र अप्रमाण है इन गुणनकरिकै युक्त व्यावहारिक शरीर है ॥५२ ॥ सब भुवन और पर्वत द्वीप सागर और आदित्य आदि ग्रह पारमार्थिक शरीरमें हैं ॥५३ ॥ पारमार्थिक देहमें निश्चय छः चक्र होयहैं जे गुण ब्रह्मांडमें कहे हैं वेसब यामें स्थित हैं ॥ ५४ ॥ योगिनकी धारणाके आस्पद गुण हैं तिनक`म तुमसों कहौंगो जिनकी भावना करिकै जीव विराट्रूपको

सततंजायमानंतुविण्मूत्रंचाप्रमाणतः॥एतद्गुणसमायुक्तंशरीरंव्यावहारिकम् ॥५२ ॥ भुवनानिचसर्वाणिपर्वत द्वीपसागराः ॥ आदित्याद्याग्रहाःसन्तिशरीरेपारमार्थिके ॥ ५३ ॥ पारमार्थिकदेहेहिषट्चक्राणिभवन्तिच ॥ ब्रह्माण्डेयेगुणाः प्रोक्तास्तेप्यस्मिन्नेवसंस्थिताः॥५४॥ तानहंतेप्रवक्ष्यामियोगिनांधारणास्पदान् ॥ येषांभावन याजन्तुर्भवेद्वैराजरूपभाक् ॥५५॥ पादाधस्तात्तलंज्ञेयंपादोर्ध्वंवितलंतथा ॥ जानुनोःसुतलंविद्धिसक्थिदेशे महातलम् ॥५६॥ तलातलंसक्थिमूलेगुह्यदेशेरसातलम् ॥ पातालंकटिसंस्थंचसप्तलोकाःप्रकीर्तिताः ॥५७ ॥

भजनहारो होय है ॥ ५५ ॥ विराट्रूपहीको कहो हौं पायनके नीचे तल जानिये और पायनके ऊपर वितलहैऔर घोंटूनमें सुतल जानो और सक्थिदेशमें महातल जानो ॥ ५६ ॥ और सक्थिके मूलमें तलातल और गुह्यदेशमें रसातल जानो और कटिमें पाताल ये सात लोक

कहे ॥ ५७ ॥ नाभिके मध्यमें भूलोक ताके ऊपर भुवर्लोक और हृदयमें स्वर्लोक जानो और कंठदेशमें महर्लोक जानो ॥ ५८ ॥ और मुखमें जनलोक और ललाटमें तपलोक और ब्रह्मरंध्रमें सत्यलोक जानो ये चौदह भुवन भये ॥ ५९ ॥ त्रिकोणमें मेरु स्थित है और नीचेके कोणमें मन्दराचल और दक्षिणरेखामें कैलास और वायव्य कोणमें हिमाचल है ॥ ६० ॥ और ऊर्ध्वरेखामें निषधपर्वत और दक्षिण

भूर्लोकंनाभिमध्येतुभुवर्लोकंतदूर्ध्वके ॥ स्वर्लोकंहृदयेविद्यात्कण्ठदेशेमहस्तथा ॥५८॥ जनलोकंवक्त्रदेशेतपो लोकंललाटके ॥ सत्यलोकंब्रह्मरन्ध्रेभुवनानिचतुर्दश ॥ ५९ ॥ त्रिकोणेसंस्थितोमेरुरधःकोणेचमन्दरः ॥ दक्ष कोणेचकैलासोवामकोणेहिमाचलः ॥ ६० ॥ निषधश्चोर्ध्वरेखायांदक्षायांगन्धमादनः ॥ रमणोवामरेखायां सप्तैतेकुलपर्वताः ॥६१॥ अस्थिस्थानेभवेज्जम्बूःशाकोमज्जासुसंस्थितः ॥ कुशद्वीपस्थितोमांसेक्रौञ्चद्वीपःशि रासुच ॥ ६२ ॥ त्वचायांशाल्मलीद्वीपोगोमेदोरोमसञ्चये ॥ नखस्थंपुष्करंविद्यात्सागरास्तदनंतरम् ॥६३॥

रेखामें गंधमादन और वामरेखामें रमणाचल ये सात कुलपर्वत कहेहैं ॥६१॥ हड्डीनके स्थानमें जंबूद्वीप और मज्जामें शाकद्वीप और मांसमें कुशद्वीप और शिरानमें क्रौंचद्वीप स्थित हैं ॥ ६२ ॥ त्वचामें शाल्मलीद्वीप और रोमसमूहमें गोमेदद्वीप पुष्करको नखमें स्थित जानो

ताके पीछे सागरनकों सुनो॥ ६३॥ खारीसमुद्र मूत्रमें स्थित है और दूधमें दूधको समुद्र और सुरा मदिरा है ताको समुद्र श्लेष्मामें स्थित है और मज्जामें घीको समुद्र स्थित है ॥ ६४ ॥ रसमें रसको समुद्र जानिये और रुधिरमें दहीको समुद्र जानिये हे विनताके पुत्र! स्वादिष्ट जल लंबिका जो कंठके भीतर होयहै ताके स्थानमें जानिये ॥ ६५ ॥ नादचक्रमें सूर्य स्थित है और बिंदुचक्रमें चंद्रमा स्थित है

क्षारोदोहिभवेन्मूत्रेक्षीरेक्षीरोदसागरः ॥ सुरोदधिः श्लेष्मसंस्थोमज्जायांघृतसागरः॥ ६४॥ रसोदधिंरसेविद्याच्छोणितेदधिसागरः ॥ स्वादूदोलम्बिकास्थानेजानीयाद्विनतासुत ॥ ६५ ॥ नादचक्रेस्थितः सूर्योबिन्दुचक्रेचचन्द्रमाः ॥ लोचनस्थः कुजोज्ञेयोहृदयेज्ञः प्रकीर्तितः ॥ ६६ ॥ विष्णुस्थानेगुरुंविद्याच्छुक्रेशुक्रोव्यवस्थितः ॥ नाभिस्थानेस्थितोमन्दोमुखेराहुः प्रकीर्तितः ॥ ६७॥ वायुस्थानेस्थितः केतुः शरीरेग्रहमंडलम् ॥ एवंसर्वस्वरूपेणचिन्तयेदात्मनस्तनुम् ॥ ६८ ॥

मंगल नेत्रमें स्थित है और हृदयमें बुध स्थित है ॥ ६६ ॥ विष्णुस्थान जो नाभिगोल है तामें गुरुको स्थित जानिये और शुक्रमें शुक्र स्थित है और नाभिके स्थानमें शनैश्चर स्थित जानिये और मुखमें राहु स्थित है॥ ६७॥ वायुके स्थानमें केतु स्थित है या प्रकार शरीरमें

साढे तीन करोड रोम व्यावहारिक शरीरमें हैं और सातलाख केश हैं और नख बीस कहेगये हैं ॥ ४७ ॥ और हे गरुड ! सामान्यसों बत्तीस दांत कहे गयेहैं और हजार पल मांस है और सो पल रक्त है॥ ४८॥ और मेदाके दश पल हैं और सत्तरि पल त्वचाके हैं और बारह

तिस्रः कोटचोर्धकोटीचरोमाणिव्यावहारिके ॥ सप्तलक्षाणिकेशाःस्युर्नखाः प्रोक्तास्तु विंशतिः ॥ ४७ ॥ द्वात्रिंशद्दशनाः प्रोक्ताःसामान्याद्विनतासुत ॥ मांसंपलसहस्रंतुरक्तंपलशतंस्मृतम् ॥ ४८॥पलानिदशमेदस्तुत्वक्पलानिचसप्ततिः ॥ पलद्वादशकंमज्जामहारक्तंपलत्रयम् ॥ ४९ ॥ शुक्रंद्विकुडवंज्ञेयंकुडवंशोणितंस्मृतम् ॥ षष्ट्युत्तरंचत्रिशतमस्थ्नांदेहेप्रकीर्तितम् ॥ ५० ॥ नाड्यःस्थूलाश्चसूक्ष्माश्चकोटिशःपरिकीर्तिताः ॥ पित्तंपलानिपञ्चाशत्तदर्धंश्लेष्मणस्तथा ॥ ५१ ॥

पल मज्जाके हैं और तीन पल महारक्तके हैं ॥ ४९ ॥ शुक्र दो कुडव है और एक कुडव शोणित कहो है और देहमें तीनिसौ साठि हड्डी कहीगई हैं ॥ ५० ॥ स्थूल तथा सूक्ष्म नाडी शरीरमें करोरन कहीगई हैं और पचास पल पित्तके हैं और वाके आधे अर्थात पचीस पल

नाभिमें हृदयमें कंठमें भौंहोंके मध्यमें और ब्रह्मरन्ध्रमें क्रमसों चक्रनको चिंतवन कर ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ रातिदिनमें पंडित
नने श्वासकी गति इक्कीस हजार छः सौ कहीहै ॥ ७७ ॥ हकारसों बाहर आवे हैं और सकारसों फिरि भीतर प्रवेश करे हैं और "हंसोहंसः"

आधारंतुचतुर्दलानलसमंवासान्तवर्णाश्रयंस्वाधिष्ठानमपिप्रभाकरसमंबालान्तषट्पत्रकम्॥ रक्ताभंमाणिपूरकं
दशदलंडाद्यंफकारान्तकंपत्रैर्द्वादशभीरनाहतपुरंहैमंकठान्तावृतम् ॥७४॥ पत्रैःसस्वरषोडशैःशशधरज्योति
र्विशुद्धांबुजंहंसेत्यक्षरयुग्मकंद्वयदलंरक्ताभमात्रांबुजम् ॥ तस्मादूर्ध्वगतंप्रभासितमिदंपद्मंसहस्त्रच्छदंस
त्यानंदमयंसदाशिवमयंज्योतिर्मयंशाश्वतम् ॥७५॥ गणेशंचाविधिंविष्णुंशिवंजीवंगुरुततः॥व्यापकंचपरंब्रह्म
क्रमाच्चक्रेषुचिन्तयेत् ॥७६॥ एकविंशतसहस्त्राणिषट्शतान्याधिकानिच ॥ अहोरात्रेणश्वासस्यगतिः सूक्ष्मा
स्मृताबुधैः ॥ ७७ ॥ हकारेणबहिर्यातिसकारेणविशेत्पुनः ॥ हंसोहंसेतिमन्त्रेणजीवोजपतितत्त्वतः ॥७८॥
षट्शतंगणनाथाय षट्सहस्त्रंतुवेधसे ॥ षट्सहस्त्रंचहरयेषट्सहस्त्रंहरायच ॥ ७९ ॥

या मंत्र करि जीवतत्त्वसों जपे है ॥ ७८ ॥ छः सो गणेशके लिये और छः हजार ब्रह्माके लिये और छः हजार हरिके लिये और

छः हजार हरके लिये ॥ ७९ ॥ जीवात्माके लिये एक हजार तैसेही एक हजार गुरुकेलिये और चैतन्य रूप आत्माके लिये एक हजार या
प्रकार जपकी संख्याको निवेदन करे ॥८०॥ सत्संप्रदायके जाननहारे अरुणादिक मुनीश्वर चक्रमें स्थित ब्रह्मकी अमर किरणनको चिंतवन
करे हैं ॥ ८१ ॥ और शुक आदि मुनीश्वर वह शिष्यनको उपदेश करे हैं यातें बुध बडेनकी जो प्रवृत्ति है ताका ध्यान करिके फिरि

जीवात्मनेसहस्त्रंचसहस्त्रंगुरवेतथा ॥ चिदात्मनेसहस्त्रंचजपसंख्यांनिवेदयेत् ॥ ८० ॥ एतांश्चक्रगतान्ब्रह्ममयू
खान्मुनयोमरान्॥सत्संप्रदायवेत्ताराश्चिन्तयन्त्यरुणादयः ॥ ८१ ॥ शुकादयोपिमुनयःशिष्यानुपदिशंतिच ॥
अतःप्रवृत्तिमहतांध्यात्वाध्यायेत्सदाबुधः॥८२॥कृत्वाचमानसींपूजांसर्वचक्रेष्वनन्यधीः ॥ गुरूपदेशेन
गायत्रीमजपांजपेत् ॥ ८३ ॥ अधोमुखेततोरन्ध्रेसहस्त्रदलपंकजे ॥ हंसगंश्रीगुरुंध्यायेद्वराभयकरांबुजम्
॥ ८४ ॥ क्षालितंचिन्तयेद्देहंतत्पादामृतधारया ॥ पंचोपचारैः संपूज्यप्रणमेत्तत्स्तवेनच ॥ ८५ ॥

ध्यान करे हैं ॥८२॥ एकाग्रचित्त हो सब चक्रनमें मानसी पूजन करि ता पीछे गुरुके उपदेशसो अजपानाम गायत्रीको जप करे ॥८३॥
नीचेको है मुख जाको और हजार दलके छिद्रयुक्त कमलमें हंसपर चढेभये और वर अभय जिनके हाथनमें ऐसे गुरुको ध्यान करे
॥ ८४ ॥ उन गुरुके चरणामृतकी धारासों अपनी देहको धोवे और पंचोपचारनसों पूजन करि उनके स्तोत्रसों प्रणाम करे ॥ ८५ ॥

छहू चक्रनमें संचार करनहारी और साढेतीनि है वलय जामें ऐसी कुंडलिनीको आरोह और अवरोहके क्रमसों स्थित ध्यान करै ॥ ८६ ॥ ब्रह्मरन्ध्रते बाहर गयेभये सुषुम्नानाम धामको ध्यान करै वा मार्गमें होकर गयेभये जीव वा विष्णुके परमपदको प्राप्त होय हैं ॥ ८७ ॥ ता पीछे मोकरिकै चिंतवन कियो स्वयंज्योतिः सनातनरूप जो सदा आनंदमय है ताको

ततः कुण्डलिनींध्यायेदारोहादवरोहतः ॥ षट्चक्रकृतसंचारांसार्धत्रिवलयांस्थिताम् ॥ ८६ ॥ ततोध्याये त्सुषुम्नाख्यंधामरन्ध्राद्बहिर्गतम्॥ पथातेनगतायान्तितद्विष्णोःपरमंपदम् ॥८७॥ ततोमच्चिन्तितंरूपंस्वयंज्यो तिःसनातनम्॥सदानन्दंसदाध्यायेन्मुहूर्तेब्राह्मसंज्ञके ॥८८॥ एवंगुरूपदेशेनमनोनिश्चलतांनयेत्॥नतुस्वेनप्र यत्नेनतद्विनापतनंभवेत् ॥८९॥ अन्तर्यागंविधायैवंबहिर्यागंसमाचरेत् ॥ स्नानसन्ध्यादिकंकृत्वाकुर्याद्धरि हरार्चनम्॥९०॥देहाभिमानिनामन्तर्मुखीवृत्तिर्नजायते ॥ अतस्तेषांतुमद्भक्तिः सुकरामोक्षदायिनी ॥९१॥

ब्राह्ममुहूर्तमें सदा ध्यान करै ॥ ८८ ॥ ऐसे गुरुके उपदेशकरिकै मनको निश्चल करै अपने प्रयत्नसों न करै तद्विना वा गुरुके उपदेश विना पतन अर्थात् संसारमें फिरि जन्म होय है ॥ ८९ ॥ या प्रकार अंतर्याग करिकै बहिर्यागको आरंभ करै स्नान संध्या आदि करिकै हरि हरको पूजन करै ॥ ९० ॥ देहके अभिमानी पुरुषकी अंतर्मुखी वृत्ति नहीं होती है याहीते

ग्रहमंडल है या प्रकार सर्वस्वरूपसों अपने तनको चिंतवन करै ॥ ६८ ॥ सदा प्रभातके समय बांधेभये पद्मासनमें स्थित हो षट्च क्रनको चिंतवन करे और कहेभये अजपाके क्रमको चिंतवन करै ॥ ६९ ॥ मुनिनको मोक्ष देनहारी अजपानाम गायत्री है याके

सदाप्रभातसमयेबद्धपद्मासनस्थितः ॥ षट्चक्रचिन्तनंकुर्याद्यथोक्तमजपाक्रमम् ॥६९॥ अजपानामगायत्री मुनीनांमोक्षदायिनी ॥ अस्याः सङ्कल्पमात्रेण सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ७० ॥ शृणुतार्क्ष्यंप्रवक्ष्येहमजपाक्रममु त्तमम् ॥ यंकृत्वासर्वदाजीवोजीवभावंविमुञ्चति ॥ ७१ ॥ मूलाधारःस्वधिष्ठानंमणिपूरकमेवच ॥ अनाहतं विशुद्धाख्यमाज्ञाषट्चक्रमुच्यते ॥ ७२ ॥ मूलाधारेलिङ्गदेशेनाभ्यांहृदिचकण्ठगे ॥ भ्रुवोर्मध्येब्रह्मरन्ध्रेक्रमा च्चक्राणिचिन्तयेत् ॥ ७३ ॥

संकलपमात्रसों सब पापनतें छूटिजायहै ॥ ७० ॥ हे गरुड ! सुनो मैं अजपाको उत्तम क्रम कहौ हौं जाको करि जीव जीवभावको छोडि देय है ॥ ७१ ॥ मूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूर अनाहत विशुद्धाख्य आज्ञा यह षट्चक्र कहोजाय हैं ॥ ७२ ॥ मूलाधारमें लिंगदेशमें

सिंधु! अज्ञानसों जीवको संसार सुनो अब मैं सनातन मोक्षके उपायको सुनो चाहौं हौं॥ १॥ हे भगवन्! हे देव! हे ईश! हे शरणागत वत्सल! सब दुःखनसों अति मैले या असार घोर संसारमें ॥ २ ॥ नानाप्रकारके शरीरनमें स्थित अनंत जीवनके समूह उत्पन्न होय हैं और मरे हैं उनको अंत नहीं है॥ ३॥ सदा दुःखहीमें व्याकुल रहैं हैं कबहू सुखी नहीं होय हैं वे कौनसे उपायसों या संसारते छूटे हैं हे प्रभु! सो कहो ॥४॥

भगवन्देवदेवेशशरणागतवत्सल॥ असारेघोरसंसारेसर्वदुःखमलीमसे ॥२॥ नानाविधशरीरस्थाह्यनन्ताजीवराशयः ॥ जायन्तेचम्रियन्तेचतेषामन्तोनविद्यते ॥ ३ ॥ सदादुःखातुराएवनसुखीविद्यतेक्कचित्॥ केनोपायेनमोक्षेशमुच्यन्तेवदमेप्रभो ॥४॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामियन्मांत्वंपरिपृच्छसि ॥ यस्य श्रवणमात्रेणसंसारान्मुच्यते नरः ॥ ५ ॥ अस्तिदेवःपरब्रह्मस्वरूपीनिष्कलः शिवः ॥ सर्वज्ञःसर्वकर्ताचसर्वेशोनिर्मलोऽद्वयः ॥६॥ स्वयंज्योतिरनाद्यन्तोनिर्विकारःपरात्परः ॥ निर्गुणःसच्चिदानन्दस्तदंशाज्जीवसंज्ञकः ॥७॥

श्रीभगवान् बोले सुनो गरुड! जो तुम मोसों पूछो हो ताहि मैं तुमसों कहौंगो जाके सुननेही मात्रसों मनुष्य संसारते छूटिजायहै ॥ ५॥ परब्रह्म स्वरूप कलारहित और सर्वज्ञ तथा सबके कर्त्ता और सबके स्वामी निर्मल अद्वय शिव हैं ॥ ६ ॥ स्वयंज्योति आदि अंतरहित विकार ॥१०२॥

रहित परते पर निर्गुण सत् चित् आनंदरूप परमेश्वर हैं ताको अंश जीव नाम है ॥७॥ अनादि जो विद्या है ताकरिके उपहत होनेपै जैसे अग्निमें चिनगारि उठै हैं ऐसेही वे जीव अनादिकर्मनसों देह आदि उपाधि करि भिन्न होय हैं ॥८॥ सुख तथा दुःखके देनहारे पुण्य तथा पापरूप कर्मनसों बँधे भये वा जातिकरि युक्त देहको और आयुको और कर्मसों पाये भोगको प्राप्त होय हैं ॥९॥ हे गरुड! फिरि उतनेहू परे

अनाद्यविद्योपहतायथाग्नौविस्फुलिङ्गकाः ॥ देहाद्युपाधिसंभिन्नास्ते कर्मभिरनादिभिः ॥ ८॥ सुखदुःखप्रदैः पुण्यपापरूपैर्नियन्त्रिताः ॥ तत्तज्जातियुतंदेहमायुर्भोगंचकर्मजम् ॥९॥ प्रति जन्मप्रपद्यन्तेतेषामपिपरंपुनः ॥ ससूक्ष्मलिङ्गशरीरमामोक्षादक्षरंखग ॥१० ॥ स्थावराः कृमयश्चाब्जाः पक्षिणः पशवोनराः ॥ धार्मिकास्त्रिदशास्तद्वन्मोक्षिणश्च यथाक्रमम् ॥ ११ ॥ चतुर्विधशरीराणिधृत्वामुक्त्वासहस्रशः ॥ सुकृतान्मानवोभूत्वा ज्ञानीचेन्मोक्षमाप्नुयात् ॥ १२ ॥

मोक्षताई प्रत्येक जन्ममें अविनाशी सूक्ष्मलिंग शरीरको प्राप्त होयहै॥ १०॥ स्थावर वृक्ष आदि कीडे पक्षी पशु मनुष्य धर्म करनहारे देवता ये क्रमसों मोक्षपावनहारे होय हैं ॥ ११ ॥ हजारनबार चार प्रकारके शरीरको धारण करिके तथा छोडिके गये और सुकृतसों मनुष्य होके जो

ज्ञानी होय तो मोक्षको प्राप्त होय॥ १२॥ देहधारिनके चौरासी लाख शरीरनमें मनुष्य शरीरके विना काहू शरीरमें तत्त्वज्ञान नहीं होय है और तत्त्वज्ञानके विना मुक्ति नहीं होय है॥ १३॥ यहां हजारन जन्मके हजार करोडनमें काहूँ जीव मनुष्यहू शरीरमें देहके कर्मनके संचयको प्राप्त होयहै॥ १४॥ मोक्षकी सिढीरूप या दुर्लभ मनुष्यदेहको पायके जो आपको नहीं तारे है वातें अधिक पापी कौन है॥ १५॥ मनुष्य सबते

चतुराशीतिलक्षेषुशरीरेषुशरीरिणाम् ॥ नमानुषंविनान्यत्रतत्त्वज्ञानंतुलभ्यते ॥१३॥ अत्र जन्मसहस्राणांसहस्रैरपिकोटिभिः॥ कदाचिल्लभतेजन्तुर्मानुष्यंपुण्यसञ्चयात्॥१४॥ सोपानभूतंमोक्षस्यमानुष्यंप्राप्यदुर्लभम्॥ यस्तारयतिनात्मानंतस्मात्पापतरोत्रकः ॥ १५ ॥ नरःप्राप्योत्तरंजन्मलब्ध्वा चेन्द्रियसौष्ठवम् ॥ नवेत्त्यात्महितंयस्तुसभवेद्ब्रह्मघातकः ॥ १६॥ विनादेहेनकस्यापिपुरुषार्थोनविद्यते ॥ तस्माद्देहंधनंरक्षेत्पुण्यकर्माणिसाधयेत् ॥ १७ ॥ रक्षयेत्सर्वदात्मानमात्मासर्वस्यभाजनम् ॥ रक्षणेयत्नमातिष्ठेज्जीवन्भद्राणिपश्यति॥ १८॥

अधिक नरदेह और इंद्रियनके सुन्दरताको पायके जो अपनो हित नहीं जाने है वह ब्रह्महत्यारो होय है॥ १६॥ देहके विना काहूको पुरुषार्थ ॥१०४॥
नहीं होय है तातें देह और धनकी रक्षा करि पुण्यकर्मनके साधन करे ॥ १७ ॥ सदा अपनी रक्षा काहेसों कि आत्मा सबको

उनको मेरी भक्ति सहज और मोक्षकी देनहारी है ॥९१ ॥ यद्यपि लययाग आदि मोक्षके मार्ग हैं तथापि या संसारमें आवने जावनेहारे पुरुषनको मेरी भक्तिके मार्ग समीचीन हैं॥ ९२ ॥ ब्रह्मा आदि सर्वज्ञने यही निश्चय कियो है कि तीनिवार वेदशास्त्रको वारंवार विचार करिकै ॥९३ ॥ यज्ञ आदि वह श्रेष्ठ धर्म चित्तके शोधनहारे हैं और मेरी भक्ति फलरूप है वाको पायके कबहूँ दुःखी नहीं होय है ॥९४ ॥

तपोयोगादयोमोक्षमार्गाः सन्तितथापिच ॥ समीचीनस्तुमद्भक्तिमार्गः संसरतामिह ॥९२॥ ब्रह्मादिभिश्चसर्वज्ञैरयमेवविनिश्चितः॥ त्रिवारंवेदशास्त्राणिविचार्यचपुनःपुनः॥९३॥ यज्ञादयोपिसद्धर्माश्चित्तशोधनकारकाः॥ फलरूपाचमद्भक्तिस्तांलब्ध्वानावसीदति॥९४॥ एवमाचरणंताक्ष्र्यकरोतिसुकृतीनरः ॥ संयोगेनचमद्भक्त्या मोक्षंयातिसनातनम् ॥९५॥ इति श्रीगरु०सा०सुकृतिजनजन्माचरणनिरूपणंनामपञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥ गरुडउवाच ॥ श्रुतामयादयासिन्धोह्यज्ञानाज्जीवसंसृतिः ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिमोक्षोपायंसनातनम् ॥१॥

हे गरुड! जो सुकृति नर या प्रकारके आचरणको करे है और मेरी भक्तिके संयोगसों सनातन मोक्षको प्राप्त होय है॥ ९५॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥ गरुड बोले ॥ हे दया

ऐसो पाँनीके समान आयु घटती है शत्रुके समान रोग चोटदेय है तातें कल्याण दनहारी वार्ताको अभ्यास करे ॥ २४ ॥ जबताँई दुःख अपनो आश्रय न करे और जबलौं आपत्ति न आय जांय और जबताईं इन्द्रियें व्याकुल न होंय अर्थात् न बिगडें तबलौं तत्त्वको अभ्यास करे ॥ २५ ॥ जबताईं यह देह रहे अभ्यास करे घरके कोनमें अग्नि लगनपे दुर्बुद्धि कुआँ खोदनेको उपाय करे है ॥ २६ ॥

यावन्नाश्रयतेदुःखंयावन्नायान्तिचापदः ॥ यावन्नेन्द्रियवैकल्यंतावच्छ्रेयःसमभ्यसेत् ॥२५॥ यावत्तिष्ठतिदेहो यंतावत्तत्त्वंसमभ्यसेत् ॥ सन्दीप्तकोणभवनेकूपंखनति दुर्मतिः ॥ २६ ॥ कालोनज्ञायतेनानाकार्यैः संसारसम्भवैः ॥ सुखंदुःखंजनोहंतनवेत्तिहितमात्मनः॥२७॥ जातानार्तान्मृतानापद्गस्तान्दृष्ट्वाचदुःखितान् ॥ लोको मोहसुरांपीत्वानबिभेतिकदाचन ॥ २८॥ सम्पदःस्वप्नसंकाशायौवनंकुसुमोपमम् ॥ तडिच्चपलमायुष्यंकस्य स्याज्ज्ञानतोधृतिः ॥ २९ ॥

संसारमें उत्पन्न भये कार्यनसों काल नहीं जाने जाय है हंत इति खेदे अर्थात् बडे खेदकी बात है कि मनुष्य सुख दुःखको तथा अपने हितको नहीं जाने है ॥ २७ ॥ उत्पन्न भये दुःखित भये मरेभय आपत्तिके घेरेभये और दुःखितनको देखि यह लोक मोहरूपी मदिराको पीके कबहूँ नहीं भय माने है ॥ २८ ॥ सपत्तियां स्वप्नके समान हैं और यौवन फूलके समान है और आयुष्य बिजलीके समान ॥१०५॥

चंचल है या वार्त्ताको जानतेभये कौन पुरुषको धीरज होय ॥ २९ ॥ सौ वर्षको जीवनही बहुत थोरो है ताको आधा निद्रा और आलस्यमें जाय है और बालक अवस्था है तामें और रोग जरा बुढापा इनके दुःखनसों कुछ अल्प भयो वह निरर्थक है॥३०॥ जो काम अर्थात् मोक्षको उपाय प्रारंभ करने योग्य है उसमें उद्योगरहित और जो जागने योग्य है अर्थात् ब्रह्मको चिंतवन तामें सोवतभयो और भयके स्थान जो संसार है तामें विश्वास करनहारो कौन मनुष्य यमकरि नहीं मारा जायहै किंतु सभी मारे जाय हैं॥३१॥ जलके फेनसमान

शतंजीवितमत्यल्पंनिद्रालस्यैस्तदर्धकम् ॥ बाल्यरोगजरादुःखैरल्पंतदपिनिष्फलम् ॥ ३० ॥ प्रारब्धव्येनिरुद्योगो जागर्तव्येप्रसुप्तकः ॥ विश्वस्तव्योभयस्थानेहानरः कोनहन्यते ॥ ३१ ॥ तोयफेनसमेदेहेजीवेनाक्रम्यसंस्थिते ॥ अनित्यप्रियसंवासेकथंतिष्ठातिनिर्भयः ॥३२॥ अहितेहितसंज्ञः स्यादध्रुवेध्रुवसंज्ञकः ॥ अनर्थे चार्थविज्ञानः स्वमर्थंयोनवेत्तिसः ॥ ३३ ॥

देहमें जीवको दबाके स्थित होनेपे जो सदा न रहेगो ऐसे प्यारेके संवासमें निर्भय कैसे स्थित रहे है ॥ ३२ ॥ अहित कहिये परिणाममें विषके समान जे विषय हैं उनको जो इष्टलाभ जाने हैं और अध्रुव जे देह आदि हैं तिनको ध्रुव जाने है और अनर्थ जे दंभ झूठ आदि पन्द्रह अनर्थोंको मूल जो धन है तामें जो प्रयोजनोंको सिद्ध माने हैं ऐसो नर मुक्तिके देनहारे आत्मज्ञानरूप अपने प्रयोजनको नहीं जाने

है॥३३॥पश्यन्नपि अर्थात् आत्मज्ञानते मोक्ष होय है या वार्ताको जानतो भयोहू मोक्ष मार्गते नष्ट हो जाय है और देवकी मायासों मोहित वह नर सुनते भयेहू नहीं जाने है और पढते भयेहू नहीं जानेहै ॥ ३४ ॥ यह जगत् मरण आदि ग्राहनकारि गंभीर कालसागरमें डूबतो भयोहू कोई नहीं जाने है ॥ ३५ ॥ क्षण क्षणमें क्षीण होतो भयो यह काल नहीं जानो जाय है जलमें स्थित कच्चे घटके समान बिखरतो

पश्यन्नपिप्रस्खलतिशृण्वन्नपिनबुध्यति ॥ पठन्नपिनजानातिदेवमायाविमोहितः ॥ ३४ ॥ तन्निमज्जज्जगदिदंगंभीरेकालसागरे ॥ मृत्युरोगजराग्राहैर्नकश्चिदपिबुध्यते ॥ ३५ ॥ प्रतिक्षणमयंकालः क्षीयमाणोनलक्ष्यते ॥ आमकुम्भइवाम्भःस्थोविशीर्णोनविभाव्यते॥३६॥युज्यतेवेष्टनंवायोराकाशस्यचखण्डनम् ॥ग्रथनंचतरङ्गाणामास्थानायुषियुज्यते ॥ ३७ ॥ पृथिवीदह्यतेयेनमेरुश्चापिविशीर्यते ॥ शुष्यतेसागरजलंशरीरस्यचकाकथा ॥ ३८॥ अपत्यंमेकलत्रंमेधनंमेबान्धवाश्चमे ॥ जल्पन्तमितिमर्त्यांजंहन्तिकालवृकोबालत्॥३९॥

भयो नहीं लक्षित होय है ॥ ३६॥ पवनको बाँधनो होसकै है और आकाशको खंडन होसकै है तरंगनको गूँथनो होसकै है परंतु आयुष्यमें आस्था नहीं है ॥ ३७॥ जा काल करिकै पृथिवी जराई जाय है और जासों सुमेरुपर्वत बिखरि जाय है और जाकरिकै समुद्रको जल सूखि जाय है तौ शरीरको कहा चलाई है॥३८॥ मेरी संतति है मेरी स्त्री है और भाई बंधु मेरे है ऐसे कहते भये मनुष्यरूपी बकराको ॥१०६॥

पात्र है तातें आत्माकी रक्षामें यत्न करै काहेसौं कि जीवत रहैगो तौ अनेक कल्याणको देखैगो ॥१८॥ फिरि ग्राम, फिरि क्षेत्र, फिरि धन फिरि घर और फिरि शुभ अशुभकर्म वारंवार होयहै और शरीर बारंबार नहीं होयहै ॥ १९ ॥ पंडितनकरि सदा शरीरकी रक्षाके उपाय किये जांयहैं और कोढी आदिहू या शरीरकें त्यागकी इच्छा नहीं करैहै ॥ २० ॥ ता कारणसों रक्षा कियो गयो यह शरीर

पुनर्ग्रामः पुनः क्षेत्रंपुनर्वित्तंपुनर्गृहम् ॥ पुनःशुभाशुभंकर्मनशरीरंपुनः पुनः ॥ १९ ॥ शरीररक्षणोपायाः क्रियन्तेसर्वदाबुधैः॥नेच्छन्तिचपुनस्त्यागमपिकुष्ठादिरोगिणः॥२०॥तद्गोपितंस्याद्धर्मार्थंधर्मोज्ञानार्थमेवच॥ ज्ञानंतुध्यानयोगार्थमचिरात्प्रविमुच्यते ॥२१॥ आत्मैवयदिनात्मानमहितेभ्योनिवारयेत्॥ कोन्योहितकरस्तस्मादात्मानंकारयिष्यति॥२२॥इहैवनरकव्याधेश्चिकित्सांनकरोतियः ॥ गत्वानिरौषधंदेशंव्याधिस्थःकिंकरिष्यति॥२३॥व्याघ्रीवास्तेजराचायुर्यातिभिन्नघटाम्बुवत्॥ निघ्नन्तिरिपुवद्रोगास्तस्माच्छ्रेयःसमभ्यसेत् २४

धर्मके अर्थ होय है और धर्म ज्ञानके अर्थ होय है और ज्ञान तौ ध्यानके योगके अर्थ होय है और शीघ्रही मुक्त हो जाय है ॥ २१ ॥ जो आत्माही आत्माको अहिततें न बचावै तौ वातें और कौन हित करनहारे आत्माको करावैगो ॥ २२ ॥ जो यहांही नरकरूप रोगकी चिकित्सा नहीं करै है तौ निरौषधदेशमें रोगि जायके कहा करैगो ॥ २३ ॥ व्याघ्रीके समान तौ जरा है और फूटेभये घट

पिता पुत्र आदिके संबंधकी तौ कहा चलाई है ॥ ४५ ॥ दुःखमूल यह संसार जाके है वही दुःखी है वा संसारको जाने त्याग कियो वह सुखी है और नहीं ॥ ४६ ॥ सब दुःखनके उत्पन्न करनहारो और सब आपदानको घर और सब पापनको आश्रय ऐसो जो यह संसार है ताको क्षणहीमें छोडि देवै ॥ ४७ ॥ लोहे तथा लकरीसों बने भये पाशनम बांधोभयो मनुष्य छूटिजाय है

दुःखमूलंहिसंसारः सयस्यास्तिसदुःखितः ॥ तस्यत्यागः कृतोयेनससुखीनापरः क्वचित् ॥ ४६ ॥ प्रभवंसर्वदुःखानामालयंसकलापदाम् ॥ आश्रयंसर्वपापानांसंसारंवर्जयेत्क्षणात् ॥४७॥ लोहदारुमयैःपाशैःपुमान्बद्धो विमुच्यते ॥ पुत्रदारमयैः पाशैर्मुच्यतेनकदाचन॥४८॥ यावतःकुरुतेजन्तुःसंबन्धान्मनसःप्रियान्॥ तावन्तोऽस्यनिखन्यन्तेहृदये शोकशंकवः॥४९॥ वंचिताशेषवित्तैस्तैर्नित्यंलोकोविनाशितः॥ हाहन्तविषयाहारैर्देहस्थेन्द्रियतस्करैः॥५०॥ मांसलुब्धोयथामत्स्योलोहशंकुंनपश्यति ॥ सुखलुब्धस्तथादेहीयमबाधांनपश्यति॥५१॥

और पुत्र स्त्रीमयी पाशनतें कबहूँ नहीं छूटै हैं ॥ ४८ ॥ जीव जितने मनके प्यारे संबंधनको करै है उतनीही शोकरूपी कीलें याके हृदयमें गाडी जाय हैं ॥ ४९ ॥ छले हैं संपूर्ण धन जिनने हाय ! हाय ! विषयरूप आहारके करनहारे देहमें स्थित इंद्रियरूप तस्करनकरिकै सदा यह लोक नाश कियोगयो॥५०॥ जैसे मांसको लोभी मत्स्य लोहकी कीलको नहीं देखै है ऐसेही सुखको

लोभी देही यमकी बाधाको नहीं देखै है ॥ ५१ ॥ हित अहितको नहीं जानते और सदा कुमार्गमें चलनहारे और जे पेटके भरनेमें लगे भये हैं हे गरुड ! वे मनुष्य नरकके जानहारे हैं॥५२॥ निद्रा आदि मैथुन आहार सब प्राणीनक सदा समान हैं ज्ञानवान् मनुष्य कहो जाय है और ज्ञानहीन पशु कहो जाय है ॥५३॥ प्रभात समय मल और मूत्रकरिकै और मध्याह्नमें क्षुधा पिपासाकरिकै और रात्रिमें

हिताहितेनजानन्तोनित्यमुन्मार्गगामिनः ॥ कुक्षिपूरणनिष्ठायेतेनरानारकाः खग॥५२॥ निद्रादिमैथुनाहाराः सर्वेषांप्राणिनांसमाः ॥ ज्ञानवान्मानवःप्रोक्तोज्ञानहीनःपशुःस्मृतः ॥ ५३ ॥ प्रभाते मलमूत्राभ्यांक्षुत्तृड्भ्यां मध्यगेरवौ ॥ रात्रौमदननिद्राभ्यांबाध्यंतेमूढमानवाः ॥ ५४ ॥ स्वदेहधनदारादिनिरताः सर्वजन्तवः ॥ जायन्ते च म्रियन्ते च हाहन्ताज्ञानमोहिताः ॥ ५५ ॥ तस्मात्सङ्गः सदात्याज्यः सर्वस्त्यक्तुंनशक्यते ॥ महद्भिः सहकर्तव्यः सन्तः सङ्गस्यभेषजम् ॥ ५६ ॥

मदन तथा निद्राकरिकै मूढमनुष्य बाधा दिये जाय हैं ॥ ५४ ॥ अपनो देह धन दारा आदिमें लगेभये सब जीव हाय ! अज्ञानसो मोहित होके उत्पन्न होय है और मरै हैं ॥ ५५ ॥ ताते संग सदा त्याग करने योग्य है और जो सब न छोडसकै तो बडेनको संग करनो

चाहिये सज्जन संगकी औषध है ॥ ५६ ॥ सत्संग और विवेक ये दोनों निर्मल नेत्र हैं जाके ये नहीं हैं वह अंधा कुमार्गमें जानेहारो काहेसों
न होय ॥ ५७ ॥ सब मनुष्य अपने अपने वर्णाश्रम और आचारमें तत्पर हैं दूसरे धर्मको नहीं जाने हैं और दंभी मनुष्य वृथा नाशको
प्राप्त होय हैं ॥ ५८ ॥ कर्मनमें श्रम करनहारे और कोई व्रत करनेमें क्षुधा तृषाकारि पीडित अज्ञानसों घिरे हैं चित्त जिनके वे वंच

सत्सङ्गश्चविवेकश्चनिर्मलंनयनद्वयम् ॥ यस्यनास्तिनरःसोऽन्धः कथंनस्यादमार्गगः ॥ ५७ ॥ स्वस्ववर्णा
श्रमाचारनिरताः सर्वमानवाः ॥ नजानन्तिपरंधर्मंवृथानश्यन्तिदाम्भिकाः ॥५८ ॥ क्रियायासपराःकेचिद्व्रत
चर्यादिसंयुताः ॥ अज्ञानसंवृतात्मानःसंचरन्तिप्रतारकाः ॥५९ ॥ नाममात्रेणसन्तुष्टाः कर्मकाण्डरतानराः ॥
मन्त्रोच्चारणहोमाद्यैर्भ्रामिताःक्रतुविस्तरैः ॥६०। एकभुक्तोपवासाद्यैर्नियमैःकायशोषणैः।मूढाःपरोक्षमिच्छन्ति
ममममायाविमोहिताः॥६१॥देहदण्डनमात्रेणकामुक्तिरविवेकिनाम्॥वल्मीकताडनादेवमृतःकुत्रमहोरगः॥६२॥

कही विचरैं हैं ॥ ५९ ॥ नाममात्रसों संतुष्ट और कर्मकांडमें रत और मंत्रका उच्चारण होमआदिकरि यज्ञनके विस्तार करि भ्रमाये गये
एकवार भोजन करने आदि उपवासन करि और शरीरके सुखानेवाले नियमनकरिकै मेरी मायाकरि मोहित मूढमनुष्य परोक्ष जो मोक्ष ॥१०८॥
है ताकी इच्छा करै है॥६०॥६१॥ देहके दंड देनेही मात्रसों अविवेकिनकी कहाँ मुक्ति होय है जैसे बाँबीके ताडन करनेसों कही बडो

कालरूपी भेंडिया बलसों मारे है ॥ ३९ ॥ यह कियो है यह करनेको है और यह कियो अनकियो है ऐसी चेष्टा करिकै युक्त
पुरुषको कृतांत विवश करिलेय है ॥ ४० ॥ कालिहके कामको आज करै और दोपहर पीछेके कामको दोपहर करै मौत किये अन
कियेकी प्रतीक्षा नहीं करैहै ॥ ४१ ॥ बुढापेने दिखायो है मार्ग जाको और प्रचंड रोग हैं जे ते जाके सेनावाले हैं मृत्युरूपीसामंतकरि

इदंकृतमिदंकार्यमिदमन्यत्कृताकृतम् ॥ एवमीहासमायुक्तंकृतान्तःकुरुतेवशम् ॥ ४० ॥ श्वःकार्यमद्यकुर्वीत
पूर्वाह्णेचापराह्णिकम् ॥ नहिमृत्युःप्रतीक्षेतकृतंवाप्यथवाकृतम् ॥ ४१ ॥ जरादर्शितपन्थानंप्रचण्डव्याधिसैनि
कम् ॥ मृत्युशत्रुमधिष्ठोसित्रातारंकिंनपश्यसि॥४२॥तृष्णासूचीविनिर्भिन्नंसिक्तंविषयसर्पिषा ॥ रागद्वेषानले
पक्वंमृत्युरश्नाति मानवम् ॥४३॥ बालांश्चयौवनस्थांश्चवृद्धान्गर्भगतानपि ॥ सर्वानाविशतेमृत्युरेवंभूतमिदं
जगत् ॥ ४४ ॥ स्वदेहमपिजीवोयंमुक्त्वा याति यमालयम् ॥ स्त्रीमातृपितृपुत्रादिसंबन्धः केनहेतुना ॥४५॥

दबायो गयो तू रक्षक जो परमेश्वर है ताको क्यों नहीं देखै है ॥ ४२ ॥ तृष्णारूपी सूचीनसों छेदेगये और विषयरूप पानीसों
सींचेगये और रागद्वेषरूप अग्निमें पकायेगये मनुष्यनको मौत खायहै ॥ ४३ ॥ बालकनमें और तरुणमें वृद्धनमें तथा गर्भमें स्थित
है उनमें मृत्यु अवश्य आवैहै यह जगत् ऐसो है ॥ ४४ ॥ यह जीव अपने देहकूं छोडिकै यमके घरको जायहै और स्त्री माता

पारावत कंकरनको आहार करैहैं और पपीहा भूमिमें गिरे जलको कबहूं नहीं पीवै तो क्या वे व्रती होजाय हैं ॥६९॥ तातें ये सब कर्म लोकरंजनके लिये हैं हे गरुड ! मोक्षका कारण तो साक्षात् तत्त्वज्ञान है ॥७०॥ हे गरुड ! षट्दर्शनरूप महाकूपमें गिरे भये पशु परमार्थको नहीं जानैहैं और वे पशूनके पाशमें बँधे भये हैं ॥ ७१ ॥ वेदशास्त्ररूप घोरसमुद्रमें इतस्ततः अर्थात् एक ग्रंथके

पारावताः शिलाहाराः कदाचिदपिचातकाः ॥ नपिबन्तिमहीतोयंव्रतिनस्तेभवंतिकिम् ॥ ६९ ॥ तस्मादित्यादिकं कर्मलोकरंजनकारकम् ॥ मोक्षस्यकारणंसाक्षात्तत्त्वज्ञानंखगेश्वर ॥ ७० ॥ षड्दर्शनमहाकूपेपतिताः पशवः खग ॥ परमार्थंनजानन्तिपशुपाशनियन्त्रिताः ॥ ७१ ॥ वेदशास्त्रार्णवेघोरेऊह्यमानाइतस्ततः ॥ षडूर्मिनिग्रहग्रस्तास्तिष्ठन्तिहिकुतार्किकाः ॥७२॥ वेदागमपुराणज्ञः परमार्थंनवेत्तियः॥ विडम्बकस्यतस्यैवतत्सर्वंकाकभाषितम्॥७३॥इदंज्ञानमिदंज्ञेयमितिचिन्तासमाकुलाः॥पठन्त्यहर्निशंशास्त्रंपरतत्त्वपराङ्मुखाः॥७४॥

पढनेसों दूसरेके पढनेकरि व्याकुल किये गये और शोक छः जो ऊर्मि हैं तिनके रोकनेसे व्याकुल ऐसे कुतार्किक कुतर्कके बलसों द्वैतज्ञानदीमें रहे हैं वाको नहीं जाने हैं ॥ ७२ ॥ वेद आगम और पुराणको जाननहारो जो परमार्थको नहीं जाने है वा विडंबकको वह सब बोलनो कौआके बोलनेके समान व्यर्थ है ॥ ७३ ॥ यह ज्ञान है और जानने योग्य है या चिंतासों व्याकुल और परतत्त्वतें पराङ्मुख वे राति दिन शास्त्रको पढै हैं ॥७४॥ काव्य अलंकारसों शोभित ऐसे वाक्य और छंदो निबंध करिके उत्पन्न भये चिंतासों दुःखी मूढ व्याकुल है इंद्रियें जिन की ऐसे रहै हैं ॥ ७५ ॥ परमतत्त्व तो अन्यथा है अर्थात् तत्त्वमसि या गुरुके उपदेशसों जानने योग्य है और जन तो अन्यथा अर्थात् कुतर्कके बलसों शास्त्रके पठनसों वाके जाननेको क्लेश करै हैं शास्त्रका सद्भाव तो

वाक्यच्छन्दोनिबन्धेनकाव्यालंकारशोभिताः ॥ चिन्तयादुःखितामूढास्तिष्ठन्तिव्याकुलेन्द्रियाः ॥७५॥ अन्यथापरमंतत्त्वंजनाःक्लिश्यन्तिचान्यथा ॥ अन्यथाशास्त्रसद्भावाव्याख्यांकुर्वन्तिचान्यथा ॥ ७६ ॥ कथयन्त्युन्मनीभावंस्वयंनानुभवन्तिच ॥ अहंकाररताःकेचिदुपदेशादिवर्जिताः ॥ ७७ ॥ पठंतिवेदशास्त्राणि बोधयन्तिपरस्परम् ॥ नजानन्तिपरंतत्त्वंदर्वीपाकरसंयथा ॥७८॥ शिरोवहतिपुष्पाणिगंधंजानातिनासिका ॥ पठन्तिवेदशास्त्राणि दुर्लभोभावबोधकः ॥ ७९ ॥

अन्यथा है और व्याख्या अन्यथा करै हैं॥ ७६ ॥ कोई उन्मनीभाव जो उपशम मुद्रा है ताकरिके ब्रह्मपरत्वको करै हैं अहंकाररत गरुके उपदेश आदिकरि वर्जित पंडित हम कहाँ पूछे सेवन करै हे या अभिमाननसों ॥७७॥ वेद और शास्त्रनको पढै हैं और परस्पर बोध करावे हैं परंतु परम तत्त्वका नहीं जाने जैसे करछी पाक जे दालि आदि हैं तिनको स्वादको रस नहीं जानै है ॥७८॥ शिर फूलनको धारण

करै है और गंधको नासिका जानै है और वेदशास्त्रनको तो पढै है परंतु भावको बोध करावनहारो दुर्लभ है ॥७९॥ अपने शरीरमें स्थित तत्त्वको न जानके मूर्ख शास्त्रनमें मोहित होय है दुष्ट है मति जाकी ऐसो गोप बकरेको कोखिमें स्थित होनेपै कुएँमें देखै है ॥८०॥ संसारके अज्ञानके नाश करनेको शब्दबोध नहीं समर्थ है यामें दृष्टांत देय है कि दीपकी वार्त्ता करनेसों अंधकार नहीं जाय है ॥ ८१ ॥ प्रज्ञा जो श्रेष्ठबुद्धि है ताकरिकै रहित मनुष्यको पढनो ऐसेहै जैसे अंधको दर्पण याहीतें प्रज्ञावाननको शास्त्र तत्त्व ज्ञानको लक्षण है ॥८२॥ यह

तत्त्वमात्मस्थमज्ञात्वामूढःशास्त्रेषुमुह्यति॥ गोपःकुक्षिगतेछागेकूपेपश्यतिदुर्मतिः ॥८०॥ संसारमोहनाशाय शब्दबोधोनहिक्षमः ॥ ननिवर्ततेतिमिरंकदाचिद्दीपवार्तया ॥ ८१ ॥ प्रज्ञाहीनस्यपठनं यथान्धस्यचदर्पणम् ॥ अतःप्रज्ञावतांशास्त्रंतत्त्वज्ञानस्यलक्षणम्॥८२॥ इदंज्ञानमिदंज्ञेयंसर्वंतु श्रोतुमिच्छति ॥ दिव्यवर्षसहस्रायुःशास्त्रान्तंनैवगच्छति ॥ ८३ ॥ अनेकानिचशास्त्राणिस्वल्पायुर्विघ्नकोटयः ॥ तस्मात्सारंविजानीयात्क्षीरंहंसइवाम्भसि॥८४॥ अभ्यस्यवेदशास्त्राणितत्त्वंज्ञात्वाथबुद्धिमान्॥पलालमिव धान्यार्थीसर्वशास्त्राणिसंत्यजेत्॥८५॥

ज्ञान है और यह जानने योग्य है या सबकी सुननेकी इच्छा करेहै और देवतानके हजार वर्षकी आयु होय परंतु शास्त्रके अंतको नहीं प्राप्त होय है॥८३॥ अनेक तो शास्त्र हैं और आयु स्वल्प है तामेंहू करोडन विघ्न हैं तातें सारको जाने जैसे जलमेंसे हंस दूधको जानिलेय है॥ ८४ ॥ बुद्धिमान् पुरुष वेदशास्त्रनको अभ्यासकरिके तत्त्वको जानि सब शास्त्रनको ऐसे छोडिदे जैसे धानको चाहनहारो पलालको छोडिदेय ॥११०॥

सर्प मरे है ॥ ६२ ॥ जटानको भार मृगचर्मकी युक्त वेषधारण करनहारो दंभी ज्ञानीके समान लोकमें भ्रमण करै हैं और अन्य जनकोहूं भ्रमावै हैं ॥ ६३ ॥ संसारते उत्पन्न सुखमें सक्त और मैं ब्रह्मज्ञ हों ऐसे कहनहारो और कर्म तथा ब्रह्म दोनोंते भ्रष्ट पुरुषको अंत्यजके समान त्याग करै ॥ ६४ ॥ घर और वन जिनके एकसो है और लोकमें निर्लज्ज और दिगंबर हो जे गर्दभ आदि विचरै हैं वे कहाँ

जटाभाराजिनैर्युक्तादाम्भिकावेषधारिणः ॥ भ्रमन्तिज्ञानिवल्लोकेभ्रामयन्तिजनानपि ॥ ६३ ॥ संसारजसुखासक्तंब्रह्मज्ञोस्मीतिवादिनम् ॥ कर्मब्रह्मोभयभ्रष्टंतंत्यजेदन्त्यजंयथा ॥ ६४ ॥ गृहारण्यसमालोकेव्रतव्रीडादिगम्बराः ॥ चरन्तिगर्दभाद्याश्चविरक्तास्तेभवन्तिकिम् ॥ ६५ ॥ मृद्भस्मोद्धूलनादेवमुक्ताःस्युर्यदिमानवाः ॥ मृद्भस्मवासीनित्यंश्वासकिंमुक्तोभविष्यति ॥ ६६ ॥ तृणपर्णोदकाहाराः सततंवनवासिनः ॥ जम्बूकाखुमृगाद्याश्चतापसास्तेभवन्तिकिम् ॥ ६७ ॥ आजन्ममरणान्तंचगङ्गादितटिनीस्थिताः ॥ मण्डूकमत्स्यप्रमुखा योगिनस्तेभवंतिकिम् ॥ ६८ ॥

मुक्त होय हैं ॥ ६५ ॥ जो मनुष्य मट्टी भस्म आदिके देहमें लगानेहीसों मुक्त हो तो नित्य मट्टी और भस्ममें वसनहारे कुत्ता कहाँ मुक्त होय है ॥ ६६ ॥ घास पत्र और जल है आहार जिनको ऐसे जंबुक मूसे मृग आदि कहाँ तपस्वी होय हैं ॥ ६७ ॥ जन्मसों लगाके मरनेके अंतलौं गंगा आदि नदीनमें स्थित मेंढक मछली आदि कहाँ वे योगी हो जांय हैं अर्थात् नहीं ॥ ६८ ॥

है ॥ ९१ ॥ कोई अद्वैतकी इच्छा करे हैं और अन्य द्वैतकी इच्छाकरे है अद्वैत कारि रहित समतत्त्वको नहीं जाने है ॥ ९२ ॥ मेरो नहीं और मेरो है ये दो पद बंध और मोक्षके लिये है मम यातें जंतु बँधिजाय है और न मम याते छूटि जायहै ॥ ९३ ॥ वह कर्म है जो बंधनके लिये न होय और जो मुक्तिकी देनेहारी है वह विद्या है और अन्या कहिये अध्यात्मविद्यातें भिन्न और शिल्प नैपुण्य

अद्वैतंकेचिदिच्छन्तिद्वैतमिच्छन्तिचापरे ॥ समंतत्त्वंनजानन्तिद्वैताद्वैतविवर्जितम् ॥९२॥ द्वेपदेबन्धमोक्षायनममेतिममतिच॥ममेतिबध्यतेजन्तुर्नममेतिप्रमुच्यते॥९३॥तत्कर्मयन्नबन्धायसाविद्यायाविमुक्तिदा ॥ आयासायापरंकर्मविद्यान्याशिल्पनैपुणम् ॥ ९४ ॥ यावत्कर्माणि दीयन्तेयावत्संसारवासना ॥ यावदिन्द्रियचापल्यंतावत्तत्त्वकथाकुतः ॥ ९५ ॥ यावद्देहाभिमानश्चममतायावदेवहि ॥ यावत्प्रयत्नवेगोस्तियावत्संकल्पकल्पना ॥९६॥ यावन्नोमानसस्थैर्यनयावच्छास्त्रचिन्तनम्॥यावन्नगुरुकारुण्यंतावत्तत्त्वकथाकुतः ॥९७॥

हर्म्य आदिके बनानेकी चतुराई आदि विद्या ॥९४॥ जबलौं कर्म किये जाय हैं और जबलौं इंद्रिनकी चपलता रहैहै तबलौं तत्त्वकी कथा कहां अर्थात् कहीं नहीं॥९५॥जबताईं देहको अभिमान है और जबताईं ममता है और संसारकी वासना रहैहै और जबलौं जबताईं प्रयत्नको वेग है और जबताईं संकल्पकी कल्पना है॥९६॥जबताईं मनकी स्थिरता नहीं है और जबताईं शास्त्रको विचारनो नहीं है और जब ॥१११॥

ताईं गुरुकी करुणा नहीं है तबताईं तत्त्वकी कथा कहां अर्थात् कहीं नहीं॥९७॥तबहींलौं तप, व्रत, तीर्थ, जप, होम और पूजन आदि और वेद शास्त्र और आगमकी कथा जबताईं तत्त्वको नहीं प्राप्त होयहै ॥९८॥ तातें सब जननसों सब अवस्थामें हे गरुड ! जो अपनो मोक्ष चाहे तो सदा तत्त्वनिष्ठ होयहै ॥९९॥ आध्यात्मिकादि तीनों तापनकरिकै तपो भयो मनुष्य धर्म ज्ञान है फूल जाको और स्वर्ग

तावत्तपोव्रतंतीर्थंजपहोमार्चनादिकम्॥ वेदशास्त्रागमकथायावत्तत्त्वंनविन्दति॥९८॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसर्वावस्थासुसर्वदा ॥ तत्त्वनिष्ठोभवेत्तार्क्ष्ययदीच्छेन्मोक्षमात्मनः ॥ ९९ ॥ धर्मज्ञानप्रसूनस्यस्वर्गमोक्षफलस्यच॥ तापत्रयादिसंतप्तश्छायांमोक्षतरोः श्रयेत् ॥ १०० ॥ तस्माज्ज्ञानेनात्मतत्त्वंविज्ञेयंश्रीगुरोर्मुखात् ॥ सुखेन मुच्यतेजन्तुर्घोरसंसारबन्धनात् ॥१॥ तत्त्वज्ञस्यान्तिमं कृत्यंशृणुवक्ष्यामितेऽधुना ॥ येनमोक्षमवाप्नोतिब्रह्मनिर्वाणसंज्ञकम् ॥ २ ॥ अन्तकालेतुपुरुषआगतेगतसाध्वसः ॥ छिन्द्यादसङ्गशस्त्रेणस्पृहांदेहेनुयेचतम् ॥ ३ ॥

तथा मोक्ष है फल जाको ऐसे मोक्षरूपी वृक्षकी छायाको आश्रय लेय ॥१००॥ तातें ज्ञानकरिकै श्रीगुरुके मुखतें आत्मतत्त्व जाननो चाहिये तो जीव घोर संसार रूप बंधनतें छूटिजाय ॥ १ ॥ तत्त्वके जाननहारेको पिछलो जो कृत्य है ताहि सुनो मैं तुमसों कहों हौं जा करिकै मोक्षको और निर्वाणसंज्ञक ब्रह्मको प्राप्त होय है ॥२॥पुरुष अकालके आवनेपै मृत्युके भयसों शून्य हो असंगरूपी शास्त्रकरिकै

देहमें जो स्पृहा है ताहि काटै और देहके अनुगामी जे पुत्र कलत्र आदि है तिनमें रागरहित होय ॥ ३ ॥ घरते निकरो धीरपुरुष पुण्यतीर्थनके जलमें नहायोभयो शुद्ध और एकांत स्थानमें विधिपूर्वक बनायेभये कुश मृगचर्म और वस्त्रनकरि क्रमसों बनायो आसन पर स्थित हो ॥ ४ ॥ शुद्ध त्रिवृत् अकार उकार और मकाररूप पर जो ब्रह्मको अक्षर है अथात् ॐकार ताको मनसों अभ्यास

गृहात्प्रव्रजितोधीरः पुण्यतीर्थजलाप्लुतः ॥ शुचौविविक्तआसीनो विधिवत्कल्पितासने ॥ ४ ॥ अभ्यसेन्मनसाशुद्धंत्रिवृद्ब्रह्माक्षरंपरम् ॥ मनोयच्छेज्जितश्वासोब्रह्मबीजमविस्मरन् ॥ ५ ॥ नियच्छेद्विषयेभ्योक्षान्मनसाबुद्धिसारथिः ॥ मनः कर्मभिराक्षिप्तंशुभार्थेधारयेद्धिया ॥ ६ ॥ अहंब्रह्म परंधामब्रह्माहंपरमंपदम् ॥ एवंसमीक्ष्यचात्मानमात्मन्याधायनिष्कले ॥ ७ ॥ ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यः प्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम् ॥ ८ ॥

करे और श्वाससों जीतिके ब्रह्मबीजको स्मरण करतो भयो मनको रोकै ॥ ५ ॥ और बुद्धि है सारथी जाको ऐसे मनकरिकै इंद्रियनको विषयनते रोकै और कर्मनकरिकै प्रेरित मनको बुद्धिकरिकै शुभमें धारण करै ॥ ६ ॥ परमधामरूप ब्रह्म मैंही हूँ और परमपदरूप ब्रह्ममें ही हूँ ऐसे देखिकै निरुपाधि आत्मामें आपको मनकरिकै स्थापित करिकैं ॥ ७ ॥ ॐ या एकाक्षर ब्रह्मको उच्चारण करतोभयो और

है ॥ ८५ ॥ जैसे अमृतसों तृप्त पुरुषको आहारसों कुछ प्रयोजन नहीं है हे गरुड ! ऐसेही तत्त्वज्ञानीको शास्त्रसों कुछ प्रयोजन नहीं है ॥ ८६ ॥ बेदके पढनेसों भक्ति नहीं है और न शास्त्रके पठनसों ज्ञानहींसों कैवल्यमुक्ति होय है हे गरुड ! अन्यथा नहीं होय है ॥ ८७ ॥ आश्रम मुक्तिको कारण नहीं है न दर्शन कारण है तैसेही सब कर्म जानो केवल ज्ञानहीका कारण है ॥ ८८ ॥ एक गुरुकी वाणी मुक्तिकी देने

यथामृतेनतृप्तस्यनाहारेणप्रयोजनम् ॥ तत्त्वज्ञस्यतथाताक्ष्र्यनशास्त्रेण प्रयोजनम् ॥ ८६ ॥ नवेदाध्ययनान्मुक्तिर्नशास्त्रपठनादपि ॥ ज्ञानादेवहिकैवल्यंनान्यथाविनतात्मज ॥ ८७ ॥ नाश्रमः कारणंमुक्तेर्दर्शनानिनकारणम् ॥ तथैवसर्वकर्माणिज्ञानमेवहिकारणम् ॥ ८८ ॥ मुक्तिदागुरुवागेकाविद्यासर्वाविडम्बिका ॥ काष्ठभारसहस्रेषु ह्येकंसंजीवनंपरम् ॥ ८९ ॥ अद्वैतंहिशिवंप्रोक्तंक्रियायासविवर्जितम् ॥ गुरुवक्त्रेणलभ्येतनाधीतागमकोटिभिः ॥ ९० ॥ आगमोक्तंविवेकोत्थंद्विधाज्ञानंप्रचक्षते ॥ शब्दब्रह्मागममयंपरब्रह्मविवेकजम् ॥ ९१ ॥

हारी है और सब विद्या विडंबन करनहारी है काष्ठके हजारन गट्ठनमें संजीवन काष्ठ एकही श्रेष्ठ है ॥ ८९ ॥ क्रियामें जो आयास कहिये श्रम है ताकरिकै रहित अद्वैत शिवरूप कह्यो है वह गुरुके मुखते मिलैहै पढेभये करोरन आगमन करिकै नहीं मिलै है ॥ ९० ॥ ज्ञान दो प्रकारको कहैहै एक आगममें कह्योभयो और दूसरो विवेकसों उत्पन्न, आगममय तो शब्दब्रह्म है और विवेकसों उत्पन्न परब्रह्मरूप

छांडिकारि तीर्थमें वास करै है और मुक्तिके देनहारे क्षेत्रनमें मरै है वह मोक्षको प्राप्त होयहै ॥ १३॥ अयोध्या १ मथुरा २ माया ३ काशी ४ कांची ५अवंतिका ६ द्वारवती पुरी ७ ये सात पुरी मोक्षको देनहारी है ॥ १४॥ हे गरुड ! मैं तुमसों या प्रकार सनातन मोक्षधर्म कहो ज्ञान और वैराग्य समेत याको सुनिकै मोक्षको प्राप्त होय ॥ १५ ॥ तत्त्वके जाननहारे मोक्षको प्राप्त होय है और धर्म करनहारे

अयोध्यामथुरामायाकाशीकाञ्चीह्यवन्तिका ॥ पुरीद्वारवतीज्ञेयाःसप्तैतामोक्षदायिकाः ॥ १४॥ इतितेकथित स्ताक्ष्यमोक्षधर्मःसनातनः॥ज्ञानवैराग्यसहितोयंश्रुत्वामोक्षमाप्नुयात् ॥ १५॥ मोक्षंगच्छन्तितत्त्वज्ञाधार्मिकाः स्वर्गतिंनराः॥पापिनोदुर्गतिंयान्तिसंसरन्तिखगादयः॥ १६॥इत्येवंसर्वशास्त्राणांसारोद्धारोनिरूपितः ॥ मयाते षोडशाध्यायैःकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि। १७॥सूतउवाच॥ एवंश्रुत्वावचोराजन्गरुडोभगवन्मुखात्॥कृताञ्जलिरु वाचेदंतंप्रणम्यमुहुर्मुहुः॥ १८॥भगवन्देवदेवेशश्रावयित्वावचोऽमृतम्।तारितोहंत्वयानाथभवसागरतःप्रभो। १९

स्वर्गको जाय हैं और पापी दुर्गतिको प्राप्त होय हैं और पक्षी आदि यहां उत्पन्न होय है और यहांही मरै हैं ॥ १६॥या प्रकार शास्त्रको सारोद्धार मैंने तुमसों सोलह अध्यायमें निरूपण कियो फिर कहा सुनो चाहौ हो ॥ १७ ॥ सूतजी बोले, हे राजा ! गरुड भगवान्के मुखतें या प्रकार वचन सुनिकै उनको वारंवार प्रणाम कारि हाथ जोरिके यह बोले ॥ १८ ॥ हे भगवन् ! हे देवदेवेश ! हे प्रभु ! तुमने

मोको अमृतरूप वचन सुनायकै भवसागरके पार कियो ॥ १९ ॥ अब संदेहरहित स्थित हौं और कृतार्थ हौं यामें संदेहही नहीं है ऐसे कहिकै गरुड चुपचाप बैठि ध्यानमें तत्पर होते भये ॥ १२० ॥ स्मरणसों दुर्गतिके हरनहारे और पूजनरूप यज्ञकरिके उत्तम गतिके देनहारे और अपनी परमभक्ति कारिकै मुक्तिको देय हैं वे हरि मेरी रक्षा करैं ॥ १२१ ॥ इति

स्थितोस्मिगतसन्देहः कृतार्थोस्मिनसंशयः ॥ इत्युक्त्वागरुडस्तूष्णींस्थित्वाध्यानपरोऽभवत् ॥ १२०॥ स्मर णाद्दुर्गतिहर्तापूजनयज्ञेनसद्गतेर्दाता ॥ यः परयानिजभक्त्याददातिमुक्तिंसमांहरिः पातु ॥ १२१ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेभगवद्गरुडसंवादेमोक्षधर्मनिरूपणोनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ इत्याख्यातं मयाताक्ष्यंसर्वंमेवौर्ध्वदेहिकम् ॥ दशाहाभ्यन्तरेश्रुत्वासर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥ इदंचामुष्मिकं कर्मपितृमुक्तिप्रदायकम् ॥ पुत्रवाञ्छितदंचैवपरत्रेहसुखप्रदम् ॥ २ ॥

श्रीमत्पण्डित परमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायांषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ श्रीगणे शाय नमः ॥ श्रीभगवान् बोले हे गरुड ! मैं सब और्ध्वदेहिक अर्थात् मरनेके अनन्तरके कर्म तुमसों कहे जिनको दशदिनके भीतर सुनिकै मनुष्य सब पापनतें छूटिजाय है ॥ १ ॥ यह आमुष्मिक कर्म पितृनकी मुक्तिको देनहारो है और पुत्रकी वांछित काम

नाको देनहारो है और परलोक तथा या लोकमें सुखको देनेहारो है ॥ २ ॥ जो नास्तिक अधम नर या कर्मको नहीं करै है उनको जल सुराके तुल्य नहीं पीने योग्य है यामें संदेह नहीं ॥३॥ देवता तथा पितर वाके घरको नहीं देखै हैं उनके कोपसों पुत्र पौत्र सब दारिद्री होय हैं ॥ ४ ॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र तथा औरभी प्रेतक्रियाके विना वे चाण्डालके समान जानने चाहिये ॥ ५ ॥ या पवित्र प्रेत

इदंकर्मनकुर्वन्ति येनास्तिकनराधमाः ॥ तेषांजलमपेयंस्यात्सुरातुल्यंनसंशयः ॥ ३ ॥ देवताःपितरश्चैवनैव पश्यन्तितद्गृहम् ॥ भवन्तितेषांकोपेनपुत्राः पौत्राश्चदुर्गताः ॥४॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चैवेतरेपिच ॥ तेचाण्डालसमाज्ञेयाःसर्वेप्रेतक्रियांविना ॥५॥ प्रेतकल्पमिदंपुण्यंशृणोतिश्रावयेच्चयः ॥ उभौतौपापनिर्मुक्तौ दुर्गतिंनैवगच्छतः ॥ ६ ॥ मातापित्रोश्चमरणेसौपर्णंशृणुतेतुयः ॥ पितरौमुक्तिमापन्नौ सुतः सन्ततिमान्भवेत् ॥ ७ ॥ नश्रुतंगारुडंयेनगयाश्राद्धंचनोकृतम् ॥ वृषोत्सर्गःकृतोनैवनचमासिकवार्षिके ॥ ८ ॥

कल्पको जो सुनेगो और सुनावेगो वे दोनों पापते छूटिकै दुर्गतिको नहीं प्राप्त होय हैं ॥६॥ हे गरुड ! माता पिताके मरनेमें जो याको सुनै है तो वाके माता पिता मुक्तिको प्राप्त होय हैं और पुत्रसंततिवालो होय है ॥७॥ जाने गरुडपुराण न सुनो होय और गयाश्राद्ध न ॥११४॥

मेरो स्मरण करतो भयो देहको छोडतो जो पुरुष प्रकर्षकारिकै जाय है अर्थात् अर्चिरादि मार्गकरि गमन करै है वह परमगतिको प्राप्त होय है ॥ ८ ॥ जहां ज्ञान और वैराग्यकरि वर्जित दंभ दिखावनहारे नहीं जाय हैं सुधी अर्थात् ज्ञानी पुरुष वा गतिको प्राप्त होय हैं उनको मैं तुमसों कहौं हौं ॥९॥ मान और मोहकरिकै रहित और जीतो है संगको दोष जिनके और आत्मज्ञानमें परिनिष्ठित और विशेष

नयत्रदाम्भिकायान्तिज्ञानवैराग्यवर्जिताः ॥सुधियस्तांगतिंयान्तितामहंकथयामिते॥९॥ निर्मानमोहाजितसङ्गदोषअध्यात्मनिष्ठाविनिवृत्तकामाः ॥ द्वन्द्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ ११० ॥ ज्ञानह्रदेसत्यजले रागद्वेषमलापहे ॥ यःस्नातिमानसेतीर्थेसवैमोक्षमवाप्नुयात् ॥ ११ ॥ प्रौढवैराग्यमास्थाय भजतेमामनन्यभाक् ॥ पूर्णदृष्टिः प्रसन्नात्मासवैमोक्षमवाप्नुयात् ॥ १२ ॥ त्यक्त्वागृहंचयस्तीर्थेनिवसेन्मरणोत्सुकः ॥ म्रियतेमुक्तिक्षेत्रेषुसवैमोक्षमवाप्नुयात् ॥ ११३ ॥

करिकै दूरि भयो है अभिलाष जिनको ऐसे और सुखदुःख है नाम जिनको ऐसे द्वंद्वनकारि छोगडये ऐसे ज्ञानीमनुष्य वा अव्यय कहिये अविनाशी पदको प्राप्त होय हैं ॥ ११० ॥ ज्ञानरूप कुंड है वामें सत्यरूप जल है वह राग तथा द्वेषरूप मल दूरि करनहारो है ऐसे मानसतीर्थमें जो स्नान करै है वह मोक्षको प्राप्त होय है ॥११॥ प्रौढ वैराग्यमें स्थित हो और अन्यको न भजतो भयो जो मोको भजे है पूर्णमें है दृष्टि जाकी ऐसो वह प्रसन्नात्मा कहिये प्रसन्नमन वह निश्चय मोक्षको प्राप्त होय है ॥ १२ ॥ जो मरनेमें उत्कंठित हो घरको

पहले पुराणकी पूजा करै ता पीछे कथा कहनेहारेकी वस्त्र अलंकार गोदान और दक्षिणासों आदरपूर्वक पूजा करै ॥१४॥ अन्न सोनेके दान और बहुतसे भूमिदानसों बहुतसे फलकी प्राप्तिके लिये भक्तिसों बांचनहारेकी पूजा करै ॥ १५ ॥ बाँचनहारेकी पूजा करनेसों मैं पूजित

पुराणंपूजयेत्पूर्ववाचकंतदनंतरम् ॥ वस्त्रालंकारगोदानैर्दक्षिणाभिश्चसादरम् ॥ १४ ॥ अन्नैश्चहेमदानैश्च भूमिदानैश्चभूरिभिः ॥ पूजयेद्वाचकं भक्त्याबहुपुण्यफलाप्तये ॥ १५ ॥ वाचकस्यार्चनेनैवपूजितोहंनसंशयः ॥ सन्तुष्टेतुष्टतांयामिवाचकेनात्रसंशयः ॥ १६ ॥ इति गरुडपुराणश्रवणफलम् ॥

होउहौं यामें संदेह नहीं है, बाचनहारेके संतुष्ट होनेपै मैं संतुष्ट होउहौं यामें भी संदेह नहीं है॥ १६॥इति श्रीगरुडपुराणश्रवणफलं संपूर्णम् ॥

श्रीः ॥ आसीद्वक्तापुराणस्यश्रीशार्दूलमहीपतेः॥ झुंझुणूनगरस्यापिमिश्रः श्रीसुखलालजी ॥१॥ तस्यश्रीहरिनारायणात्मजस्तत्सुतेनतु ॥ मा (म) या नौनिधिरामेण कृतोयंसारसंग्रहः॥२॥प्राचीनैर्यत्कृतः पूर्वंगारुडःसारसंग्रहः॥सतुनोबुद्धिदौर्बल्याज्ज्ञातस्तस्मादय कृतः ॥३॥ पुनरुक्तिपरित्यज्यक्रमेणायंमयाकृतः ॥ बालानां सुखबोधायनतुपांडित्यगर्वतः ॥४॥ अत्राप्रमाणंयत्किंचित्प्रमादाल्लिखितं मया॥ विद्वद्भिः सुविचार्यैव शोधनीयोनसूयिभिः ॥ ५ ॥ सारोद्धारोमया मूलैर्बहुग्रन्थैर्यथाकृतः ॥ तथैवानेकटीकाभिरुद्धृतः सारसंग्रहः ॥ ६॥ महाखेदान्मयातत्रयथास्थानंनियोजितः ॥ प्राज्ञंविनाप्रयासंमेकोज्ञास्यतिविमूढधीः ॥ ७ ॥ विद्वानेवहिजानातिविद्वज्जनपरिश्रमम् ॥ नहिवन्ध्या विजानातिगुर्वींप्रसववेदनाम् ॥ ८ ॥ ये पूर्वसंग्रहेमूढानैवजानंतियोग्यताम् ॥ तेकथंहिभविष्यन्तिहर्षिताःपठनेऽस्य च ॥ ९ ॥ सारोद्धारमिमंमिश्राःपठन्तुनपठन्तुवा ॥ मयातुस्वीयबोधायकृतमेतन्नसंशयः ॥ १० ॥ मङ्गलंभगवान्विष्णुर्मंगलंगरुडध्वजः ॥ मंगलंपुण्डरीकाक्षो मंगलायतनोहरिः ॥ ११ ॥ लाभस्तेषांजयस्तेषांकुतस्तेषांपराजयः ॥ येषामिन्दीवरश्यामोहृदयस्थोजनार्दनः ॥१२॥ राजानः परिपालयन्तुवसुधांधर्मेस्थिताः सर्वदापृथ्वीकामदुघाभवत्वविरलंवर्षन्तुकालेघनाः॥ईर्ष्यांमुञ्चतुदुर्जनः परगुणेष्वासज्जतांसज्जनः सत्काव्यामृतवर्षिणीकविमुखेवाणी चिरंनन्दतु ॥ १३ ॥ इति गरुडपुराणेस्वकृतश्लोकाः समाप्ताः ॥ प्रथमाध्यायऐहिकामुष्मिकदुःखनिरूपणं श्लोकाश्च ॥ ६० ॥ द्वितीयेयममार्गनिरूपणम् ॥ ८६ ॥ तृतीयेयमयातनानिरूपणम् ॥ ७१ ॥ चतुर्थेनरकप्रदपापनिरूपणम् ॥१०४॥पञ्चमेपापचिह्ननिरूपणम् ॥५८॥ षष्ठेपापिनांजन्मादिदुःखनिरूपणम् ॥४३॥ एवंषडध्यायैः पापगतिः ॥ सप्तमेबभ्रुवाहनप्रेतसंवादः ॥६८॥ अष्टमे आतुरदानम् ॥ ११८ ॥ नवमे म्रियमाणकृत्यम् ॥४८॥ दशमेदाहास्थिसञ्चयकर्मनिरूपणम् ॥१०४॥ एकादशेदशगात्रविधिः ॥४२॥ द्वादशेएकादशाहविधिः ॥ ८०॥ त्रयोदशेसपिण्डीशय्यापददाननिरूपणम् ॥१२३॥ चतुर्दशेधर्मराजनिरूपणम् ॥८६॥ पञ्चदशेसुकृतिजन्माचरणनिरूपणम् ॥ ९४ ॥ षोडशेध्यायेमोक्षधर्मनिरूपणमिति ॥ १२१ ॥ मूलसंख्या ॥ १२८७ ॥ सटीकासा ॥ ३१०० ॥ फलम् ॥ ३२ ॥

इति श्रीगरुडपुराणं समाप्तम् ॥

अथ गरुडपुराणसारोद्धारस्यावतरणिका ।

पहले अध्यायमें ऐहिक आमुष्मिकदुःखका निरूपण श्लोक ६०, द्वितीय अध्यायमें यमके मार्गको निरूपण श्लोक ८६, तृतीय अध्यायमें यमकी यातनाका निरूपण श्लोक ७१, चतुर्थअध्यायमें नरक देनहारे पापनको निरूपण श्लोक १०४, पंचममें पापके चिह्नका निरूपण श्लोक ५८, छठेमें पापिनके जन्म आदिदुःखको निरूपण श्लोक ४३, या भाँति छः अध्यायनकरिकै पापकी गति कही ॥ सातवेमें बभ्रुवाहन प्रेतका संवाद श्लोक ६८, आठवेमें आतुरको दान श्लोक ११८, नवममें जो मरा चाहताहो वाको कृत्य श्लोक ४८, दशममें दाह अस्थिसंचयकर्मका निरूपण श्लोक १०४, ग्यारहमें दशगात्रकी विधि श्लोक ४८, बारहमें एकादशाहकी विधि श्लोक ८०, तेरहमें सपिंडि शय्या और पददानका निरूपण श्लोक १२३, चौदहमें धर्मराजके नगरका निरूपण श्लोक ८६, पंद्रहमें सुकृतीके जन्म तथा आचरणका निरूपण श्लोक ९४, सोलहमें मोक्षधर्मका निरूपण श्लोक १२१, मूलसंख्या १२८७ सटीक ३१०० इति गरुडपुराणस्यावतरणिका ॥

इदं पुस्तकं कल्याणनगर्यां श्रीकृष्णदासात्मज-गंगाविष्णुना स्वकीये "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" मुद्रणालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९८३, शके १८४८ ।

किये होय और जाने वृषोत्सर्ग न कियो होय और जाने मासिक तथा वार्षिक श्राद्ध न कियो होय ॥ ८ ॥ वह कैसे पुत्र कहो जाय और तीनि प्रकारके ऋणते कैसे छूटै औरमाता पिताको कैसे तारनेको समर्थ है ॥ ९ ॥ ताते सब प्रयत्नसों गरुडपुराण निश्चय सुनने योग्य है यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्षको देनहारो है और दुःखको नाश करनहारो है ॥ १० ॥ यह गरुडपुराण पवित्र करनहारो और

सकथंकथ्यतेपुत्रःकथंमुच्येदृणत्रयात् ॥ मातरंपितरंचैवकथंतारायितुंक्षमः ॥ ९ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्रोतव्यंगारुडंकिल ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांदायकंदुःखनाशनम् ॥ १० ॥ पुराणंगारुडंपुण्यंपवित्रंपापनाशनम् ॥ शृण्वतांकामनापूरं श्रोतव्यंसर्वदैवहि ॥ ११ ॥ ब्राह्मणोलभतेविद्यांक्षत्रियःपृथिवींलभेत् ॥ वैश्योधनिकतामेतिशूद्रः शुध्यति पातकात् ॥ १२॥ श्रुत्वादानानिदेयानिवाचकायाखिलानिच ॥ पूर्वोक्तशयनादीनिनान्यथासफलं भवेत् ॥ १३ ॥

पापनको नाश करनहारो है और सुननहारे पुरुषनकी कामनाको पूरी करै है तातें सदा सुननो चाहिये ॥ ११ ॥ ब्राह्मण विद्याको प्राप्त होय और क्षत्रिय पृथिवीको पावै और वैश्य धनवान् होय और शूद्र पातकी शुद्ध होजाय है ॥ १२ ॥ और सुनिकै वाचनहारेको सब दान देनो चाहिये और पहले कहेभये शय्यादान आदि देने चाहिये अन्यथा सफल नहीं होय हैं ॥ १३ ॥

॥ इति गरुडपुराणं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

अत्रेयमभ्यर्थना ।